जिनगीक जीत

जिनगीक जीत

उपन्यास

जगदीश प्रसाद मण्डल

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-10-5
Price Rs.250/-
US $ 40 (for abroad)

पहिल संस्करण : 2009

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७
Website :http ://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
AJAY ARTS
4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.
Telephone : 2328-8341, 4362-8341

JINGIK JEET by Shri Jagdish Prasad Mandal
a Novel in Maithili Language

समर्पित

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर

बैसल फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

सादर समर्पित

आ नवविहान अननिहारकेँ सेहो।

आमुख

१

मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मंडलक पदार्पण किछु-किछु ओहिना भेल अछि जेना कहियो विवेकानन्द ठाकुरक भेल छल। जहिना विवेकानन्द ठाकुर अपन जीवनक उत्तरार्धमे बहुत आकस्मिक ढ़ंगे मैथिलीमे प्रगट भेलाह, तहिना जगदीश प्रसाद मंडल एकबैग अपन अनेक कथा आ उपन्यास लऽ कऽ उपस्थित भेल छथि। विवेकानन्द ठाकुरक काव्यमे पाठककेँ ग्रामीण परिवेशक जेहन टटका बिम्ब आ नव सुआद भेटल छलनि, जगदीश प्रसाद मंडलक कथामे ओहने टटका चित्र आ नव आस्वाद भेटतनि। दुनू रचनाकार मिथिलाक ग्राम्य-जीवन संस्कृतिसँ मोहाविष्ट छथि। दुनुक शैली वर्णनात्मक अछि।

लेकिन आगमन, विषयवस्तु, दृष्टि आ शैलीमे समानता होइतहुँ दुनूमे क्यो ने तँ ककरो अनुकरण कएने छथि, ने एक दोसरासँ प्रभाव ग्रहण कएने छथि। दुनुक अपन स्वतंत्र लेखकीय व्यक्तित्व छनि।

जगदीश प्रसाद मंडल जनवादी या प्रकृतिवादी उपन्यासकार नहि छथि, जीवन-संघर्षक उपन्यासकार छथि। हुनक कथामे सेहो औपन्यासिक विस्तार अछि। वर्तमान समएमे प्रचलित आ मान्य उपन्याससँ हुनक उपन्यास भिन्न अछि, एकर कथा घटना बहुलता आ ऋजुसँ युक्त रहैत अछि।

जगदीश प्रसाद मंडल जीवनमे प्राप्य जिजीविषा, मानवीयता एवं आदर्शकेँ सुदृढ़ आ पुनर्प्रतिष्ठित करबाक उद्देश्यसँ अनुप्राणित छथि।

-सुभाष चन्द्र यादव

२

प्रायः चारि-पाँच बर्ख पहिनेक बात थिक जे जगदीश जीक संबंधमे हमरा पहिले बेर जनबाक अवसर भेटल रहय। ओ हमर पुस्तक सभक प्रेमी पाठक आ ताकि ताकि कऽ हमर रचना पढ़ल करथि। ओहि दिनमे हमर कोनो नव पुस्तक छपल रहय जकरा मादे ओ सुनने रहथि मुदा उपलब्ध नहि भऽ सकल रहनि। ताहि

क्रममे हुनक स्फूर्तिवान बालक हमरासँ भेँट करय पटना आएल रहथि। तखनहि पता चलल छल जे जगदीश जी लिखबो करैत छथि। उमेश अपना संग हुनकर पोथी सभक पांडुलिपि अनने छलाह। हम चकित रही जे विद्याक ई अनुरागी पुरुष कोना साहित्यक मुख्य धारा तँ के कहय जे अवान्तरो धारा सँ एकदम्मे एकात रहि निरन्तर साहित्य साधनामे लागल छथि। पता चलल जे ओ मैथिलीमे पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक आ गोट बीसेक कथा लिखने छथि। तहिये पहिल बेर हुनकर पांडलिपि सभकें हम उनटा-पुनटा कऽ देखने छलियनि। तहियो हमरा ई बात स्पष्ट लागल छल जे हुनकर लेखनमे कला भने जतबे होउक प्रामाणिकता धरि भरपूर छनि।

हम अपना सक्क भरि हुनका मनोबलकँ मजगूत आ दृष्टिकँ फड़िच्छ करबाक प्रयास केलियनि ! मधुबनीमे रही तँ ओ हमरासँ सम्पर्कोमे रहलाह। साहित्यक बिरादरीमे तहिये हुनकर प्रवेश भेलनि। हमरा खुशी अछि जे पछिला दू सालमे ओ आइ बेसी ऊर्जस्वी, आर रचनाशील, आर बेसी निधोख भेलाह अछि। आ आइ श्रुति प्रकाशनसँ हुनकर पुस्तक सभ प्रकाशित भऽ रहलनि अछि। हमरा लेल ई बहुत खुशीक बात थिक। एहि हेतु हम प्रकाशक नीतू कुमारी आ नागेन्द्र कुमार झा कँ धन्यवाद दैत छियनि। संगहि विदेह ई-पत्रिकामे एहि उपन्यासकँ धारावाहिक रूपँ प्रकाशित करबाक लेल गजेन्द्र जीकँ धन्यवाद आ बधाइ दैत छियनि जाहिसँ एकर प्रिंट रूपमे प्रकाशनक मार्ग प्रशस्त भेल।

जगदीश जीक साहित्यमे मिथिलाक ग्रामीण समाजक अद्भुत चित्र आएल अछि। मैथिलीमे एहि वस्तुक खगता सभ दिनसँ रहल अछि। हमरा लोकनि अक्सरहां चिन्तित होइत रहै छी जे गाम उजरि रहल अछि, गामक सम्बन्धमे जतबे जे किछु लेखन भऽ रहल अछि से निगेटिभ फोर्ससँ भरल अछि, अधिकाधिक हताश करऽ बला अछि। हमरा लगैत अछि जे जीबनमे देखबाक जे दृष्टिकोण जगदीश जीक छनि से आम मैथिली साहित्यकारक दृष्टिकोणसँ फराक छनि तँ ओ एहन चित्र रचि पबैत छथि जे सामान्यसँ हटि कऽ अछि। हम तँ हुनक लेखनकँ ग्रामीण समाजक सकारात्मक जीबन-शैलीक डक्यूमेन्टेशनक रुपमे देखैत छी।

हुनकर साहित्यमे जे लोक सभ आएल अछि, से मिथिलाक साधारण लोक सभ थिक-वर्ण आ जातिसँ छोट-छोट लोक सभ। ई लोक सभ मैथिली साहित्यमे पहिनहु आएल छथि। किछु प्रामाणिक चित्र सभ पहिनहुँ प्रस्तुत कएल जा चुकल अछि। मुदा हमर ई असंदिग्ध मान्यता अछि जे जाहिठाम ई छोट लोक अपन सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग प्रस्तुत भेल होथि, सएह, केबल सएह टा, एहि

लोकक प्रमाणिक चित्र कहल जा सकैत अछि।

जगदीश जीक कथा साहित्यकेँ देखू तँ ई बात स्पष्ट भऽ सकैत अछि। जे बाहरसँ देखने छोट प्रतीत होइत अछि, से लोक सभ वस्तुतः बहुत पैघ-पैघ लोक सभ छथि। हुनका सभक उन्नत सांस्कृतिक आयामकेँ देखल जाय। मानवताक गुणसँ भरपूर ई लोक सभ दया, ममता, सहयोग सद्भावनासँ कते भरपूर लोक सभ छथि!

तखन एहन अवश्य लागि सकैत अछि जे ई चित्र सभ आजुक मिथिलाक चित्र नहि थिक अपितु अतीतक थिक! मुदा जाहि देशमे विमान आ कटही गाड़ी एक्के संग चलैत हो, ततय कोन अतीत आ कोन वर्त्तमान से निर्णय करब कठिन अछि। आ जाहिठाम सकारात्मक जीवन-शैली दस्तावेजीकरणक प्रश्न हो, ततय तँ ई अत्यन्त उपादेय।

जगदीश जीक लेखनक जे सामान्य विशेषता सभ छनि, से सम्पूर्णतः प्रस्तुत उपन्यास 'जिनगीक जीत' मे देखा पड़त। द्वन्द्व आ दुविधाक अन्हारक भीतर किरणमालाक खोज एहि उपन्यासक इष्ट छिऐक। एकर नायक अनेकानेक संघर्षसँ आगू बढ़ैत एकटा सुखी जीबनक पड़ावपर पहुँचैत अछि, जतय ओकरा परम सेहन्ता एहि बातक छैक जे ओकर 'सुखी जीबन' एकटा 'सार्थक जीबन' सेहो होइक। सुखी बनाम सार्थकक अन्तःसंघर्षसँ ओकर जीबन आक्रान्त अछि। एहिठाम कृषि संस्कृति आ सेवा संस्कृतिक अन्तर्द्वन्द्व सेहो बेस फरिच्छ भऽ कऽ आएल अछि। सदासँ मिथिलाक लोक कृषि कर्म करैत, कृषि-संस्कृतिक ताना-बानामे जीबैत आएल अछि। एहि युगमे आबि कऽ नोकरी (सेवा-संस्कृति) प्रधान लक्ष्य भऽ गेलैक अछि तँ स्वाभाविक थिक जे एहिसँ पूर्व -व्यवस्थित जीबन क्रममे विक्षोभ उत्पन्न भेलैक अछि। जगदीश जीक एहि समस्याकेँ नायक (बचेलाल) क पत्नी (रुमा) क पृष्ठभूमिक रुपमे उठौलनि अछि जे नोकरिहारा परिवारसँ कृषक परिवारमे बिआहलि गेल छथि। हमरा लोकनि देखैत छी जे बचेलाल एहि दू संस्कृतिक बीच समायोजन करबामे ततेक झमारल गेलाह अछि जे मानसिक रुपसँ अवसाद ग्रस्त भऽ गेल छथि। एहि अवसाद (डिप्रेशन) सँ उबारैत छथिन हुनकर माय (सुमित्रा), जे कृषि-संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैवाली एक सबला मैथिलानी थिकीह। श्रमजीबी समाजसँ आएल एहन स्त्री अबला कदापि नहि भऽ सकैत छथि। आ एहि स्त्री, सुमित्राक द्वारा सम्पन्न कराओल जाइत अछि जिनगीक जीत, जेना कहियो सत्यबती द्वारा महाभारत सम्पन्न कराओल गेल छल।

एहन प्रतीत भऽ सकैत अछि जे एहि रचनामे पठनीयताक अभाव छैक आ जेना की एक औपन्यासिक कृतिसँ जिनगीक घात-प्रतिघातकेँ चिन्तित करबाक

आशा कएल जाइछ तकरो अभाव छैक। एहिठाम सभ कथू एकदम सरलतासँ, आसानीसँ सम्पन्न होइत देखाओल गेल अछि, तेना वास्तविक जीबनमे प्रायः नहि होइछ। मुदा, एहि कृतिक प्रामाणिकता एकर अभावकेँ झाँपि दैत छैक। असलमे साहित्यक तीनटा उद्येश्य होइत छै- रंजन, शिक्षण आ प्रेरण। से हम देखैत छी जे शिक्षण आ प्रेरणक तत्व एहिठाम ततेक सक्रिय छैक जे रंजनक कसौटीपर एकर मूल्यांकन कयने रचनाक संग न्याय संभव नहि छैक।

एक बेर फेर हम जगदीश जीकेँ एहि रचनाक लेल धन्यवाद दैत छियनि।

-तारानन्द वियोगी

जिनगीक जीत

उपन्यास

(१)

छोट-छीन गाम कल्याणपुर। गामकेँ देखनहि बुझि पड़ैत जे आदिम युगक मनुक्खसँ लऽ कऽ आइ धरिक मनुक्ख हँसी-खुशीसँ रहैत अछि। मनुखेटा नहि मालो-जाल तहिना। एक फुच्ची दूधवाली गाएसँ लऽ कऽ बीस लीटर दूधवाली गाए धरि। बकरीओक सएह नस्ल। ऐहनो बकरी अछि जकरा तीनि-चारि बच्चा भेने, एक-दूटा दूधक दुआरे मरिये जाइत। आ एहनो अछि जकरा चारि लीटर दूध होइत अछि। गाछियो-बिरछी तहिना। एहनो गाछी अछि जहिमे एकछाहा शीशोएटा अछि तँ दोसर बगुरेक। आमो गाछीक वएह हाल। कोनो एकछाहा सरहीक अछि तँ कोनो एकछाहा कलमीक। ततबे नहि, ओहन-ओहन गाछ अखनो अछि जे दू-दू कट्ठा खेत छपने अछि तँ ओहनो गाछी अछि जहिमे पनरह-पनरहटा आमक गाछ एक कट्ठामे फइलसँ रहि मनसम्फे फड़बो करैत अछि।

ओझुका जेकाँ कल्याणपुर, चालीस बर्ख पहिने नहि छल। ने एकोटा चापाकल छलै आ ने बोरिंग। जेहने हर त्रेता युगमे राजा जनक जोतने रहथि तेहने हरसँ अखनो कल्याण पुरक खेत जोतल जाइत अछि। ने अखुनका जेकाँ उपजा-बाड़ी होइत छल आ ने बर-बीमारीक उचित उपचार। सवारीक रुपमे सभकेँ दू-दूटा पाएर वा गोट-पङरा बड़द जोतल काठक पहियाक गाड़ी। अंग्रेजी शासन मेटा गेल मुदा गमैआ जिनगीमे मिसिओ भरि सुधार नहि भेल। जहिना जाँतमे दूटा चक्की होइत- तरौटा आ उपरौटा। तरौटा कीलमे गाड़ल रहैत। तहिना शहरी आ देहाती जिनगीक अछि। शहरी जिनगी तँ आगू मुँहे घुसकल मुदा देहाती जिनगी तरौटा चक्की जेकाँ ओहिना गड़ाइल रहि गेल अछि। बान्ह-सड़क, घर-दुआर सभ ओहिना अछि जहिना चालीस बर्ख पहिने छल। तँ की कल्याणपुरक लोक अंग्रेजी शासन तोड़ैमे, भाग नहि लेलक? जरुर लेलक। दिल खोलि साहससँ लेलक। सगरे गामकेँ गोरा-पल्टन आगि लगा-लगा तीनि बेरि जरौलक। कत्ते गोटे बन्दूकक कुन्दासँ, तँ कत्ते गोटे मोटका चमड़ाक जूत्तासँ थकुचल गेलाह। जहल जाइबलाक धरोहि लागि गेल रहए। कत्ते गोटे डरे जे गाम छोड़ि पड़ाएल ओ अखनो धरि घुरि कऽ नहि आबि सकल। कत्ते गोटेक परिवार बिलटलै, तकर कोनो ठेकान, अखनो धरि नहि अछि।

कल्याणपुरक एक परिवार अछेलालक। अगहन पूर्णिमाक तेसर दिन, बारह बजे रातिमे घूर धधका दुनू परानी अछेलाल आगि तपैत रहए। पहिलुके साँझमे स्त्री-मखनीकेँ पेटमे दर्द उपकलै। प्रसवक अंतिम मास रहने मखनी बुझलक जे प्रसवक पीड़ा छी। अछेलालोकेँ सएह बुझि पड़लै। ओसरेपर चटकुन्नी बिछा मखनी पड़ि रहलि। चटकुन्नीक बगलेमे अछेलालो बैसि गेल। दर्द असान होइतहि मखनी बाजलि- ''दरद असान भेल जाइए।''

मुँहपर हाथ नेने अछेलाल मने-मन सोचैत जे असकरुआ छी कोना पलहनिक ओहिठाम जाएब? कोना अगियाशी जोड़ब? जाड़क समए छियै। परसौतीक लेल जाड़ ओहने दुश्मन होइत अछि जेहने बकरीक लेल फौती। दर्द छुटितहि मखनी फुड़-फुड़ा कऽ उठि भानसक जोगारमे जुटि गेलि। पानि भरैक घैल लऽ जखने घैलची दिशि बढ़ए लागलि कि पति अछेलालक बाँहि पकड़ि रोकि, कहलक- "अहाँ उपर-निच्चा नइ करु। हम पानि भरि अनै छी। अहाँ घरसँ बासन-कुसन निकालू। हम ओकरो धो कऽ आनि देब।"

मखनी चुल्हि पजारए लागलि आ अछेलाल लुरु-खुरु करए लगल। बरतन-बासन धोए ओहो चुल्हिऐक पाछुमे बैसि, आगियो तापए आ गप्पो-सप्प शुरु केलक। मुस्कीदैत अछेलाल बाजल- "अइबेर भगवान बेटा देताह।"

बेटाक नाम सुनि मखनी सुखक समुद्रमे हेलए लागलि। मने-मन सुखक अनुभव करैत विचारए लागलि जे बच्चाकेँ दूध पियाएब। तेल-उबटनसँ जाँतव। आँखिमे काजर लगा किसुन भगवान बना चुम्मा लेब। कोरामे लऽ अनको आंगन घूमैले जाएब। इस्कूलमे नाओ लिखा पढ़बैक विचार एलै, कि जहिना गमकौआ चाउरक भात आ नेबो रस देल खेरही दालिमे सानल कौर मुँहमे दइते, ओहन आँकर पड़ि जाइत जहिसँ जी कटि जाइत, तहिना भेलि। मनक सुख मनहिमे मखनी कऽ अटकि गेलि। पत्नीक मलिन होइत मुँह देखि पति बाजल- "गरीबक मनोरथ आ बरखाक बुलबुला एक्के रंग होइ छै। जहिना पाइनिक बुलबुला सुन्दर आकार आ रंग लऽ बढ़ैत अछि कि फुटिये जाइत, तहिना।"

मखनीक मनमे दोसर विचार उठलै जे धन तँ बहुत रंगक होइ छै- खेत-पथार, गाए-महीसि, रुपैआ-पैसा मुदा एहि सभ धनसँ पैघ बेटा धन होइत छैक। जे बूढ़मे माए-बापक सवारी बनि सेवा करैत अछि। ततबे नहि, परिवारो खनदानो कऽ आगू बढ़बैत अछि। तोहूँमे जँ कमासुत बेटा होएत तँ जीवितहि माए-बापकेँ स्वर्गक सुख दैत अछि।

भानस भेलै। दुनू परानी खेलक। मोटगर पुआरपर चटकुन्नी विछाओल, तहिपर जा मखनी सुति रहलीह। थारी-लोटा अखारि, चुल्हि-चिनमारक सभ काज सम्हारि अछेलाल चुल्हिये लग बैसि आगि तापए लगल। तमाकुल चूना मुँहमे लेलक। चुल्हिये लग बैसल-बैसल अछेलाल ओंघाइयो लगल। ओंघी तोड़ैले उठि कऽ अंगनामे टहलए लगल। भक्क टुटिते फेर चुल्हि लग आबि अछेलाल आगि तापए लगल। मखनी निन्न पड़ि गेलि। मखनीक नाकक आबाज सुनि अछेलाल सोचए लगल जे जँ राति-बिराति दर्द उपकतै तँ महा-मोसकिलमे पड़ि जाएब। अपने तँ किछु बुझैत नहि छी। दशमीक डगरक सिदहा दऽ नहि सकलियेक तँ पलहनियो आओत की नहि? चुल्हिक आगि मिझाइत देखि अछेलाल जारन आनए डेढ़ियापर गेल। ओससँ जारनो सिमसल। लतामक गाछ परसँ टप-टप ओसक बुन्न खसैत। अन्हारक तृतीया रहने, चान तँ भरि

राति उगल रहत, मनमे अबितहि अछेलाल मेघ दिशि तकलक। चान तँ उगल देखैत मुदा ओसक दुआरे जमीनपर इजोत अबितहि नहि। पाँजमे जारन नेने अंगना आएल। ओसारपर चुल्हि रहने सोचलक जे घरेमे घूर लगौनाइ बढ़ियाँ हएत किऐक तँ घरो गरमाइल रहत। अछेलालक पाएरक दमसिसँ मखनीक निन्न टुटि गेलै। धधकैत घूर देखि मखनियोकँ आगि तपैक मन भेलै। ओछाइन परसँ उठि ओहो घूर लग आबि बैसलि। बीचमे घूर धधकैत आ दुनू भाग दुनू परानी बैसल। जहिना देहक दुखसँ मखनी तहिना मोनक दुखसँ अछेलाल। बेबसीक स्वरमे अछेलाल बाजल- "अदहा राति तँ बीतिए गेल, अदहे बाकी अछि। जहिना अदहा बीतल तहिना बाँकियो बीतबे करत।"

अछेलालक बात सुनि मखनी पूछलक- "अखन धरि अहाँ जगले छी?"

'हँ, की करब। जँ सुति रहितौं आ तइ बीचमे अहाँकँ दरद उठैत तँ फटोफनमे पड़ि जइतहुँ। सँसे गामक लोक सुतल अछि। ककरा सोरो पारबैक। एक्के रातिक तँ बात अछि। कहुना-कहुना कऽ काटिये लेब। मनमे होइत छल जे बहिनकँ बिदागरी करा कऽ लए अनितहुँ मुदा ओहो तँ पेटबोनिये अछि। तहूमे चारि-पाँचटा लिधुरिया बच्चो छै। जँ विदागरी करा कऽ आनव तँ पाँच गोटेक खरचो बढ़ि जाएत। घरमे तँ किछु अछि नहि। कमाई छी खाइ छी।"

"कहलियै तँ ठीके। अपना घरमे लोक भुखलो-दुखलो रहि जाइत अछि। मुदा जकरा माथ चढ़ा कऽ अनितियै ओकरा कोना भूखल रखितियै? दिन-राति चिन्ता पैसल रहैए जे पार-घाट कोना लागत। भगवानो सभटा दुख हमरे दुनू परानीकँ देने छथि। एक पसेरी चाउर घैलामे रखने छी कहुना-कहुना पान-सात दिन चलबे करत। तकर बाद बुझल जेतैक।"

पसेरी भरि चाउर सुनि अछेलालक मोनमे आशा जगल। मुहसँ हँसी निकलल। हँसैत बाजल- "जँ हमर बनि बच्चा जनम लेत तँ कतबो दुख हेतइ तइओ जीवे करत। नहि जँ कोनो जनमक करजा खेने हेबै तँ असुल कऽ चलि जाएत।"

पतिक बात सुनितहि मखनीकँ पहिलुका दुनू बच्चा मन पड़ल। मने-मन सोचए लागलि जे ओहो बच्चा नहि मरिते। जँ नीक-नहाँति सेवा होइतै तँ। मुदा मनुखे की करत? जकरा भगवाने बेपाट भऽ गेल छथिन। पैछला बात मनसँ हटबैत मखनी बाजलि- "समाजमे ओहनो बहुत लोक होइत जे बेर-बेगरतामे भगवान बनि ठाढ़ होइत।"

"समाज दू रंगक होइछै। एकटा समाज ओहन होइ छैक जइमे दोसराक मदतिकँ धरम बुझल जाइ छै आ दोसर ओहन होइ छैक जहिमे सभ सबहक अधले करैत अछि। अपने गाममे देखै छियै। अपन टोल तीस-पेंइतीस घरक अछि। चारि-पाँच रंगक जातियो अछि। एक जातिकँ दोसरसँ भैंसा भैंसीक कनारि अछि। अपन तीनि घरक दियादी अछि। तीनू घरमे सुकनाकँ दु सेर दू टाका छैक। ओकरा देखै

छियै। सदिखन झगड़े-झंझटक पाछू रहैए। टोलमे सभसँ बाड़ल अछि। ओकरा चलैत हमरोसँ सभ मुँह फुलौने रहैए। ने ककरोसँ टोका-चाली अछि ने खेनाइ-पीनाई, आ ने लेन-देन। भगवान रच्छ रखने छथि जे सभ दिन बोइन करै छी मौजसँ खाई छी नइ तँ एक्को दिन अइ गाममे बास होइत।''

अछेलालक बात सुनि मूड़ि डोलबैत मखनी बाजलि- ''कहलौं तँ ठीके, मुदा जे भगवान दुख दइ छथिन वएह ने पारो-घाट लगबै छथिन।''

मखनीक बात सुनि अछेलाल बाजल- ''सगरे गाममे नजरि उठा कऽ देखै छी तँ खाली बचेलालेक परिवारसँ थोड़-बहुत, मिलान अछि। सालमे दश-बीस दिन खेतिओ सम्हारि दइ छियै आ घरो-घरहट। पेंइच-उधार तँ नहिये करै छी। हमर ब्रह्म कहैए जे अगर बचेलालक माएकेँ कहबनि तँ ओ बेचारी जरुर सम्हारि देती। कहुना राति बीतै भोर होए, तखन ने कहबनि। दुखक रातियो नमहर भऽ जाइ छै। एक्के निन्नमे भोर भऽ जाइ छले, से बितबे ने करैए।''

हाफी करैत मखनी बाजलि- ''देहो गरमा गेलि आ डाँड़ो दुखा गेल। ओछाइनेपर जाइ छी।''

मखनीक बात सुनि अछेलाल ठाढ़ भऽ मखनीक बाँहि पकड़ि ओछाइनपर लऽ गेल। मखनी परि रहलि। पड़ले-पड़ल बाजलि- ''मन हल्लुक लगैए। अहूँ सुति रहू।''

अछेलालक मनमे चैन आएल। मुदा तइयो सोचैत जे एहि देह आ समएक कोन ठेकान। कखन की भऽ जएतैक। गुनधुन करैत बाहर निकलि चारु भर तकलक। झल-अन्हारक दुआरे साफ-साफ किछु देखवे ने करैत। मूड़ी उठा मेघ दिशि तकलक। मेघोमे छोटका तरेगण बुझिये ने पड़ै। गोटे-गोटे बड़का देखि पड़ैत। अएना जेकाँ चानो बुझि पड़ैत। डंडी-तराजूकेँ ठेकना ताकए लगल। तकैत-तकैत पछबारि भाग मन्हुआइल देखलक। डंडी-तराजू देखि अछेलाल कऽ संतोष भेलै जे राति लगिचा गेल अछि। फेर घुमि कऽ आबि घूर लग बैसल। आलस अबए लगलै। तमाकुल चुना मुँहमे लेलक। बाहर निकलि तमाकुल थूकड़ि कऽ फेकि फेरि घुरे लग आबि बोरा पसारि घोकड़ी लगा, बाँहिएक सिरमा बना सुति रहल। निन्न पड़ि गेल। निन्न पड़ितहि सपनाए लगल। सपनामे देखए लगल जे घरवाली दरदसँ कुहरैत अछि। चहा कऽ उठि पत्नीकेँ पूछलक- ''बेसी दर्द होइए?''

मखनी निन्न छलि। किछु नहि उत्तर नहि देलि। घूर कऽ फूँकि अछेलाल धधड़ाक इजोतमे मखनी लग जा निङहारि कऽ देखए लगल। मनमे भेलै जे कहीं बेहोश तँ ने भऽ गेलि अछि, मुदा नाकक साँस असथिर रहै।

कौआ डकितहि अछेलाल उठि कऽ बचेलाल ऐठाम विदा भेल। दुनू गोटेक घर थोड़बे हटल, मुदा बीचमे डबरा रहने घुमाओन रास्ता। बचेलालक माएकेँ अछेलाल भौजी कहैत। दियादी संबंध तँ दुनू परिवारमे नहि मुदा सामाजिक संबंधे भैयारी। बचेलालक पिता रघुनन्दन छोटे गिरहस्त, मुदा सामाजिक हृदय रहने सभसँ समाजमे

मिलल-जुलल रहैत। बचेलाल ऐठाम पहुँचते अछेलाल डेढ़ियापर ठाढ़ भऽ बचेलालक माए सुमित्राकेँ सोर पाड़लक। आंगन बहारैत सुमित्रा बाढ़नि हाथमे नेनहि घरक कोनचर लगसँ देखि, मुस्कुराइत बाजलि- "अनठिया जेकाँ दुआरपर किऐक छी? आउ-आउ, अंगने आउ।"

अछेलालक मन्हुआइल मुँह देखि सुमित्रा पूछलक- "रातिमे किछु भेलि की? मन बड़ खसल देखै छी।"

कँपैत हृदयसँ अछेलाल उत्तर देलकनि- "नइ रातिमे तँ किछु ने भेल मुदा भारी विपत्तिमे पड़ल छी। तेँ एलौं।"

"केहन विपत्तिमे पड़ल छी?"

"भनसियाकेँ संतान होनिहार अछि। पूर मास छियै। घरमे तँ दोसर-तेसर अछि नहि। जनिजातिक नीक-अधला तँ अपने बुझै नइ छी। तेँ अहाँ कऽ कहैले एलौं जे चलि कऽ सम्हारि दिओ।"

कनेकाल गुम्म भऽ सुमित्रा बजलीह- "अखन तँ दरद नहि ने उपकलैहें ?"

"नै, अखन चैन अछि। साझू पहर दरद उपकल छलै मुदा कनिये कालक बाद असान भऽ गेलै।"

"लोकेक काज लोक कऽ होइ छै। समाजमे सभक काज सभकेँ होइ छै। अगर हमरा गेलासँ अहाँक नीक हएत तँ किअए ने जाएब।" -कहि सुमित्रा फुसफुसा कऽ पूछल- "परसौती खाइले चाउर अछि, कीने?"

अछेलालक मोनमे एलै जे झूठ नहि कहबनि। कने गुम्म भऽ बाजल- "एक पसेरी चाउर घरमे अछि, भौजी।"

एक पसेरी चाउर सुनितहि सुमित्राकेँ हँसी लगलनि। मुदा हँसीकेँ दाबि, सोचलनि जे कमसँ कम एक मासक बुतात चाही। मास दिनसँ पहिने परसौतिक देहमे कोनो लज्जति थोड़े रहै छै। तेँ एक मासक बुतातक जोगार सेहो कऽ देबै। बेर पड़लापर गरीब लोकक मन बौआ जाइ छै तेँ अछेलाल ऐना कहलक। पुरुख जाति थोड़े परसौतीक हाल बुझैत अछि। जखन हमरा बजबैले आइल तखन बच्चाकेँ एहि धरतीपर ठाढ़ करब हमर धर्म भऽ जाइत अछि। सिर्फ बच्चा जनमि गेलासँ तँ नहि होइत। दुनू गोटे गप्प-सप्प करिते छल कि बचेलाल सुति कऽ उठल। केबाड़ बन्ने छल कि दुनू गोटेक गप-सपक आवाज सुनलक। खिड़कीक एकटा पट्टा खोलि हुलकी देलक कि दुनू गोटेकेँ गप्प-सप्प करैत देखलक। केबाड़ खोलि बचेलाल दुनू गोटे लग आबि चुपचाप ठाढ़ भऽ गेल। पुतोहूक दुआरे सुमित्रा बाजलि- "दरबज्जेपर चलू।"

तीनू गोटे दरवज्जापर आबि गप्प-सप्प करए लगल। अपन भार हटबैत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलक- "बच्चा! अछेलालक कनियाँकेँ सन्तान होनिहारि छै। बेचारा, जेहने समांगक पातर अछि तेहने चीजोक गरीब। आशा लगा कऽ अपना ऐठाम आएलहें।

गाममे तँ बहुतो लोक अछि मुदा अनका ऐठाम किऐक ने गेल। जँ हमरापर बिसवास भेलै तँ ने आएल।''

मूड़ी निच्चा केने बचेलाल चुपचाप सुनैत। माएक बात सुनि कहलक- ''जखन तोरा बजबैले एलखुन तँ हम मनाही करबौ।''

''सोझे गेलासँ तँ नइ हेतै। कमसँ कम एक मासक बुतातो चाही कीने?''

''जखन तूँ घरक गारजने छँ तखन हमरासँ पूछैक कोन जरुरी? जे जरुरी बुझै छीही, से कर।''

अछेलालक हृदयमे आशा जागल। मने-मन सोचए लगल जे अखन धरि बुझै छलौं जे गाममे क्यो मदतिगार नहि अछि मुदा से नहि। भगवान केहेन मन बना देलनि जे ऐठाम एलौं। कुस्कुराइत अछेलाल सुमित्राकेँ कहलक- ''बड़ी काल भऽ गेल भौजी, अंगनामे की भेल हेतै, सेहो देखैक अछि तँ आव नइ अँटकब। चलू, अहूँ चलू।''

सुमित्रा- ''बौआ! अहाँ आगू बढ़ू, हम पीठेपर अबै छी।''

अछेलाल आंगन बिदा भेल। सुमित्रा बचेलालकेँ कहए लागलि- ''बच्चा! मनुखेक काज मनुखकेँ होइ छै। आइ जे सेवा करब ओ भगवानक घरमे जमा रहत। महीना दिन हम ओकर ताको-हेर करबै आ खरचो देबै। भगवान हमरा बहुत देने छथि। कोन चीजक कमी अछि।''

बचेलाल- ''माए! तोरा जे नीक सोहाओ, से कर। जा कऽ देखही।''

दरबज्जासँ उठि सुमित्रा अंगनाक काज सम्हारए लागलि। सभ काज सम्हारि सुमित्रा अछेलाल ऐठाम विदा भेलि। मखनी ओसारपर, विछान बिछा, पड़लि। पहुँचते सुमित्रा मखनीकेँ पूछलि- ''कनियाँ, दरदो होइए?''

कर घूमि मखनी बाजलि- ''दीदी, अखन तँ दरद नइ उपकल हेन, मुदा आगम बुझि पड़ैए।''

मखनीकेँ दूटा संतान भऽ चुकल छल तँ आगम बुझैत। सुमित्रा अछेलालकेँ कहलक- ''ऐठाम हम छीहे। अहाँ पलहनिक ऐठाम जा बजौने आउ?''

अछेलाल पलहनिक ऐठाम विदा भेल। मुदा पलहनि ऐठाम जेबा लेल डेगे ने उठैत। मनमे होइ जे दशमी डगरक सिदहा नै दऽ सकलियेक, तँ ओ आओत की नहि? मुदा तइयो जी-जाँति कऽ विदा भेल। भरि रास्ता विचित्र स्थितिमे अछेलाल पड़ल रहए। एक दिशि सोचैत जे जँ पलहनि नहि आओत तँ बेकार गेनाइ हएत। दोसर दिशि होइ जे जाबे हम इम्हर एलौं ताबे घरपर की हएत की नहि। पलहनिक ऐठाम पहुँचते अछेलाल देखलक जे पलहनि मालक थैरिक गोबर उठा, पथियामे लऽ खेत विदा भेलि अछि। जहिना न्यायालयमे अपराधीकेँ होइत तहिना अछेलालोकेँ बुझि पड़ैत। मुदा तइयो साहस कऽ पलहनिसँ कहलक- ''कने हमरा ऐठाम चलू। भनसिया कऽ दरद होइ छै।''

''माथपर गोबरक छिट्टा नेने पलहनि उत्तर देलक- ''हम नइ जेबनि। डगरक सिदहा हमर बाँकिये अछि। पेट-बान्हि कतेक दिन काज करबनि।''

पलहनिक बात सुनि अछेलाल अपन भाग्यकेँ कोसैत। भगवान केहेन बनौने छथि जे जकरा-तकरासँ दूटा बात सुनै छी। मुँह सिकुड़ियबैत अछेलाल फेरि कहलक- ''कनियाँ, अइ साल सिदहा नइ दऽ सकलियनि, तँ कि नहि देबनि। समए-साल नीक हएत तँ अगिला साल दोबर देबनि। समाजमे सभक उपकार सभकेँ होइत छैक। चलू, चलू....।

खिसिया कऽ पलहनि डेग बढ़बति बाजलि- ''किन्नहु नहि जेवनि।''

एक टकसँ अछेलाल पलहनिकेँ देखैत रहल। देहमे जना एको मिसिया तागते ने बुझि पड़ै। हताश भऽ दुनू हाथ माथपर लऽ अछेलाल बैसि सोचए लगल जे आब की करब? आशा तोड़ि घर दिशि विदा भेल। आगू मुँहे डेगे ने उठै, पाएर पताइत। जना बुझि पड़ै जे आँखिसँ लुत्ती उड़ैए। कहुना-कहुना कऽ अछेलाल घरपर आएल।

तेसर सन्तान भेने मखनीकेँ दरदो कम भेलै आ असानीएसँ बच्चो जनमल। अपना जनैत सुमित्रा सेवोमे कोनो कसरि बाकी नहि रखलखिन। डेढ़ियापर अबितहि अछेलालकेँ बुकौर लगि गेलै। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर टघरए लगल। अंगना आवि मुस्कुराइत सुमित्रा बाजलि- ''बौआ, ककरो अहाँ अधला केने छी जे अधला हएत। भगवान बेटा देलनि। गोल-मोल मुँह, मोटगर-मोटगर दुनू हाथ-पाएर छैक।''

आशा-निराशाक बीच अछेलालक मन उगए-डूबए लगल। हँसी होइत सुख निकलए चाहैत जबकि आँखिक नोर होइत दुख।

बेटा जनमितहि सुमित्राक अंगनाक टाटपर बैसल कौवा दू बेरि मधुर स्वरमे बाजल। कौवाक बोली सुनि बचेलालक मुहसँ अनायास निकलल- ''अछेलाल काका कऽ बेटा भेल।''

मुँहसँ निकलितहि बचेलाल आँखि उठा-उठा चारु कात देखए लगल जे क्यो कहलक नहिये तखन मुँहसँ किऐक निकलल? आंगनसँ निकलि बचेलाल टहलैत डबराक कोन लग आएल। कोनपर ठाढ़ भऽ हियासए लगल जे बच्चाक जन्म भेलि आ कि दरदे होइत छै। सुमित्रा ओछाइन साफ करैत। अगियासी जोड़ैले अछेलाल डेढ़ियापर जारन आनए गेल कि बचेलालपर नजरि पड़ल। नजरि पड़ितहि अछेलाल, थोड़े आगू बढ़ि, बचेलालकेँ कहलक- ''बौआ, छौँड़ा जनमल।''

लड़काक नाम सुनितहि बचेलालक मोनमे आएल जे जा कऽ देखि आबी। मुदा सोचलक जे अखन जा कऽ देखब उचित नहि। चोट्टे घुमि आंगन आवि पत्नीकेँ कहलक- ''अछेलाल काकाकेँ बेटा भेल।''

बेटाक नाम सुनितहि मने-मन असिरवाद दैत रुमा बाजलि- ''भगवान जिनगी देथुन।''

बच्चाक छठियार भऽ गेल। सुमित्रा अपन अंगनाक काज सम्हारि अछेलालक आंगन पहुँचली। गोसाई लुक-झुक करैत। पतिआनी लगा बगुला पछिमसँ पूब मुँहे उड़ैत अपनामे हँसी मजाक करैत जाइत। कौआ सभ धिया-पूता हाथक रोटी छीनैले पछुअबैत। जेरक-जेर टिकुली गोलिया-गोलिया उपरमे नचैत। सुरुज अराम करैक ओरिआनमे लगल। अछेलालक बीच आंगनमे बोरा बिछा सुमित्रा बच्चा कऽ दुनू जाँघपर सुता जतबो करति आ घुनघुना क गेबो करथि-

गरजह हे मेघ गरजि सुनाबह रे
ऊसर खेत पटाबह, सारि उपजावह रे
जनमह आरे बाबू जनमह, जनमि जुड़ाबह रे
बाबा सिर छत्र धराबह शत्रु देह आँकुश रे
हम नहि जनमब ओहि कोखि अबला कोखि रे
मैलहि बसन सुतायत, छौँड़ा कहि बजायत रे
जनमह आरे बाबू जनमह जनमि जुड़ाबह रे
पीयर बसन सुताबह बाबू कहि बजावह रे

झुमि-झमि सुमित्रा गबितो आ बच्चाकेँ जँतबो करति। आँखिसँ आँखि मिला स्नेहक बरखा बरिसबैत। बच्चाकेँ कोनो तरहक तकलीफ नहि होइ तेइले मुँह दिशि देखैत। टाटक अढ़मे बैसि अछेलाल सुमित्राकेँ स्नेह देखि, दुनियाँ कऽ बिसरि आनन्द लोकमे बिचरैत।

(२)

रवि दिन रहने बचेलाल अबेर कऽ उठल। मनमे यएह सोचि विछानपर पड़ल, जे आइ स्कूल नहिये जाएब। घरपर कोनो अधिक काजो नहिये अछि। मात्र एक जोड़ धोती, एक जोड़ कुरता आ एक जोड़ गंजियेटा खिंचैक अछि। दुपहर तक तँ काजो एतवे अछि। बेरु पहर हाट जा घरक झूठ-फूस समान कीनि आनब। हाटो दूर नहि, गामक सटले अछि। सुति उठि बचेलाल नित्य-कर्मसँ निवृत भऽ दलानक चैकीपर आबि बैसल। रुमा चाह दऽ गेलनि। दू घोंट चाह पीबितहि बचेलालकेँ पिता मन पड़ि गेलखिन। पिता मन पड़ितहि बचेलाल अपन तुलना पितासँ करए लागल। मने-मने सोचए लगल जे पिता साधारण किसान छलाह। पढ़ल-लिखल ओतबे जे नाम-गाम टो-टा कऽ लिखि लथि। काजो ओतबे रहनि जे कहियो-काल रजिष्ट्री ऑफिस जा सनाक बनथि। भरि दिन खेतीसँ लऽ कऽ माल-जालक सेवामे व्यस्त रहैत छलाह। मुदा एत्ते

गुण अवश्य छलनि जे गाममे कतौ पनचैती होइत वा कतौ भोज-भात होइत वा समाजिक कोनो दशनामा काज होइत तँ हुनका जरुर बजाओल जाइन। ततबे नहि, बूढ़-पुरान छोड़ि क्यो नाम लऽ कऽ सोरो नहि पाड़ैत छलनि। अपन संगतुरिया भाय कहनि आ धिया-पूतासँ चेतन धरि गिरहत बाबा, गिरहत काका कहनि। परिवारे जेकाँ समाजो कऽ बुझैत छलथिन। मुदा हम शिक्षक छी। अपन काजक प्रति इमानदार छी। बिना छुट्टिये एक्को दिन ने स्कूलमे अनुपस्थिति होइ छी आ ने एको क्षण बिलम्बसँ पहुँचै छी। जते काल स्कूलमे रहै छी, बच्चा सभकेँ पढ़विते छी। जना आन-आन स्कूलमे देखै छी जे शिक्षक सभ कखनो अबै छथि, कखनो जाइ छथि आ इस्कूलेमे ताशो भँजैत छथि। ओना हमहूँ ककरो उपकार तँ नहिये करै छी किऐक तँ दरमाहा लऽ काज करैत छी। आन शिझकक अपेक्षा इमानदारीसँ जीवितहुँ अपना पैघ कमी बुझि पड़ैत अछि। ओ कमी अछि समाजमे रहि समाजसँ कात रहब। स्कूलक समए छोड़ि दिन-राति तँ गामेमे रहै छी मुदा ने क्यो टोक-चाल करैए आ ने क्यो दरवज्जापर अबैए। मनमे सदिखन रहेए जे कमाई छी तँ दू-चारि गोटेकेँ चाह-पान खुआबी-पीआबी। मुदा क्यो कनडेरियो आँखिये नहि तकैत अछि। हमहूँ तँ ककरो ऐठाम नहिये जाइ छी। चेतन सभक कहब छनि जे दुआर-दरबज्जाक इज्जत छी चारि गोटेकेँ बैसब। मुदा से कहाँ होइए। गाम तँ शहर-बजार नइ छी जे एक्के मकानमे रहितहुँ, आन-आन क्षेत्रक रहने, लोक आन-आन भाषा बजैत, आन-आन चलि-ढालिमे अपन जिनगी वितवैत, ककरो क्यो सुख-दुखमे संग नहि होइत! मुदा समाज तँ से नहि छी? बाप-दादाक बनाओल छी। एक ठाम सइयो-हजारो बर्खसँ मिलि-जुलि कऽ रहैत अएलाह। रंग-विरंगक जातियो प्रेमसँ रहैत अछि। सभ सभकेँ सुख-दुखमे संग रहैत अछि। बच्चाक जन्मसँ लऽ कऽ मरण धरि संग पूरैत अछि। ऐहन समाजमे, हमर दशा ऐहन किऐक अछि? जहिना पोखरिक पानिक हिलकोरमे खढ़-पात दहाइत-भसिआइत किनछरि लगि जाइत तहिना तँ हमरो भऽ गेल अछि। की पानियेक हिलकोर जेकाँ समाजोमे होइत छैक? जँ पानियेक हिलकोर जेकाँ होइत छैक तँ हम ओहि हिलकोर कऽ बुझैत किऐक ने छी? हमहू तँ पढ़ल-लिखल छी।

जत्ते समाजक संबंधमे बचेलाल सोचैत तत्ते मन मलिन होइत जाइत। मुदा बुझि नहि पबैत। अधा चाह पीलाक बाद जे गिलासमे रहल ओ सरा कऽ पानि भऽ गेल। ने चाहक सुधि आ ने अपन सुधि, बचेलालकेँ। जना बुझि पड़ैत जे हम ओहन बनमे बौआ गेलहुँ जतए एक्कोटा रस्ते ने देखैत छी। गंभीर भऽ बचेलाल बड़बड़ेबो करैत आ अपने-आपमे गप्पो करैत।

आंगनसँ सुमित्रा आबि बचेलालकेँ देखि पूछलखिन- ''बच्चा, कथीक सोगमे पड़ल छह? किछु भेलह हेन की?''

बचेलालक मुहसँ निकलल- ''नहि माए! भेल तँ किछु नहि। मुदा गामक किछु बात मोनमे घुरिआइत अछि। जकर जबाब बुझिते ने छी।''

तारतम्य करैत सुमित्रा कहए लगलखिन- "गाममे तँ बहुत लोक रहैत अछि मुदा सभ थोड़े गामक सब बात बुझै छै। गाममे तीनि तरहक रास्ता छैक। पहिल ओ जहिसँ समाज चलैत अछि। दोसरसँ परिवार चलैत आ तेसरसँ मनुक्ख चलैत अछि। मनुक्ख अपन चलि परिवारक चालिमे मिला कऽ चलैत अछि। तहिना परिवार समाजक चालिसँ मिला कऽ चलैत अछि तँ, तीनूक अलग-अलग चालि रहनहुँ ऐहन घुलल-मिलल अछि जे सभकँ बुझवोमे नहि अबैत।"

मुँह वाबि बचेलाल माएक बात सुनि, कहलकनि- "माए, तोरो बात हम नीक-नहाँति नहि बुझि सकलहुँ। मनमे यएह होइ अए जे किछु बुझिते ने छी। अन्हारमे जना लोक किछु ने देखैत, तहिना भऽ रहल अछि।"

मूड़ी डोलबैत सुमित्रा कहए लगलखिन- "अपने घरमे देखहक- दूटा बच्चा अछि, ओकर तँ कोनो मोजरे नहि। तीनि गोटे चेतन छी। तोँ भरि दिन इस्कूलेक चिन्तामे रहै छह। भोरे सुति उठि कऽ नओ बजे तक, अपन सभ क्रिया-कर्मसँ निचेन भऽ खा कए इस्कूल जाइ छह। चारि बजे छुट्टी होइ छह। डेढ़ कोस पाएरे अबैत-अबैत साँझ पड़ि जाइ छह। घरपर अबैत-अबैत थाकियो जाइत हेबह। पर-पखानासँ अबैत-अबैत दोसर साँझ भऽ जाइ छह। दरबज्जापर बैसि, कोनो दिन 'रमायण' तँ कोनो दिन 'महाभारत' पढ़ै छह। भानस होइ छै खा कऽ सुतै छह। फेरि दोसर दिन ओहिना करै छह। एहिना दिन बीतैत जाइ छह। दिनेसँ मास आ मासेसँ साल बनैत छैक। कोल्हुक बड़द जेकाँ घरसँ इस्कूल आ इस्कूलसँ घर अबै-जाइत जिनगी बीति जेतह। मुदा जिनगी तँ से नहि थिक? जिनगी तँ ओ थिक- जना बसन्त ऋृतु अबिते गाछ-विरीछ नव कलश लऽ बढ़ैत अछि, तहिना मनुक्खोक गति अछि। जिनगीक गतिये मनुक्खकँ ब्रह्माण्डक गतिसँ मिला कऽ लऽ चलैत। अज्ञानक चलैत मनुक्ख, एहि गतिकँ नहि बुझि, छुटि जाइत अछि। छुटैक कारण होइत व्यक्तिगत, परिवारिक आ सामाजिक जिनगी। जे सदिखन आगूक गतिक पाछु मँहे धकेलति अछि। जहिसँ मनुख समएक संग नहि चलि पबैत। मुदा तइसँ की? बाधा कतबो पैघ किऐक ने हुअए मुदा मनुखोकँ साहस कम नहि करक चाही। सदिखन सभ अंगकँ चैकन्ना कऽ कए चललासँ सभ बाधा टपि सकैत अछि। पुतोहूए जनिकँ देखुन। भरि दिन भनसा आ धिये-पूतेक आइ-पाइमे लगल रहैत छथुन। हमरो जे शक लगैए से करिते छी। घर तँ कहुना चलिये जाइ छह। मुदा परिवार तँ समाजक एक अंग छी। परिवारेक समूह ने समाज छी। तँ समाजक संग चलैक लेल परिवार कऽ समाजक रास्ता धड़ए पड़त। से नहि भऽ रहल छह। जना देखैत छहक जे रेलगाड़ीमे ढेरो पहिया आ कोठरी होइ छै। जे आगू-पाछू जोड़ल रहै छै। मुदा चलै काल सभ संगे चलै छै। तहिना मनुक्खो छै।"

सुमित्राक बात सुनि बचेलाल जिज्ञासासँ पूछल- "अपन परिवारक की गति अछि?"

मुस्कुराइत सुमित्रा कहए लागलि- "अपन परिवार ठमकल अछि। ओना बुझि पड़ैत हेतह जे आगू मुँहे जा रहल छी, मुदा नहि। तोरा बुझि पड़ैत हेतह जे शिक्षक छी, नीक नोकरी करै छी। नीक दरमहो पबै छी। हँ, ई बात जरुर अछि। मुदा अपनो सोचहक जे जखन हम पढ़ल छी, बुद्धियार छी। तखन हमरा बुद्धिक काज कैक गोटे कऽ होइ छै। जे क्यो नहिये पढ़ल अछि ओहो तँ अपन काज, अपन परिवार चलबिते अछि। कने नीक कि कने अधला सभ तँ जीवे करैत अछि। आइ तोरा नोकरी भऽ गेलह, तँ ने, जँ नोकरी नइ होइतह तखन तँ तोहूँ ओहिना जीवितह जहिना बिन पढ़ल-लिखल जीवैत अछि। एहिना पुतोहू जनीकेँ देखुन, जना घरसँ कोनो मतलबे नहि अछि। हमरो बिआह-दुरागमन भेल छल। हमहूँ कनियाँ छलौं मुदा आइ जे घरमे देखै छिअह तना तँ नहि छल। जखन हम नैहरसँ ऐठाम एलहुँ तखन भरल-पूरल घर छल। सासु-ससुर जीविते रहथि। जखन चारि दिनक बाद चुल्हि छूलौं, तहियासँ सासु कहियो चुल्हि दिशि नहि तकलनि। ने कोठीसँ चाउर निकालि कऽ देथि आ ने किछु कहथि। जेहने परिवार नैहरक छल तेहने एतुक्को छल। जे सभ काज नैहरमे करै छलौं सएह सभ काज अहूठीम छल। अपन घर बुझि एकटा अन्न आकि कोनो वस्तु दुइर नहि हुअए दैत छलियेक। अखन देखै छिअह जे पाँचे गोटेक परिवार रहनहुँ सभ सबसँ सटल नहि, हटल चलि रहलह हेन। सटि कऽ चलैक अर्थ होइत सभ सब काजमे जुटल रही। ई तँ नहि कि क्यो काजक पाछू तबाह छी आ क्यो बैसले छी। परिवारक सभकेँ अपन सीमा बुझि चलक चाही, से नहि छह। हम खेलहुँ कि नहि, तोँ खेलह कि नहि। भनसिया लेल धन्य सन। की खाएव, कोन वस्तु शरीरक लेल हितकर हएत कोन अहितकर, से सभ बुझैक कोनो मतलवे नहि। जे खाईमे चसगर लागत, भलेहीं ओ अहितकरे किऐक ने हुअए, वैह खाएब। जहिसँ घरमे बीमारी लधले रहै छह। जहिना सुरुजक किरिणकेँ देखै छहक जे अनेको दिशामे चलैत तहिना परिवारोक काज सभ दिशा कऽ जोड़ैत अछि, से नहि भऽ रहल छह।"

बिचहिमे बचेलाल माएकेँ पूछलक- "माए! नीक-नाहाँति तोहर बात नइ बुझि रहलौं हेन?"

बचेलालक बातकेँ तारतम्य करैत सुमित्रा कहए लगलखिन- "बच्चा, देखहक जहिना गाममे किछु परिवार आगू मुँहे ससरि रहल अछि तँ किछु परिवार पाछू मुँहे। किछु परिवार ठमकल अछि। जहिसँ गाम आगू मुँहे नहि बढ़ि रहल अछि। तहिना परिवारोमे होइत। परिवारोमे किछु गोटे आगू बढ़ैक चेष्टा करैत तँ किछु आलस अज्ञान आदिक चलैत पाछू मुँहे ससरैत। किछु गोटे अदहा-छिदहामे रहैत। तँ परिवारकेँ जहि गतिमे चलक चाही, से नहि भऽ रहल अछि। ततवे नहि ई रोग मनुक्खक भीतरोमे अछि। किछु लोक अपनाकेँ समएसँ जोड़ि कऽ चलए चाहैत तँ किछु समएक गति नहि बुझि, पाछूऐ मुँहे चलैत। ई बात जाबे नीक जेकाँ नहि बुझबहक ताबे ने मनमे चैन हेतह आ ने आगू मुँहे परिवार बढ़तह।"

माइक बातसँ बचेलालक मन घोर-मट्ठा भऽ गेल। की नीक, की अधला से बुझबे ने करैत। माथ कुरिअबैत बचेलाल माएकेँ कहलक- “माए! जखन मन असथिर हएत तखन बुझा-बुझा कहिहेँ। एक बेरे नइ बुझब, दू बेरे बुझैक कोशिश करब। दू बेरे नइ बुझब तीन बेरे कोशिश करब। मुदा बिना बुझने तँ काज नहि चलत।”

बचेलालक बात सुनि मुस्कुराइत सुमित्रा कहए लगलखिन- “बच्चा जखन तोहर पिता जीविते रहथुन तखन घरमे पाथरक बटिखारा छल। ओहिसँ जोखै-तौलै छलहुँ। एक दिन पति अपने आबि कहलनि जे आब लोहाक पक्की सेर, अढ़ैया पसेरी सभ आइल। हम पूछलिएनि जे पथरक जे सेर, अढ़ैया अछि तकरा फेकि देबै? ओ कहलनि-फेकबै किऐक? लोहा सेर कऽ पथरक सेरसँ भजारि लेब। बटिखारा कम-बेसी हएत, सएह ने हएत, ओकरा अपन बटिखारा हिसाबसँ मानि लेबै। अओर की हेतै। बौआ अखन तोरो मन खनहन नइ छह, जा तोहूँ अपन काज देखह। हमरो बहुत काज अछि। जखन मन खनहन हेतह तखन आरो गप्प करब।”

अनोन-बिसनोन मने बचेलाल कपड़ा खीचैले विदा भेल। आंगन जा बाल्टी-लोटा, कपड़ा आ साबुन नेने कलपर पहुँचल। कपड़ा साबुन कऽ कातमे रखि पहिने कलक चबूतरा साफ केलक। बाल्टीमे पानि भरि सभ कपड़ा कऽ बोइर देलक। एकाएकी कपड़ा निकालि दुनू पीठ साबुन लगा-लगा, बगलमे रखैत। जखन सभ कपड़ामे साबुन लगाओल भऽ गेलै तखन पहिलुका सावुन लगौलहा कपड़ा निकालि खीचए लगल। सुमित्रा खन्ती लऽ बाड़ी ओल उखाड़ए विदा भेलि। बाड़ीमे पतिआनी लगा ओल रोपने रहथि। तीन सलिया ओल। केकटा गाछ फुला गेल। बाड़ीमे सुमित्रा हियासए लागलि जे कोन गाछ खुनी। सभ गाछ डग-डग करैत। पतिआनीक बीचमे एकटा गाछक अदहा पत्ता पिरौंछ भऽ गेल। पात कऽ पीअर देखि सुमित्रा ओइह गाछ खुनैक विचार केलनि। ओल कटि नहि जाए तँ फइलसँ खुनव शुरु केलनि। सात-आठ किलोक हैदरावादी ओल। टोंटी एकोटा नहि। टोंटी नहि देखि सुमित्रा मने-मन सोचए लगली जे टोंटी रहैत तँ रोपियो दैतिऐक मुदा से नहि भेल। ओलक माटि झाड़ि गाछकेँ टुकड़ी-टुकड़ी काटि खधियेमे दऽ उपरसँ माटि भरि देलखिन। सुमित्रा चाहथि जे ओलो आ खन्तिओ ऐके बेर नेने जाएब मुदा से गरे ने लगनि। दुनू हाथसँ ओल उठा एक हाथमे लऽ दोसर हाथसँ खन्ती लिअए लगथि कि ओल गुड़कि कऽ निच्चामे गिर पड़नि। कैक बेर कोशिश केलनि मुदा नहिये भेलनि। तखन हारि कऽ पहिने दुनू हाथे ओल उठा कल लग राखि, खन्ती आनए गेली। खन्तिओमे माटि लगल आ ओलोमे। तँ दुनू कऽ नीक-नाहाँति घुअए पड़त। माए कऽ ठाढ़ देखि बचेलाल हाँइ-हाँइ कपड़ा पखाड़ए लगल। कपड़ा लऽ बचेलाल चारपर पसारए गेल। सुमित्रा ओलकेँ कलक निच्चामे रखि कल चलबए लगली। गर उनटा-उनटा दश-पनरह बेर कल चलौलनि। मुदा तइयो सिरक दोग-दागमे माटि रहबे केलै। तखन ओलकेँ घुसुका बाल्टीमे पानि भरि लोटासँ ओलो, खन्तिओ आ अपनो हाथ-पाएर धोलनि। आंगन आबि सुमित्रा

पुतोहूकेँ कहलखिन- ''आइ रवियो छी, बच्चो गामेपर रहता तँ ओलक बड़ी बनाउ। बड़ निम्मन ओल अछि तँ दू चक्का तड़ियो लेब।''

सुमित्राक बात सुनि मुँह-हाथ चमकबैत पुतोहू उत्तर देलखिन- ''हिनका हाथमे सरर पड़ल छनि तँ कब-कब नइ लगै छनि। हमरा तँ ओल देखिये कऽ देह-हाथ चुलचुलाए लगैए। अपने जे मन फुड़ैन से बनबथु। हम चुल्हि पजारि ताबे भात रन्है छी। सभकेँ नवका चीज नीक लगै छै हिनका पुरने नीक लगै छन्हि।''

पुतोहूक बात सुनि सुमित्रा मने-मन सोचए लगली जे जाबाव दिअनि आकि नहि? समएपर जँ जबाव नहि देब तँ दबब हएत। मगर जबाव देनहु तँ झगड़े हएत। अपना जे इच्छा अछि वएह करब मुदा बाता-बातीसँ तँ काजे रुकत। जत्ते बनबैमे देरी हएत तते भानसोमे अबेर हेतै। मुदा सुमित्राक मन जबाव देइले तन-फन करैत। ओल कऽ बीचो-बीच काटि, चारि फाँक करए लगली ओलक सुगंध आ रंग देखि सुमित्रा जबाव देलखिन- ''कनियाँ, जे चीज सभ दिन नीक लागल ओ आइ अधला कोना भऽ जाएत? जाबे जीबै छी ताबे तँ खेबे करब। तोँ जकरा अधला बुझै छहक ओ अधला नहि छी। दुनू गोटेक नजरिमे अन्तर छह। जे अन्तर नीक-अधलामे बदलि गेल छह। दुनू गोटेक नजरि, एहि दुआरे दू रंग भऽ गेल छह जे दुनू गोटेक जिनगी दू रंग बीतल। तोँ नोकरिहाराक परिवारक छह हम गिरहत परिवारक। तोहर बाप नगद-नरायण कमाइ छथुन जहिसँ हाट-बजारसँ समान कीनि आनि खाइ छेलह। हम तँ सामान उपजवैबला परिवारमे रहलहुँ। कोन वस्तु कोना रोपल जाइ छै, कोना ओकर सेवा करए पड़ैत छै, से सभ वुझै छियै। तँ हमर नीक आ तोहर नीकमे यएह अन्तर छह।''

दुनू सासु-पुतोहूक गप-सप बचेलालो दरवज्जापरसँ सुनैत। बीच आंगनमे बैसि सुमित्रा ओल बनबैत रहथि। घरमे पुतोहू भन-भना कऽ बजैत रहथि, जे सुमित्रा नीक जेकाँ सुनवो ने करथि। बच्चा नेने मखनी सेहो आइलि। मखनीकेँ कोरामे बच्चा देखि सुमित्रा दबारैत कहलखिन- ''मासे दिनक बच्चाकेँ अंगनासँ किऐक निकाललह? जँ रस्ता-पेड़ामे हबा-बसात लागि जइतै तब?''

हँसैत मखनी उत्तर देलकनि- ''दीदी! अइ आंगनकेँ अनकर आंगना कहै छथिन। हमर नइ छी? अपनो अंगना अवैमे संकोच हएत।''

मखनीक बात सुनि सुमित्रा मने-मन अपसोच करैत कहलखिन- ''अनकर अंगना बुझि नइ कहलियह। अखन बच्चा छोट छह तँ बचा कऽ राखए पड़तह। बेटा धन छी। घरसँ तँ निकलबे करत। पुतोहूकेँ सोर पाड़ि कहलखिन- ''पहिले-पहिल दिन बच्चा अंगना आएल। तेल-उबटन दहक। अगर उबटन घरमे नइ हुअअ तँ तेलेटा नेने आवह। ताबे चुल्हि मिझा दहक। पहिने बच्चाकेँ जाँति-पीचि दहक।''

घरसँ रुमा तेल आ विछान नेने आबि अंगनेमे विछौलक। तेलक माली लगमे रखि बच्चाकेँ कोरामे लेलक। दुनू पाएर पसारि बच्चाकेँ जाँधपर सुतौलक। बच्चाक

मुँह देखि रुमा मने-मन बाजलि- ''मखनी केहेन भाग्यशाली अछि जे भगवान ऐहन सुन्नर बच्चा देलखिन।'' उनटा-पुनटा कऽ बच्चा देखलक। रुमाक मनमे ऐलै जे कोना लोक बजैए जे फल्लाँक कपार खराब छैक आ फल्लांक नीक? जँ कपार अधला रहितैक तँ बेटी होइतै। जकर कपार नीक रहै छै, ओकरा खाली बेटे होइतै। भगवानक नजरिमे सभ बराबरि अछि। सभ तँ हुनकेँ सनतान छी। कोन पापी बाप ऐहेन हएत जे अपना सन्तानकेँ दूजा-भाव करत? अनेरे लोक, कपार गढ़ि, भगवानकेँ दोख लगबै छन्हि।

सुमित्रा हाथसँ ओलो आ कत्तो लऽ मखनी ओल बनबए लगलीह। ओल देखि मखनी सुमित्राकेँ कहलखिन- ''ओल अंडाइल रोहू माछ जेकाँ बुझि पड़ैत अछि। दीदी 'हाथ धो लथु, हम बना लै छी।''

सुमित्रा हाथ धोए दुनू हाथमे करु तेल लगा अपना पाएरमे हसोथि लेलनि। हाथक कबकबी मेटा गेलनि। विछानपर जा पुतोहूकेँ कहलखिन- ''कनियाँ, बच्चा लाउ। हम जाँति दइ छियै। अहाँ चुल्हि लग जाउ।'' सुमित्रा कोरामे बच्चाकेँ दऽ रुमा चुल्हि पजारए गेलि। सुमित्रा बच्चाकेँ जाँधपर सुतवैत मखनीकेँ कहलखिन- ''कनियाँ, बीचला चक्का ओरिया कऽ काटब। ओ तड़ब। कतका सभ उसनि कऽ बरी बनाएब।''

मुस्की दैत मखनी कहलकनि- ''तेहेन सुन्नर ओल छनि दीदी जे चुल्हिपर चढ़िते गल-बला जेतनि। खेबोमे तेहने सुअदगर लगतनि। अइ आगूमे दुदहो-दहीक कोनो मोल नहि।''

सुमित्रा बच्चाकेँ जतबो करैत आ घुनघुना-घुनघुना गेबो करैत-

'कौने बाबा हरबा जोताओल,
मेथिया उपजाओल हे।
कौने बाबी पीसल कसाय
ओ जे बच्चाकेँ उङारब हे।
बड़का बाबा हरबा जोताओल
ओ जे सरसो उपजाओल हे।
ऐहब बाबी तेल पेरौलीह
बच्चा केँ उङारथि हे।

जाबे मखनी ओल बनौलक ताबे सुमित्रो बच्चाकेँ जाँति-पीचि चानिमे काजरक टिक्का लगा निचेन भेलीह। मखनीक कोरामे बच्चा दऽ सुमित्रा एक-डेढ़ सेर चाउर आ तीमन जोकर ओल दऽ देलखिन।

(३)

अधरतियेमे सुमित्राक निन्न टूटि गेलनि। ओछाइन परसँ उठि आंगन आबि, मेघ दिशि हियासए लगली। अन्हरिया राति। साफ मेघ। सिंगहारक फूल जेकाँ तरेगण चमकैत। घरसँ थोड़े हटल पूबरि भाग बाँसक बीटि। बासँक झोंझमे मेनाक खोंता। एकटा मेना कऽ बाझ पकड़ि उड़ि गेल। बाझकेँ उड़िते आन-आन मेना गदमिशान करए लगल। मेनाक आवाजकेँ सुमित्रा अकानए लगली। भिनसुरका बोली नहि बुझि सुमित्रा सोचए लगलीह जे किछु भऽ गेलै। तैँ एना बजैए। कने काल ठाढ़ भेलोपर रातिक ठेकान नहि पाबि सुमित्रा पुनः ओछाइनपर जा पड़ि रहली। अनायास मनमे एलनि जे जहिना अछेलाल समाजमे रहितो समाजसँ अलग अछि तहिना तँ बचेलालो अछि। ओहि दिन वेचारा सत्ते कहलक जे ने ककरो ऐठाम जाइ छी आ ने क्यो हमरा ऐठाम अबैए। ने ककरोसँ गप्प होइए आ ने गामक कोनो बात बुझै छी। रुमा सेहो उठिकेँ सासु लग ऐली। पुतोहूकेँ सुमित्रा कहए लगलखिन- "जखन दुरागमन भऽ ऐठाम आइल रही तखन दू-तीन साल अंगनेमे रहलौं। अंगनासँ बहार सासु नहि हुअए दथि। वएह सासु बहराक काज सम्हारथि। कातिक मास। छठिक परातेसँ दुनू सासु-पुतोहू सामा गीत गाबी। समाजक सभ स्त्रीगण अपन-अपन अंगनामे सामाक गीत गबथि। ओ आगू-आगू कहथिन हम पाछू-पाछू। तीनि साल एहिना बीतल। चारिम साल सामा भसौनिक दिन हुनकर मोन खराब भऽ गेलनि। तत्ते जोर कफ आ उकासी होइन जे बजले ने होइन। भसाओनिक दिन रहने छोड़लो कोना जइतै। बेरुए पहर ओ एक पाँज धान काटि अनलनि। ओकरा मिड़लहुँ। अदनार धान तँ ताड़ै-भाड़ैक जरुरते नहि। ओ सासु घानी लाड़थि, हम ऊखड़ि-समाठ लऽ कूटी। चूड़ा कुटलौं। बाटीमे अरबा चाउर भीजैले दुपहरे दऽ देने रहिये। ओकर पीठार पीसलौं। गोसांइ लुक-झुका गेल। काजो बहुत रहै तैँ हाँइ-हाँइ करी। तहूमे सासुक मन खराबे रहनि मुदा तइयो संग-साथ देथि। ने अखन धरि समा रंगने छलौं आ ने वृन्दावनक चुगला झड़कबैले बनौने छलौं। किएक तँ घरमे सोन रहबे ने करै। हाँइ-हाँइ सामा-चकेबा सभकेँ पीठारसँ ढ़ौरलौं। ओकरा सुखैले चंगेड़ामे दऽ देलियै। सामा रंगैले एक्केटा पुड़िया गुलाबी रंग रहै। एके रंगसँ रंगलों नइ जाएत। कमसँ कम लाल, हरियर, पीअर आ कारी रंग तँ जरुर चाही। दुनू सासु-पुतोहू गुनधुनमे पड़ल रही। अनाययास हुनका मनमे एलनि जे सीमक पात तोड़ि हरियरका आ सिंगहारक फूलक डंटीसँ पीअरका रंग बनोओल जा सकैत अछि। मन पड़िते ओ दश-बारहटा सीमक पात तोड़ि आनि हमरा पीसैले कहलनि। अपने सिंगहारक गाछ लग जा बसिया फूल बीछि आनलनि। हम सीमक पात पीसए लगलहुँ आ ओ सिंगहारक डंटी तोड़ए लगलीह। मनमे सबुर भेलि। किऐक तँ काजरसँ करिया रंगक काज चलि जाएत। रंग तैयार होइते दुनू गोटे सभकेँ

रंगलौं। रंगल जखन भऽ गेल तखन हुनका मन पड़लनि जे झाझी कुत्ता, ढोलिया आ लड़ूबेचा तँ बनेवे ने केलहुँ। आब की हएत? विधि तँ पुरबए पड़त। गुनधुन करैत सासु कहलनि- ‘‘कनियाँ, कने माटि सानि तीनू बना लिअ। मुदा धड़फड़मे सूखत कोना? तइयो तीनू बनेलहुँ। काँच दुआरे ओकरा नै ढोरलौं आ ने रंगलौं। सभकेँ चंगेड़ामे सरिया कऽ राखि भानसक जोगारमे लागि गेलहुँ। सासु मालक घरमे ओछड़ा दइले गेली हम भानस करए लगलौं। भानस भेलो नइ छल कि उत्तरबारि टोलमे सामा गीत शुरु भेल। बाबू ससुर आ हुनका -पति- खुआ, दुनू गोटे खेलहुँ। थारी-लोटा, बरतन अखारि राखि देलियेक। दीप जड़ेलहुँ। दुनू गोटे गीत गबए बैसलहुँ। जहाँ ओ सासु गोसाउनिक गीत उठौलनि कि उकासी उठलनि। एक लखाइते बड़ी काल धरि खोंखी करिते रहि गेलीह। उकासी बन्ने ने होइन। हम हुनकर छाती दाबि-दाबि ससारए लगलौं। तखन उकासी बन्न भेलनि। उकासी बन्न होइते कहलनि- ‘‘कनियाँ, हमरा गाओल नइ हएत। आइ उसरैए, तँ छोड़बो नीक नइ हएत। जैह अबैए सएह गाबि विधि पूरा लिअ।’’

सासुक आग्रह सुनि तरे-तर खुशी भेलौं, जे हमरो लूरि देखतीह। पहिने तँ थोड़े नाकर-नुकर केलौं जे हमरा गीत नइ अबैए। मुदा फेरि सोचलहुँ जे लूरिकेँ झाँपियो कऽ राखब नीक नहि। गाबए लगलौं। आगू-आगू हम कहियै आ पाछूसँ ओ धरथि। उकासी दुआरे घुनघुनेबे करथि। आंगनमे गोसाउनिक गीति गाबि, चंगेरा उठा बटगबनी गबैत चैमास दिशि विदा भेलौं। चैमास जाइत-जाइत गीतो खतम भेलि। चैमासमे चंगेरा राखि, सामाक गीत शुरु केलहुँ। पहिल गीति समाप्त होइते सासु कहलनि जे लगले सूरे पाँचटा पुरा लीअ’। पहिलुक गीति तँ हुनको अबैत रहनि तँ घुनघुनाइयो कऽ संग पूरि देलनि, मुदा दोसर नहि अबैत रहनि तँ कखनो घुनघुनाइत तँ कखनो चुप भऽ जाथि। हम देखियो कऽ अपना सूरे गबिते रहलौं। जहिना भरल कोठीक मुँह खोललासँ चाउर भुभुआ कऽ निकलैत तहिना हमरो हुअए। एकके सूरे दश-बारहटा सामाक गीत गाबि लेलहुँ। गामक जत्ते सामा खेलेनिहारि रहथि सभ अपन-अपन सामा भसा आंगन गेलीह। हमहूँ सामा भसा सोहर गबैत अंगना विदा भेलौं। एक्के-दुइये गामक गीति गौनिहारि आबए लगली। पाछू-पाछू ओहो सभ भाँज पूरए लगली। एकटा सोहर गाबि दोसर उठेलहुँ। सासुक मन खराब रहनि तँ खिसिया कऽ ओ सुतैले चलि गेलीह पाँचटा सोहर गौलौं। नवकी कनियाँ सभ मुँह दाबि-दाबि बजैत जे दीदी नाचमे रहैत छेलखिन तँ हाथ चमका-चमका गबै छथि। साउसो ओछाइनपर घुनघुना कऽ गवथि। कखनो घरेसँ चाबस्सिओ दऽ दथि। सोहरक बाद समदाउन उठेलहुँ। नवतुरिया सभकेँ भास चढ़वे ने करै। घरेसँ माए कहलखिन- ‘‘ठी-ठी केने समदाउन गौल जाइ छै। मनुख जेकाँ मन असथिर कऽ कऽ गाओले ने होइ छनि।’’ अपन कमजोरी मानि मंगली कहलक- ‘‘भौजी समदाउन छोड़ि एकटा बरअमासा

बारहमासा कहिऔ।'' मंगलीक विचारकेँ सभ समर्थन दैत हूँ-हूँ कारी भरलक। हम बरहमासा शुरु केलौं-

रघुवर जुनि जइयौ मिथिला नगरसँ सिया कोहवरसँ ना।
अगहन सिया के विआह पूस सेजिया लगायब,
माघ सीरक भरबाएव रघुवर क, सिया कोहबरसँ ना।
फागुन फगुआ खेलाएब चैत माला गाँथि लाएब
बैशाख बेनिया डोलाएब रधुवर क, सिया कोहवरसँ ना।
जेठ तबे दिन राति आषाढ़ बरसे दिन राति
सावन झुला झुलाएकेँ, सिया कोहवरसँ ना।
भादव राति अन्हार आसीन आस लगाएब
कातिक चलि जाएब मिथिला नगर से, सिया कोहवरसँ ना।

बारहमासा गबैत-गबैत रातियो बेसी भऽ गेलै आ ओससँ सबहक नुओ सिमसि गेलै। मुदा तइयो उठैले क्यो तैयारे ने होइत। हाँ-हाँ, हीं-हीं सभ करैत। अपनो थाकि गेलहुँ। तखन दुनू हाथ जोड़ि कहलियेक- ''बड़ राति भऽ गेल। अखन जाइ जाउ। काल्हिसँ आबि-आबि सुनवो करब आ सीखवो करब। तखन सभ गेलि। हमहूँ सुतैले गेलहुँ। औझुका जँका ने पढ़ल-लिखल जनिजाति छलि आ ने पढ़ै-लिखैक सुविधा छलै। एक-एकटा गीति सीखैमे कै-कै दिन लागि जाइ छलै। हमहीं जे सीखलौं, ओ माएसँ सीखलौं। काजो करै काल सीखी आ रातिमे खेला-पीला बाद माएकेँ जतैले जाइ तखनो सीखी। जखन गीत इयाद भऽ जाए तखन माएकेँ गावि सुना दियै। दोसरे दिनसँ गीति सीखैले ढेरबासँ लऽ कऽ जुआन कनियाँ धरि आबए लागलि। गामक बेटी सभ तँ जखन-तखन आवि जाए मुदा कनियाँ पुतोहू वर्गक दोसरि तेसरि साँझमे आबै। अंगनाक काज बरदाइत देखि सभकेँ कहि देलियै जे साँझू पहरकेँ आबह। सएह भेल। छह मास धरि सभकेँ गीत सिखेलहुँ। जखन अपने बचेलालक पिता मरि गेलखिन तखन घरक भार पड़ि गेलि। दुनू बच्चा लिधुरिया। की करितौं? खेती-बाड़ीसँ लऽ कऽ अंगना-घरक काज सम्हारए पड़ैत छल। अपने काजमे तेना ओझराए गेलौं जे दोसराक सुधिये ने रहल। समाजमे कतौ विआह होए वा उपनएन, हमरो हकार अबैत छल। हमहूँ जा कऽ गोसाउनिक गीतिसँ लऽ कऽ समदाउन तक गबै छलौं। जे सभ छूटि गेलि। अखनो ओ सभ जँ इमहर अबैए तँ जरुर भेटि करैए। मुदा आब तँ अपने सभकेँ बाल-बच्चा, नाति-पोता भऽ गेलै। सभ अपने-अपने परिवारमे ओझराएल रहैए। हमहूँ बूढ़ि भेलौं तँ पहिलुका जेकाँ काजोमे नै सकै छी। जाधरि गामक लोकसँ लाट रहैत छल ताधरि सभ नीक-अधला बुझैत छलियेक। ककरा ऐठाम पाहुन आएल वा ककरा घरमे कते नोन-तेल खर्च होइ छलै, सभ बुझै छलियेक। समए जिनगी कऽ छोट बना देलक। जाबे जीवै छी ताबे दोसराक भार

नहि बनियेक, तेहिले भरि दिन लुरु-खुरुमे लागल रहै छी। अखनो बाड़ी-झाड़ीमे तीमन-साजन उपजवितै छी। भानसो करिते छी। अंगना-घर बहारिते छी। चिक्कनि माटिसँ घर नीपिते छी। कखनो ई नै बुझि पड़ैए जे अथबल भेलहुँ। जखने काजसँ हटब तखने जिनगी भार बुझि पड़त। जिनगी की थिक? जिनगी तँ यैह थिक जे हँसैत-खेलैत बीता ली। जे अखैन धरि निमहल, आगू बुझल जेतै।''

भोर भऽ गेल। चिड़ै चुनमुनी जुट ग्रुप बान्हि-बान्हि, खोंतासँ निकलि आकासक रास्तासँ पराती गवैत जिनगीक लीला करए विदा भेलि।

(४)

आंगना बहारि सुमित्रा दरबज्जा बाहरै गेलीह। दरवज्जा बाहरैसँ पहिने बड़दपर नजरि पड़लनि। डेढ़ियापर बाढ़नि राखि मुँहपर हाथ दऽ बैसि, मने-मन सोचए लगली। बड़दक दशा देखि सुमित्राक दुनू आखिसँ नोर टघरए लगलनि। ताबे बचेलालो सुति उठि कऽ दरवज्जापर आएल मने-मन सुमित्रा सोचए लगली जे जाबे बचेलालक पिता जीबैत छलथिन ताबे जोड़ा बड़द खूँटापर रहैत छल। दुनू बड़दकेँ खुआ-पीया पट्ठा बनौने रहैत छलाह। ने एकटा कुकुड़माछी देहपर रहए दैत छेलखिन आ ने एकोटा अठगोरबा रहैत छलै। जहिना लोक अपन बच्चाक सेवा करैत अछि तहिना ओ पति गाए-बड़दक सेवा करैत छलाह। जखन अपने जीवैत छलाह हमहूँ जुआन छलौं। दुनू बेकती मिलि घर-अंगनासँ लऽ कऽ खेती-पथारी धरि सम्हारैत छलौं। आब बूढ़ि भेलहुँ आब कोना गाए-बड़दक सेवा कएल हएत? जँ कहीं अनचोकमे लथारे मारि दिअए वा हूरिपेटे दिअए तखन तँ हाथ-पएर तोड़ा घरमे कुहरैत रहब। तइसँ नीक जे ओकरा लग जेबे ने करी। भरि दिन बचेलालो इस्कूले आइ-पाइमे लगल रहैए। पुतोहूओ जनी तेहेन घरसँ आइलि छथि जे गाए-बड़दसँ कहियो भेंटे ने। घास-पात दुआरे खूँटापर बड़द कलपैए। ने एक मुट्ठी क्यो घास देनिहार आ ने एक डोल पानि पिऔनिहार। कखनो एक मुट्ठी घास आगूमे फेकि देलियै तँ कखनो एक डोल पानि पिआ देलिये। एहिसँ गाए-बड़द कोना पोसल जाएत? सुमित्रा सोचवो करैत आ आँखिसँ नोरो टघरैत। दलानक आगूमे बचेलाल दतमैनो करैत आ टहलबो करैत। अछेलालकँ घरमे चून नहि रहने, मुट्ठीमे तमाकुल नेने चून मांगए आएल। सुमित्राक आँखिसँ नोर टघरैत देखि बचेलाल पूछलकनि- ''माए, कनै किअए छँ?''

सुमित्रा किछु नहि उत्तर देलखिन। दुनू आँखिक नोर आँचरसँ पोछि माए बचेलाल दिशि देखए लगली। हाथमे तमाकुल रखने अछेलालो चुपचाप ठाढ़। ने चून मंगैक साहस होइ आ ने किछु बजैत। सुमित्राक मलिन चेहरा देखि अछेलालोक आ

बचेलालोक चेहरा मलिन हुअए लगल। त्रिकोण जेकाँ तीनू गोटे। कियो ने किछु बजैत। कने कालक उपरान्त मिड़मिड़ा कऽ अछेलाल सुमित्रासँ पूछल- "एते सोगाइल किअए छी भौजी? कथीक दुख मनमे अछि?"

पुनः आँचरसँ नोर पोछैत सुमित्रा बाजलि- "एतइ आउ। लगमे बैसू। कहै छी। बौआ बचेलाल तोँहू मुँह-हाथ धोने आवह?"

बचेलाल मुँह-हाथ धोइले कलपर गेल। अछेलाल लगमे आबि सुमित्राकेँ कहलक- "चूनक दुआरे तमाकुलो ने खेलौं भौजी। मन चटपटाइए। पहिने कने चून आनि दिअ।"

"अच्छा बैसू। आंगनासँ नेने अबै छी।" -सुमित्रा कहि आंगन विदा भेलि। डेढ़िये परसँ बचेलाल जोरसँ घरवालीकेँ चाह बनौने अबैले कहलक। दू घुस्सा दऽ अछेलाल तमाकुल चूना ठोरमे लेलक। दुनू गोटेकेँ सुमित्रा कहए लगलखिन- "एक समैक बात छी। हमरा नैहरमे एकटा गौर बाछी बाबू देने रहथि। बड़ सुन्नर बाछी छलै। छह मास पोसलौं तखन पाल खेलक। ठीक नओ मास पूरिते बाछी तरे बिआइल। बड़ दूधगरि गाए भेल। दू सेर भिनसर आ डेढ़ सेर बेरु पहरकेँ दूध हुअए। गाए तँ गाइये छल। जखन बेगरता हुअए तखन पाभरि-आसेर दुहि ली। बड़ सहठुल छल। एगारह बिआन बिआएल। जहाँ तीनि मास बियेना होइ कि पाल खा लिअए। पाल खेलापर छह मास लगैबो करए। जखन तीनि मास बिआइले बाकी रहै छलै तखन अपने दुहब छोड़ि दइ छेलिये। जहिना नाम गाए तहिना सज्जनो। खाइओ पीबैमे कोनो चीज बगै नइ छलै। लत्ती-कत्तीसँ लऽ कऽ तीमन तरकारीक छाँट-छुँट आगूमे दइते लप दे खा लैत। तीनि मास बियेना भेलै कि बड़ जोर दुखित पड़ल। गामक लोक सभ जे-जे दवाई बतौलक सभ केलियै मुदा दुख घटैक बदला बढ़िते गेलै। मनमे हुअए जे कोन जनममे पाप केलहुँ जे ऐहेन लागल फुलवाड़ी उजड़ि रहल अछि। दुनू परानीक आशा टूटि गेल। सोगे अन्नो-पानि नीकि नहि लगए। बच्चाकेँ देखि दयासँ हृदय पधिल गेल। गाए अपने दुखसँ तबाह तँ बच्चाकेँ कोना लगमे जाइ दितै। जना बच्चा परसँ सुरता हटि गेलै। सिरियाक गाए विआइल रहै। ओकरेसँ पाभरि कऽ दूध ली आ बच्चाकेँ खुरचनसँ पीआवी। मुदा पाभरिसँ बच्चाकेँ की होइतै? फुलकीबला घास आ खिचड़ीक आदति रसे-रसे लगबए लगलौं। पड़ले-पड़ल गाए डिरियेबो करै आ चारु टाँगो पटकै। मनमे हुअए जे नैहरक गाए छी जँ मरि जाएत तँ नैहराक लोक कहत जे धारबे ने करै छै। मुँहसँ फुफड़ी उड़ाए। हमरोसँ बेसी हुनके पति चिन्ता होइन। सोगे सदिखन चैकीपर पेटकानो लधने आ कुही भऽ भऽ कनबो करथि। बेर टगिते एकटा महात्मा दाढ़ी-केश बढ़ौने रस्ते-रस्ते कतौ जाइत रहथि। महात्माक नाम देवन छलनि। गाइक डिरियेनाइ सुनलखिन। थोड़ेखान रस्तापर ठाढ़ भऽ हियासलनि। तखन ससरि कऽ दुआरपर ऐला। मुड़ी गोति हम अथाह दुखमे

डूबल रही। दुआरपर अबिते देवन निङहारि-निङहारि गाए कऽ देखए लगलखिन। कने काल गुम्म भऽ पूछलनि- "कते दिनसँ गाए अस्सक अछि?"

कँपैत मनसँ कहलियनि- "सात दिनसँ।"

पुनः पूछलनि- "घरवाड़ी कहाँ छथि?"

हाथक इशारासँ चैकीपर देखा देलियनि। हाथेक इशारासँ ओहो हुनका लग अबैले कहलखिन। लग अबिते मुस्कुराइत कहलखिन- "गाए मरत नइ। दुनू बेक्ती मनसँ दुख हटाउ।"

कहि अपना झोरासँ कथूक जड़ि निकालि दऽ कहलखिन- "एकरा सिलौटपर खूब हलसँ पीसने आउ?"

ओहि जड़ी कऽ धोए, सिलौट परसँ पीसने एलौं। भरि गिलास पानिमे ओहि जड़ीकेँ घोड़ि गाएकेँ पीआ देलखिन। तीनू गोटे गप्प-सप्प करए लगलौं। कनिये खानक बाद गाइक डिरिआइब बन्न भेलै। आँखि उठा कऽ गाए बच्चा दिशि तकलक। बच्चापर नजरि पड़िते हुकड़ल। बच्चो बोली देलकै। बाछीकेँ खुजले छोड़ि देने रहियै। दौड़ि कऽ बाछी गाए लग आबि ठाढ़ भऽ गेलै। चारु टाँग समेटि गाए ओरिया कऽ बैसल। गरदनि उठौलक। उठल गरदनि देखि कतौसँ परान आएल। मनमे खुशी भेल। पति अपने कहलनि- "गाएक रोग छुटि रहल अछि। आब गाए बँचि जाएत।"

एत्ते कहिते छलाह कि गाए उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलि। मुदा चारु टाँग थरथराइते रहै। नेरु गाएक थन दिशि बढ़ए लगल कि अपने डोरी गला देलखिन। घरसँ घास आनि हम आगूमे दलियै। गाए खाए लागलि। हमर करेज चमकि उठल। जहिना जाड़क मासमे करिया पहाड़पर ओस पसरल रहैत आ सुरुजक रोशनी पड़िते चानी जेकाँ चमकए लगैत, तहिना भेल। अपने देवनकेँ कहलखिन- "महात्माजी! अपने भोजन कऽ लेल जाउ।"

हँसैत देवन उत्तर देलकनि- "भोजन जरुर करब, मुदा एहि गाएक दूधक खीर खाएब। ताबत एक लोटा जल पिआ दिअ।"

महात्माजीक बात सुनि दुनू परानीक मोन बिहुँसि उठल। घरक काते-काते जे घास रहै ओकरा नोचि-नोचि हम गाइयक आगूमे दिअए लगलियै आ अपने बाँसक पत्ता तोड़ए गेलाह। आहूल भरि घास गाइयक आगूमे दियै आ ओ लप दे खा जाएत। पँजरामे पँजरा जे सटल रहै से अलगए लगलै। इनारसँ पानि भरि अनलौं। आगूमे दइते बाल्टीओ भरि पी लेलक। फेरि एक बाल्टीन अनलौं, सेहो पी गेल। ताबे अपनो पात अनलनि। दुनू गोटे पात खोंटि-खेंटि दिअए लगलियै। अधा बोझ पात खा गेल। तखन देवन कहलनि जे आब दुहि लीअ। थन लटकि कऽ ठेहुन लग चल आएल रहै। बच्चा कऽ डोरी छिटिका देलियै। दौड़ कऽ बच्चा पीबए लगलै। अपने दुहए लगलथि। बाल्टीन भरि गेल। दूध देखि मनमे भेलि जे दुखीत गाएक दूधो तँ दूषिते हेतै। मुदा देवन-महात्माजी कहलनि जे दवायक गुण तँ सेहो दूध तक पहुँच गेल

हेतै। तीनि दिनक भूखल दुनू परानी सेहो रही। जाबे गाए दुखित रहै ताबेतक भूखो नइ बुझियै, मुदा अपनो भूख जगल। अपने भानस करए गेलहुँ आ ओ पति देवनसँ गप्प-सप्प करए लगलथि। सभटा दूधक खीर रन्हलौं। पहिने माहात्माजीकेँ खुआ अपने दुनू बेकती खेलौं। ओहि गाइक जरोह ई बड़द छी। जेकर दशा देखि पैछला सभ बात मन पड़ि गेलि तँ आँखिमे नोर आबि गेलि।''

रुमा चाह नेने आइलि। सभ क्यो चाह पीबए लगल। चाह पीबि अछेलाल तमाकू चुनवए लगल। तमाकुल चुना कऽ खा सुमित्राकेँ पूछल- ''तकर बाद की भेलै?''

सुमित्रा बजलीह- ''खेला-पीला बाद देवन विदा हुअए लगलाह। हम झोरा पकड़ि कहलियनि कमसँ कम आइ भरि रहि जाउ। काल्हि चल जाएब।'' मानि गेला। खा-पी कऽ रातिमे ओ देवन अपन जिनगीक कथा कहए लगलथि। दुनू परानी सुनिनिहार रही आ ओ कहनिहार। कहए लगलथि- ''जखन हम दशे वर्खक रही तखने माइओ आ बाबूओ दुखित पड़लथि। हम कमाई-खटाई जोकर नहि रही। हुनके माए-बाबूजी कमाइसँ घर चलैत छल। अनायास दुनू गोटे दुखित पड़ि गेलथि। खाइले घरमे किछु रहबे ने करए। एक तँ दुखसँ दुनू गोटे अब-तब करैत दोसर पेटमे अन्न नहि। सिर्फ पानिटा दियनि। हमहूँ सदिखन लगेमे रहैत छलियनि। हुनका सभकेँ छटपटाइत देखियनि तँ हमरो दुख हुअए। मुदा की करितहुँ? कोनो रस्ते ने सुझैत। पाँचम दिन दुनू गोटे मरि गेला। जाबे दुखित रहथि ताबे समाजक क्यो ने अबैत छल आ ने किछु मदति करैत। मुदा जखन मरि गेला तखन जिज्ञासा करए किछु गोटा ऐला हमहूँ ककरो ने किछु कहलियेक। मनमे आएल जे जइ समाजमे क्यो ककरो देखैबला नहि ओहि समाजमे रहिए कऽ की करब? दुनू गोटे घरेक बिछानपर मुइला? हमरो हड़ल ने फूड़ल जते अंगनाक टाट-फड़क रहै सभकेँ उजाड़ि घरमे दऽ देलियै। मनमे आइल जे जरबैकाल नव-वस्त्र हेबाक चाही? मुदा सोचलौं जे जीबैतमे तँ दुनू गोटे फाटल-पुरान कपड़ा पहिरलथि मुदा जरैले नव वस्त्रक कोन जरुरी छै? सभ समान जमा कऽ कऽ घरमे आगि लगा देलियै। जखन आगि पजड़ल तखन अंगनामे एकटंगा दऽ हाथ जोड़ि संकल्प केलहुँ जे अइ समाजमे नै रहब। जै समाजमे लोक अन्न बिना काहि कटैत, वस्त्र बिना नांगट रहैत, दवाइ बिना रोगसँ मरैत ओहि समाजमे एको क्षण रहब कायरता छी। आंगनसँ विदा भऽ गेलौं। जाबे गामक सीमाक भीतर रही ताबे घुरि-घुरि पाछूओ ताकि आगि देखियै मुदा जखन गामक सीमानपर पहुँच गेलौं तखन तक घरो जरि चुकल छल। गामक सीमानेपर ठाढ़ भऽ, दुनू हाथ जोड़ि, पाँच ठोप नोर चुवा, माए-बाबूक सराध कऽ विदा भऽ गेलौं। गामक सीमा टपिते मनमे हिलोर उठए लगल। एकटा फूलक गाछ, रासताक बामा भाग, देखलियेक। बड़ सुन्दर गाछ छलैक। निच्चोमे हरियर कचोर दूबि पसरल छलै। नीक जगह देखि ओहि गाछक निच्चामे वैसि गेलौं। मनमे भेल जे दुनू गोटे माए-बावू पछुएने आवि, गाछपर चढ़ि गेला। आँखि उठा

कऽ उपर तकलौं। किछु ने देखलियेक। एकटा भोम्हरा उड़ि-उड़ि फूलक रस पीबैत। सिहकी चलैत रहै। ओहि सिहकीक लहरिमे किछु आवाज होइत रहै। साकांछ भऽ कानपर हाथ दऽ ओहि आवाजकेँ सुनए लगलौं। आवाज पिताक बुझि पड़ल। आवाज परेखि आरो ध्यानसँ सुनए लगलौं। बुझि पड़ल जे बावू किछु कहि रहल छथि। मुदा स्पष्ट बुझबे ने करियै। मने-मन कहलिएनि- "अपन पाँच बुन्न नोर चुबा हम अपन कर्तव्य पूरा कऽ लेलौं। आव हम मुक्त छी। तखन अहाँ किऐक पछुएने एलौं?"

ई सुनि ओहो पिता कनैत-कलपैत स्वरमे कहए लगलथि- "बौआ, तोहर अवस्था दशे बर्खक छह तँ तोहर कोनो दोख नहि। अखन तोँ खाइ-खेलाइ बला छह, कमाइ-खटाइबला नहि। तँ तोहर कोन दोख। बड़ इच्छा छल जे बेटाकेँ पढ़ा-लिखा मनुख बनावी मुदा सभ मनेमे रहि गेल। मुदा हमरो कोनो दोख नै अछि। जँ जीवैत रहितौं तखन ने, से तऽ हमहूँ मरिये गेलौं। तोरा हम असिरवाद दइ छिअ जे जखन घर छोड़ि निकललह तँ दुनियाँ देखह। दुनियेमे सभ कुछ छै। सदिखन मनुक्खक बीचमे रहिहह। मनुक्खेक बीचमे सरस्वती वास करैत छथि। ओहि बीच रहि तू पंडित भऽ जेबह। मुदा एकटा बात सदिखन मन रखिहह जे अपना मेहनतसँ जीवन-यापन करिहह। ककरो एको पाइक कर्जदार नहि बनिहह।"

पिताक असिरवादसँ हमरा देवन नव ज्योति भेटल। नव शक्ति जगल। मनसँ चाउर-मडुआक भेद मेटा गेल। मेटा गेल गंगाजल आ डबरा पानिक भेद। मेटा गेल सजल-धजल फुलवाड़ीक फूलक सुगंध आ जंगलक अनेरुआ फूलक भेद। मेटा गेल उज्जर-कारी मनुक्खक भेद। नव उत्साह जगिते उठि कऽ विदा भेलौं। विदा होइते माइक आवाज गाछ परसँ अबए लगल। रुकि कऽ सुनए लगलौं। माए कहति रहथि जे बेटा, बड़ इच्छा छल जे भरल-पूरल परिवार देखब। मुदा सभ मेटा गेल। जँ बेटा बनि जन्म भेल हेतह तँ दुनियाँ देखबे करबह नहि तँ तोरा सन-सन बहुतो बौआइत-ढहनाइत मरैत अछि।" भूखसँ देह जरैत छल मुदा विवेक रुपी सारथी ओहि रुपे प्रेरित करैत छल जना नांगर घोड़ा रथ खिचैत।"

जाइत-जाइत एकटा गाम पहुँचलौं। जाड़क मास छलै। गामसँ हटल एकटा परिवार बाधमे। भिनसुरका समए सूर्य उगि गेल रहए। ओहि परिवारमे दूटा बच्चा। दुनूक उमेर पाँच बर्ख सात बर्ख। दुनू नंगटे। दुनू घरक पछुआरमे खढ़ बीछि-बीछि घूर लगवैत। हम रुकि गेलौं। मनमे आएल जे हमहूँ घूर लगवैमे बच्चाक संग दियै। हमहूँ नार-पात बीछए लगलौं। एकटा बच्चा अंगनासँ आगि अनलक। घूर सुनगेलौं। तीनू गोरे आगि तापए लगलौं। देह गरमाइल। कने कालक बाद ओहि बच्चाक माए छिपलीमे भात-तीमन लेने आबि आगूमे राखि देलकै। ओ औरत तीस-पैतीस बर्खक मुदा देखैमे अधबयसू बुझि पड़ैत। हमरा बैसल देखि ओ पूछलक- "बौआ, कोन गाम रहै छह?"

हम कहलियै- "हमरा कोनो गाम नइ अछि। माए-बाप मरि गेलि। दुनियाँ देखैले जाइ छी। जाबे तक जीवैत रहत ताबे तक चलिते रहब। मुदा बिना दुनियाँ देखने छोड़ब नहि।"

हमरा देखि ओहि वेचारीकेँ दया लगलै। बच्चाक आगूक छिपली उठा अंगना गेलि। भाड़ामे जे भात-तीमन रहै काढ़ि कऽ सभ लेने आइलि। तीनू गोटे संगे-संग खेलौं। मुँह-हाथ धोए पानि पीवि विदा हुअए लगलौं। तँ ओ औरत कहलक- "आइ नइ जो बौआ। जहिना दूटा बच्चा पोसै छी तहिना तोरो पोसबो। औरतक बात सुनि हम रुकि गेलौं।"

बौआ बचेलाल भरि राति देवन अपन जिनगीक बात कहिते रहल आ हम दुनू परानी सुनिते रहलौं। आब बेरो बहुत भऽ गेल। काजो उदम बहुत अछि। फेरि कहियो अगिला बात कहबह।"

जहिना निन्न टूटिते, सुतल आदमी विहान देखैत अछि तहिना अछेलाल आ बचेलालोकेँ भेल। दुनू गोटेक मुहसँ हँसी निकलए लगल। ओना दुनू गोटे आँखि गड़ा सुमित्रे दिशि देखैत किन्तु हृदयमे हिलकोर उठए लगलै। जहिना भूमकमक समए पोखरिक पानि हिलकोरसँ किनछरिमे उपरो चढ़ैत आ पुनः टघरि अपना जगहपर चलि अबैत तहिना दुनू गोटेक मनमे हुअए लगल। अछेलाल सुमित्राकेँ कहलक- "भौजी! आइ घरि ऐहेन खिस्सा नहि सुनने छलौं। औझुका खिस्सा सुनलासँ बुझि पड़ैए जेना तरको आँखि खुजि गेल।"

अछेलालकेँ सुमित्रा किछु कहए लगलखिन कि बिचहिमे पानि पीबैले बड़द हुकरल। बड़दक हुकरब सुनि, बचेलालकेँ सुमित्रा कहलकखिन- "बौआ, बड़द पियासल छह। अंगनासँ बाल्टीन आनि पानि पीया दहक।"

माइक बात सुनि बचेलाल आंगनसँ बाल्टी आनि, कल परसँ पानि आनि, बड़द कऽ पीआबए लगल। सौँसे बाल्टी पानि बड़द पीबि गेल। पुनः दोसर बाल्टी पानि आनैले बचेलाल कल दिशि बढ़ल। पानि पीया बचेलाल नादिमे कुट्टी लगौलक। नाइदमे कुट्टी परिते बड़द हपसि-हपसि खाए लगल जहिना भूखल आदमी नोनगर अनोन नहि बुझैत तहिना बड़दो कऽ भेलै। बड़दकेँ खाइत देखि सुमित्राक मुँहसँ हँसी निकलल। हँसैत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलक- "बौआ, तोहूँ जुआन छह आ घरोवाली जुआन छेथुन। मुदा....।"

अकचकाइत बचेलाल पूछलक- "मुदा की?"

सुमित्रा बाजलि- "मुदा यएह जे कनियाँ जे छेथुन ओ मेहनतसँ हटल रहए चाहैत छथुन। सदिखन आरामे करब मनमे रहै छनि। पुरुष-नारीक जे वैवाहिक संबंध अछि, से नहि वुझैत छथुन। तोहूँ अनका पढ़बै छह मुदा अपन बात वुझबे ने करै छहक। ऐहन बात हम एहि दुआरे कहि रहल छिअह जे आइ चालीस वर्खसँ हम एहि आंगनमे रहैत एलौं हेन। जहि रुपमे हमर जुआनी बीतल ओहिसँ बहुत दूर हटल

कनियाँक छनि। हमरा खुशी होइए जे बेटाकेँ मास्टर बना ठाढ़ केलौं। तँ अपन मेहनत कऽ सार्थक बुझै छी। मुदा पुतोहू जनीक जे चालि-ढालि छनि ओहिसँ भोगी-विलाशीक परिवारक रुप-रेखा बनि रहल छह। मनुक्ख तँ भोगी नहि योगी होइत अछि। हम बूढ़ि भेलौं। कत्ते दिन जीवे करब। मुदा परिवार देखि अधमौगैत भऽ रहल अछि। जाबे आँखि तकै छी ताबे घरक अधला कोना देखल जाएत? मुदा की करब? सदिखन रक्का-टोकी करब नीक हएत? तोँ असकरे कत्ते करबह। कोनो लोहाक मशीन तँ नहि छह। जते खेत एखन छह ततबे पहिनौ छेलह। जहिसँ परिवार नीक नहाँति चलै छेलह। परिवारसँ आगू बढ़ि दुनू बेकती समाजसँ जुड़ल छलौं। एखन दुख होइए जे बहुत निच्चा उतड़ि गेलौं मुदा तूँ दुनू परानी बुझै छहक जे आगू बढ़ि रहल छी। उन्नति भऽ रहल अछि। अखन घरक आमदनीक दूटा रास्ता भऽ गेल छह-एकटा नोकरी, दोसर खेती। मुदा घुसुकि रहलह हेन पाछू मुँहे।''

बिचहिमे बचेलाल बाजल- ''माए, जते तू बुझै छीही तते हम थोड़े बुझै छियै?''

मुस्कुराइत सुमित्रा उत्तर दैत कहै लगलखिन- ''बौआ, आइ बुझि पड़ैए जे तोहर नजरि बदलि रहलह हेन किऐक तँ जँ ई बात पहिने बुझितहक तँ सीखैक कोशिश करितहक। मुदा जखने जागी तखने परात। जिनगीमे सभसँ पहिने सबकेँ अपन सीमा-सरहद बुझक चाही। जा घरि अपन परिचए लोककेँ नइ हेतैक ताधरि गरथाहक जिनगीमे रहत। तोरा होइत हेतह जे हम बड़ गरीब छी वा बड़ धनीक छी, मुदा जखन अपनासँ आगू-पाछू देखवहक तँ वुझि पड़तह जे हमरोसँ बेसी धनिक लोक अछि आ गरीबो बेसी अछि। जना देखिते छहक, जतबो तोरा छह ततबो अछेलालकेँ नहि छैक। भरल पेट रहने मनक विचारो नीक होइत छैक। जबकि जरल पेटमे कोन आओत?''

नमहर साँस छोड़ैत बचेलाल बाजल- ''हूँ-उ-उ।''

''हँ, ठिके बुझलहक। भूखल पेट मनकेँ जरबैत छैक। जरल मनमे सिनेह कोना आओत? सिनेह तँ खाली बजनहि वा उपदेश सुनने नहि आओत। जाधरि दुनूक बीच स्नेहक पुल नहि बनत ताधरि मनुख-मनुखक बीच द्वेष रहबे करतै।

जाधरि द्वेष रहतै ताधरि छल-प्रपंच, वेइमानी-शैतानी, मारि-मरौबलि कोना मेटाएत।''

निरीह भऽ बचेलाल पूछलक- ''तखन की करब? माए।''

मुस्की दैत सुमित्रा बाजए लगली- ''जहिना अछेलालक बेटा जनमै काल सेवा केलियै तहिना जिनगी भरि करबै। भगवान सभकेँ दूटा हाथ दूटा पाएर, साढ़े तीन हाथक देह आओर सभसँ पैघ सम्पति बुद्धिक खजाना सेहो देने छथिन। अपना ऐठाम सभसँ दुखद बात यएह अछि जे किछु गनल-गुथल लोक सम्पत्ति हथिया लेने अछि जहिसँ गरीबी एत्ते बढ़ि गेल अछि। कुम्हराक आबा जेकाँ गरीब लोक भूखक आगिमे जरि रहल अछि। जहिसँ दुनूक बीच बड़का पहाड़ ठाढ़ भऽ गेल अछि। वेचारा

अछेलाल जेहने चीजसँ तेहने समांगसँ आ तेहने बुद्धियोसँ पाछू पड़ि गेल अछि। अखन धरि बेचारा उजड़ल-उपटल घरमे रहल तँ ज्ञान प्राप्त करैक अवसरे कहिया भेटिलै। देवनक देखओल रास्ता हम जनै छी। तँ जहिना तोरा बेटा बुझै छिअ तहिना ओहूँ वेचराकँ बुझै छी।''

तारतम्य करैत बचेलाल पूछलक- ''कोना अछेलाल काकाकँ अपन समांग बनाएब?''

''अखनेसँ खेत-पथारसँ लऽ कऽ बड़दक सेवा करैक भार अछेलालकँ दऽ दहक। तू नोकरी करै छह मुदा खेती-पथारी तँ मरि गेल छह। अखन भार बुझि पड़तह, मुदा नहि! मनुक्खक भीतर जे सुतल शक्ति अछि ओकरा जगबैक छह। जखने ओ जागि जाएत तखने मनुक्ख अपन बदलल रुप देखए लगत। जे खेत परती अछि ओ सोना उपजए लगत। जहिसँ अपनो परिवारक आमदनी बढ़त आ ओहू वेचाराक परिवार हँसी खुशीसँ चलतै।''

माइयक बात सुनि बचेलाल अछेलालकँ कहलक- ''काका! आइसँ हमर अहाँक परिवार एक भऽ गेल। अखनेसँ खेत पथारक तरद्दुत शुरु कऽ दिऔ। पाँच कट्ठा बाड़ी अछि, एहिमे, एक भागसँ घर बना लिअ आ बाकीमे उपजा हेतै। एकठाम घर रहने चोरो-चहारसँ रक्षा हएत। बच्चा सभकँ पढ़बै छी- जे एकटा ढेला छल आ एकटा पत्ता। दुनू जखन अपना जिनगी दिशि तकैत तँ ढेला कऽ बुझि पड़ै जे बरखा हएत तँ गलिये जाएब आ पत्ता कऽ बुझि पड़ै जे हवा उठत तँ उधिआइये जाएब। तँ दुनूक जिनगी अनिश्चिते बुझि पड़ै। दुनू सोचलक जे अगर दोस्ती कऽ लेब तँ दुनूक जिनगी हँसैत-खेलैत चलैत रहत। दुनू दोस्ती कऽ लेलक। जखन हवा उठै तखन ढेला पत्ता कऽ दाबि कऽ बचा लइ आ जखन पानि होए तखन पत्ता ढेलाकँ झाँपि बचा लइ। तहिना तँ मनुक्खोक अछि।''

बचेलालक बदलल बिचार सुनि गद-गद हृदयसँ अछेलाल कहलक- ''बौआ! गरीबक हृदएमे छल-प्रपंच नइ होइ छै, आ ने मान-अपमान। क्यो जँ हमरा अपमाने करत तँ हम की ओकर कऽ लेबै? हमरा की अछि जइसँ अपन मानक रक्षा करब। सुमित्रा दिशि देखि हमरो मनमे अछि भौजी जे जहिना अहाँ अपन बुझि बेटाबला बनेलहुँ तहिना अहूँ कऽ माए बुझि सेवा करब।''

(५)

बचेलाल स्कूल गेल। घड़ी पावनि रहने तँ खुलल मुदा विद्यार्थी नहि आएल। पहिने तँ बचेलाल भकचके मे रहल जे छात्र स्कूल किऐक ने आएल मुदा किछु कालक बाद एक गोटेसँ भाँज लगलनि जे पावनि छी। अपन दृढ़ता रखैत बचेलाल चारि बजेसँ पहिने स्कूल नहि छोड़ैक विचार मनमे ठानि लेलक। असकरे ओसारपर कुरसी लगा बैसि मने-मन अपन जिनगीक संबंधमे सोचए लगल अखन घरि सोचैक जे प्रक्रिया बचेलालकेँ छल ओ माएक विचार सुनला बाद बदलए लगल। जहि ढंगसँ अखन धरि सोचए छल। ओ ढंग बदलने किछु स्पष्ट बुझए लगल। आँखि उठा कऽ आगू दिशि तकलक तँ बदलल सभ कुछ बुझि पड़ए लगल। माएपर ध्यान पहुँचते अनायास मुँहसँ निकलल- "ओ माए साक्षात् सरस्वती छथि। हुनकासँ बहुत कुछ सीखैक अछि। जहिना मनुक्ख अपन विशाल शक्तिक भंडार रहितहुँ, अज्ञानवश नहि बुझि पवैत, तहिना तँ हमहूँ छी। हर मनुष्यकेँ अपन लक्ष्य निर्धारित कए कऽ जान-परानसँ लागि जेबाक चाही, तखने जिनगीक सार्थकता बुझि पड़तै। अखन धरि हमहीं जे बुझै छलौं ओकरा इमनदारीसँ निमाहैत छलौं मुदा ओ असथिर चालि अछि। जहिना कोनो स्थानपर पहुँचबा लेल क्यो धीमी गतिसँ चलैत तँ क्यो मध्यम गतिसँ। मुदा तेज गतिसँ चलनिहारकेँ जल्दी सफलतो भेटैत आ दोसरो काज करैक मौका। चालि तेज कोना हएत? ई मुख्य प्रश्न अछि। मुदा अप्पन चलब तँ जिम्मा अछि। अनको बुझाएब ओहने जरुरी अछि जेहने अपना बुझब। मुदा दायित्व तँ अपन अछि। हम शिक्षक छी। आठ घंटा समए लगाएव आ बच्चा सभकेँ पढ़ाएव अछि। मुदा चैवीस घंटाक दिन-रातिमे एक तिहाइ भेल। अहिना पत्नियोकेँ देखैत छियनि। छोटका बच्चाकेँ बेसी काल माइये रखैत छथि। बड़की बच्चिया स्कूलेमे बेसी काल रहैए। अंगना-घर बहारनाइसँ लऽ कऽ भानसोमे संग साथ माइये दैत छथिन। तखन जवान औरतक काज कते बँचल? जरुर विचारमे कतौ कमी अछि। की पति-पत्नीक जिनगी सिर्फ बच्चेटा पैदा करब छी? की परिवारक खर्च जुटाएव सिर्फ मरदेटा कऽ जिम्मा छी? की मरद दुनियाँक कोनो कोनसँ पसीना चुबा कमा कऽ आनथि आ स्त्री घरक छहर देवालीसँ नहि निकलथि, यएह प्रतिष्ठा छी? औरत अपना पाएरपर नहि ठाढ़ होथि, एहि कऽ लेल पुरुखे दोषी छथि, महिला नहि? की गुलामीक जिनगी सभक लेल कष्टकरे होइत छैक सुखद नहि? ऐहन ढेरो प्रश्न अछि जे सिर्फ बैचारिक समाधानसँ समाधान नहि हएत। किऐक तँ प्रश्न समस्या रुपमे कार्यरुप अछि। जकर समाधान काजे कऽ सकैत अछि। मुदा काजोकेँ तँ ढेरो बाधा अछि जे काज हुअए नहि दैत। तखन की कएल जाय? एते विचार मनमे उठिते बचेलाल कुरसीपर सँ उठि अंगनामे टहलए लगल। जहिना अधसुखू जारन आगिमे देलासँ धुँआ अधिक होइत, मुदा धधड़ा हेबे ने

करैत, तहिना बचेलालोक मोनमे हुअए लगल। मुदा बिना धधड़ा भेने इजोत कोना हएत, एहिक बिचमे बचेलाल पड़ल।

एखन बचेलाल ने विद्यार्थीकेँ पढ़बैत शिक्षक छथि आ ने घरवाली ले पाँच सए नम्बर जर्दा पत्ती कीनिनिहार। ने एखन किसान परिवार कहौनिहार छथि आ ने ऑफिसक बड़ा बावूक जमाए। अखन बचेलाल मनुक्खक ओहि सघन बनमे बौआइत छथि जतए माटिपर पसरल हरियर-हरियर दूबि घास विशाल-विशाल गाछक निच्चामे अपन अस्तित्व हँसैत-खेलैत मौजसँ रखने अछि। की ओहि दूबि कऽ अपन जिनगीसँ आनन्द नहि छैक? हाँ, जरुर छैक ओहो सजि-धजि अपन पूर्ण जुआनीमे आबि ओहि प्रियक घसवाहक प्रतिक्षामे दिन-राति तकैत रहैए जे हमर अखुनका जे पुष्ट शरीर अछि ओ छीलि कऽ लऽ जा ओहि गाइयक भोजन बनाओत, जे दूध सन अमृत दइए। की ओ दुबि...., अमृतक सृजनकर्ता हम नहि छी। बचेलालकेँ मनमे भेल जे एखन हम ओ बतहा बबाजी ने तँ भऽ गेलौं जे शरीरसँ अलग भऽ नचैत अछि। टहलल-टहलल बचेलाल कलपर जा मुँह-हाथ धोए पानि पीलक। जहिना धीपल लोहा पानिमे पड़िते सरा जाइत तहिना बचेलालोकेँ पानि पीबितहि भऽ गेल।

पानि पीबि, धोतीक खूँटसँ मुँह-हाथ पोछि बचेलाल घड़ी देखलक, तँ चारि बजैत। कुरसी उठा कोठरीमे दऽ, केबाड़ बन्न कऽ, ताला लगा घर दिशि विदा भेल। आन दिनसँ भिन्न मन। जहिना नसेरीकेँ निसाँ कम भेलापर भक्क लगल रहैत तहिना बचेलालोकेँ होइत। रास्ताक सुधिये नहि! कतए पाएर पड़ैत तकर सुधिये नहि। विचारक दुनियाँमे मन बौआइत। मनमे उठैत जे हमर शक्ति सुतल अछि। ओकरा जागाएव अछि, मुदा ओ जागत कोना? मनमे अबए लगलनि जे डेढ़-डेढ़ घंटा स्कूल अबै-जाइमे लगैए जँ साइकिल कीनि लेब तँ अधा समएक बचत जरुर होएत। अधा समएक मतलब डेढ़ घंटा। ततबे नहि पाँच-दश मिनट देरियो भेने, तेजसँ चलि कऽ समए पूरा लेब। नहाइ-खाइमे सेहो डेढ़-दू घंटा लगि जाइए ओहूमे अधा समए बचा सकै छी। भोरु पहर कऽ विछानपर पड़ल रहै छी जे पहिनहुँ उठि सकै छी। अगर सभ समएकेँ बचा एकटा नव काज ठाढ़ कऽ लेब तँ खुशीसँ सम्हारि सकै छी। ततबे नहि फजिलाहा समएसँ जत्ते करब, ओइसँ कत्ते वेसी तेज औजारोक जीवनोपयोगी मशीनक उपयोगसँ होएत। तहूसँ बेसी काजक उत्साह ऐने सेहो हएत। घरपर आबि बचेलाल घड़ी देखलक तँ आन दिनसँ, बीस मिनट पहिने, आबि गेल। ई कोना भेल? मन पाड़ए लगल तँ रास्ताक चलब मने ने पड़ै।

घरपर आबि बचेलाल दरबज्जेक चैकीपर कुरता, गंजी निकालि रखि बिना हाथ-पाएर धोनहि, चीत गड़े सुति, दुनू बाँहि मोड़ि, चाइनपर लऽ आँखि बन्न केने सोचए लगल। बाड़ीसँ अड़ूआ उखाड़ि सुमित्रा एक हाथमे खन्ती दोसरमे अड़ूआ नेने रस्ते परसँ बचेलालकेँ देखि, चुपचाप आंगन चल गेली। सुमित्रा मने-मन बुझि गेलखिन जे जहिना साइकिल परसँ गिरल आदमी हाथ-पाएर तोड़ि रोडपर चीते पड़ल रहैए, सएह

गति बचेलालोकेँ भेल अछि। मुदा अंगनाक टाटक भुरकी देने रुमा बचेलालकेँ देखि मने-मन सोचति जे आन दिन स्कूलसँ सोझे अपना कोठरीमे आबि कपड़ा निकालैत छलाह, मुदा आइ ऐना किऐक केलनि। मनमे शंका भेलनि जे भरिसक रास्तामे किछु भऽ गेलनि। धड़फड़ाइत अंगनासँ निकलि रुमा बचेलालक लगमे आबि पूछलखिन- ''किछु होइए?''

आँखि खोलि बचेलाल रुमाकेँ देखि फेरि आँखि मूनि लेलक। रुमाक करेजमे डर सन्हिया गेलि। मुँह लग मुँह लऽ जा रुमा पूछल- ''मन-तन खराब भऽ गेल?''

आँखि खोलि मन्द स्वर, मुदा सक्कत शब्दमे बचेलाल उत्तर देल- ''नहि। किछु ने होइए। अखन ऐठामसँ जाउ। मनमे समुद्रक लहरि उठि रहलए।''

धड़फराइत रुमा, सासुकेँ कहैले आंगन गेली। माथ परसँ साड़ी सड़कल रुमाक। सासु लग जा कहलखिन- ''अखन अड़ूआ बनौनाई छोड़ि देथुन। बेटाक मन खराब भऽ गेलनि। ने बजै छथि आ ने मन उछटगर छनि। जना मुँहक रंगो बदलल जाइ छनि। झब दे चलथु। देखथुन जे की भऽ गेलैनि।''

दुनू हाथसँ अड़ूआ पकड़ि कत्तामे लगौने सुमित्रा रुमा दिशि देखि कहलखिन- ''बच्चाकेँ किछु ने भेलनि। इस्कूलसँ अबैमे थाकि गेल हेता।''

हड़बड़ करैत रुमा कहलकनि- ''नै माए! नै। आनो दिन इस्कूलसँ अबै छला कि आइयेटा पाएरे ऐला। ऐना कहाँ आन दिन होइ छलनि। केहेन बढ़ियाँ आन दिन देखै छलियनि?''

सुमित्राक बाँहि पकड़ि रुमा घिचने-घिचने दलानपर अनलनि। दरबज्जापर अबिते सुमित्रा रुमाकेँ कहलखिन- ''अहाँ, झब दे चाह बनौने आउ। हम अछेलालकेँ सोर पाड़ै छी।''

रुमा चाह बनबए गेली। सुमित्रा अछेलालकेँ सोर पाड़ए गेली। जरना लेल अछेलाल सुखल कड़ची टोनियबैत। एकटा कड़ची तौड़ै काल चिरा गेल। ओकर काप अछेलालक ओँगरीमे लगि गेलै। उपरका चमड़ा कटि गेलै। चमड़ा कऽ कटिते छड़-छड़ खून बहए लगलै। तावे सुमित्रो लगमे पहुँचली। खून बहैत देखि सुमित्रा मखनीकेँ लत्ता नेने अबैले कहलखिन। लत्ता नेने मखनी दौगल आइलि। मखनी हाथसँ लत्ता लऽ सुमित्रा अछेलालक ओँगरीमे नुरया कऽ बान्हि देलखिन। खून बन्न भऽ गेलै। टोनियेलहा कड़ची समेटि मखनी चुल्हि लग लऽ गेलि। अछेलालकेँ संग केने सुमित्रा बचेलाल लग ऐली। रुमो चाह नेने एली। सभ क्यो चाह पीबए लगलथि। चाहक चुस्की लैत बचेलाल अछेलालकेँ पूछलखिन- ''कक्का, ओँगरीमे लत्ता किअए लटपटौने छी?''

अछेलाल- ''अखने कड़ची टोनिअबै छलौं कि काप लगि गेल। अपना टेंगारी नइए जइसँ छकड़ितौं, तेँ हाथेसँ तोड़ै छलौं। खून बहए लगल तेँ लत्ता बान्हि देलिये।''

बचेलालक गप्प सुनि-सुनि रुमाक मन असथिर होइत। मुदा तइयो आँखि उठा-उठा रुमा बचेलाल दिशि देखैत। अछेलाल बचेलालकेँ कहलक- ''बच्चा, छुछे अहाँ खेतीक भार देलौं। बिना ओजारे खेती कोना करब? ने हर अछि आ ने कोदारि। ने घरमे नीक हँसुआ अछि आ ने खुरपी। ने कुड़हरि अछि आ ने टेंगारी। तखन छुछे हाथे कत्ते काज चलत? गाममे देखिते छी जे ने ककरो क्यो कोनो चीज दइए आ ने गरीबी दुआरे सभकेँ सभ चीज छै। तखन कोना काज चलत?''

अछेलालक बात सुनि बचेलाल मने-मन सोचए लगल जे साइकिलक दुआरे अपन समए नष्ट होइए। औजारक दुआरे अछेलाल कक्काक। मुस्की दैत सुमित्रा कहए लगलखिन- ''बच्चा, जहिना समाज परिवारकेँ आगू बढ़बैमे सहायक होइत तहिना बाधको अछि। ओना कहैले सभकेँ-सभ नीके बात कहैत मुदा व्यवहारमे उनटा छै। अखन जइ सीमापर ठाढ़ छह पहिने ओतै पहुँचैक उपाए करह। ओना बुझैमे नइ अबैत हेतह, मुदा छह ओइसँ बहुत निच्चा तँ अपन सीमासँ निच्चाँ कोन-कोन रास्तामे पछुआइल छह ओ बुझि ओकरा पुरबए पड़तह। जखन औझुका सीमापर ठाढ़ भऽ जेवह तखन आगू मुँहे डेग उठतह। एक भग्गू भऽ आगू डेग उठबए चाहवह तँ कतौ ने कतौ लसकि जेबह।''

सुमित्राक विचार सुनि बचेलालक मनमे आशाक टेमी भुकभुकाइल। हृदयमे मद्धिम इजोत भेल। मुस्कुराइत बचेलाल माएकेँ कहलक- ''माए, तोहर बात मनमे गड़ि गेल। एखन काज करै जोकर चारि गोरे छी। दू परानी अछेलाल काका आ दू परानी अपने। तू तँ बूढ़ि भेलँह। जखन स्कूलमे छलौं तखन मनमे उठल जे सभ दिन पाएरे चारि कोस अबै-जाइ छी तँ एकटा साइकिल कीनि लेलासँ अधा समए बँचत। जे समए उगड़त ओकर उपयोग आगूक काजमे करब। जाबे आगू बढ़ैक चेष्टा नइ करब तावे आगू कोना बढ़ब?''

मूड़ी डोलबैत सुमित्रा बाजलि- ''बच्चा! एखन दूटा रास्ता पकड़ैक छह। नोकरी करै छह तँ नोकरियो आ दू बीघा खेत छह, ओहूमे जान फूकैक छह। जँ दुनू सुढ़िया कऽ चलए लगतह तँ अनेरे घर उठैत देखबहक। बड़ चिक्कन बात अछेलाल बौआ कहलखुन। जाबे खेती करैक हथियार औजार नहि रहतह ताबे मुकाबला कोना करबहक?''

सुमित्राक बात समाप्तो नहि भेलि कि बिचहिमे अछेलाल बाजल- ''भौजी! काल्हि बेरु पहर जुगाय आबि कऽ डेढ़ियापर बैसि रहल। हम अंगनामे बिछानक टुटल डोरी जोड़ैत रही। कने कालक बाद थूक फेकैले उठलौं कि जुगायकेँ बैसल देखलियेक। चोट्टे आंगन घुरि चक्कापरसँ तमाकुल चून लऽ चुनबैत डेढ़िया दिशि बढ़लौं। जुगाइक सुखल मुँह देखि पूछलियै जे भाय किमहर-किमहर ऐलह? बड़ मन्हुआइल देखै छियह? किछु बजैक हिम्मते ने वेचारे के होए। तमाकुल देलियै। अपनो खेलहुँ। तमाकुल मुँहमे लेलाक बाद जना बजैक हूबा भेलै। कहलक- ''अछेलाल भाय, कहैक तँ साहस

नहिये होइए मुदा तोहूँ कोनो बिरान नहिये छह, तँ कहै छियह। देखबे करै छहक जे समए कते दुरकाल भऽ गेल अछि। लऽ दऽ कऽ चारि बीधा खेत छल। भगवान तीनिटा बेटी देने छथि। जेठकीक बिआह तँ बाबूए सोझामे भेलै। दूटा बँचल। मैझलीक विआहमे सोमनसँ रुपैया कर्ज लेलहुँ। आशा छल जे खेतक उपजासँ कर्जा सठा लेब। मुदा पैछला तीन साल केहेन भेल से तँ बुझले छह। रुपैआ नइ देल भेल। एक दिन सोमन तना ने बजै लगल जे खिशि चढ़ि गेल। मनमे आइल जे एक्रो घुर खेत बँचाए वा नहि मुदा पाँच दिनक भीतर ओकर रुपैआ दऽ देबै। मनमे तामस रहबे कराए, डेढ़ बीघा खेत सस्तेमे बेचि कऽ रुपैआ दऽ देलियै। आब अढ़ाइये बीघा खेत बँचल अछि। छोटकी बेटी पनरह-सोलह बर्खक भऽ गेलि अछि। तँ विआह करब जरुरी भऽ गेल अछि। कथा ठेमाइल अछि मुदा बिना खरचे दिन-ठेकान कोना करब? तेहेन भूत लोककेँ लगल छै जे सभकेँ मचोड़ि-मचोड़ि खाइत अछि। सूदी रुपैआ लैत डर होइए। तँ तोरा लग एलौं जे रुपैआक कोनो जोगार लगा दाए। जुगाइक बात हृदयकेँ पघिला देलक। मुदा गरीबक हृदय पीघलनहि की? अपने तँ तेरह दण्डक संकराति बीतैए तखन दोसरक मदति की करबै? मुदा मनमे आएल जे बचेलाल तँ नोकरी करै छथि तँ हुनकेँ कहबनि। समाजक बेटी आ अपना बेटीमे की अंतर होइ छै? जाबे विआह-दुरांगमन नइ भेल रहै छै ताबे माए-बापक समाजमे बेटी रहैए, तकर पछाति तँ सदाक लेल चलि जाइत अछि।''

अछेलालक बात ध्यानसँ सुनि बचेलाल मूँड़ी गोति विचारए लगल। समाजमे हम नोकरी करै छी। रुपैआ कमाइ छी। समाजोक तँ आशा हमरा कमाइमे छैक। अगर रुपैआ हम नहियो देबै तइयो कोनो ने कोनो तरहेँ विआह भइये जेतै। मुदा हमरा की बुझत? हमरा प्रति कत्ते घृणा बेचाराकेँ हेतै। जाबे जुआन बेटी ककरो घरमे रहै छै ताबे माए-बापक हृदय तिल-तिल कऽ जरैत रहैत छैक। ऐहन समएमे मदति मदति नहि जिनगीक पैघ बोझ उताड़ब हएत। हमर रुपैआ बैंकमे अछि। सुदिये कत्ते देत? जत्ते सुइद देत तइसँ बेसी महगी बढ़तै जइसँ रुपैआक मोले कमतै। तखन तँ मूड़ोसँ कम भेटत। ओइसँ नीक जे बिना सुदिये रुपैआक मदति कऽ दियै। एत्ते बात मनमे अबिते बचेलाल मूँड़ी उठा माए दिशि तकलक। सुमित्रो बचेलाल दिशि तकलक। दुनू गोटेक विचार आँखियेसँ भऽ गेल। बचेलाल माएकेँ कहलक- ''माए, चारु भर तँ अभावे-अभाव देखै छी। अभावकेँ बिना मेटौने लोक कोना आगू मुँहे ससरत? व्यक्तिसँ लऽ कऽ परिवार आ परिवारसँ समाज धरि सभ अटकि गेल अछि। कोना ससरत? जहिना जिनगी रुपी जमीनमे, नीच जमीनमे बहैत पानि ऊँच जमीनमे नहि चढ़ि पबैत, तोहूमे जँ माटिक आड़ि बनल रहए, तखन तँ आरो मोसकिल होइत तहिना तँ जिनगीयोमे लोककेँ होइए। जिनगी तँ हवाक गतिसँ नहि चलि सकैत जे उपर-निच्चाँक भेद नहि बुझि, चलैत।''

मुस्कुराइत सुमित्रा बचेलालकेँ कहए लगलखिन- ''बड़ सुन्नर बात बच्चा कहलह। निच्चाँक पानि जखन जमा भऽ मोटाइत अछि तखन उपर चढ़ैक आशा होइत। बाधा रुपी आड़ि तोड़ै लऽ साधनक जरुरत होइत। अखन धरि सामाजिक रीति-रिवाज, चालि-ढ़ालि ऐहेन बना देल गेल अछि जे एकटा डेग उठाउ तँ दोसर लसकत आ दोसर उठाउ तँ तेसर लसकत। मुदा धैर्य आ साहसक आवश्यकता सभकेँ अछि। एक स्थानपर ठाढ़ भऽ वा बैसि देखलासँ दूर धरि देखि पड़ैत, मुदा बातकेँ गौरसँ बुझए पड़त जे जहिना आँखिसँ निकलैत ज्योति पहिने लगसँ देखैत दूर तक देखैत अछि। तहिना सभसँ पहिने मनुक्खकेँ अपने देखए पड़तै। जँ अपनाकेँ देखि लेत तखन दुनियाँ देखैक रास्ता भेटतैक। जखने दुनियाँक रास्तापर चलब शुरु करत, तखने थाल-खिचार छोड़ि सक्कत माटिपर पएर पड़तै। अखन तोरा सोझामे तीनि तरहक काज उपस्थिति भेलि छह। पहिने अपना लऽ साइकिल कीनि लाए। जइसँ शरीरोक रकछा हेतह आ समयोक बचत। दोसर खेतीक सभ समचा कीनि लाए।''

माएक बात सुनि बचेलाल अछेलालकेँ कहलक- ''काका, काल्हि शनि छी। जँ एत्ते दिन खगल तँ एक दिन आरो खगह। हमहुँ जे एत्ते दिन पाएरे इस्कूल गेलौं तँ एक दिन आरो जाएब। परसू रवि छी। छुट्टियो रहत। दुनू गोटे सबेरे जलखै कऽ बाजार चलब। साइकिलो कीनि लेब आ खेतियोक सभ ओजार। जुगाइयोक बेटीक विआहमे मदति कऽ देबै। जे रुपैआ बैंकमे अछि ओ सभ उठा परिवारसँ समाज धरिमे उपयोग कऽ लेब। एक परिवारकेँ आगू बढ़ने तँ समाज नहि अगुआएत। समाजकेँ अगुआइक लेल सभ परिवार कऽ अगुआए पड़त। जहिना एकटा इंजन बड़का-बड़का कोठरीकेँ जोड़ि अपना गतिमे चलवैत अछि तहिना जँ समाजोकेँ रास्तापर आनि खिंचल जाए तँ ओहो ओहि गतिसँ जरुर चलत।''

बचेलालक बिचार सुनि सुमित्रा बाजलि- ''बौआ, तूँ साइकिल कीनिवह। अपने तँ एक्के बेर इस्कूल जेवह ऐवह। मुदा तकरबाद तँ साइकिल घरेमे पड़ल रहतह। तँ समाजमे ककरो साइकिलक जरुरी हेतै तँ ओकरो दिहक। अपनो काज चलतह आ दोसरोक चलतै। जहिना पहिलुका लोक पोखरि खुनबै छला। जहिसँ अपनो काज होइत छलै आ समाजोक होइत छलैक। जाधरि समाजमे प्रेम नहि बढ़त, एक-दोसरकेँ मनुक्ख बुझि मदति नहि करत, ताधरि समाज लड़खड़ाइते रहत। जखन सभ-सबहक लेल देहसँ लऽ कऽ चीज धरिसँ ठाढ़ हएत, तखन समाज निश्चित आगू मुँहे ससड़त। जहिसँ सबहक कल्याण हएत। जुगाइक बेटीक विआहमे रुपैआ जरुर दिहक। ओ जँ खेत भरना दिअए चाहतह तँ ओकरा कहि दिहक जे खेत बटाइ वएह करै। वेचारा सुदियोसँ बँचि जाएत आ उपजो हेतै। ओकरो तँ परिवार छै। ओहो तँ अन्ने खेतै।''

साँझू पहर जुगाय अछेलाल ऐठाम आएल। अछेलाल सभ काज सहिआइर पोखरि दिशि जाइक विचार करैत। जुगायकेँ देखि अछेलाल कहलक- ''जुगाय भाय

तोहर काज सुतरि गेलह। जखनसे तूँ कहलह तखनेसँ मनमे खुटखुटी पकड़ि लेलक। मुदा ककरोसँ कोनो बात करैक समए होइ छै। समए पाबि बचेलालकेँ कहलियै। वेचारा मानि गेल। ओ तोरा रुपैआ सम्हारि देथुन। तोँ निश्चिन्त भऽ विआहक दिन-ठेकान करह।''

अछेलालक बात सुनि जुगाय बाजल- ''भाय, अखनो दुनियाँमे नीक लोकक कमी नइ छै। जे अनका बेरपर ठाढ़ हएत, ओकरो बेरपर भगवान ठाढ़ हेथिन। हमहूँ तँ अपना मुँहे हुनका बचेलाल किछु ने कहलिएनि। संगे चलह। अपनेसँ कहबनि।''

अछेलाल बाजल- अखन तोरा कहैक काज नइ छह। नीक हेतह जे परसू रवि दिन संगे बजार चलि रस्तेमे सभ गप्प करब।''

''बड़बढ़िया भाय।'' जुगाय कहि विदा भऽ गेल।

(६)

देवनकेँ पाबि दीनमा आ भुखनी वेहद खुशी भेल। भुखनीक मनमे आयलि जे कमाइबला बेटा भगवान पठा देलनि। मनमे एकटा पैछला बात एलै। हमरासँ एक दिन पहिने दुखनीक जन्म भेल बच्चेसँ दुनू गोड़े संगे रहबो करै छलौं आ खेलबो करै छलौं। जब कने नमहर भेलौं तब संगे पत्तो बीछी, गोबरो बीछि-बीछि आनी आ चिपड़ियो पाथी। धासो छिलैले जाय आ बकरियो चरबी। बाधमे रखबारक खोपड़ी लग बैसि चैरखियो-चैरखी खेली। खेसारी मासमे, अंगनेसँ नून लेने जाय आ खेसारी मूड़ीक झक्खो बना-बना खाय। आमक जखन टुकले होय तखनेसँ बीछि-बीछि खाय। अंगनेसँ चून पत्तामे लेने जाय आ खटहो आममे लगा दियै तँ ओहो खट्टा नइ लगए। जब ढेरबा भेलौं तब माइयेक संगे धानो-गहूम काटी आ लोढ़बो करी। खेसारियो मौसरीक बोइन करी। किछु दिनक बाद धानो-मड़ूआ रोपए लगलौं।

हमरासँ पाँच बरख पहिने दुखनीक विआह भेलै। ओ सासुर बसए लागलि आ हमर वियाहो ने ताबे भेलि। दुखनीक बेटो ढेरबा भऽ गेलै, हमर लिधुरिये अछि। मुदा भगवान हमर दुख बुझलनि। कमाइबला बेटा अनासुरती पठा देलनि। दीनमा बुझैत जे बाँहि पूरैबला समांग भऽ गेल। दुनू गोड़े संगे खेतो तामब आ धानो-मड़ूआक रोपैन करब। एक जनक बोनि तँ बेसी हएत। जँ कहीं गिरहस्त, बच्चा बुझि देवनकेँ नइ अढ़ौत तँ काजे ठीक्का लऽ लेब। अपने कने बेसी भीड़ पड़त तँ एकटा बोइनो बेसी हएत। तीनिटा कमेनिहार भेलौं। आब कोनो चीजक दुख नइ हएत। कपारमे जाबे दुख लिखल छल ताबे कटलौं। आब सुखक दिन आबि गेल।

पूस-माधक जाड़, दीनमा आ भुखनी कोना बितवैत रहए, देवन गौरसँ देखए लगल। ने घरमे सीरक आ ने एक्कोटा कम्मल। फाटल-पुरान साड़ी-धोती पहिर दुनू परानी दीनमा दिन वितवैत पहिलुका गुदरी-चेथरी साड़ी-धोती सरिया कऽ साटि, ओकरा सीबि सुजनी बनौने। वएह ओढ़ैत रहए। जइ दिन बेसी जाड़ होइ तइ दिन अखरे पुआरपर सुति बिछानो ओढ़ि लिअए। सात हाथक एक्केटा घर तहिमे सभ तूर हँसी-खुशीसँ रहैत। ओही घरमे भानसो होय चीजो सभ रखै आ सुतबो करै। एक भाग भानस करैक चुलही, दोसर दिशि विछान आ बीचमे सुखल गोबर करसीक घूर लगबै। ओना घर गरम रहैक नीक व्यवस्था मुदा बिना लेबल टाटक घर रहने, चारु दिशिसँ ठंढ़ आबि घरोकेँ पाइन जेकाँ ठंढ़ा कऽ दैत। रातिमे जाबे भानस होय ताबे धिया-पूताक संग दीनमा घूर तपैत।

एक दिन भोरहरबामे पछिया हवा चललै। दीनमाक दुनू ठहुनसँ निच्चा पाएर उघारे रहै। ठंढ़ी हवासँ दुनू पाएर कठुआ कऽ सुन्न भऽ गेल। दीनमाक निन्न टूटल। ओछाइनसँ उठि वाहर जेबाक मन भेलै। जहाँ उठए लगल कि पाएर सोझे ने होय। उठि कऽ बैसि पाएर टोबए लगल। ठेहुनसँ उपर बुझए आ निच्चाँ किछु बुझबे ने करैत मने-मन दीनमा सोचए लगल ऐना किअए भेल? जँ ठेहुनसँ निच्चाँ पाएर दुइर भऽ जाएत तँ चलब कोना? डरे दीनमाक छाती धक-धक करए लगल। घरवालीकेँ उठौलक। मुँह उधारिते भुखनी कहलकै- "बड़ कन-कन्नी अछि, मुँह झाँपि कऽ सुइत रहू।" कहि अपन मुँह झाँपि लेलक। मुँह झँपैत देखि दीनमा जोरसँ कहलकै- "हमरा पाएरमे भरिसक साँप काटि लेलक। सुन्न बुझि पड़ैए।"

साँपक नाम सुनिते भुखनी धड़फड़ा कऽ उठल। उठि कऽ चुलही लग राखल छोलनी लऽ पाएरमे भिरा पूछलक- "केहेन लगैए। की भीरौने छी?"

दीनमा जवाब देलक- "आँखिसँ तँ छोलनी देखै छी मुदा भिरल नइ बुझि पडैए।"

छोलनी राखि भुखनी बिठुआ कटैत पूछलक- "केहेन बुझि पड़ैए?"

दीनमा- "किछु बुझवे ने करै छी।"

अखियास करैत भुखनी पूछलक- "छुछुनैरो-तुछुनैरोक बोली सुनलिएहें मध्यम तामससँ दीनमा कहलक- "से हम जगले छलौं। अखैन नीन टुटल तँ उठिए ने भेल। तब बुझलियै।"

मने-मन भुखनी बजए लागलि- "हे भगवान ऐहेन समएमे कोन दुख पठा देलह। दुखे पठबै कऽ छेलह तँ दिन-देखार पठैबतह। एत्ती रातिमे हम की करबै। हे भगवान कन्ना पार-घाट लागत।"

भुखनीकेँ आहि-आलम करैत देखि दीनमा कहलकै- "अगियाशी करु। पछवा बहै छै। भऽ सकैए ठंढ़ी लागि गेल हुअए।"

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल देवन सभ बात सुनैत। चुलहीसँ भूमहूर बला आगि निकालि भुखनी घूर पजारए लगल। शीताएल जरना रहने घूर पजरवे ने करैत। धुँइये बेसी होय। धुँआक दकसँ खोंखी करैत देवनो उठल। घरमे धुँआ भरि गेलै। धुँआ दुआरे कोइ किछु देखवे ने करै। देवन भुखनीकेँ कहलक- "मौसी! ओछाइनेक पुआर लऽ कऽ घूरमे दही ने।"

हथोरि कऽ भुखनी एक मुट्ठी पुआर निकालि घूरमे देलक। धुँआ दुआरे भुखनीकेँ तते खोंखी होय जे फुकले ने होय। तरे-तर दीनमाकेँ तामस उठै। मनमे होय जे एहि मौगियाकेँ दू घरमेचा दुनू कनगोजमे लगा दी। हम उठैबला नइ छी अइ मौगियाकेँ कोनो लूरिये ने छै। मुदा फेरि होय जे एकटा दुख तँ लधले अछि, दोसर बेसाहनाइ नीक नै हएत। तँ चुप्पे छल। घूर धधकलै। धुँआ सभ हवाकेँ चाटि गेल। घूर धधैकते शीशीसँ भूखनी तरहत्थीपर करु तेल लेलक। दुनू तरहत्थीमे मिला, आगिक ताव लगा-लगा, दीनमाक ठहुनमे रगड़ए लागलि। कने कालक बाद दीनमाकेँ ठेहुनक गिरह हल्लुक भेलै। ठेहुन हल्लुक होइते दीनमा पाएर मोड़लक। अपने हाथे पाएरक गिरह टोवए लगल। पाएर टोबि दीनमा भूखनीकेँ कहलक- "कने डिबिया तेल आ करुतेल मिला तरबा रगड़ि दिअ।"

डिबिया तेल आ करुतेल मिला भुखनी पतिक तरबा रगड़ए लागलि। तरबा रगड़िते दीनमाक झुनझुनी छुटि गेल। मन हल्लुक होइते दीनमा उठि कऽ बहार भेल। बहारसँ आबि भुखनीकेँ कहलक- "जाड़क सुख धनीक लोककेँ होइ छै। गरीब-गुरबाक हिस्सामे अनेरे भगवान जाड़ देने छथिन।"

बसन्तक आगमन भेल। काल्हिए सरस्वती पूजा सेहो छी आ किसान सभ हर ठाढ़ सेहो करत। समए सेहो गरमाए लगल। छोट दिन सेहो रसे-रसे नमहर हुअए लगल। कत्ते हरवाह गिरहत बदलैक विचार कऽ नवका गिरहत ठेमौलक। दीनमा ऐठाम सेहो कैकटा गिरहत आबि हर जोतैले कहलक। मुदा दीनमा ककरो ने गछलक। किऐक तँ वसन्त पंचमीमे जे हरवाह जइ गिरहतक हर ठाढ़ करैत ओकरा सालो भरि हर जोतए पड़तैक। बन्हुआ काज दीनमाकेँ पसिन्न नहि। छुट्टा रहने बोनिहार स्वतंत्र भऽ काज करैत। जइठाम काज करैक मन हेतै तइ ठाम काज करत, बोइन लेत। अखन धरि गाममे यएह प्रथा चलैत जे हरबाहकेँ पाँच कट्ठा खेत बटाई करैले भेटैत छल। मुदा एहिवेर अदहा लोक पंजाब-दिल्ली चलि गेल तँ हरवाहक मंहगी भऽ गेलै। हरबाहि करैबला सभ अपनामे विचारि लेलक जे हरबाहिक बोइन एक अढ़ैया कच्चीसँ बढ़ा पाँच किलो बोइन लेब नहि तँ हरबाहि नहि करब। संगे बटाइ खेतक उपजा अदहा नइ देबै। तिहाइ देबै तइपर जँ किसान तैयार हुअए तँ बड़बढ़िया, नइ तँ अपन-अपन हर अपने जोतह।

दश वरिससँ भुटकुमरा राधाकान्तक हर जोतैत अबै छल। अइबेर हर ठाढ़ करैसँ तीन दिन पहिने जबाव दऽ देलक। हर ठाढ़ होइसँ एक दिन पहिने राधाकान्त

भुटकुमरा ऐठाम आबि हर ठाढ़ करैले कहलक। भुटकुमरा हर ठाढ़ करैसँ इनकार करैत कहलक- ‘‘गिरहत पाँच किलो बोइन लेब। सभ हरबाह अपनामे बैसि निर्णए केलक। जँ पाँच किलो हरबाही बोइन देबै तखन तँ हर ठाढ़ करब, नइ तँ नहि ठाढ़ करब।’’

भुटकुमराक बात सुनिते राधाकान्तक उज्जर आँखि लाल हुअए लगल। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत राधाकान्त कहलक- ‘‘गामक जँ सभ गिरहत पाँच किलो बोइन तौलत तँ हमहूँ देबै। जँ से नहि देत तँ असकरे हमहीं किऐक देबै।’’

राधाकान्तक बात सुनि भुटकुमरा उत्तर देलक- ‘‘आन गिरहत आ आन हरबाह जे करै, मुदा हम पाँच किलो बोइन लेबे करब। जँ से नइ देब तँ हरबाहि नइ करब।’’

हरबाहि नइ करब सुनि राधाकान्त आगि-बबूला होइत भुटकुमराकेँ कहलक- ‘‘अगर सभ गिरहत पाँच किलो देत तँ हमहूँ देवह। जँ नहि देत हमहूँ नहि देबह। मुदा काल्हि पाबनिक दिन छी तँ हर ठाढ़ करबे करिहह।’’

भुटकुमराक मनमे एलै जे ई गिरहत सबहक चलाकी छी। जखने हर ठाढ़ करब तखने बन्हा जाएब। जखने बन्हा जाएब तखने बलजोरी, पनचैती बैठा, हर जोतेबे करत। तँ अखुनकेँ फरियेलहा नीक रहत। मुँह चोरौने काज नै चलत। खुलि कऽ खेलाइये पड़त। दृढ़ भऽ भुटकुमरा कहलक- ‘‘क्यो बोइन दइ वा नइ दइ, मुदा हम पाँच किलो नेने बिना हर ठाढ़ कित्नहु नहि करब।’’

भुटकुमराक सक्कत बोली सुनि राधाकान्त अकड़ि कऽ कहलक- ‘‘क्यो किछु करै, मुदा तोरा पुरने बोइनपर हर ठाढ़ करए पड़तह जँ नहि करवह तखन बुझल जेतै।’’

जहिना राधाकान्त कठोर होइत बाजल तहिना भुटकुमरो कहलक- ‘‘अइ भागक सुरुज ओइ भाग किअए ने उगै मुदा भुटकुमरा अपन बात कोनो हालतमे बदलि नहि सकैए।’’

तेबर वदलैत राधाकान्त कहलक- ‘‘हर नइ ठाढ़ करवह तँ हमर करजा चुका दाए। तोहूँ घर हमहूँ घर। जाबे करजा नहि चुकेबह ताबे गट्टा पकड़ि हर जोतेवे करवह।’’

भुटकुमरा- ‘‘बहुत गट्टा पकड़िनिहारकेँ देखलिये जँ तोरा हिम्मत हुअ-अ तँ गट्टा पकड़ि कऽ देखि लिहह। मरदक गट्टा छियै मौगीक नहि।’’

राधाकान्त- ‘‘बड़बढ़िया, हर नहि ठाढ़ करैक मन छह तँ नहि ठाढ़ करिहह। मुदा हमर करजा तँ देवह। चलह हमरा ऐठाम। बहीमे जत्ते लिखल हएत तत्ते दऽ दिहह। तोहूँ घर हमहूँ घर।’’

राधाकान्तक बात सुनि भुटकुमराक मनमे एलै जे जँ कहीं ओइठाम जाय आ सभ समांग मिलि कऽ माराए। तखन तँ नाहकमे मारि खा जाएब। गुनधुन करैत भुटकुमरा कहलक- ''एतै बही नेने आबह। जे बाकी हैतै से दऽ देबह।''

राधाकान्तक मनमे आएल जे जँ ऐठाम बही लऽ कऽ आबी आ छीनि कऽ निशान फाड़ि दियाए, तखन तँ सभ चैपट भऽ जाएत।

दुनू गोटेमे गप्प-सप्प चलिते छल कि भुटकुमराक बेटा गुलेतिया पंजाबसँ आएल। तीनि साल पहिने गुलेतिया मामा गामक लोक सबहक संग दिल्ली गेल। दिल्लीमे नोकरी भेबे ने केलै। पनरह दिन घुरि-फिरि दिल्लीमे ठमौलक। मुदा कतौ गर नहि देखि पंजाब विदा भेल। गाड़ियेमे एकटा नवयुवक पंजावी सरदार जीसँ भेंट भेलै। सरदारजी दिल्लीमे पढ़ैत। ओही सरदार जीक संग गुलेतिया पंजाब गेल। ओहि युवक-सरदार जीक पिता सुभ्यस्त गिरहस्त। जहिना खेती-बाड़ी तहिना मालो-जाल। ओहिठाम गुलेतिया रहि गेल। पंजाब जेवा काल गुलेतिया कोनो चिन्हरवासँ भेंट नहि केने रहै। अनका मने गुलेतिया हरा गेल। क्यो कहै जे गाड़ीमे चप्पा पड़ि गेलै तँ क्यो कहै चोरीमे पकड़ा गेल। एखन जहलमे अछि। क्यो कहै अरब चलि गेल तँ क्यो कहै दलाल ठकि कऽ बेचि लेलकै। क्यो कहै क्रिमिनलक गैंगमे अछि तँ क्यो कहै पॉकेटमारी करैए। मुदा भेटि ककरो ने होय। जना-जना दिल्लीक लोक गप्प उड़बै तहिना-तहिना गामोमे समाद अबै। रंग-बिरंगक गुलेतियाक समाचार सुनि दुनू परानी भुटकुराक कान बहीर भऽ गेलै। सालभरि जखन भऽ गेल आ गुलेतियाक कोनो चिट्ठी-पुरजी वा रुपैआ गाम नहि ऐलै तखन माइयो बाप छातीमे मुक्का मारि सबुर कऽ लेलक। जइ सरदार ऐठाम गुलेतिया रहै छल ओ साँझू पहर कऽ गुलेतियाकेँ खिस्सा-पिहानीसँ लऽ कऽ खेती-पथारी, परिवार-कुटुम्ब सबहक संबंधमे कहै। मने-मन गुलेतिया तँए कऽ लेलक जे ने नोकरी करैले दोहरा कऽ आएब आ ने घर रुपैआ पठाएब। जइ दिन बुझि पड़त जे अपन कारबार ठाढ़ करै जोकर कमा लेलै तइ दिन सभ हिसाब-बारी कऽ, रुपैआ लऽ गाम चलि जाएब। सएह केलक। गुलेतियाकेँ देखि भुटकुमरा चिन्हबे ने केलक। पंजाबी पैजामा-कुरता, हाथमे काड़ा, खूब नमहर-नमहर केश-दाढ़ी गुलेतियाकेँ रहै।

दरबज्जापर अबिते गुलेतिया झोरा, एटैची राखि भुटकुमराकेँ गोड़ लगलक। माथ ठोकि भुटकुमरा आसिरवाद तँ दऽ देलक, मुदा चिन्हलक नहिये। एक बेर मनमे एलै जे गुलेतिया ने तँ छी, फेरि भेलै जे ओ तँ मरि गेल। राधाकान्त गुलेतियाकेँ देखि ससरि गेल। ताबे गुलेतियाक माइयो अंगनासँ मुँह झपनेहि निकलि ओलती लग आबि ठाढ़ भऽ गेलि। तरे-तर गुलेतिया हँसबो करैत आ चुप-चाप ठाढ़। टोलक धिया-पुता सभ हल्ला करैत- ''हींगबला आएल, हींगबला आएल।'' बजैत जमा हुअए लगल।

थोड़ै कालक बाद, अचताइत-पचताइत भुटकुमरा गुलेतियाकेँ पूछलक- ''बौआ, अदहा-छिदहा चिन्हवो करै छिअह आ नहियो चिन्है छिअह, तँ ठीकसँ अपन चिन्हारै दाए?''

मुस्कुराइत गुलेतिया-पिताकेँ कहलक- ''गुलेतिया छिअह।''

गुलेतिया नाम सुनिते भुटकुमरा हक्का-बक्का भऽ गेल। आँखिसँ नोर टघरैत, माए दौड़ल आबि दुनू हाथे भरि पाँज कऽ पकड़ि छाती लगौलक। जना तेज हवाक बीच घनघोर बरखा होइत काल उपरसँ ठनका खसैत आ पृथ्वीमे भूमकम होइत तहिना भुटकुमरा ऐठाम बुझि पड़ए लगल। गुलेतिया मात्र पाइयेटा कमा कऽ नइ अनलकहेँ। ओ अनलक जिनगी जिवैक ढेरो लूरि, ओ अनलक संकल्प, ओ अनलक कठिन मेहनत करैक उत्साह, ओ अनलक परिवार रुपी मोटा कऽ उपर फेकैक उद्देश्य।

राधाकान्त सोझे घर दिशि चलल। मनमे एलै जे, की आइ वेइज्जत भेलौं? ई प्रश्न उठितहि, मनमे जबाव फुरलै इज्जत छीयै धन। तखन बेइज्जत कोना भेलौं। जँ ओकरा अपना हाथसँ पाँच किलो बोइन तौल देबै तखन ने बेइज्जती। मनमे हँसी उठलै- जे करजा तरमे दाबल अछि। दावल मात्र लेलहे नहि, ओकर जिनगी करजेक रास्तासँ चलैत अछि। तखन पानिमे रहि मगरसँ बाइर.. कते काल....।

आन सालक हिसाबे अइ साल दीनमा दोबर खेत तमिया केलक। सरस्वती पूजा दिनसँ दीनमा खेत तमनीमे हाथ लगौलक जे वैशाखक जानकी नवमी दिन धरि तमैत रहल। तमनी तँ किछु दिन आरो चलितै मुदा बिहरिया हाल नइ भेने खेत सभ सक्कत भऽ गेल, तँ छोड़ि देलक। आन सालसँ बेसी गरमी अइ बेर बैशाखेमे पड़ए लगलै। दीनमा घरसँ थोड़े हटि, बीच बाधमे एकटा आमक गाछ रहै। ओ गाछ जेहने नमहर तेहने झमटगर। सभ तूर दीनमा ओहि गाछक निच्चामे वैशाख-जेठक रौद बितबैत। अखार चढ़िते घनघनौआ बरखा भेल। बरखाक आनंद, सभतूर दीनमा, बाधेमे लेलक। बरखाक आनंद लइ काल दीनमाक मनमे एलै अनेरे भगवानकेँ लोक बेइमान कहैत छन्हि। जँ ओ बेइमान रहितथि तँ एते आनन्द गरीब-गुरबाकेँ किऐक दितथिन्ह।

असकरे देवन वैसि मने-मन जोड़ै लगल साल लागि गेल। आब ऐठाम एक्को दिन नहि रहब। जँ एक्के ठाम रहि समए बिताएब तँ दुनियाँ कोना देखि पाएब। ककरोसँ किछु कहनहि बिना देवन नवटोलसँ विदा भऽ गेल।

(७)

नवटोलसँ देवन विदा भऽ गेल। देवन रस्तो काटै आ मने-मन सोचवो करै जे अगिला केहेन गाम हएत। दू तरहक विचार देवनक मनकेँ घेरने। एक तरहक विचार होय जे आगूक मतलब नीकमे आगू आ दोसर तरहक होय जे अधलामे आगू। फेरि मनमे उठलै जे नीकमे आगूक मतलब सेहो दू तरहक होइत। एकक मतलब होइत देहक सेवामे आ दोसरक होइत आत्माक बुद्धि विवेकक सेवामे। फेरि मनमे उठलै आत्मा तँ प्रकाश स्वरुप होइत। तखन बिनु प्रकाशे हएत की? तहिना अधलो दू तरहक होइत। जकर आधार होइत, जाति, धरम आ धन। जना कोनो गाममे उच्च जाइतिक बोलवाला होय, तँ नीच जाइतिक लेल अधला भेलै। तहिना नीच जातिक बोलवाला बला गाम उच्च जातिक लेल अधला भेलै। तहिना धरमो आ धनोक आधारसँ होइत। बच्चा देवन जत्ते सोचए चाहैत तते ओझराएल जाए। उम्मस रहने जना लोकक मन औल-बौल करैत तहिना देवनोकेँ होइत। रास्ता दिश धियाने ने रहलै। पैछला जना सभ कुछ विसरि गेल हुअए आ अगिलाक दरबज्जे बन्न देखै।

देवन बैसि रहल। मनमे कोनो विचार उठबे ने करै। सरदक समए रहने सुरुजेक किरिणिक रंग निन्नो आवि गेलै। मनमे किछु रहबे ने करै तँ देह हल्लुक रहै। निन्नकेँ खुजल दरवाजा भेटिलै। देबनक देहमे घोसिया गेल। रस्तेपर देवन सुति रहल। बुद्धि-विवेक तँ पहिनहिसँ बच्चे छल, मायक कोरामे सुरुजक गरमी भेटलै, निभेर भऽ सुति रहल। मुदा छोटके निन्न छलै। ज्ञान तँ जगलै मुदा देह पड़ले रहै। जेना क्यो ज्ञान कऽ कहलकै- "हइ बटोही, सुतने रस्ता कटतह जे दुनियाँ देखवह। तेहेन बाधमे सुतल छह जे, खेतक आड़ि सभमे साँपक बिल देखै छहक। जल्दी उठि कऽ रास्ता नापह नइ तँ साँप आबि कऽ धैय लेतह। पड़ले रहि जेवह।"

देवन उठि कऽ बैसल। चारु भर आँखि उठा कऽ तकलक। निनाएल आँखि रहने साफ-साफ किछु ने देखलक। दुनू हाथसँ दुनू आँखि मीड़ि आंगुरसँ काँची निकाललक। काँची निकलिते फरिच्छ देखए लगल। उठि कऽ ठाढ़ भेल। आगू बढ़ल। किछु दूर आगू एकटा गाम नजरि पड़लै। कातेसँ हियासए लगल जे गाम नमहर अछि, की छोट? जत्ते गामक लग पहुँचैत जाए तत्ते आँखि झलफलाइत जाय। गाम नमहर अछि की छोट, बुझिये ने पड़ै। दछिनवारि भाग देखलक जे एकटा खूब नमहर कोठा झलकै छै। खूब नमहर-नमहर तारक गाछ सभ सेहो छै। एक टकसँ देखि देवन उत्तरवारि भाग तकलक तँ देखलक कत्ते खुलोमे आ कते गाछक नीचोमे, दश-बारह हाथ नमती आ चारि-पाँच हाथ चैड़गर टाटकेँ मोड़ि घर बनौने। अदहा छिदहा खजूरक गाछ आ अदहा-छिदहा लताम, नेबोक गाछ बुझि पड़लै। देवन देखबो करै आ चलवो करै। गाम पहुँच गेल।

गाम पहुँचते देवन देखलक जे रास्ताक दहिना भाग एकटा औरत बताहि जेकाँ बगए बनौने, पाँच बर्खक बेटाकेँ कहैत- "इस्कूल जेमे की नै?"

कुही भऽ भऽ कनैत बेटा कहलकै- "मरि जेबो मगर उसकूल नै जेबौ। माहटर सहाएब अपनोसँ नमहर ठेंगा लऽ कऽ मारैए।"

बेटाक बातपर ध्यान नहि दऽ माए बुधनी पुचकारि कऽ कहलकै- "बौआ, नै पढ़मे तँ वियाहो ने हेतौ।"

"नै हएत तँ नै हएत।"

माए-बेटाक बात देवन ध्यानसँ सुनवो केलक आ सोचबो केलक। रास्तासँ उतड़ि देवन बुधनीक अंगनाक बाट धेलक। डेढ़ियापर पहुँचते बुधनी देखलकै। देखिते बुधनी देवनकेँ पूछलकै- "बौआ, कतए रहै छह।"

परिचित जेकाँ देवन उत्तर देलक- "हमरा गाम-ताम नइए। जतइ मन-फुड़त रहि जाएब।"

छगुन्तामे पड़ि बुधनी सोचए लगलि। कहैए गाम-ताम नैइए। कोराक बच्चा झूठ बाजत? माए-बाप तँ जरुर हेतै। फेरि मनमे एलै जे मनुक्खो तँ माले-जाल जेकाँ जिनगी बितवैए। बगए-बानिसँ अनाथ बच्चा जेकाँ बुझि पड़ै छै। ने किछु खाइले छै आ ने भरि देह बस्तर देखै छी। पुनः बुधनी पूछलक- "माए-बाबू कतए छथि?"

निधोख भऽ देवन उत्तर देलक- "दुनू गोटे मरि गेल। असकरे छी।"

असकर सुनि बुधनी पूछलक- "ऐठाम रहबह?"

मुस्कुराइत देवन कहलक- "हँ, रहब। मगर जहिया मन हएत तहिया चैल जाएब।"

देवनक बात सुनि बुधनी मने-मन सोचए लागलि। मनमे एलै हमहूँ तँ असकरे छी। आदमीक जरुरी हमरो अछि। जँ कने समरथ रहैत तँ खेतियो-पथारी करैत, मुदा तइयो तँ पुरुखे छी। कहलक- "बौआ, एतै रहि जाह।"

देवनो रहै लए तैयार भऽ गेल। देवनकेँ राजी देखि बुघनी पूछलक- "रातिमे खेने छेलह कि नै।"

देवन कहलक- "हँ, खेने छलौं। अखनी भुख नैइए।"

बुधनीक मनमे आशा जागल। जहिना कोनो फूलक गाछक सभ पात बकरी खा लैत, खाली डारि आ गोटे आधे फूलक कोढ़ी बचल रहैत, जे समए पाबि खिल उठैत, तहिना भेल। घरसँ विछान निकालि बुधनी देवनकेँ बैइसै लऽ बिछा देलक। देवन आ रमुआ बेटा बैसल। बुधनी अंगनाक काजमे लागि गेलि।

देवन रमुआकेँ पूछलक- "बौआ, बाबू कतए गेलखुन?"

रमुआ उत्तर देलक- "बौउ मैर गेल।"

रमुआक बात सुनि देवनक मनमे एलै जे बपटुगर जेकाँ नै बुझि पड़ैए। मुदा झूठ तँ नै कहने हएत।

वासन-कुसन अखारि, चुल्हि लग जारन राखि, पानि भरि बुधनी देवन लग आबि वैसि गेलि। बुधनीकेँ ओछाइनपर वैसिते देवन पूछलक- "अहाँक पति कहाँ छथि?"

पतिक नाम सुनिते बुधनीक दुनू आँखि नोराए लगल। मुँहक बोली कऽ सोग धकीयाबए लगल। दुनू चुप। ने देवन बजैत आ ने बुधनी। मुदा दुनूक चारु आँखि आगू-पाछू, उपर-निच्चाँ, दहिना-वामा भाग देखैत आगू बढ़ि एक ठाम भऽ गेल। एकठाम होइते बुधनी कहए लागलि- "बौआ! पौरुकाँ सालक गप छी। अखैन तँ एकोटा नांगरि नै अछि। असकरुआ छी। खूँटा परक महीस उठल। बड़ दुधगैर छलाए। अपनो सभ तुर दूध खाइ छेलौं आ बेचबो करै छेलौं। हाथ-मुट्ठीमे दू-पाइ, चारि पाइ रहिते छलाए। गाँवा सभ मिलि कऽ एकटा पारा पोसने अछि हमहूँ पाँच रुपैआ बेहरी देने रेहियै। बड़ सहठुल पारा छै। महींस उठल तँ पारा लागि गेलै। दुनू एक्केमे खेबो करै आ रहबो करै। साँझ पड़ि गेल। अनहरिया पख। तँ दोसरे साँझसँ अन्हार गुप-गुप वुझि पड़ै। अन्हारेमे एकटा अनठिया पारा चलि एलै। भैसीक घर पैसि परासँ लड़ए लगलै। रमुआक बाप, एकटा भराठ लऽ कऽ, अनठिया पाराकेँ भगवए चाहलखिन। लड़ब छोड़ि पारा हुनकेँ खिहारि कऽ पटकि सींगसँ हुरा लियए लगलनि। हम जोर-जोरसँ हल्ला करी- जे हौ लोक सभ रमुआ बापकेँ पारा खुन कऽ देलकनि दौड़े जा....., जाबे लोक सभ जुटल ताबे हुँनका अघमौगैत कऽ देलकनि। छातीक हाँड़ थकुचा-थकुचा भऽ गेलनि। राति रहै। की करितौं? भरि राति हुनकेँ टहल-टिकोरामे बीत गेल। गाममे डाकडर नै। ओ पति कखनो कुहरवो करथि आ कखनो निसपरान भऽ जाथि। तखन हुअए जे परान छूटि गेलनि। हाथसँ किछु-किछु करवो करी मुदा आँखिसँ तते लोर खसल जे अँचरा भीज गेल। अपनो अहलदिल्ली पैसि गेल। भोरे खाटपर उठा श्रीबाबू डाकडर लग गेलौं। जन्तर लगा-लगा डॉक्डर सहाएव देखलखिन। देखि कऽ कहलखिन- "जत्ते दिन रोगी जीयत, तत्ते दिन कष्टे हेतनि। नइ बँचत। घरेपर लऽ जैयौन जाबे जीता ताबे सेवा करवनि।"

डाकडर सहाएवक बात सुनि हमरा चौन्ह आबि गेल। भुइयाँमे खसि पड़लौं।

बड़ी काल तक किछु बुझबे ने केलियै। जखैन मन नीक भेलि तखन बुझलियै जे दू-चारि दिनमे मरि जेताह। एक्केटा पिलुआ भेल छलाए। मुदा मन नै मानलक। लोको सभ कहलक जे मरथुन नहि। बड़का-बड़का ओझहा गुनी सभ अछि। बढ़मोतरा बला ओझहा गाछ हँकैए। ओकरा ऐठाम ककरो पठावहक। सएह केलौं। ओझहा आएल पूजा ढारलक, भाउ खेलाएल। कहलक जे ठीक भऽ जेतहुन। पान सात सए रुपैआ खरच भेल। मुदा किछु ने भेलनि। एहिना-एहिना परोपट्टामे जते धाइम, भगता, तांत्रिक अछि, सबहक ऐठाम गेलौं। खरचो माइर भेल आ छुटबो ने केलनि। सातम दिन मरि गेला। ने अपने खेती करैक लूरि आ ने माल-जाल पौसैक। महींसो चैल गेल। गाछो-बाँस उपटि गेल। आब पनरह कट्ठा खेतेटा अछि। कन्ना जिनगी चलत से बुझवे ने करै छियै।"

बुधनीक बात सुनि देवन सोचए लागल- "हमहूँ तँ बच्चे छी। अनायास मनमे एलै जे सिरिफ दीदीये बुधनी टा तँ खेतवाली नइ अछि। गाममे बहुतो खेतबला अछि। अनको सबकेँ पूछि खेती करब। तेइ लऽ चिन्ता की करब?"

समाज समुद्र छी। दोसराक सहारा लऽ पार-घाट लगाएव।" एते बात मनमे अबिते देवनक मुँहमे हँसी आएल। उठि कऽ ठाढ़ भेल। बाड़ी दिशि घूमै लऽ विदा भेल।

चुल्हि पजारि वुधनी भानस करए लागलि। घुरि-फिरि कऽ आबि देवन चुल्हियेक पाछूमे बैसल। भानस भेलै। देवनकेँ वुधनी खाइले देलक। खाइते काल देवन वुधनीकेँ कहलक- "अहाँकेँ हम दीदी कहब आ रमुआकेँ बच्चा।"

देवनक बात सुनि मुस्की दैत वुधनी बाजलि- "तोरा बेटा कहबौ। तीनू गोटेक संबंध स्थापित भऽ गेल। खेलाक बाद देवन वुधनीकेँ कहलक- "दीदी! जत्ते खेत अछि ओ बेरु पहर हमरो देखा देव।"

कनिये दिनमे देवन संगे वुधनी अपन खेत देखबए चललि। पनरहो कट्ठा खेत तीनि कोलामे बँटल। तीनू कोला देखि दुनू गोटे घुरि कऽ आंगन आएल। आंगन आबि देवन बुधनीकेँ कहलक- "दीदी, हमरा खेत तमैक लूरि अछि। कोदारि अपना अछि की नइ।"

देवनक बात सुनिते बुधनी घरसँ बीझेलहा ठेठा कोदारि निकालने आएलि। कोदारिकेँ देवन निङहारि-निङहारि देखए लगल। कोदारि राखि देवन सोचलक जे काल्हि भोरे कोदारिकेँ सिलौटपर रगड़ि धरगड़ बना लेब। दुनू गोरे एकके कोदारिसँ बेड़ाबेड़ी तामब।

भोर होइते देवन कोदारि पीजबए लगल। बुधनी जलखै बनबए लागलि। तीनू गोटे जलखै खा खेत विदा भेल। खेत पहुँच देवन तामए लगल। तमबो करै आ गोलो फोड़े। थोड़े कालक बाद देवन थाकि गेल। देवनकेँ थकिते बुधनी तामए लागलि। जहिना-जहिना देवन तामि-तामि गोला फोड़ैत, तहिना-तहिना बुधनियो करए लगलि। फेरि थोड़े खानक बाद वुधनी थाकलि कि देवन कोदारि पाड़ए लगल। दुनू गोटे मिला दश-बारह धुर खेत तामि गोला फोड़ि अंगना विदा भेल। रास्तामे देवन बुधनीकेँ कहलक- "दीदी, कोदारियेसँ हरक काज कऽ लेब। जखन पानि हेतै बीआ पाड़ि लेब।" देवनक विचार सुनि बुधनी सोचए लागलि जे कहुना-कहुना खेती कइये लेब। जखने खेत अबाद भऽ जाएत तँ नइ सोलहन्नी तँ अठन्नियो चैवन्नियो उपजा हेवे करत। अदहो-छिदहो उपजा भेने नइ साल भरि तँ छओ महिना गुजर चलबे करत। अंगना पहुँचल। अंगना अबिते बुधनी पाएरपर एक चुरुक पानि दऽ घरसँ विछान निकालि छाहरिमे बिछा, देवनकेँ आराम करैले कहलक आ अपने भानसक जोगारमे लगि गेलि।

सभ दिन दुनू गोटे खेत तामए लगल। महिनो ने लगलै, सभ खेत दुनू गोटे मिलि तामि लेलक। जेठ मास। रौदसँ जमीन जरए लगल। गाछ-बिरीछक पत्ता पीअर भऽ-भऽ खसए लगलै। इनार पोखरिक पानि किछु उड़ए लगल आ किछु अपन जान बँचबए लेल पतालक रास्ता पकड़लक। तीनि बर्खक बाद एहिबेर आम फड़ल। टुकला बिछै लऽ देवन रमुआकेँ संग कऽ सभ गाछीक आम देखलक। आम देखि देवन बुधनीसँ पूछलक- "दीदी! अहाँकेँ आम गाछ नइए?"

आमक गाछक नाम सुनि बुधनीक आँखिमे आँसू अबए लगलै। जेहने दुख कमाइबला बेटा मुइने, उपजल जजात दहेने, देनुआर गाइक बच्चा मुइने होइत। तेहने दुख फड़ैबला आमक गाछ सुखने वा बेचने होइत। करेज असथिर करैत बुधनी देवनकेँ उत्तर देल- "बौआ! आमक गाछ तँ अपनो छल मुदा विपत्ति पड़ल तँ बेचि लेलौं बुधनीक बात सुनि देवनक मनमे कचोट एलै मुदा किछु बाजल नहि। मने-मन सोचए लागल जे गाममे तत्ते आम फड़ल अछि जे मास दिन कतबो लोक खाएत तइयो उगड़बे करतै। जकरा बेसी हेतइ ओ बेचवो करत। देवन पूछलक- "सभसँ बेसी आमक गाछी ककरा छै?"

"नसीवलाल काकाकेँ।"

"हुनका ऐठाम बेरु पहर जाएब। हुनका कहबनि जे दूटा आमक गाछ हमरा हाथे बेचि लिअ। दूटा गाछ कीनने अपनो खाएब आ फजिलाहा बेचि कऽ हुनकर दामो दऽ देवनि।"

मेहनतक बले नसीवलाल काका बहुत किछु अरजि लेलनि। साले भरिक जखन नसीवलाल रहथि तखने पिता मरि गेलनि। असकरे माएटा परिवारमे। छोट बच्चाक ममता माइयक हृदयकेँ हिला देलक। वेचारी सासुरसँ नैहर चलि ऐली। बेटीक बगए देखि माए बताहि जेका करए लगली। मने-मन भगवानकेँ गरिऐवो करति- जे केहेन चंठ छथि। अखन बेटी खाइ-खेलाइक उमेरक अछि तखन ओ विपत्तिक पहाड़ गिरा देलखिन। मुदा पतिक बात- "जहिना बेटी हमरा घरमे जनमल आ सेवा केलियैक तहिना जाबे जीबि, ताबे करवै।" सुनि मन असथिर भेलै। नाना-नानीक छाहरिमे नसीवलालक पालन भेल। जहिना धीपल लोहा हथौरीक चोट खा नीक वस्तु बनैत तहिना नसीवलालोक जिनगीमे भेल। बच्चेसँ नानाक संग नसीवलाल रहि काजक लूरि सीखए लगल।

नसीवलाल जुआन भेल। नाना-नानी मरि गेलनि। अपन मेहनत आ लगनसँ ओ गुजरो केलक आ खेतो कीनलक। खेतीक आमदनीसँ गाए कीनलक, घर बनौलक, गाछी लगौलक। दिन-राति अपन जिनगीक लीलामे रमि गेल।

तीस बर्खक मेहनतसँ नसीवलाल गामक सभसँ पैघ गिरहस्त बनि गेल। खेती-बाड़ीसँ जे समए बचै ओहिमे पढ़वो-लिखवो करैत। सदिखन मनुक्खक बीच रहए लगल। हृदय ऐहन विशाल भऽ गेलै जे ढेरो मनुक्खक बीच रहनौ, असकरे बुझि

पड़नि। जहिना मेघमे लाखो तरेगण रहनहुँ सूर्य अलग बुझि पड़ैत, तहिना।

देवन नसीवलाल ऐठाम पहुँचल। नसीवलाल अपराजित फूलक लत्ती टाटपर बान्हि-बान्हि सरियबैत। अनभुआर देवनकेँ देखि पूछलखिन- ''तोरा चिन्हलिअ नै बौआ?''

पाएर छूबि गोड़ लागि देवन कहलकनि- ''काका, आब हम अहीं गाममे रहब। अपना घर-दुआर नइ अछि।''

चैंकैत नसीवलाल पूछलखिन- ''अइ गाममे कतए रहै छह?''

''बुधनी ऐठाम। वेचारीकेँ चारि-पाँच बर्खक बेटा छनि आरो क्यो नै।''

नसीवलाल- ''ऐठाम किअए ऐलह?''

''आमक मास छियै। वेचारीकेँ एक्कोटा आमक गाछ नहि छनि। तेँ सोचलौं जे अहाँसँ दूटा गाछक आम मोल लऽ लेब। अपनो खाएब आ बेचि कऽ दामो दऽ देब।''

उपर-निच्चाँ देवनकेँ निङहारि नसीवलाल कहलखिन- ''दरवज्जापर चलह। बैसि कऽ निचेनसँ गप करब। तोहर माए-बाप कतए छथुन?''

माए-बापक नाम सुनि, देवन उदास भऽ कहलकनि- ''दुनू गोरे मरि गेला। असकर बुझि घरसँ निकलि दुनियाँ देखै लऽ विदा भऽ गेलौं। सालभरि नवटोलमे दीनमा आ भुखनी ऐठाम रहलौं। साल पुरिते नवटोलसँ विकासपुर आबि बुधनी ऐठाम छी। वएह बेचारी अपनेक संबंधमे कहलनि। तेँ एलौं।''

देवनक बात सुनि, नसीवलाल अपन जिनगीपर नजरि दौड़बैत, गंभीर भऽ कहलखिन- ''हँ, हमरा बहुत आमक गाछो अछि आ आमो। अगर ओइ वेचारीकेँ नइ छैक, तँ चलह, एकटा बरहमसिया आमक गाछी अछि। ओ देखा दइ छिअह। बारहो मास फड़बो करैए आ खाइयोमे सुअदगर होइए। ओइमे जे तोरा पसिन्न हुअ-अ, दूटा गाछ लऽ लिह। ओकरे ओगरबो करिहह आ तामो-कोर करिहह। सालो भरि आम होइते रहतह।''

नसीवलालक बात सुनि देवनक मन खुशीसँ नाचि उठल। आशाक दुनियाँमे देवन भ्रमण करए लागल। गाछी देखए दुनू गोटे विदा भेला। गाछी पहुँचते देवनकेँ बुझि पड़ल जे आमक ढेरीक बीच आबि गेलौं। नमगर-चौड़गर गाछी। मझोलका गाछक संग बड़को-बड़को गाछ। जहिना गाछ सबहक सुन्दर रुप तहिना आमसँ लदल गहना। एक-दोसर गाछमे एत्ते स्नेह जे सभ अपन-अपन बाँहि समेटि-समेटि हटल। ने बड़का गाछ छोटकापर ओंगठल आ ने छोटका अपनाकेँ हीन बुझि दवाएल जइ गाछमे जत्ते बुत्ता तते बेसी फड़ल। नसीवलाल बीच गाछीमे ठाढ़ भऽ हियासथि आ देवन घुमि-घुमि सभ गाछ देखैत सगरे गाछी देखि देवन नसीवलालक लग आबि कहलकनि- ''अपने धन्य छी काका जे एते नमहर आ एते सुन्नर गाछी लगौने छी। हम तँ मोल

लइक विचारसँ आइल छलौं मुदा अपने ओहिना दइ छी तँ हम गाछीक ओगरवाहिये कऽ देव हमर मेहनतक जे मजूरी हएत, ततबे लेब।''

देवनक जिज्ञासाकेँ अंकैत नसीवलाल कहलखिन- ''अखन तू बच्चा छह तँ गाछी लगौनाइ सीखह। ताबे एकटा गाछ वहिना लऽ लाए आमो खेवह आ आँठी कऽ रोपि अपनो गाछी लगा लेबह। जखन फड़ए लगतह तखन अपन गाछीक सेवा करिहअ।''

नसीवलालक गप सुनि हँसैत देवन विदा भेल।

घरपर आबि देवन सभ बात वुधनीकेँ कहलक। दोसर दिनसँ देवन टुकला विछैक विचार केलक। मनमे एलै जे टुकला बिछैले नीक झोरा चाही। मुदा आइ तँ नइ अछि। तँ दीदी कऽ एकटा झोरा सिबैले कहि दइ छियै आ आइ मौनिये लऽ कऽ जाएब। मौनी नेने देवन टुकला बिछए विदा भेल। गाछीमे टुकला पथार लागल। मने-मन देवन सोचलक जे अखन दोसर काजो ने अछि तँ जँ सभ टुकला कऽ बीछि लेब आ सोहि कऽ आमील बना लेब तँ माइर पाइ हएत। मनमे अबिते देवन टुकला बिछए लगल। मौनी भरिते देवन विदा भेल। घरपर आबि बुधनीकेँ कहलक- ''दीदी, गाछीमे टुकला पथार लागल अछि। अहूँ चलू। बड़का छिट्टा सेहो लऽ लिअ। मौनीमे बीछि-बीछि छिट्टामे राखब। तीनू गोटे टुकला बिछए विदा भेल। टुकला देखि बुधनीकेँ अचंभा लागि गेल। भरि छिट्टा बुधनी, मौनीमे देवन आ दुनू हाथमे रमुआ टुकला लेने आंगन आएल। आबि देवन वुधनीकेँ कहलक- ''दीदी, अहाँ अंगनाक काज करु, हम टुकला सोहै छी।''

देवन टुकला सोहए लगल। बुधनी भानस करए गेलि। पनरहे दिनमे, धान-चाउरक पथार जेँका, आमिलक पथार भऽ गेल। आमील सुखा-सुखा बुधनी दू कोठी भरलक।

अंतिम जेठमे झमझमौआ बरखा भेल। धरतीक ताप आ पानिक ठंढ़कक बीच हाथा-पाइ हुअए लगल। हाथा-पाइ करैत दुनू अलिसा कऽ सुति रहल। पैछला सालक बात देवनकेँ मन पड़ल। जे बीआ बाओग करैक समए आबि गेल। मुदा कथीक बीआ वाओग हएत से वुझवे ने करै छी। बुधनियेक घर लग सजनाक घर। सजन गिरहस्त। देवनक मनमे एलै जे सजन गिरहस्त छथि तँ हुनकेसँ पूछि लेब, नीक हएत। सजन ऐठाम देवन गेल। हाल देखि सजन हरक सामान सभ, गठूलासँ निकालि, डेढ़ियापर झोल-झाल साफ करैत छल। देवनकेँ देखि सजन पूछलक- ''बौआ, किमहर-किमहर ऐलह?''

देवन- ''अहींकेँ पूछए एलौं जे पानि भेलि हेन से कथीक बीआ अखन पाड़बै?''

सजन बाजलि- ''बौआ, गिरहस्ती तँ हम जरुर करै छी, सभ काज करैक लूरिओ अछि। मुदा पढ़ल-लिखल तँ छी नहि! तँ महीना लछत्तरक ठेकाने ने रहैए।

अखैन हरक सभ सामान जोड़िया लइ छी आ बेरु पहर नसीवलाल कक्का ऐठाम जा कऽ बुझि लेब। तोहूँ संगे चलिहह। जे बुझैक हेतह से पूछि लिहौन।''

''बड़बढ़िया'' कहि देवन चल आएल।

बेर टगिते देवन सजनक संग नसीवलाल ऐठाम विदा भेल। दरवज्जेपर बैसि नसीवलाल बेटाकेँ बीआ बाओग करैक संबंधमे कहैत रहथिन। देवन आ सजन पहुँचल। दुनू गोटेकेँ देखि नसीवलाल पूछलखिन- ''दुनू गोटे किमहर-किमहर चललियैहें?''

सजन कहलकनि- ''काका, हम तँ अहाँसँ पूछि खेती करै छी। आइ भिनसरे देवन हमरासँ पूछए आएल। तखन हम हरक समचा जोड़िअवैत रही तँ कहलियै जे बेरु पहर दुनू गोरे चलि कऽ काकासँ बुझि लेब। तँ एलौं।''

मुस्कुराइत नसीवलाल कहलखिन- ''पहिने तमाकू खुआवह। तखन गप-सप करब।''

कहि नसीवलाल चुनौटी निकालि सजनक हाथमे देलखिन। सजन तमाकुलो चुनबए आ कहवो करनि- ''काका, तेहेन बरखा भेल जे मन खुशी भऽ गेल। हूँ कारी भरैत नसीवलाल कहलखिन- ''छोट-छीन बरखा होइत तँ रस्ते-पेरे रहि जाइत। मुदा झमकौआ बरखा भेने जमीनमे तेहेन हाल भेल जे गिरहत बीओ-बाइल खसा लेत आ दश दिन अफारो खेत जोतत।'' घासो सभ, जे सूखा गेल छल ओहो पौनगत। जइसँ मालो-जालकेँ खोराकी बढ़तै।''

चुटकीमे तमाकुल लऽ सजन नसीवलाल दिशि बढ़ौलक। वामा तरहत्थीपर तमाकुल लऽ नसीवलाल दहिना औँठासँ दू बेरि रगड़ि नाकमे औँठा भीरा नोइस लऽ तमाकुल मुँहमे लेलक। नोइस लगिते छिक्का भेलनि। छिक्का होइते नसीवलालक मन हल्लुक भेलनि। मन हल्लुक होइते नसीवलाल कहए लगलखिन- ''जेठ अंत भऽ रहल अछि। बड़ सुन्दर हाल भेल। पुरना ढंगक गिरहस्तीमे मड़ूआ, गरमा धान आ नीचला खेतक अगहनी बीआ खसबैक समए आबि गेल। आँखि मूनि कऽ लोक बीआ पाड़त। हमरा तँ बोरिंग अछि तँ मकइओ तिलकैए आ गरमाधान सेहो काटै छी। बैशाखा तरकारी सजमनि, रामझिमनी, झिमनी, ठढ़िया साग इत्यादि भरखैर निकलैए। महिना दिन आरो चलत। रामझिमनी बरसातिओ होइत। सजमनि झिमनी साग इत्यादि सेहो बरसातीओ होइत तँ ओहो सभ लगाओल जाएत। मुदा सभसँ पैघ बात अछि जे सभ गिरहतो तँ एक रंग नहि अछि तँ फुटा-फुटा अपन-अपन बुझए पड़तै।''

नसीवलालक बात सुनि सजन संतुष्ट भऽ गेल। मुदा देवनक मनमे अनेको सवाल उपकि गेल। देवन पूछलकनि- ''काका, हमरा दीदीकेँ तँ पनरहे कट्ठा खेत अछि आ दुनू गोटे अनाड़िये छी। हम कोना की करब?''

नसीवलाल- ''तीनि गोरेक परिवारमे बहुत जमीन अछि। जँ ढंगसँ उपजा हएत तँ सालो भरि गुजर कऽ कऽ उगड़वो करत।''

उगड़व सुनि देवन उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। नसीवलाल देवनकेँ बैसवैत कहलखिन- ''सभसँ पहिने देवन सालकेँ मनसँ निकालि लाए। तीन तरहक मौसम होइ छै आ तीनू मौसमक फसल सेहो होइ छै। तेँ अखन तूँ गरमाधान जे चारि मासमे भऽ जाइत। मड़ूआ, तीमन तरकारीक खेती शुरु करह। कम्मे समएमे तीमन-तरकारी फड़ए लगतह जइसँ गुजरो चलतह। जे अपने भरि करबह तँ खेवेटा करबह अगर जे वेसी करवह तँ अपनो खेवह आ बेचि कऽ गुजरो करबह।''

देवन- ''काका, बीआ कतएसँ आनव?''

नसीवलाल- ''सभ चीजक बीआ हम दऽ दइ छिअह।''

देवन- ''तीनिटा कोली हमरा दीदीकेँ अछि। चारि कट्ठाक कोली गहीरगर अछि बाकी दूटा कोली मध्यम आ भीठ छनि अपने बुझा-बुझा कहि दिअ कोन कोलीमे कोन अन्नक खेती करब ध्यानसँ देवनक बात सुनि नसीवलाल कहलखिन- ''नीचला खेतमे छिपगर धान रोपए परतह। किएक तँ ओहिमे अधिक पानि बसत। मुदा इम्हर जे दूटा कोली बँचलह ओहिमेसँ जे मध्यम छह ओहिमे गरमा धानक, किऐक तँ बहुतो किस्मक धान अछि जे ७० दिनसँ लऽ कऽ १५० दिनक होइत। से खेती करह। जे नीक-जेकाँ उपजतह तँ पाँच कट्ठामे कहुना-कहुना सात क्वीन्टल धान हेतह। एकटा कोलीमे मड़ूआ रोपि लाए। मड़ूआ कम्मे दिनमे होइ छै। जँ सवारी समए अधिक बरखा हेतै तँ मड़ूआ काटि कऽ तीनि मासी गरमा कऽ लिहअ आ जँ रौदियाह समए हएत तँ राहड़ि, तेबखा, कुरथीमे सँ कोनो वाउग कऽ दिहक। बाड़ी-झाड़ी छह की नहि?''

देवन- ''घरे लग अछि। पहिने ओइमे दूटा आमक गाछ छलै, जे कटि गेल।''

नसीवलाल- ''अगर दशो धुर हेतह तइओ सालो भरिक तीमन-तरकारी ओइमे उपजि जेतह। ओहिमे थोड़े साग वाउग कऽ लिहअ। थोड़े रामझुंगनी रोपि लिअह। एकटा लत्ती सजमनि लगा लिहअ।''

देवन- ''काका, एकटा लत्ती कत्ते फड़त?''

देवनक प्रश्न सुनि नसीवलालकेँ हँसी लगलनि। मुदा मनमे एलनि जे बच्चा अछि। तेँ नइ बुझैए। बुझवैत कहलखिन- ''बौआ, एकटा सजमनिक लत्ती जँ समढ़ि जाए तँ सए तक फड़त मुदा डेढ़ सए फड़बै लेल रोपिनिहारोकेँ मुसताइज रहए पड़तै।''

देवन- ''की मुसताइज?''

नसीवलाल- ''जहिना लोक घर बनबैए तहिना ओकरा लऽ बाँसक मजगूत खूँटापर मचान बनवए पड़तह। कीड़ी-फतींगीक देखभाल करए पड़तह। जहिमे छाउर-गोबर, डी.ए.पी. खाद दिअए पड़तह ततबे नइ जखने लत्ती ठमकै कि यूरिया खाद, टौनिक दवाइ देमए पड़तह। फल नीक होइ दुआरे पोटाश खाद सेहो देमए पड़तह।''

अपनाकेँ कमजोर पछुआइल उपजौनिहार बुझि देवन कहलकनि- “काका, अहाँक विचार तँ मनमे जँचैए, मुदा अखन तँ हम सभ तरहेँ पछुआइल छी। तेँ अखुनका हमर स्थिति देखि रास्ता बता दिअ।”

देवनक बात सुनि नसीवलाल कहए लगलखिन- “बौआ, भगवानो गरीबकेँ मदति करै छथिन। भगवानक वास छनि माटि, पानि हवा आरो-आरो जगह। जइ ठाम जे जजात पहिले पहिल लगाओल जाइत ओहि फसलकेँ माटि, पानि, हवा आ रौद अपन खजानासँ शक्ति आनि कऽ दऽ दैत छथीन। तेँ, तोँ ठीक समएमे रोपि देखभाल, कमठौन, आरो-ओरो जे जोगार छै, ततबे करिहह। मुदा करह। जखने करए लगवह दुख पड़ाइ लगतह। जत्ते करवह तते दुख भगतह।”

नसीवलालक विचार सुनि देवन खिलखिला कऽ हँसए लगल। देवनकेँ हँसैत देखि नसीवलालक हृदय, जहिना जूरशीतल पावनिमे माए-बाप, बेटा-बेटीक माथपर जल दऽ जुड़बैत, तहिना भेलनि। आँखि उठा दुनियाँ दिशि देखए लगलखिन। मनमे एलनि जे ई दुनियाँ तँ कर्मभूमि छी। देवन जरुर कर्मनिष्ठ बनत। मुदा कर्मनिष्ठोक रास्ता साधना तँ ज्ञानेक संग ने चलैत। अखन धरिक जे अनुभव अछि ओ देवनकेँ जरुर बुझा देवै। देवनकेँ बीआ दैत नसीवलाल कहलखिन- “बौआ, साग-तरकारीक बीआ अंदाजेसँ आ धान मड़ूआक बीआ तौल कऽ दऽ दइ छियह। पाँच-पाँच किलो धानक बीआ अछि। एकरा पाँच धुर खेतमे पाड़ि लिहअ।”

पाँच धुर सुनि देवन पूछलकनि- “पाँच धूर कोना बुझबै?”

देवनक जिज्ञासा देखि मुस्कुराइत नसीवलाल कहए लगलखिन- “बौआ, एहि गाममे साढ़े छह हाथक लग्गी अछि। एक लग्गी, एक लग्गी एक धूर खेत भेलै। मुदा पुरुखा सभ तीनि-डेग, तीनि डेगकेँ एक धूर नपै छेलखिन।”

देवन- “काका, सभ तरहक लोकक डेग तँ एकके रंग नहि होइत?”

नसीवलाल- “बड़ सुन्दर बात बौआ पूछलह। तीनि डेगक मतलब, ओहन डेग जे दू हाथसँ कनेक बेसी होए। दू हाथक डेगकेँ माने ने बड़का धाप आ ने सासुरक डेग। दुनू पाएरक दूरी डेढ़ हाथ होए। किएक तँ एक बीतक पाएर होइ छै। दुनू पाएरक नमती एक हाथ भऽ जाइत। तेँ डेगमे एक पाएरक आ डेढ़ हाथ बीचमे।”

नसीवलालक बात सुनि देवन उठि कऽ ठाढ़ भऽ खिलखिला कऽ हँसवो करै आ दुनू हाथे थोपड़ियो बजवए लगल। मने-मन नसीवलाल सोचए लगला जे एत्ते खुशी देवन किअए भेल? पूछलखिन- “बौआ, ऐना किअए करै छह?”

देवन- “काका, अहाँ हमरा धरती नपैक लूरि बता देलौं। आब हम जरुर दुनियाँकेँ नापि लेब।”

धान, मड़ूआक बीआ लऽ देवन विदा भेल। रास्तामे सजन देवनकेँ कहलक- “बौआ, तेहेन गामक लोक अछि जे ककरोसँ गप्पो करब मोसकिल भऽ जाइए। असकरे अपन दुख-धंधामे लगल रहै छी तेँ, नइ तँ कोन जालमे के कखन ओझरा

देतह से बुझवे ने करबहक। आब तँ दू भाँइ भेलौं, दुनू गोरे निचेनमे गप-सप करब।''

साँझू पहर सजन टहलल-टहलल बुधनी ऐठाम आएल। बुधनी भानस करैत छलि। एक्केटा डिबिया बुधनीकें। जे चुल्हि लग राखि भानस करैति। अंगना अनहार। अन्हारे अंगनामे देवन आ रमुआ बैसि एक-दूसँ बीस तक गनैत। सजनकें देखि देवन वुधनीकें कहलक- ''दीदी, डिबिया मोख लगमे दऽ दिऔ। घरोमे इजोत हएत आ अंगनोमे हेतै।''

बुधनी डिबिया मोख लग राखि देलक। सजनकें बैसबैत देवन कहलक- ''भैया! गाममे के केहेन लोक अछि से हमरो बुझा दिअ। किऐक तँ आब हमहूँ अही गाममे रहब की ने।''

देवनक बात सुनि सजनकें मनमे भेलै जे देवन हमरा बेसी मानैए। अपन बड़प्पन बुझि सजन कहए लगलै- ''बर्ख पाचमक बात छी। जोगिनदरक गाए विआएल। बड़ सुन्दर पहिलेठे गाए छलै। जेहने रंग तेहने खाढ़। बसुलिया सींग मझोलका थूथून। आगूसँ देखैमे तते नीक लगै जे होय देखते रही। तहिना पाछूओसँ। ओना लोक कहै छै बड़दक आगू गाएक पाछू। मुदा ओहि गायक जेहने थन तेहने थूथून। देशी गाए रहितो जरसिये जेकाँ बुझि पड़ै। दूधहो बढ़ियाँ होय। सभ तूर मिलि जोगिन्दर सेवा करै। पहिलोठ गाए रहने दुहै काल गुदगुदी लगै। तँ हनपटा जाय। ने बच्चाकें पीबए दैइ आ ने दूहै दैइ। दोसर दिन वियेलाक एक दिन बाद जोगिनदर ननुआकें कहलक। ननुओ गाए पोसैत मुदा अछि नेत-घट्टू। जोगिनदरकें ननुआ तेहेन चीज पीयबैले कहलक जे पियबितहि गाए बगदि गेल। ने घास खाए आ ने पानि पीवै। ने ककरो लगमे जाए देइ आ ने बच्चाकेँ देखै चाहै। जहिना दारु पीबि मनुक्ख करैए तहिना गाइयो करै। दुनू परानी हबो-ढ़कार भऽ भऽ कानल फिड़ै। बच्चा सेहो लर-तांगर जेकाँ भऽ गेलै। एक-फुच्ची दूध रतनासँ उठौना केलक। मुदा एक फुच्ची दूधसँ बच्चाकें की होइतै। बड़ आशासँ बेचारा जोगिनदर गाए पोसने, जे बिआइत तँ दश दिन दूध खा बेचि लेब, जहिसँ बेटीक विआहो कऽ लेब आ उगरत तँ एकटा बाछियो कीनि लेब। तेसर दिन जोगिनदर बुझलक जे ननुआ अन्ट-सन्ट दवाइ दऽ गाएकें दुरि कऽ देलक। जोगिनदर तँ बरदास केने रहल मुदा घरवाली ननुआकें गरिअबए लागलि। घरवालीकें गरिअबैत देखि जोगिनदर कहलकै- ''गाइयो दुरि भेलि आ मारिओ खाएब। देखै नै छियै जे गाममे सभसँ जेरगर दियादी ननुआक छै। केहेन-केहेन हुरनेठगर समांग सभ छै। मुँह बन्न करु नइ तँ अनेरे मारि खाएब।''

सए बीधा बाधक बीचमे, दू-अढ़ाइ कट्ठाक एकटा परती। परतीपर एकटा साहोरक गाछ। नमहर तँ बेसी नहि मुदा सघन। छोट-छीन अछार लोक ओतै बीता लैत। ओहि गाछपर ठनका खसलै। साहोरक गाछपर ठनका गिरब सुनि नसीवलाल भोरे देखै लऽ जोगिनदरे घर लग देने जाइत रहथि। दुनू परानी जोगिनदरकें कनैत

देखलखिन। ससरि कऽ नसीवलाल जोगिनदर लग जा पूछलखिन- ''किअए दुनू परानी कनै छह?''

नसीवलालक बात सुनि आरो हुचकि-हुचकि दुनू परानी कानए लगल। अंगनामे ढेरबा बेटी लुरुओ-खुरु करै आ आँखिक नोरो पोछै जोगिनदरक बेटा जेठ बहीनिसँ कहै- ''दाय, कहै छेलै जे गाए बियेतै तँ दूध देबौ, से कहाँ दइ छै।'' छोट भाएक बात सुनि बहीनिक हृदय बरफ जेकाँ पघिलैत। मुदा वेचारी की करैत। मुँहपर हाथ सहलबैत बहीन कहलकै- ''बौवा, अल्लू पका कऽ रखने छी। ओकरा चटनी कऽ दइ छी। रोटी आ चटनी खा लिअ। भगवान कोनो गाम गेलखिन। जब खूँटापर गाए अछि तँ दूध खेवे करब।''

अंगनासँ लऽ कऽ दरवज्जा तकक दृश्य नसीवलाल देखैत। आशा जगबैत नसीवलाल जोगिनदरकँ कहलखिन- ''कनलासँ की हैतह? ऐहन कोन दुख छै जकर दवाइ नइ छै। मुँह बन्न करह आ कहह जे की भेलह?''

नसीवलालक बाँहि पकड़ि जोगिनदर गाइयक-बच्चाकँ देखवैत कहलकनि- ''काका! पाँच दिन गाएकँ बिएना भेल हेन, एक्को चैठी दूध नइ होइए। बच्चो कऽ थन तर नै जाए दइ छै। पाभरि दूध रतनासँ उठौना लइ छी, ओइह पिया बच्चा कऽ अखन धरि जिऔने छी। नै तँ ऐहो मरि गेल रहिते।''

मुँहपर हाथ दऽ नसीवलाल थोड़े काल गुम्म रहि, पूछलखिन- ''बियेलापर की सभ केलहक?''

''थन तर गाए जाइये ने दिअए। तखन ननुआ भैया कऽ पूछलियै। ओ एकटा दवाइ घरसँ आनि कऽ देलक आ कहलक जे एकरा पीआ दिहक। सभ ठीक भऽ जेतह।''

मने-मन नसीवलाल विचारि कहलखिन- ''नीक भऽ जेतह। दूधो हेतह। कानह नहि। हम बाधसँ साहोरक गाछ देखने अबै छी। तखन संगे डॉक्टर ऐठाम चलिहह।'' कहि नसीवलाल बाध दिशि विदा भेला। बाधक परतीपर जा साहोरक गाछ देखए लगलखिन। ठनकासँ साहोरक गाछ दू फाँक भऽ गेल छल। दुनू फाँक दुनू भाग गिरल। जहिना-जहिना ठनका निच्चाँ मुँहे गेल तहिना-तहिना गाछो झड़कल। मनमे एलनि जे अखन धरि सभ वुझैत अछि जे साहोरक गाछपर ठनका नइ खसै छै मुदा आँखिक सोझामे देखै छी। गाछक बगलेमे बैसि नसीवलाल सोचए लगला। थोड़े कालक बाद मनमे एलनि जे ई बात -साहोरपर ठनका नहि खसब- गाछी-विरछीमे भऽ सकैए जइ ठाम आन गाछ नमहर-नमहर रहैत छैक आ साहोरक गाछ छोट। मुदा एक गछछामे तँ भऽ सकै छैक। एहि निष्कर्षपर पहुँच नसीवलाल घुरि कऽ घर दिशि विदा भेला।

दुनू परानी जोगिनदर, डेढ़ियापर बैसि, नसीवलालक प्रतिक्षा करैत। दुरेसँ नसीवलालकेँ अबैत देखि जोगिनदर रास्तापर ठाढ़ भऽ गेल। जोगिनदरकेँ देखिते नसीवलाल कहलखिन- "अखने चलह। घरपर गेलासँ काजमे ओझरा जाएब।"

दुनू गोटे मवेशी डॉक्टर ऐठाम विदा भेला। डॉक्टर कमल, एकटा महींसि इलाज कऽ कऽ आएले छल, कि दुनू गोटेकेँ देखिते, हाँइ-हाँइ कलपर जा हाथ-पाएर घोअए लगल। हाथ-पाएर धोए कऽ आबि कमल नसीवलालकेँ गोड़ लगलकनि। दुनू गोटेकेँ बैसवैत, आंगन जा घरवालीकेँ चाह बनवए लेल कहलखिन। डॉक्टर कमलक व्यवहार देखि जोगिनदरकेँ आश्चर्य लगै। डॉक्टर कमल नसीवलाल लग आबि पूछलखिन। जोगिनदर सभ बात कहलकनि। अलमारीसँ दवाइ निकालि टेवुलपर राखि, बुझवैत कमल कहए लगलखिन- "तीनि दिनक दवाइ देलौंहेँ। छोटका पुड़ियामे बच्चाक दवाइ छी। दुनू साँझ खुरचनमे घोड़ि बच्चाकेँ देबै। आ दू रंगक दवाई गाए लेल देने छी। रोटी संगे गाएकेँ खुआएव। दू खोराक देला बाद गाइयक मन नीक हुअए लगत। काल्हि साँझसँ दुहवो करब। तीनि-चारि दिनमे गाए नीक भऽ जाएत। अगर नइ ठीक हुअए तँ फेरि आएब।"

दवाइ लऽ फेरि जोगिनदर डॉक्टर कमलकेँ पूछलकनि- "कत्ते दाम भेल?"

मुस्की दैत कमल कहलखिन- "पाँच रुपैआ भेल।"

रुपैआ दऽ जोगिनदर नसीवलालक संग विदा भेल। घरपर अबिते गाइयो आ बच्चोकेँ दवाइ पिऔलक। जहिना-जहिना डॉक्टर कहने रहथिन तहिना-तहिना गाए नीक हुअए लगल। तेसर दिनसँ बढ़ियाँ जेकाँ गाए दुहए दिअए लगल।

मास दिन सभ परानी जोगिनदर दूध खा सात हजारमे गाए बेचि लेलक। ओहि रुपैआसँ बेटीक विआहो केलक आ एकटा डेढ़ सालक बाछियो कीनि लेलक। आँखि मूनि देवन सजनक बात सुनैत। जखन सजन चुप भऽ गेल तखन देवन आँखि खोलि कहलक- "भैया! अहाँ तँ हमर बन्न आँखि खोलि देलौं।"

देवनक बात सुनि जोगिनदर कहलक- "बौआ, ऐहेन-ऐहेन खिस्सा सबहक अछि। हम जे ककरो दरवज्जापर नइ जाइ छी से अही दुआरे। जखन सौँसे गामक लोकक किरदानी सुनबहक तँ हेतह जे सौँसे गाम लुच्चे-लफंगा अछि। ने कोइ एक्कोटा सत बजतह आ ने ककरो कोइ नीक करतह। जँ ककरो किछु पूछबहक तँ तेहेन मीठ बोली कहतह जे बुझि पड़तह जे ऐहेन शुभचिन्तक गाममे दोसर नहि अछि। मुदा तेहेन घुरछी लगा देतह जे पेपिआइत रहबह।"

भानस कऽ बुधनियो आबि बैसलि छलि। खिस्सा सुनि बुधनी सजनकेँ कहलखिन- "भैया, भानसो भऽ गेल, आब खा लोथु तखन जइहथि।"

हँसैत सजन कहलक- "कतौ आन ठाम छी। जहिना ई घर तहिना ओ घर।"

बौआ देवन ऐहेन-ऐहेन बहुत बात अछि। दोसर दिन आरो सुना देवह। अखन रातिये बेसी भऽ गेल। तोहूँ सभ खा-पीयह।"

(8)

अधरतियेमे बचेलालक निन्न टूटि गेल। दू बेरि खोंखी कऽ ओछाइनेपर पड़ल रहल। एक करोटसँ दोसर करोट उनटि मने-मन सोचए लगल। अखन धरि हमर जिनगी की रहल? बच्चेसँ मन पाड़ए लगल। जखन तीनि वरखक रही तखने पिताजी स्वर्गवास भऽ गेला। माएक उपर परिवारक भार पड़लनि। ओ जना-तना घर सम्हारि चलवए लगली। औरत होइतहुँ परिवारकेँ सम्हारि, दुनू भाए-बहीनिकेँ पढ़ेबो केलक। मैट्रिक पास करा हमरा शिक्षक बनौलक। जे बहुत मरदो बुते नइ होइए। एतइ प्रश्न उठैत जे की औरतकेँ मरदसँ शक्तिहीन बुझल जाए? कथमपि नहि। पुरुखसँ औरतकेँ कम बुझब नादानी कऽ सिवा आओर की भऽ सकैत अछि। हँ, ई बात जरुर अछि जे आइ धरिक जे जिनगी औरतक रहल, ओ कमजोर जरुर बनौलक। जहिसँ पुरुष औरतक बीच नमहर दूरी अवश्य भऽ गेल अछि। जकरा समतल बनवैमे समए साधन आ श्रमक जरुरी अवश्य अछि। मुदा एकर अर्थ ई नहि जे समतल नहि बनि सकत। जहिना पुरुषमे असीम शक्ति होइत तहिना तँ औरतोमे होइत। एत्ते बात बचेलालक मनमे अबिते अपन पत्नी दिशि नजरि दौड़ा कऽ देखलनि। अपन पत्नीक चालि-ढालि देखि मनमे एलनि जे अदहा कोन चैथाइयो मनुखसँ कम क्रियाशील छथि। जँ ओ घर सम्हारि लोथु तँ हम नोकरीक संग किछु समाजोक सेवा करितहुँ। दरमाहासँ परिवारोक खर्च चलैत आ किछु समाजोक उपकार होइतै। मुदा से कहाँ होइए। एत्ते बात मनमे अबिते बचेलाल देवालमे टंगल घड़ीकेँ चोरबत्तीसँ देखलक। रातिक एक बजैत रहए। चोरबत्ती सिरमाक बगलमे राखि पुनः सोचए लगल। आइ परिवा छी। परीब रातिक चाँन घसकट्टो हाँसूसँ पातर बुझि पड़ैत। मुदा जहिना-जहिना दिन बढ़ैत तहिना-तहिना चानो बढ़ैत। बढ़ैत-बढ़ैत वएह चाँन पुरनिमा दिन सुरुजे जेकाँ विशाल भऽ रातिकेँ दिन जेकाँ बना दैत अछि। तहिना तँ मनुक्खोकेँ भऽ सकैत। मुदा मनुक्ख चाँनक गति नहि भऽ पबैत। वएह चाँन पुरनिमाक परातसँ छोट हुअए लगैत आ छोट होइत-होइत अमावश्या दिन विलीन भऽ जाइत अछि। आखिर ओ चाँन कतए चलि जाइत अछि? जँ कतौ चलि जाइत अछि तँ पुनः परातेसँ अबैत कोना अछि? की मनुक्खोकेँ वहिना होइत? जहिना दुनियाँक बोध घटैत-घटैत व्यक्ति लग पहुँच जाइत तहिना तँ शक्तियो कमैत-कमैत एत्ते कम भऽ जाइत अछि। जे अस्तित्वो मृत्यु प्राय बनि जाइछ। पुनः बचेलालक मनमे प्रश्न उठल जे दुनियाँमे सभसँ श्रेष्ठ जीव मनुष्य मानल जाइ छै। मात्र मानले नहि जाइ छै। वास्तविक अछियो। दुनियाँमे जत्ते जीव-जन्तु अछि ओहिमे मनुक्खेटा केँ विवेक होइत। आन-आन गुण तँ कमोवेश सभमे पाओल जाइ छै। आइ धरि मनुक्ख विवेकक उपयोग जत्ते बजैमे करैत अछि तकर एक अन्नियो जिनगीमे नहि कऽ रहल अछि। ई दुनियाँ कर्मभूमि थिकैक आ मनुक्ख

कर्मकार। मुदा से नहि बुझि उधिकांश लोक दोसराक श्रमकेँ लुटि अपन ऐश-मौजक जिनगी बनबैक पाछू विवेककेँ ताकपर राखि दैत अछि। जहिसँ मनुक्खक बनमे सदिखन आगि लगले रहैए। आ ओ आगि ताधरि धधकैत रहत जाधरि विवेकक सीमा मजगूत नहि बनत। शुरुहेसँ जना-जना मनुख होशगर होइत गेल तना-तना अल्लढ़ मनुष्यकेँ जानबरक श्रेणीमे धकलैक गेल। धकलैत-धकलैत ऐहेन रास्ता बनि गेल जे सभ-सभकेँ निच्चेँ मुँहे धकलैत अछि। धकलाइत-धकलाइत जे सभसँ नीचाँ पहुँच गेल अछि। ओकरा आगू मुँहे बढ़ैक कोन बात जे तकलो ने होइ छेक। तकबो कोना करत? दुनिये उनटि गेलै। जिनगीक सभ रास्ता उनटि गेलै। उनटि गेलै विवेक। जहिसँ साहित्य, कला, संस्कृति, धर्म, दर्शन, एकोटा बाकी नहि रहल। जँ थोड़-थाड़ बँचलो अछि तँ वहिना, जेना लछमनकेँ शक्तिवाण लगलापर हनुमानकेँ सिर-सजमनि अनैले कहलकनि आ ओ सिर-सजमनि नहि चीन्हि पहाड़े अनैले मजवूर भेला, तहिना। सवाल उठैत अछि जे बिना अनुकूल दिशामे ऐने मनुक्खक कल्याण कोना भऽ सकैत अछि? कथमपि नहि भऽ सकैत अछि। मुदा मनुक्खेक भीतर ओहन शक्ति छैक जे कऽ सकैत अछि। जँ मनुक्ख अपन शक्तिकेँ चीन्हि उपयोग करै, तखन।

ई बात मनमे अबिते बचेलाल केबाड़ खोलि, घरसँ निकलि, आंगन आबि अकास दिशि देखए लगल। सन-सन करैत अन्हार। आंगनसँ निकलि बचेलाल बाटपर आबि, उत्तरसँ दछिन आ दछिनसँ उत्तर मुँहे जाइत रास्ताकेँ, ध्यानसँ देखए लगल। एक्केटा रास्ता जहिपर उत्तर मुँहे चललासँ उत्तरी ध्रुवपर पहुँचैत आ दछिन मुँहे चललासँ दछिनी ध्रुवपर। रास्ता तँ एक्के अछि मुदा दिशा बदलने स्थानो बदलि जाइ छै। एहिना तँ जिनगीयोक रास्ता अछि। एक दिशि गेने लोक पापी बनि जीबैत जबकि दोसर मुँहे गेने धर्मात्मा बनि जाइत अछि। मुदा प्रश्न उठैत जे असकर चलव आ समूहक संग चलबाक। समूहक संग चलने व्यबस्था बदलैत जबकि असकर चलने व्यवस्था नहि बदलैत। एत्ते मनमे अबिते, बड़बड़ाइत बचेलाल घर आबि विछानपर पड़ि रहल। अपने सवालो उठबैत आ जाबाबो तकैत। रुमाक निन्न सोहो टूटि गेलनि मुदा बचेलालक बड़बड़ेनाइ सुनि गबदी मारि सुनए लगली पतिक बोलीमे रुमा संकल्प, धैर्य, उत्साह देखथि। जहिना आगिक धधड़ामे काँच बस्तु पकैत जाइत तहिना बचेलालमे साहस जगए लगल। साहसक संग धैर्य सेहो अवए लगलनि। आइ धरि जे बात रुमा पतिक मुँहे कहियो ने सुनने छली ओ सुनए लगली। जिनगीक रास्ता कोना बदलल जाए, ई बात बचेलालक मनकेँ झकझोड़ए लगल। बिना रास्ता बदलने आगू बढ़व कठिन? मुदा रस्तो बदलब तँ असान नहि। एहि गुनधुनमे बचेलालक मन, धोर-मट्ठा पानि जेँका, होइत। कछमछ करैत बचेलाल। कखनो पड़ैत तँ कखनो उठि कऽ बैइसैत। मुदा रास्ता देखबे ने करैत। चीनक एकटा खिस्सा बचेलालकेँ मन पड़ल। चीनक एकटा पहाड़ी इलाकामे एक गोटे रहैत। घरसँ निकलि बाहर जेबामे ओकरा एकटा पहाड़ टपए पड़ैत छलैक। एक दिन ओकरा मनमे एलै जे पहाड़ काटि रास्ता बनौलासँ

चलवोमे सुगम हएत आ समयोक बचत हएत। ओ आदमी छेनी, हथौरीसँ पहाड़ काटए लगल। काटिते समए दोसर गोटे देखलक। पहाड़ कटैत देखि ओ कहलकै- "ऐहेन पहाड़कें कोना काटि सकबह?"

छेनी-हथौरी रोकि ओ उत्तर देलकै- "जिनगी भरिमे जते कटत ओते तँ असान भऽ जाएत। तकर उपरान्त बेटा काटत। एक नइ एक दिन पहाड़ कटवे करत जइसँ सुगम रास्ता बनबे करत। जे अवैबला पीढ़ीक लेल सुगम हएत।"

खिस्साकें ध्यानसँ सोचि बचेलाल आगूक जिनगीक लेल कार्यक्रम बनबए लगल। पतिक बोलीकें रुमा ध्यानसँ अंकैत। कोनो बात निक्को लगै आ कोनो अधलो। कोनो-कोनो बात बुद्धिक बखारीमे रुमाकें अँटबे ने करैत। रुमा मने-मन सोचए लागलि जे भरिसक हिनका कोनो बीमारी तँ ने भऽ गेलनि। मुदा बीमारीसँ जे बड़बड़ेनाइ होइ छै ओ तँ जहिना-जहिना रोगक धक्का कम बेसी होइत तहिना-तहिना होइत। मुदा से नहि सुनै छी। एक रसमे बजैत छथि। अपन दहिना हाथ रुमा बचेलालक छातीपर दऽ धड़कन देखए लगलीह। छातीपर हाथ परिते बचेलाल पूछलक- "अहूँ जागि गेलौं?"

अपन विचार छिपबैत रुमा उत्तर देलकनि- "अखने नीन टूटल। अहाँ कखनसँ जागल छी?"

गंभीर स्वरमे बचेलाल कहलक- "बारह बजे रातियेसँ जगल छी। निन्ने ने होइए।"

"हमरो किअए ने उठा देलौं?"

"उठबैक मन भेल मुदा सोचलौं जे जाबे अपने नइ जागव ताबे दोसरकें कोना जगा सकब? तँ नइ उठेलहुँ।"

सुमित्रा उठि कऽ मोख लग राखल बाढ़निसँ अपन घर बहारि ओसार बहरए लगली बहारैत-बहारैत जखन बचेलाल घरक मुँह लग गेली तँ सुनलखिन जे घुनघुना कऽ बचेलाल रुमाकें किछु कहैत छथिन। बाहरब छोड़ि सुमित्रा बोली अकानए लगली। बचेलाल बजैत जे अपना परिवारमे दू गोटे जुआन छी। दूटा बच्चा अछि आ माए बूढ़ि छथि। जखन पिताजी मुइलाह तखन हम दुनू भाए-बहीनि बच्चे रही। जत्ते खेत अखन अछि ततबे ओहू समएमे छल। असकरे माए दुनू भाए-बहीनिकें पोसबो केलक आ पढ़बो केलक। बहीनकें मिड़ल तक पढ़ा विआहो केलक। हमरा मैट्रिक तक पढ़ा शिक्षक बनौलक अपन विआहमे मायक विचार हम कटलौं। हुनकर मन रहनि जे गिरहस्तक बेटीसँ विआह करब जबकि हम नोकरिया परिवारमे विआह केलौं। हमहूँ आगू-पाछू नहि बुझियै। मुदा आब बुझै छी जे गलती केलौं। विआह तँ सिर्फ लड़के-लड़कीक नहि होइत अछि। जहिना उमेरक खियाल लड़का-लड़की बर-कनियाँमे देखल जाइत तहिना परिवरो आ समाजोक खियाल हेवाक चाही। पुरुष-नारीक संबंध तँ सृष्टिक सृजनक एक प्रक्रिया छी। मुदा एहिसँ भिन्न जिनगी होइत। जे व्यक्ति, परिवार आ समाजसँ जुड़ल रहैत अछि। हम पढ़ल-लिखल, लहक-चहक परिवार बुझि

विआह केलौं मुदा परिवार आ समाज दिशि नजरिये ने गेल। एखन धरि परिवार साधारण किसानक रहल जबकि अहाँक परिवार तीनि पुस्तसँ नोकरी करैत आइल अछि। नोकरिया परिवारक आ किसान परिवारक चलैक ढ़ंग अलग-अलग होइत। दू तरहक चालि-ढालि, दू तरहक जीवैक ढंग दुनूक बीच होइ छै। तेँ आब बुझै छी जे मायक विचार नीक छलनि। एत्ते सुनिते गहूमन साँप जेकाँ रुमा फूफकार कटैत ओछाइनसँ उठि ठाढ़ भऽ गेली। ठाढ़ भऽ कहए लगलखिन- "हमर बाप-माए, खरचा दुआरे बोइर देलक। नइ तँ नीक शहरमे अफसरनी बनि ठाठसँ रहितौं। अइ गाममे देखै छी जे ने एक्को बीत पीच सड़क अछि आ ने बिजली। ने एक्कोटा कोठा अछि आ ने कोनो सवारी। दम घोटि हम कहुना-कहुना जीवै छी। आ उल्टे ठका गेलौं अहाँ। बाह-बाह रे दुनियाँ।"

केबाड़ लग ठाढ़ सुमित्रा, बचेलालक मुँहसँ अपन गलती सुनि, मने-मन सोचए लगली, जे आब बचेलालकेँ होश जागल। होश जगैयेमे मनुक्खकेँ देरी होइत अछि, मुदा जगलापर तँ ओ अपन रास्ता बनवैत आगू बढ़ए लगैत अछि। जहिना सलाइक काठीसँ छोट-छीन आगिक लौ निकलैत अछि मुदा अनुकूल स्थिति पाबि ओ कत्ते विराट रुपमे बदलि जाइत, जे एक घरक कोन बात जे गामक-गाम कऽ क्षण-पलकमे स्वाहा कऽ दैत। ई बात मनमे अबिते सुमित्रा ओसारसँ निच्चाँ उतड़ि अंगना बहारए लगली। फूफकार भरल रुमाक बात सुनि बचेलाल बाँहि पकड़ि बुझबैत कहए लगल- "बिगडू नहि! बुझू। अखन धरिक जिनगीक जे नीक-अधला भेल ओकरा बिसरि, आबो होशसँ चलू।"

पतिक बात सुनि रुमा धड़फड़ा कऽ कहलकनि- "हँ, आब पोथी-पतरा उलटा कऽ जोतखी बनू। दिन गुनू। तकदीर देखू।"

"हँ, जिनगीक लेल ज्योतिक ज्ञानक जरुरत सभकेँ होइत। जाधरि मनुक्खमे ज्योति नहि आओत ताधरि अनभुआर बटोही जेकाँ कतए बौआएत तकर ठीक नहि। जाउ, घर-अंगनाक काज सम्हारु। हमरो बजार जाइक अछि। अछेलाल काका सेहो तैयार भेल हेता।" एत्ते कहि बचेलाल घरसँ निकलि हाँइ-हाँइ अपन क्रिया-कर्ममे जुटि गेल।

कने कालक उपरान्त जुगायक संगे अछेलाल पहुँच गेल। सुमित्रा आंगन बहारि डेढ़िया बहारति रहथि कि दुनू गोटेकेँ देखलनि। मुस्कुराइत सुमित्रा अछेलालकेँ कहलखिन- "बड़ बनल-ठनल भोरे-भोर देखै छी। की रातिमे नीन नहि भेल?"

मने-मन अछेलाल सोचए लगल जे भौजी कोना बुझि गेलखिन? मुस्कुराइत अछेलाल कहलकनि- "बारह बजे रातियेमे निन्न टुटि गेल भौजी। मन पड़ि गेल जे बजार जाइले बचेलाल कहने रहथि। तखनसँ निन्नो ने भेल। जहाँ कने निन्न अबए की चहा कऽ उठी जे भोर भऽ गेलै। कौआ डकिते पर-पाखानासँ आबि तमाकुल चुनबैत रही कि जुगाय आबि गेल। काल्हिये जुगायकेँ कहि देने रहियै जे तोहूँ बजार

चलिहह। रस्तेमे निचेनसँ गप्पो करब आ बाजारक काजो करब। दुनू गोरे तमाकुल खा विदा भेलौं।''

दुनू गोटेकेँ दरवज्जापर बैसाए सुमित्रा चाहक जोगार करए लगली। जाबे बचेलाल धोती-कुरता पहिर तैयार भेल, ताबे चाहो बनि गेल। सभ क्यो चाह पीलनि। तीनू गोटे चाह पीबि, बाजार विदा भेल। गामक सीमा टपला बाद बचेलालकेँ अछेलाल कहलक- ''बौआ, हम तँ मुरुख छी। अहाँ पढ़ल-लिखल छी तेँ अहाँ जेकाँ कन्ना बुझबै। मुदा भौजीक गप्प सुनलासँ मने बदलि गेल। अखनो हुनका दखै छियनि जे भोरे सुति उठि अपन काजमे लगि जाइ छथि। सभ काज सम्हारि समएपर नहा-खा कऽ आराम करै छथि। ने कोनो तरहक हरहर-खटखट आ ने कखनो मनमे क्रोध आ कि चिन्ता रहै छन्हि। जखन देखै छियनि तखन ठोरपर हँसिये रहै छनि। ने ककरोसँ मुँहा-ठुठी होइ छनि आ ने ककरो अधला गप्प कहै छथिन। गाममे देखै छी जे हुनकर बतारी बुढ़िया सभ भोरेसँ गारि-गरौबलि, उकटा-उकटी शुरु कऽ दैत अछि। गारि सुनैत-सुनैत जखन मन अकछा जाइए तखन भौजी लग आबि अपन दुख-धंधाक गप्प-सप्प करए लगै छी।''

अछेलालक बात सुनि बचेलाल पूछलक- ''ऐना किऐक होइ छै? मनुख तँ कुत्ता-बिलाइ नइ छी जे एक-दोसरकेँ देखिते आँखि गुड़ारि पटका-पटकी करए लगैए।''

मुँह सकुचबैत अछेलाल बाजल- ''बौआ, देखै छी जे धिया-पूता सभ खाइले कनैत रहैए। मुदा मौगी आ मरदाबा सभ किअए झगड़ा करैए। से नइ बुझै छी। जँ ककरोसँ पूछबै तँ दोसर कहत जे फल्लाँ-फल्लाँकेँ चढ़बै छै। तेँ ककरो पूछबो ने करै छियै। गामोमे, तेनाहे सन लोक सभसँ बज्जो-भुक्की अछि। सदिखन अपन दुख-धंधामे लागल रहै छी।''

अछेलालक बात सुनि बचेलाल जुगायकेँ कहलक- ''भाय, अपनो दुनू परानी आ बेटो-बेटीक नामसँ बैंकमे रुपैआ जमा अछि। ओहीमे सँ उठा कऽ अहूँक बेटीक विआह निमाहि देव। आ जँ आगुओ कोनो खगता हएत तँ ओहो सम्हारि देव। तेँ मनसँ चिन्ता हटा लिअ। एकठाम रहने एहिना-सबहक काज सभकेँ होइ छै।''

बचेलालक बात सुनिते जुगायक मुँहसँ हँसी निकलल। बिलाइल आशा मनमे पहुँचल। जहिना कतौ जाइमे रास्ता बदलैत तहिना जुगायक जिनगीक रास्ता चैबट्टीपर पहुँच, मुड़ए लगल। अपन मजबूरी देखबैत बचेलालकेँ कहलक- ''भाय! पाइक दुआरे घरवालीकेँ डाक्टर लग नइ लऽ जाइ छी। बेचारी तीन सालसँ दुखकेँ अंगेजने अछि। पाइक लार-चार नै देखैए तेँ चुपचाप देह मारने अछि। मुदा हम तँ देखै छी जे दिनो-दिन खिआइले जाइए। जत्ते काज बेचारी पहिने करै छलि तेकर अदहो आब नै कऽ होइ छै। मुदा की करब? खरचा दुआरे धिया-पूताकेँ इस्कूलो ने जाइ दइ छियै।

कहुना-कहुना दिन कटै छी। करजाक डर होइए। गाममे देखै छी जे तेहेन चंठ महाजन सभ अछि जे एककेँ तीनि कहि घर-घरारी लिखैने जाइए। अखैन थोड़े खेत अछि तँ दिके कि सिके गुजर कऽ लइ छी। जँ ओहो चलि जाइत तखन तँ अपनो आ धियो-पूतोकेँ भीख मांगए पड़त। गाममे देखै छी जे जनकाकेँ पहिने जोड़ा बड़द छलै। करजामे फँसि गेल। सभ सम्पत्ति बोहा गेलै। एहिना मुनेसरा करजे दुआरे गामसँ भागि नेपालमे बसि गेल। मुदा हमरा कुल-खनदानक मोह लगैए। कोना बाप-दादाक धरारीपर, अनका हर जोतैत देखवै। अखैन तँ इहो आशा अछि जे मरबो करब तँ अपन बाप-दादाक लगौलहा कलम-गाछीमे जराओल जाएब। मुइलहा सभ पुरखाक संग एकठाम रहब। जिनगी ने थोड़ दिनक होइत मुदा मृत्यु तँ अधिक दिनक होइत अछि।''

जुगायक बात सुनि बचेलालक मनमे आशा-निराशा, सुख-दुखक हिलकोर उठए लागल। जहिना शिकारीक तीर लगलासँ कोनो चिड़ै गाछपर सँ छटपटा कऽ निच्चाँ गिरैत तहिना बचेलालक विचार कल्पना लोकसँ यथार्थ लोकमे गिरल। यथार्थ लोकमे गिरिते बचेलालक हृदय, मोम जेकाँ, पघिलए लगल। दुनू आँखि उठा जुगायकेँ देखि कहलक- ''भाय! बजार लग आबि गेलौं? आब ओ सभ बात छोड़ू। बजारमे जे काज अछि से सभ मन पाड़ि लिअ। नइ तँ काज छूटि जाएत। परिवारक गप्प करै लऽ तँ दुआर-दरवज्जा अछिये।''

अछेलाल बाजल- ''बौआ! इस्कूल जाइ-अबैले पहिने साइकिल कीनि लेब। तखन खेती-बाड़ीले कोदारि, खुरपी, हँसुआ, कुड़हरि, टेंगारी, पगहरिया कीनब। हमरा नजरिमे एतबे अबैए।''

अछेलालकेँ चुप होइते धड़फड़ा कऽ जुगाय बाजल- ''भाय, अपना टोलमे ने एक्कोटा लाइट अछि आ ने दड़ी। जखन कोनो नमहर काज बजरैए तखन अंगने-अंगनेसँ बिछान, लालटेम आ बरतन मांगि-मांगि काज चलैए। तँ ओहो सभ कीनब जरुरी अछि।''

जुगायक बात सुनि मूड़ि डोलवैत बचेलाल कहलक- ''जुगाय भाय! अहाँ बड़ सुन्नर काज मन पाड़ि देलौं। मनमे अपनो छल। मुदा सोचए छलौं जे सौंसे टोल मिला कऽ कीनब, नीक हएत। मगर सभ एक्के रंग तँ नइ अछि। क्यो हुबगर छी तँ क्यो खगल। ई सोचि चुप्पे रहि जाइ छलौं।''

बचेलालक बात सुनि मुस्की दैत अछेलाल कहलक- ''बौआ! सझिया चीज दू तरहक होइ छै। एक तरहक जे अहाँ कहलियैहेँ। आ दोसर तरहक होइ छै जे असकरे कीनि समाजमे दऽ देब। जेकरा लोक धरम कहै छै।''

धरमक नाम सुनितहि उत्साहित भऽ बचेलाल बाजल- ''ओना हम रुपैआ जुगायले अनने छी, मुदा विआहमे अखन देरिओ अछि आ हमरो रुपैआ बैंकमे अछिये। तँ ई काज पाछुए करब। अखन जहि समानक चर्चा केलौं से सभ कीनि लिअ।''

बचेलालक बात सुनि अछेलालोक आ जुगाइयोक मनमे खुशी भेल। बाजार प्रवेश करिते तीनू गोटे साइकिल दोकानपर जा साइकिल कीनलक। साइकिले दोकानपर दूटा लाइटो कीनलक। साइकिलकेँ गुड़केने बचेलाल लोहा-लक्कड़ दोकानपर गेल। दोकानपर जा सभ लोहाक सामान कीनि, बोरामे राखि सुतरीसँ बान्हि साइकिलक कैरियरपर लादि, तीनू गोटे बरतनक दोकानपर गेल। बरतन दोकानमे दूटा पितरिया बरतन कीनि, दड़ी दोकानपर गेल। बीस हाथ नमती दड़ी कीनि, दोकानेमे राखि, ओही नापसँ कपड़ा दोकानमे जाजीम सेहो कीनलक। सभ सामान कीनि तीनू गोटे हलवाइक दोकानपर जा जलखै केलक। सभ सामान घरपर कोना जाएत? तीनू गोटे गर अँटबए लगल। अछेलाकेँ गर अँटि गेल। बाजल- "एकटा बरतन हम कान्हपर लऽ लेब आ एकटा जुगाय। एक-एकटा लाइट दुनू गोरे हाथमे लटका लेब। बाकी सभ चीज साइकिलपर लऽ लेब। तीनू गोरे गप्प-सप्प करैत चलि जाएब।"

जिनगीक नव रास्ता भेटिने तीनू बचेलाल, अछेलाल आ जुगायक मन उधिआइत। बचेलालकेँ होय जे आइ रास्तापर एलौं। अछेलालकेँ मनमे होय जे जाधरि मनुक्खकेँ काज करैक साधन नहि हेतइ ताधरि लूरि-वुद्धि रहनौ बेकार रहत। मुदा हाथमे औजार ऐने काजोक गति बढ़ैत आ अपने संतोष होइत। जबकि जुगायकेँ होय जे जइ दुआरे अपनो आ परिवारो अटकि गेल छल, ओ आगू ससरत। आइ धरिक दुख काल्हिसँ मेटा जाएत। जहिना अन्हार राति समाप्त होइते दिनमे सभ कुछ देख पड़ैत तहिना तीनू गोटेकेँ होइत।

घरपर अबैत-अबैत मुन्हारि साँझ भऽ गेल। घरपर आबिते अछेलाल सुमित्राकेँ सोर पाड़ि कहलक- "भौजी, लालटेन नेने आउ।" असकरक दुआरे सुमित्रा आंगन आ दरवज्जाक बीच ओलती लग विछान विछा, लालटेनकेँ पछबरिया घरक कोनचरमे टाँगि, बैसलि छली। कखनो-कखनो उठि कऽ सुमित्रा रस्तापर आबि-आबि देखवो करथि।

अछेलालक आबाज सुनि सुमित्रा लालटेन नेने दुआरपर ऐली। नव-नव सामान देखि सुमित्रा मने-मन सोचए लगली जे, जे काज आइ भेल ओ बहुत पहिनहि हेबाक चाहै छलै। मुदा देरियो भेने काज तँ भेलि। लालटेन राखि सुमित्रा, चोट्टे घुरि कऽ आंगन जा, पुतोहूकेँ कहलनि- "कनियाँ बौआ आइल। झब दे चाह बनाउ।" कहि दरवज्जापर ऐली। अछेलाल आ जुगाय ओसारपर बरतन आ लाइट रखि, साइकिल परक सामान उताड़ए लगल। बचेलाल कुरता-गंजी निकालि, चैकीपर रखलक। चप्पलकेँ चैकी तरमे रखि धोतीकेँ खोंसि फाँड़ बान्हि, गर लगा-लगा सभ चीज रखए लगल। साइकिलकेँ ओसारक दावामे सेहो लगौलक। ताबे रुमा चाह बनौने ऐली। रुमा हाथसँ चाह लऽ सुमित्रा तीनू गोटेकेँ हाथमे दऽ पूछलखिन- "बौआ, पानियो पीबि।"

अछेलाल- "नइ भौजी। अखैन तँ चाहो ने पीवितौं। गरमा गेल छी। जावे दू डोल पानि देहपर नइ ढारब तावे ठंढ़ाइब नहि।"

कातमे ठाढ़ भऽ रुमा सभ सामान देखैति। सामानो देखैति आ तरे-तर जरबो करैति। मने-मन विचारैत जे साइकिल लेलनिसे बड़वढ़ियाँ, मुदा आन चीज किऐक लेलनि? अनेरे पाइकेँ दुइर किअए केलनि? खुलि कऽ तँ रुमा किछु नहि बजैति मुदा तरे-तर गुम्हरैति। तामसे आंगन जा चुल्हि लग बैसि अन्ट-सन्ट बचेलालकेँ कहथिन। अछेलाल आ जुगाय, चाह पीबि दरबज्जाक कोठरीमे सभ वस्तु सरिया कऽ रखि देलक। अछेलाल जुगायकेँ कहलक- "जुगाय जखन चाह पीबे केलौं तँ तमाकुलो खाइये लाए।"

जुगाय तमाकुल चुनबै लगल। अछेलाल सुमित्राकेँ कहलक- "भौजी, जे मनमे छलाए से आइ पूरा भऽ गेल। भिनसरमे दड़ियो उधारि कऽ देखा देब। बड़ सुन्दर अछि। यएह दड़ी तँ कत्ते दिन चलत।"

सुमित्रा मने-मन खुशी होइत छलीह। दुनू गोटे तमाकुल खा चलि गेल। बचेलाल धोती बदलि माए लग बैस, सामानोक चर्चा करैत आ दामो कहैत। एक्के परिवारमे हर्ष-बिषाद लड़ए लागल...! बचेलाल मने-मन सोचैत जे कोनो नीक काज परिबारमे भेने, परिवारक सभ समांगकेँ एक्के रंग खुशी किऐक ने होइ छै? हँ, ई बात जरुर जे खास व्यक्तिकेँ खास वस्तु भेने खुशी जरुर होइ छै, किन्तु दोसरकेँ ओहिसँ जलन तँ नहि हेबाक चाही। मुदा औझुका जे वस्तु अछि ओ तँ व्यक्तिगत नहि छी? जखन जकरा जहि वस्तुक जरुरत हेतै से उपयोग करत। तइमे दुख कतएसँ चलि आएल! रुमाक आवाज दुनू माए-पुत सुनैत रहथि। मुस्की दैत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलक- "बौआ! जहिना ककरो बिढ़नी काटि लइ छै आ दरदे छड़पटाइए तहिना कनियाँकेँ भऽ रहलनि हेन। कमाइल पाइ तोहर खरच भेलह, हुनकर तँ किछु नहि भेलनि? तोरा खुशी छह आ हुनका किऐक एत्ते दुख भऽ रहलनिहें?"

सुमित्राक बात सुनि बचेलाल बाजल- "माए! हमहू तँ यएह सोचि रहल छी जे हुनका किऐक एत्ते दुख भऽ रहलनि अछि?"

बचेलालकेँ वुझबैत सुमित्रा कहलखिन- "बौआ, यएह छियै स्वभाव। मनुक्खक रोगक जड़ि। जेहन जेकर स्वभाव रहै छै, ओ ओहने काजकेँ नीक वुझैत अछि, भलेहीं ओ अधले किअए ने होइ। अखन तोहूँ थाकल छह। जँ नहाइक मन होइ छह तँ नहा लाए। अगर नहेवह नहि तँ देहे-हाथ धोइ लाए। मन चैन भऽ जेतह।"

"नहाइक मन तँ अपनो होइए। भरि दिन ठाड़हे छलौं। मुदा सभ काज भऽ गेल।" -बचेलाल कहलक।

सुमित्रा आंगनसँ बाल्टीन आ लोटा आनि बचेलालकेँ देलक। बचेलाल नहाइ लेल कलपर गेल, सुमित्रा लालटेनक इजोतमे खुरपी, हँसुआ देखए लगली। नहा कऽ बचेलाल सोझे अंगना जा खाइले बैसल। बचेलालकेँ ओसारपर देखि रुमा जोर-जोरसँ अन्ट-सन्ट बजए लगलि। गौरसँ रुमाक बात सुनि बचेलाल कहलक- "ऐना तामस किऐक उठल अछि? कोन अधला चीज देखलिये जे एत्ते बिगड़ल छी?"

बचेलालक बात सुनि रुमा गरजि कऽ कहए लगलनि- ''जखन लोककेँ मैत खराब भऽ जाइ छै, तखन एहिना करैए।''

मने-मन बचेलाल सोचए लागल जे जत्ते अपन पुरुषत्वकेँ दाबि रखने छी तत्ते ओ कंठपर चढ़ल जाइए। तेँ एक नै एक दिन मुँह खोलै पड़त। असथिर मुदा सक्कत शब्दमे बचेलाल रुमाकेँ कहलक- ''बहुत सुनलौं। मुँह बन्न रखू। अपन सीमा टपब तँ बुझि लिअ हम पुरुख छी। जत्ते अहाँकेँ सिनेह केलौं तत्ते अहाँ हमरा कमजोर बुझैत गेलौं। आबो चेत जाउ!''

बचेलालक बात सुनि रुमा चुप भऽ गेलि। किन्तु मुँह......!

(९)

अदहा अखाढ़ बीति गेल। जेठुआ बरखाक बाद बीचमे दूटा अछार भेल छल। सबहक बीआ रोपाउ भऽ गेल। अड़िया-लंघन बरखा भेल। पानि छुटिते गिरहस्त सभ कोदारि लऽ लऽ खेत दिशि विदा भेल। क्यो अपन खेतक आड़ि बन्हैत तँ क्यो अपन खेतक पानि बहाबैत। क्यो आड़ि-कोन बनबैत तँ क्यो हाँइ-हाँइ धानक बीआ उखाड़ैत। एक खेप सजन हरखाड़ा आ चैकी खेतमे राखि आएल आ दोहरा कऽ बड़द आ कोदारि लइले गामपर आएल। सजनकेँ घरवाली कहलक- ''रोटियो पकिये गेल तँ जलखै कइये लिअ। हमहूँ पानि पीबि बीआ उखाड़ए चलि जाएब।''

सजन हाथ-पाएर धोइ जलखैयो करैत आ घरोवालीकेँ कहैत- ''तीनि कठबा कोली रोपि लेब। हम जाइ छी, खेतो जोइत लेब आ कोनो-कान सरिया देबै। अहूँ जा कऽ चारि जोड़ा बीआ खीचि लेब आ आबि कऽ भानसो कऽ लेब। अखन बीआ उपरेमे हएत तँ उखाड़ैमे देरियो ने लागत। ओना खेत जोतले अछि तँ हमरो अबेर नहिये हएत। अखन जे कदबा आ बीआ उखरि जाएत तँ बेरु पहर दुनू गोटे साँझ धरि रोपियो लेब।''

जलखै कऽ सजन बड़द जोड़ि, खेत विदा भेल। दक्षिनबरिया बाध ऊँच तेँ गामक अधिक गिरहस्त ओही बाधमे। देवन आ बुधनी सेहो गेल। हरक जोगार नइ रहने देवन कोदारियेसँ खेत तैयार करैक विचार केने। देवनक खेत तीन कोला आगू सजन खेतसँ। तेँ सजनेक आड़िपर देने तीनू गोटे देवन जाइत। देवनक कान्हपर कोदारि देखि सजन पूछलक- ''देवन, तोहूँ अही खेतकेँ रोपबह?''

''हाँ, भैया। पाँच कट्ठाक कोला अछि। दू-तीनि दिनमे रोपि लेब।'' -देवन बाजल।

सजन- "देवन! जा दुनू गोरे बीये उखाड़िह। हमरो तीनिये कट्ठा खेत अछि। लगले भऽ जाएत। तोरो खेत तँ तमले छह। एकटा चास कऽ देबै तेहीमे कदबा भऽ जेतह। पहिल पानि छियै, एक रत्ती अबेरे ने हएत मुदा तोरा तँ काज चलि जेतह। कदबा भेलि रहतह, निचेनसँ रोपैन करैत रहिहह। जखने खेतमे चैकी पड़ि जाय छै कि पानि सुखैक डर कम भऽ जाइ छै।"

सजनक बात सुनि बुधनी मने-मन सोचए लागलि। जे नीक सगुनसँ निकललहुँ। अदहा काज ओहिना भऽ गेल। एक झोक जे दुनू गोरे बीआ उखाड़ब तहीमे तँ अदहा खेतक बीआ उखाड़ि लेब। खेतो जोताइये जाएत। बीओ हल्लुके अछि, तखन तँ रोपनिएटा ने रहत। बैसि-उठि कऽ दू दिनमे रोपि लेब। 'रोपिलेब' बुधनीक मनमे अबिते, खुशीसँ मन नाचि उठलै! सोचए लागलि जे पाँच कट्ठा खेत अषाढ़ भेने कहुना-कहुना तीन मासक बुतातक ओरियान तँ भइये जाएत। तीनि मासक बुतात लऽ मिहनत कत्ते भेल। एहिना पनरहो कट्ठा अबादैमे आठ-दस दिन लागल। दुनू गोटे विदा भेल। सजनक खेतक आड़ि टपला बाद देवन बुधनीकेँ कहलक- "दीदी, भरिगरहा काज सम्हरि गेल।"

खेतमे पहुँचते बुधनी साड़ीकेँ समेटि, खोंसि लेलक आ बीआ उखाड़ैमे, भीड़ि गेल। देवन कोदारिसँ खेतक कोन-कान तामए लगल। जाबे देवन तीनटा कोन, एकटा कोनपर बीये रहै, बनौलक ताबे बुधनी एक जोड़ा दश आँटी बीआ उखाड़ि लेलक। आड़ि बना देवन सेहो बीआ उखाड़ए ललग। हल्लुक बीआ देखि बुधनी देवनकेँ कहलक- "बौआ, उखाड़लो बीआ आठ दिन तक रहै छै। अगर सभटा बीआ उखड़ि जाएत तँ रोपिनाइयेटा ने रहत। एकटा काज तँ सम्पन्न भऽ गेल रहत। जँ सभ बीआ उखाड़ि लेब तँ खेतो खाली भऽ जएत। जहिसँ जोताइयो जएत। नइ तँ पाछू तामि-तामि रोपए पड़त।"

बुधनीक बात सुनि देवन कहलक- "हँ, ठीके कहै छी दीदी। जाबे सजन भैया अपन खेत जोतत ताबे अपनो दुनू गोरे सभटा बीआ उखाड़ि लेब।"

दुनू गोटे बीयो उखाड़ए आ गप्पो करए।

बेसी काज देखि सजन बड़द रबाड़िकेँ हँकए लगल। सजन हरो जोते आ मने-मन सोचबो करए जे मनुक्खेक काज मनुखकेँ होइत अछि। आइ जकरा हम नीक करबै, एक नइ एक दिन ओहो जरुर नीक करत! तहूँमे जे गरीब अछि ओ जँ नहियो बदला सठाएत तइयो गरीबक उपकारकेँ लोक धरम कहै छै। काजो भरिगर नहिये अछि। पहिल दिन कदबा करै लऽ एलौं हेन, बड़दो सभ कोनो थाकल थोड़े अछि। जहिना खेत सहगर अछि तहिना बड़दो जिड़ाले अछि। एकटा चास मेंही कऽ कए लेब आ समारक बेड़िमे लाभरो-जीभर कऽ कए जोति लेब तइयो कदबा बनबे करत। तोहूँमे जरल जमीनमे बरखा भेलहें। खेत ओहिना माँड़-माँड़ भेल अछि।

थोड़े काल बीआ उखाड़ि देवन बुधनीकेँ कहलक- "दीदी, ताबे अहाँ बीआ उखाड़ू, हम सजन भैयाकेँ देखने अबै छी।" कहि देवन सजन लग गेल। देवनकेँ देखिते सजन कहलक- "बौआ, कते बीआ उखाड़ै लऽ रहलह हेन? हमरा लगिचा गेल।"

चोट्टे देवन घुरि कऽ खेत आबि बुधनीकेँ कहलक- "दीदी, हाँइ-हाँइ बीआ उखाड़ू सजना भैयाकेँ कदवा लगिचा गेलै।" दुनू गोटे हाँइ-हाँइ बीआ उखाड़ए ललग। जहाँ तीनि गफ्फी बीआ भऽ जाइ कि आँटी बान्हि लिअए। आँटी बन्हैत बुधनी कहलक- "बौआ, जहिना सजन भैया कदबा कऽ देथुन तहिना हुनको कहिहनु जे आइ-काल्हि तँ अपने रोपब। जखन अपन खेत रोपा जएत तखन अहूँकेँ सम्हारि देब। किएक तँ हुनका बेसी खेत छनि। जँ अपनो दुनू गोटे हुनका रोपैन सम्हारि देवनि तँ हुनको रोपनि अगते भऽ जेतनि।"

अपन कदबा कऽ सजन चौकी लधले बड़द आ हर कान्हपर नेने बुधनीक खेत पहुँचल। खेत पहुँच बरहा लगले चौकी खोलि, घिसिओने जा दोसर खेतमे रखलक। हर लाधि सजन देवन लग आबि कहलक- "बौआ, बीआ तँ भइये गेलह। सभ आँटीकेँ आड़ि टपा कऽ राखि दहक। हमरा जोतैमे देरी नइ हएत।" कहि सजन बैसि कऽ तमाकुल चुनबए लगल। बीआ टपा बुधनी सजनकेँ कहलक- "भैया, हमरा तँ पनरहे कट्ठा खेत अछि। जँ दू दिन सम्हारि दथि तँ अगते काज हमरो ससरि जएत। हिनका तँ बेसी खेत छनि, हमहूँ दुनू गोरे रोपि देवनि।"

बुधनीक बात सुनि सजनक मनमे उत्साह बढ़लै! ठोरमे तमाकुल दैत सजन बाजल- "कनियाँ, बेसिओ खेत रहने रोपैनमे जन नइ लगबै छी, किअए नइ लगबै छी से बुझै छथिन। तेहेन गामक जन सभ अछि जे सोलहो आना धियान ओकरा बोइनेपर रहै छै। कहै लऽ आँटी गनि कऽ उखाड़ैए मुदा रोपै काल मूठक-मूठ बीआ गाड़ि देत। गिरहत हुअए कि जन, ओकरा मनमे ई हेवाक चाहियै जे खेती नीक जेकाँ होय। जखन खेती नीक जेकाँ हएत तखने ने उपजो नीक हएत। उपजा नीक हएत तखने ने सबहक हालत सुधरत। से ककरो नेतमे छइहे नहि।"

बुधनी बाजलि- "भैया, सभ रंगक लोक सभ गाममे रहै छै। ने सभ नीके होइत आ ने सभ अधले। तखन तँ लोककेँ अपने नीक-अधला देखि चलए पड़तै। क्यो किछु करह, मुदा सभकेँ अपने नीक बनैक कोशिश करक चाही ने?" तमाकुल खा सजन हर जोतै लऽ उठल, हरक लागनि पकड़ि जहाँ एक मोड़ घुमल कि पूबरिया खेतमे चारि कोला पूव हरबाहकेँ पटाक-पटाक मारैत सुनलक। पहिने तँ हरवाहकेँ कोनो शंके ने रहै जे हमरे मारै लऽ फुसियाहा अबैए। मुदा जाबे किसुनमा हर ठाढ़ करै-करै ताबे मारि लागि गेलै। किसुनमा बुफगर। हर ठाढ़ कऽ फुसियाहाकेँ पकड़ि खेतेमे पटकलक। पटकि कऽ छातीपर बैसि किसुनमा मुँहे-मुँह खूब चोटिएलक। सौँसे बाध हल्ला भऽ गेलै। बीओ उखारनिहार आ हरो जोतिनिहार सभ

जम्मा भऽ गेल। दुनू गोटेक झगड़ा छोड़ा पूछए लगल। ताबे नवकी बीआ उखाड़व छोड़ि घर दिशि लफड़ल विदा भेलि। नवकी टोलपर जा पहिने फुसियाहा घरवालीकेँ कहलक- ''कनियाँ, तूँ अंगनामे छह आ घरबलाकेँ किसुनमा खुन कऽ देलकह?'' कहि नवकी लफड़ल किसुनमा अंगना गेल। किसुनमो अंगना जा किसुनमा भनसियाकेँ कहलक- ''कनियाँ! घरबला खून भऽ गेलह!''

कना खून भेल?'' -किसुनमाक घरवाली बाजलि।

ऐँह की कहवह, फुसियाहा लाठी नेने गेल आ हाँइ-हाँइ देहपर चलबए लगल!''

फुसियाहाक घरवाली किसुनमाकेँ अंगनेसँ गरिअबैत विदा भेलि। तहिना किसुनमोक घरवाली टोलसँ निकलि कनिये आगू बढ़ल कि दुनूक रास्ता एकठाम मिलि एक्के रास्ता बाधक बनि जाइत। जइठाम दुनू रास्ता मिलैत तहिठाम दुनूकेँ भेंट भऽ गेलै। एक दोसरकेँ देखिते चिकैड़-चिकैड़ गारि पढ़ैति। एक ठाम होइते दुनूकेँ पकड़ा-पकड़ी भऽ गेलि। दुनू-दुनूककेँ झोंटा पकड़ने। घिचम-तीरा होइत-होइत दुनू गिरि पड़लि। मुदा झोंटा दुनूक-दुनू पकड़िनहि। तरमे किसुनमाक भनसिया आ उपरमे फुसियाहाक। तरेसँ किसुनमाक भनसिया नाकेमे दाँत काटि लेलक। दाँत कटिते छड़-छड़ खुन फुसियाहा भनसियाकेँ बहए लगल। खुन गिरैत देखि फुसियोहोक भनसिया गालेमे दाँत काटि लेलक। ओकरो खून बहए लगलै। मुदा क्यो-ककरो छोड़ै लऽ तैयारे नहि।

अपना आंगन आबि नवकी भानस करए लागलि। नवकीकेँ गामक लोक एहि दुआरे नवकी कहै जे पैछले साल वसुआसँ चुमौन कऽ एहि गाम आइलि। नवकीक वसुआ चारिम पति। पहिल विआह नवकीक रतुआर भेल। तीनिटा धियो-पुतो भेलि। एक दिन पतिसँ झगड़ा भेलै पड़ा कऽ नैहर चलि आइल। धियो-पूतोकेँ छोड़ि देलक। साल भरिक बाद दोसर विआह विसुनपुर केलक। नवकियोकेँ दोसर विआह रहै आ घरोबलाकेँ। विसुनपुरोमे दूटा बच्चा भेलै। ओकरो छोड़ि कऽ पड़ा गेलि। तखन तेसर केलक। तेसरोमे झगड़ा भेलै छोड़ि कऽ पड़ा गेलि। चारिम सासुरमे नवकी। चारिम विआह चुमौन चालिस-पेइतालिस बर्खक उमेरमे भेलैए। तेँ गामक लोक सभ नवकी कहैत।

फुसियाहा आ किसुनमा दुनू भजैत। दुनूकेँ एक-एक्केटा बड़द। खोतो कम्मे। अखाढ़क बरसा तेँ सबहक खेतो खसले आ बीओ रोपाउ। भोरहरबामे पानि भेल तेँ खेत रोपैक जोगार क्यो ने केने। सभ दिन अपन-अपन भाँजमे खेत जोतैत। पानि देखि फुसियाहा भोरे बड़दकेँ घरसँ निकालि, कुट्टी लगा, बीआ उखड़ए दुनू परानी खेत गेल। किसुनमोक खेत पनिआइल। हर खोलै बेरमे किसुनमा बड़द आनए फुसियाहा ऐठाम गेल। फुसियाहा घरपर नहि। तेँ दुनू गोटेमे भेंट नहि भेलै। भजैती बुझि किसुनमा बड़द लेने चल आएल। घरपर आबि अपना बड़दमे जोड़ि कदवा करए खेत गेल। थोड़े बीया उखाड़ि फुसियाहा हर लइ लऽ घरपर आएल। तँ बड़दे नहि! हाथमे

हरवाही पेना रहबे करै। किसुनमा ऐठाम आएल। ने बड़द ने किसुनमा घरपर। घरपर भाँज लगा फुसियाहा किसुनमाक खेत गेल। खेतमे किसुनमाकेँ हर जोतैत देखलक। बिना किछु कहनहि-सुननहि किसुनमापर पेना बरिसवए लगल। जाबे किसुनमा हर ठाढ़ करै-करै ताबे फुसियाहा सात-आठ पेना लगा देलक। थाल-पानिमे फुसियाहाकेँ पटकि किसुनमा खुब चोटियेलक। आन-आन हरवाह सभ दुनूकेँ छोड़ौलक। झगड़ा छुटलाक बादो दुनू-दुनूकेँ अनधुन गरियबैत। दुनूकेँ सभ वुझा-सुझा, हर खोलि विदा केलक। अपन बड़द लऽ कऽ फुसियहो विदा भेल। किसुनमा बड़दकेँ चरै लऽ छोड़ि देलक।

घरपर अबिते फुसियाहा घरवालीकेँ देखलक। साँसे देह खून लागल। मुदा नाकक खुन बन्न भऽ गेल। घरवाली फुसियाहाकेँ साँसे, देह थाल लगल देखै। दुनू अंगनाक ओसारपर बैसि एक-दोसरकेँ देखैत। मने-मन फुसियाहा सप्पत खेलक जे किसुनमासँ बड़दक भजैती नइ राखब।

दुनूक भजैती छुटि गेल। गामक सभ अपन-अपन खेती करए लगल। ने एक्को धुर फुसियाहा धान रोपलक आ ने किसुनमा। किऐक तँ एकटा बड़दसँ हर कोना जोतैत?"

साँझू पहर सजन वुधनीक ऐठाम आएलि। भरि दिनक मेहनतसँ वुधिनियो आ देवनो थाकल। अंगनामे बिछान विछा वुधनी पड़ल-सुतल आ देवन पाएरसँ जँतैत। सजनकेँ देखिते देवन कहलक- "आउ-आउ, भैया!"

देवनक बात सुनिते वुधनी फुड़फुड़ा कऽ उठि, देहक साड़ी सरिया, सजनकेँ कहलक- "आबथु भैया। भरि दिन तते भीड़ भेलि जे देह दुखाइए तँ देवनकेँ जँतै लऽ कहलियैहँ।"

सजनो बाजल- "आइ रोपनिक पहिल दिन छल, तँ देह दुखाइए। जखन दू-चारि दिन एक लखाइत रोपैन करबै तखन अभियास भऽ जएत। तब देहमे दरद नै हएत।"

बुधनी- "भैया! हमरा तँ कम्मे खेत अछि, हिनका तँ बेसी छनि। आइ जे कदबा कऽ देलनि, काल्हि तक ओकरे रोपब। एहिना जँ दू दिन आरो सम्हारि देता तहीमे हमर सभ खेती भऽ जाएत। अपन खेत जखन भऽ जाएत तँ हिनको जाबे हेतनि ताबे हमहूँ दुनू गोरे रोपि देवनि। अगते खेती दुनू गोड़ेक भऽ जाएत।"

सजन- "देखियौ कनियाँ, अगर लोक मिलानसँ काज करत तँ सबहक काज असान भऽ जेतै। मुदा से नइ ने होइ छै। आइये फुसियाहा आ किसुनमाकेँ देखलियै।"

बिचहिमे देवन सजनकेँ कहलक- "भैया, ओइ दिन जे खिस्सा कहैत रहियै आ कहलियै जे दोसर दिन आगू कहब से कहियौ।"

देवनक बात सुनि सजन अखियास करए लगल। मन पड़िते हँसैत बाजल- "अच्छा सुनह।" इशारा दैत- "ओ रवियाक घर छियै। तूँ अनभुआर छह तँ चिन्हा

दैत छिअह। रविया आमक गाछी लगबैक विचार केलक। गाछ तँ पहिनहुँ रहै मुदा गाछ सभ बुढ़हा गेलै। कएकटा सुखियो गेलै आ कएकटा बेचियो लेलक। सिर्फ एक्केटा पुरना गाछ बँचलै। जे कोनो साल फड़ै आ कोनो साल नै फड़ै। ओ हमरा आबि कऽ पूछलक जे कोन-कोन आमक गाछ रोपी? आमक गाछ रोपब सुनि हमरा खूब खुशी भेल। खुशी अइ दुआरे भेल जे समाजमे ककरो गाछी भेलासँ गामेमे आम बेसी हएत। अपनो खएत आ दोसरो खेतै। हमरो धिया-पूता टुकला बीछत।'' हम कहलियै- ''रवि, नीक-नीक आमक गाछ जे मीठो होय आ नम्हरो, रोपियह।'' ओ कहलक- ''गाछ कतएसँ आनव?''

हम कहलियै- ''अगर बजारमे कीनिवह तँ ठका जेबह। कहतह कलमी आमक गाछ दइ छी आ भऽ जेतह सरही। तँ आमक दोकानमे जा चुनि-चुनि कऽ नमहरका आम कीनि लिहह। गुद्दा खा कऽ सुआद देखि लिहक। जे नीक बुझि पड़तह ओकर आँठी रोपि दिहक। पनरहे दिनमे पिपही जनमि जेतह। आमक गाछकँ पिपही लोक एहि दुआरे कहै छै जे आँठिक तरमे जे गुद्दा जेकाँ रहै छै ओकरा लोक सिलौटपर रगड़ि पिपही बनवैत अछि। तँ ओकरा पिपही कहै छै। पिपहीकँ ताक-हेर करैत रहिहह, जे बकरी-छकरी ने खा। नमहर गाछकँ जँ बकरी खेबो करै छै तँ निच्चासँ कनोजड़ि चलै छै मुदा पिपहीवाला गाछकँ खेने सूखि जाइ छै। जखन पिपही कने नमहर हेतह तँ ओकरा उखाड़ि ओकर मुसरा निच्चाँ दबा कऽ काटि फेर रोपि दिहक। साले भरिमे डेढ़-हाथ - दू-हाथक भऽ जेतह। तखन ओकरा थल्ला काटि दिहक। तीनिये सालमे फड़ए लगतह।''

रविया सएह केलक। आँगरी इशारासँ सजन छठुआक घर देखवैत देवनकँ कहए लगल- ''ओ छठुआ की केलक तँ रवियाक आमक गाछ गनि लेलक। बारहटा गाछ रहैक। अपन बाड़ीमे जनमल अनेरुआ बारहटा गाछ उखाड़ि कऽ रखि लेलक। रातिमे रवियाक बारहोटा गाछ, उखाड़ि अपनामे रोपि लेलक आ अपन रवियामे रोपि देलक। रविया अनाड़ी, बुझबे ने केलक। तीनि सालक उपरान्त जब आम फड़ए लगलै, तखन रविया तजबीज करए लगल जे जेहेन आमक आँठी रोपने रही तेहेन तँ एक्कोटा ने अछि। ऐना किऐक भेल? छठुआ अपन आमक बड़ाइ जतए-ततए करए लगल। रवियाकँ सेहो छठुआक आम देखि मनमे एलै जे जेहने आमक आँठी रोपने रही तेहने बुझि पड़ैए। मुदा कहबै कोना?''

''रवियाक आंगनवाली आमक गाछ रोपैयेकालमे कबूला केने रहै जे पहिल बेरक फलसँ ब्राह्मण भोजन ब्रह्म स्थानमे कराएव। जखन आम पाकए लगलै, तखन सभ गाछक आम मिला कऽ दू चँगेड़ा सैंति कऽ रखलक। एक मटकूरी दही पौरलक। एक अढ़ैया धानक चूड़ा कुटलक। बेरागन वुझि शुक्र दिनक नँत पुरहितकँ दऽ देलकनि। सबेरे आठ बजेमे पुरहित स्नान-पूजा कऽ माथमे त्रिपुण्ड केने पहुँच गेलखिन। ब्रह्म स्थानक आगूमे सभ सामान-चूड़ा, दही, चीनी, अँचार, आम, रखलक।

पुरहितक नजरि आमपर पड़िते झुझुआ गेला, मुदा दही आ चूड़ा देखि सबुर भेलनि। रविया सभ चीज परसलक। पुरोहित सभ आमकेँ बागि देलखिन, जे खट्टा अछि। खट्टा सुनिते दुनू परानी रविया तामसे आगि भऽ गेल। मुदा की करैत? चारि सालक मेहनत रविया चोरकेँ उसरैग छातीमे मुक्का मारि लेलक। फेरि रविया ओहि गाछीकेँ उपटा दोहरा कऽ रोपैक विचार केलक। हमरा आबि कऽ पूछलक। हम कहलियै जे नसीवलाल कक्का ऐठाम चलि जा ओ सुतिहार छथि। ओ जना-जना कहथुन तेना-तेना करिहह।''

''रविया नसीवलाल काका ऐठाम पहुँच, पहिने पैछला खिस्सा कहलकनि। तखन गाछी लगवैक बात पूछलकनि। नसीवलाल काका रवियाकेँ बुझवैत पूछलखिन- ''कत्ते खेतमे गाछी लगेवह?''

रविया बाजल- ''बहुत खेतबला तँ हम नहिये छी। पाँचे कट्ठा उँचगर खेत अछि। जइमे गाछी लगौने छलौं, ओहीमे लगाएव।''

नसीवलाल- ''बड़वढ़ियाँ। छअटा कलमी- एकटा बम्वइ, एकटा रोहनियाँ एकटा जरदालू, एकटा मालदह, एकटा फैजली आ एकटा राइर-लगाबह। एहि आमकेँ रोपलासँ अदहा जेठसँ अदहा साओन धरि, बेराबेरी, चलैत रहतह। ई छबो आमक गाछ हम दऽ देवह। पाइ-कौड़ी नइ लेबह। पाँचटा सरही सेहो रोपि दिहक। एकटा बेल, दूटा धात्री, एकटा गुलजामुन आ दूटा लतामक गाछ सेहो रोपिहह। सभ मिला कऽ बढ़ियाँ बगीचा भऽ जेतह। जँ सभटा कलमिये आम रोपवह तँ मौका-कुमौकामे जँ जारनक काज हेतह तँ दिक्कत भऽ जेतह।''

नसीवलालक बात सुनि रवियाक मन खुश भऽ गेल। नसीवलालसँ गाछ लऽ जा रविआ लगौलक। सभ गाछमे बेरही दऽ देलक। दुनू परानी रविया गाछक ताक-हेरि करए लगल। ओइह गाछी अखन छै। दू सालसँ फड़वो करै छै।

सजनक बात सुनि देवन कहलक- ''भैया! आरो किछु कहिऔ?''

देवनक जिज्ञासा देखि सजनक मुँहसँ मकइक लावा जेकाँ हँसी निकलल। हँसीकेँ कम करैत सजन हाथक इशरासँ तेतराक घर देखवैत कहलक- ''ओ तेतराक घर छियै। वेचारा बड़ मुँह सच्च अछि। मुदा काज करैमे भूते छी। जहिना करीन पटबैमे तहिना कोदरवाहि करैमे। काज करैमे तेहेन पीतमरु अछि जकर जोड़ा गाममे नइ छै। घरवाली बड़ होशगर। खानदानी घरक बेटी छी। ओना देखैमे पीरसियामे अछि मुदा रिष्ट-पुष्ट देह, पाँच हाथक नमगर-छड़गर। घर-आंगनसँ लऽ कऽ खेत पथारक सभ काजक लूरि। घरक जुइत अपने हाथमे रखने अछि। तेतरो निधैन रहैए। घरवाली जएह करै लऽ कहलक सएह केलक। वेचारी घरक लछमी छी। खूँटापर चारिटा माल रखने अछि। मालक सेबा तेहेन करैए जे अनका सेहन्ता लगै छैक। जखन ओकरा बथानपर जेबहक तँ हेतए जे एत्तै बैसि रही। ने एक्को चोत गोबर कखनो थैरमे देखवहक आ ने थाल-खिचार। चानी जेकाँ थैर चमकैत रहै छै।

माल-जाल पोसि कऽ वेचारी सवा बीघा खेतो कीनलक, तीनिटा घरो बनौलक आ दुनू बेटीक विआहो केलक। बेटिओ सभ तेहेन लूरिगर छै जे नीक-नाहाँति गुजर करैए। गामक क्यो ने कहि सकैत अछि जे तेतरा हमर एको-पाइ ठकने हएत। आ ने ककरो-कहियो गारि पढ़ने हेतै। मुदा भगवानो कहियो वेचाराकेँ अधला नहि केलखिन। अगर कतौ जाइत रहत आ नजरि पड़तै तँ सहटि कऽ लगमे आबि तमाकुल खुऔत। अइ तीनि कोसीमे जँ कतौ नाच हेतै आ ओकरा भाँज लगतै तँ आबि कऽ कहत। खेला-पीला बाद रातिमे घरवालीकेँ कहतै जे सजना भैयाक मन खराप भऽ गेलै तँ ओ कहलक जे एतइ आवि कऽ सुतिहह। तँइ ओतइ जाइ छी। बेचारी घरोवाली मन खराब सुनि मानि जाइ छै। दुनू गोटे नाच देखए जाइ छी। जइठाम नाच देखए जाइ छी तइठाम विपटा आ नटूआकेँ एक्को-दू रुपैया देबे करत।

बर्ख आठम, सजमनिया टोलक रुपलाल चौरी खेतक मोटका धानक बीआ सासुरसँ अनलक। वास्तवमे धानो नीक छलै। सँसे गामक गिरहस्त ओहि धानक प्रशंसा केलकै। पाँच मनक कट्ठा उपजबो केलै। ई गाम विकासपुर राघोबावूक जमीनदारीमे पहिने छल। राघोबावू अपन बेटीक विआहमे खोंइछमे ई गाम दऽ देलखिन। जइ दिनसँ खोंइछमे बेटीकेँ देलखिन तइ दिनसँ उपजाक ससिये चलि गेलै। केहनो सुन्दर खेत आ केहनो सुन्दर धान होइ, कट्ठा मनसँ बेसी हेबे ने करै। नइ तँ आध मन, छअ पसेरी, पाँच पसेरी कट्ठा होय। मुदा जखन रुपलाल पाँच मनक कट्ठा उपजौलक तखन गिरहतक मनमे सुनगुनी एलै। तहियासँ गिरहत खेतमे खाधो देमए लगल। आ जोतो-कोर बेसी करए लगल। बेसी उपजनमा धानक बीओ आन-आन गामसँ आनए लगल। मुदा गामक बनावटो अजीव अछि। जत्ते धनहर खेत अछि ओ तीनि किसिमक अछि। अधहा खेत गहीर अछि जकरा चौरी कहै छियै। छअ आना खेत उपराड़ि अछि आ दू आना निचरस। जइसँ की होइ छै जे अधिक बरखा भेल तँ उपरका खेत उपजि जाइत आ निचला दहा जाइत। तहिना जँ कम बरखा भेल तँ निचला खेत उपैज जाइत आ उपरका मरहन्ना भऽ जाइत। मोटामोटी अदहा उपजा गिरहतकेँ होइत। मुदा तइयो किसान, भगवानक लीला बुझि, हँसैत-खेलैत समए बीता लैत।”

रुपलालक धानक उपजा देखि तेतरा अपन स्त्री लड्डूबतीकेँ कहलक। लड्डूबती अपन पनरहो कट्ठा चौरी खेतक लेल पनरह सेर धान बदलि अनलक। ओइ धानकेँ तेतरा नारक झट्टाक मोइर बना रखि लेलक। फागुन-चैतमे जखन चौरी खेत उखड़लै तखन खूब महियाकेँ जोइत धान वाओग केलक। बड़ सुन्दर धानक गाछ जनमलै। सभ दिन तेतरा दुनू परानी बेरा-बेरी जा-जा देखै। बीत भरि-भरिक जखन गाछ भेलै तखन दुनू परानी आठ दिनमे खुरपीसँ कमठौन केलक। बैशाखमे एकटा बिहड़िया हाल भेलै। कच्चे-बच्चेकेँ धान चलल। खेत भरि गेलै। अखाढ़मे डुमौआ बरखा भेल। आठे दिनमे धानक गाछ सड़कि कऽ भरि-भरि जाँघक भऽ गेल। दुनू परानी तेतरा

विचारलक जे सुरर्‌ा कमठौन करब। परात भने दुनू गोरे कमाइ लऽ गेल। आड़िपर ठाढ़ भऽ दुनू परानी हियासि-हियासि धान देखए लगल। धान देखि लड़ूवती तेतराकेँ कहलक- ''तेहेन धान अछि जे थारी छिछलि जाएत।'' तेतराक मन सेहो गद्-गद् रहै, खिलखिला कऽ हँसए लागल। अपन खेत देखि तेतरा अनको-अनको खेतक धान देखि अपन धानसँ तुलना करए लागल। जेहेन धान तेतरा खेतमे छल ओहन आड़ि-पाटिमे ककरो नै। हँसैत तेतरा लड़ूबतीकेँ कहलक- ''अइ बेरि लछमी महरानी खुशीसँ तकलनि।''

तेतराक बातमे अपन बात जोड़ैत लड़ूवती बाजलि- ''जब भगवान दइपर होइ छथिन तँ छप्पर फाड़ि कऽ दइ छथिन।'' कहि दुनू परानी हँसए लागल हँसिते दुनू गोरे, कमठौन करए, खेतमे पैसल। कमठौन शुरु केलक। कनिये खानक बाद दुनू गोरेकेँ ठेंगी पकड़ि लेलक। बुझलक क्यो ने। खुन पीबि जखन ठेंगी लटकल तखन तेतराक नजरि पड़लै। नजरि परिते तेतरा फानि कऽ खेतक आड़िपर ठाढ़ भऽ जोरसँ लड़ूबतीकेँ कहलक- ''सभटा खुन ठेंगी पीने जाइए। झब दे छोड़ाउ नइ तँ जेहो देहमे खून बँचल अछि सेहो पीबि लेत।''

तेतराक बात सुनि लड़ूबती खेतसँ उपर हुअए लागलि कि अपनो बाँहिमे ठेंगी लटकल देखलक। बाँहिमे ठेंगी लटकल देखि धड़फड़ा कऽ उपर हुअए लगलि कि धानमे साड़ी लटपटा गेलै। साड़ी लटपटाइते आड़िपर गीरि पड़लि। फेरि उठि पहिने लड़ूवती अपन ठेंगी छोड़ौलक। ठेंगीकेँ छोड़विते छड़-छड़ा कऽ खून बाँहिसँ निकलए लगलै। चुटकीसँ माटि लऽ ठेंगी दाढ़मे लगौलक। खून बन्न भेलै। ताबे तेतरो अपन ठेंगी छोड़ा खेतमे फेकलक। फेरि कमाइ लेल खेतमे पैइसए लगल कि देखलक जे खेतमे ठेंगी सह-सह करैए। कमठौन छोड़ि दुनू गोटे घर दिशि विदाभेल।''

उपरका खेत सभ किसान अबादए लागल। पनरहे दिनमे सौँसे गामक खेत अबाद भऽ गेल। खेत तँ अबाद भऽ गेल मुदा बरखो बन्न भऽ गेलै। उपरका खेत सभ सुखए लगलै। जेहो पानि खेतमे छलै ओहो बहि-बहि निचलका खेतमे जमा भऽ गेल। जहिना जे गब किसान खेतमे रोपने छल ओहिना ओ लगि कऽ ठाढ़। मने-मन सभ किसान सोचए लगल जे समए रौदियाह भऽ गेल। खेत सभमे दरारि फटए लागल। धानक निचला पात पीयर भऽ-भऽ' सूखए लगल। मुदा चौरी खेतक धान किसानक मुँहकेँ हरियर रखने।''

दुर्गापूजासँ पाँच दिन पहिने एकटा अछार भेल। मुदा ओ पानि रस्ते-पेरे रहि गेल। मात्र चौरिये खेतटा मे ठेहुन भरि पानिक सलाढ़ पकड़ने। आब जँ आगू बरखा नहियो हएत तइयो चौरी उपजबे करत, ई बात सभ गिरहस्तक मनमे। हर्ष-विषादक बीच गामक सभ किसान। मुदा जहि गिरहस्तक अधिक खेत चौरीमे ओ बेसी खुश आ जकर कम खेत ओ कम। तेतरा आ लड़ूबतीक खुशी अधिक। दुनू परानी तेतरा एहि दुआरे खुशी अधिक जे आन सालसँ बेसी धान हएत। डेढ़ बीघा खेत तेतराकेँ रहै।

पनरह कट्ठा उपराड़ि आ पनरह कट्ठा चौरी। कोनो साल बीस मनसे बेसी धान नहि होय मुदा अइबेर नवका धानक आशा। चौरी खेतक धान, दुनू परानी तेतराकेँ नव उत्साह आ नव स्नेह दुनू परानीक बीच सेहो पैदा कऽ देलक। जखन दुनू एकठाम बैसि परिवारक गप्प करए तखन पहिने चौरिये धानक चर्चा करैत।''

गभहा सँकरातिक दिन। आइ गामक सभ गिरहत अपन-अपन खेत जा कहत- ''उखरि सनक बीट, समाठ सनक सीस'' दुपहरेसँ दुनू परानीक बीच तेतराकेँ रक्का-टोकी हुअए लगल। रक्का-टोकीक कारण छल जे तेतरा कहैत जे हम चौरी जा कहवै। आ लड़ूबती कहैत जे हम जा कऽ कहबै। तेतरा कहैत जे पुरुख खेतमे जा कहैत, तँ हम जाएब। लड़ूबती कहै जे घरक गारजन जा कऽ कहै छै तँ हम कहबै। मुँह दुब्बर तेतरा खिसिया कऽ लड़ूवतीकेँ कहलकै- ''जाउ, अहीं जा कऽ कहिऔ।'' मने-मन लड़ूवती सोचैति जे पनरहे कट्ठा खेत अछि तँ घूमि-घूमि सौँसे खेत कहबै। अंगनाक सभ काज सम्हारि लड़ूवती खेत विदा भेलि। मनहूस भेल तेतरा दुआरपर बैसि, बीड़ी पीवि-पीवि मनकेँ शान्त करए लगल। मन शान्त होइते तेतरा कुट्टी काटए लगल। घरक गोसाईकेँ गोड़ लागि लड़ूवती सोचलक जे जँ क्यो रस्तामे टोकवो करत तँ उनटि कऽ जबाव नइ देबै। नइ तँ विधि भंग भऽ जाएत।

सनतौलिया आ बेटी अंगुरिया रस्ते कातमे मरहन्ना धान कटैत छलि। लड़ूवतीकेँ देखि सनतौलिया कहलकै- ''एहिवेर हिनके बाजी सुतरल छनि। हमरा सबहक कपारमे आगि लगि गेलि।'' सनतौलियाक बातक जबाव नहि दऽ लड़ूवती मुँह घुमा आगू बढ़ि गेली। जखन लड़ूवती दश लग्गी आगू बढ़लि तखन अंगुरिया माएकेँ कहलक- ''एक्को बेर काकी बजवो ने कएल। संतोष दैत सनतौलिया बेटीकेँ कहलक- ''बुच्ची, धने ऐहेन चीज छियै जे लोककेँ टेढ़ बना दइ छै। भाए-भाएमे गरदनि कटौबलि करा दइ छै। स्त्री-स्वामीमे गरमेल करा दइ छै। बाप-बेटामे खुन करा दइ छै। तइ लऽ दुख किअए करै छीँ। दश कट्ठा अल्हुआ रोपने छी। कहुना-कहुना तँ सए मन हेबे करत। कत्ते खेमे। अदहा बेचि कऽ धान कीनि लेब। एक साँझ भात आ एक साँझ अल्हुआ उसनि कऽ चाहे रोटी पका कऽ खाएब। कोनो की सबहक दिन कटतै आ हमर नइ कटत?''

खेतक चारु आड़ि घूमि लड़ूवती धान कऽ गोड़ लागि खेतमे धँसल। तर-तर गम्हरा धानमे। आंगुर सन-सन मोट। एकदम पोछल-पाछल शाही काँट जेँका। तरे-तर लड़ूवती खुशीसँ गद-गद। चारि फेरा खेतमे लड़ूवती लगा, खेतसँ निकलि मने-मन गोड़ लागि विदा भेलि। रास्तामे सोचए लागलि जे घरमे एक्कोटा नमहर कोठी नइ अछि, एत्ते धान कतए राखब। से नहि तँ अखन महीना दिन धान हेबोमे लागत। तँ एखने एकटा नमहर ढक बनवा लेब। अंगना अबैत-अबैत लड़ूवती तँए कऽ लेलक जे काल्हिये ढक बनौनिहारकेँ कहि देबै। सूर्यास्त भेने तेतरा माल घर कऽ ओसारक खुट्टा लगि बैसल, मुस्की दैत लड़ूवती तेतराक लगमे आबि कहलक- ''चौरीक धान तँ फाटि

कऽ उपजल अछि। घरमे एक्कोटा नमहर कोठी नइ अछि तँ एकटा नमहर ढक बनवा लिअ?''

तेतराक दिनका तामस पुनः जागि गेल। खिसिया कऽ पत्नीकेँ कहलक- ''ढक बनाउ की बखारी हमरा की पूछै छी? हमहूँ कोनो मनुखे छी? बहिया-खबास जेकाँ रहै छी आ रहब।''

तेतराक कड़ुआइल बात सुनि कनडेरिये आँखिये लडूवती तेतराक आँखिमे आँखि गड़ा, दहिना हाथ माथपर दऽ पुचकारि कऽ बाजलि- ''ऐना जँ भैंसा-भैंसीक कनारि दुनू परानीमे लोक करए लगे तखन तँ भऽ गेल। खेते देखैक मन अछि तँ काल्हि जा कऽ देखि आउ। खेत कतौ पड़ा जाएत। तइ लऽ एत्ते तामस किअए केने छी।''

लडूवती अपन गल्ती अपन आँखिये सँ मानि लेलक। तेतराक आँखि गल्ती माफ करैत अपन बड़प्पनक आनन्द महसूस केलक। मुस्की दैत तेतरा कहलक- ''छोटे-छोटे दूटा ढक बना लेब। एकटा बनोलासँ गड़बर भऽ जाएत। एकछाहा ओते धान हएत तब ने। जँ से नइ हएत तँ मोटका धानमे मेहिक्का धान कोना राखब?''

मूड़ी डोलवैत लडूवती वाजलि- ''कहलौं तँ ठीके। जकरा वेसी खेत रहै छै ओकरा वेसी धानो होइ छै। तँ नमहर-नमहर ढक वा बखारी बनवैए। मुदा जे जेहेन गिरहत अछि ओ तँ ओहने कोठी आकि ढक बनौत ने। गरीब-गुरबा भुरकुरी वा घइलेमे अन्न-पानि रखैए।''

दोसर दिन भोरे तेतरा ढक बनवै दऽ कहै लऽ लेलहा एहिठाम गेल। लेलहा गछि लेलक। दोसर दिन आबि लेलहा चारिटा भौर परहक अधपक्कू बाँस कटलक। दू दिनमे लेलहा चारु बाँस कऽ चीड़ि-फाड़ि, छीलि-छालि कऽ तैयार केलक। तेसर दिन ढक बनौनाइ शुरु केलक। लडूवती लेलहाकेँ कहलक- ''भैया, एकटा मनही ढकिया सेहो बना दिहथि। छठिमे घाटो परक काज कऽ लेब आ धान-तानक लड़ती-चड़ती हएत तँ धानो राखब।''

मने-मन लडूवती छठिमाए केँ हाथी कबूला केलक।''

अगहन आएल। धनकटनी शुरु भेल। उपरका खेतमे तँ धान तेनाहेँ सन, मुदा तइयो जरलो-मरल धान काटि-काटि आनए लगल। पनरह अगहनसँ चौरी खेतमे हाथ लागल। तेतराक खेत बीचमे, तँ पहिने किनहरिक धान कटत तखने रास्ता बनतै। रखवार किनहरिबला गिरहत सभकेँ धान काटए लेल कहलक आ बीचक खेंतबलाकेँ कटैक मनाही कऽ देलक। आठ दिन कटनीक उपरान्त तेतरा खेतक रस्ता खुजल। साँझेमे आबि रखवार तेतराकेँ कहि देलक। भोरे लडूवती भानस कऽ दुनू परानी खेलक आ धान काटै लऽ विदा भेल। जाइसँ पहिने माल-जाल कऽ खुआ-पीया लेलक। शीतलहरी दुआरे पानियो ठरल। रौदक पता नहि। आड़िपर पहुँच, दुनू परानी तेतरा धानकेँ निङहारि-निङहारि देखए लगल। धानक सीस ठारहे मुदा दाना एक्कोटामे नहि। लडूवतीक मनमे एलै जे भरिसक लोक चोरा कऽ सुररि लेलक। तँ रखवारकेँ

ताकए लागलि। कनिये कालक बाद मनमे एलै जे कतका ने सुररलक मुदा बीचला तँ नइ सुररने हएत। पाइनमे पैसि कऽ धान देखए लगली। बीचोमे एक्कोटा धान नहि। झड़ल सीस देखि लड़ूवती हताश भऽ गेलि। एना भेल किअए? चारु आड़ि तेतरा घुरि-फिरि देखलक तँ एक्के रंग बुझि पड़लै। ठकुआ कऽ तेतरा आड़िपर ठाढ़ भऽ गेल। ने किछु तेतरा बजैत आ ने लड़ूवती। दुनूक देहमे जना कनियो लज्जतिये नै रहल। एक तँ खेतक ठरल पानि, दोसर धानक सोग, कठुआ कऽ लड़ूवती खेतेमे गिर पड़लि। अचेत। लड़ूवतीकेँ गिरल देखि तेतरा पँजिया कऽ कोरामे उठौलक। मूड़ी उठा-उठा लोककेँ देखैत जे सोर पाड़बै। मुदा लगमे क्यो नहि छल। कहुना-कहुना तेतरा लड़ूवतीकेँ उठा सुखलाहा खेतमे अनलक। लड़ूवती ओँघरा गेलि। जना एको-पाइ होशे नहि। मने-मन तेतरा सोचए लगल जे- "आब की करब?" किछु फुरबे ने करै। अनासुरती मनमे एलै जे पाएरक दुनू तरबा रगड़ने देहमे गरमी औतै, तखन उठि कऽ ठाढ़ हएत। लड़ूवतीक तरबा तेतरा रगड़ए लगल। थोड़े कालक बाद लड़ूवती आँखि तकलक। आँखि तकिते साड़ी सरिया लड़ूवती चुक्की माली भऽ बैसि गेली देह गरमाइते दुनू गोटे आंगन विदा भेल। अंगना अविते तेतरा घूर पजारलक। दुनू परानी भरि मन आगि तपलक।"

बेरु पहर तेतरा हमरा ऐठाम आवि कहलक- "भैया, गरदनि कटि गेल। एक्कोटा धान खेतमे नइ अछि। जना क्यो सुररि नेने हुअए तहिना बुझि पड़ल।"

हम पूछलियै- "धान सुररने छह कि झड़ल छह?"

"अगर सुररने क्यो रहैत तँ अदहो-छिदहो तँ बँचल रहैत से एक्कोटा ने बँचल अछि।"

हम कहलियै- "तोहर बीये खराब छेलह। अपने घरक बीया छेलह कि ककरोसँ नेने छेलह?"

-"रुपलालसँ नेने छलौं।"

-"वएह तोरा ठकि लेलकह। उ चोट्टा औझुका ठक छी। गाममे ककरो नीक देखए चाहैए। ओते जे चीज ढेरिऔने अछि से सभटा अपने कमेलहा छियै। मुँह दुब्बर लोक डरे किछु कहबे ने करै छै तँ छजल जाइ छै। जेहने चोट्टाक मुँह छुटल अछि तेहने लठिधरो अछि। तँ क्यो किछु कहबे ने करै छै। आब की करबह? सबुर करह।"

टूटल आशा, विचलित मन, कनैत आँखिसँ तेतरा कहलक- "भैया, एक्को कनमा धान नइ भेल। भरि साल की खाएब?"

आशा जगबैत हम कहलियै- "तोरा अपन सम्पत्तिक पते नहि छह। बहुत धन छह। एकटा बच्छा बेचि लेबह तेहिसँ छह मासक बुतात चलि जेतह। तकर बाद बुझल जेतै। तावे छह महीना कि कोनो हाथपर हाथ धऽ बैसल रहबह।"

"जाइ छी भैया?"

"तमाकुल खा लएह।"

"तमाकुल खाइक मन नै होइए।"

मन असथिर करह। कमाइबला बेटा लोकक मरि जाइ छै, सेहो सबुर लोक करिते अछि। तोरा तँ खेतक उपजा गेलह। खेत छह तँ फेरि ओइसँ नीक उपजा देखबहक।"

अंगना आबि तेतरा सभ बात लड्डूवतीकेँ कहलक- लड्डूवतीक आँखि लाल भऽ गेलि। जोर-जोरसँ बजए लगली- "रुपललवा गरदनि कट्टा छी। जेहने फौतिबा अपने अछि तेहने बौह छै। अहाँ अंगनेमे रहू, हम ओइ रुपललबाकेँ सराध-बिटारि केने अबै छी। जाबे ओकरा सिरा आगू थूक नइ फेकबै, ताबे नइ बुझत।"

विचित्र असमंजसमे तेतरा पड़ि गेल। कखनो होय जे अनेरे घरवालीकेँ कहलियै। तँ कखनो होय जे दुनू गोटे जा कऽ रुपलालक दरवज्जापर गरियाबी। फेरि होय जे रुपलाल समंगर अछि, बिना मारने छोड़त नहि। धनो गेल आ नाहकमे मारिओ खाएब। अंतमे सोचलक जे भने अंगनेसँ घरवाली गरियबैए। लड्डूबती अंगनासँ रुपलालकेँ गरियबैत रास्तापर चलि आइलि। तेतरा आगूमे ठाढ़ भऽ बाँहि पकड़ि लेलक। जते तेतरा लड्डूवतीक बाँहि पकड़ि रोकैत तइसँ बेसी लड्डूबती कुदि-कुदि आगू बढ़ैक कोशिश करैत। आ चिकैड़ि-चिकैड़ि गरियेबो करैत।"

रास्ता धेने रुपलाल कतौसँ घर दिशि अबैत छल। लड्डूवतीक गारि सुनि चैंकि गेल मुदा आँखि निच्चा केने अपना एहिठाम चलि आएल। हल्ला सुनि हमहूँ गेलौं। तेतरा घरवालीकेँ देह परक साड़ी उधिआइल, केश खुजल, आँखि लाल, गरैज-गरैज गारि पढ़ब सुनि कहलियै- "कनियाँ, चुप रहू। धैनवाद अहींकेँ दइ छी जे रुपलालकेँ मुँहपर गरियेलौं। की करबै? जाबे अपना चीज नइ अछि ताबे एहिना ठक सभ ठकत। देखबे केलियै जे रवियाक आमक गाछ छठुआ उखारि कऽ रोपि लेलकै। चुप हउ, चुप हउ।"

हमर बात सुनि बेचारी साड़ी सरिऔलक, माथ झपैत घुनघुना कऽ बाजलि- "हिनका पैघ बुझै छिअनि भैया, तँ बात मानि लेलिएनि, नइ तँ आइ ओहि डकूबाकेँ खापड़िसँ चानि तोड़ि दितिऐक।"

आँखि मूनि देवन ध्यानसँ सजनक खिस्सा सुनैत रहए। लड्डूवतीक बात सुनि आँखि खुजलै। मने-मन देवन सोचए लालग जे रुपलालकेँ जत्ते सजा हेबाक चाहिऐक से नइ भेलइ। किऐक ने भेल? शायद एकर यएह कारण रहल हएत जे समाजोमे शासक आ शासित लोक अछि। शासकक गलतीक जबाव देमएबला क्यो ने अछि। मुदा गरीब-गुरबाक गलती कऽ उचितोसँ बेसी सजा देल जाइ छै। कने काल गुम्म भऽ देवन सजनकेँ कहलक- "भैया, अहाँ गियानक बखारी रखने छी।"

हँसैत सजन कहलक- "बौआ, रातियो बेसी भऽ गेल। भरि दिनक थाकल सेहो छी। तोहूँ खा कऽ आराम करह आ हमहूँ जाइ छी।"

(१०)

भोर होइते, एका-एकी टोलक लोक बचेलाल एहिठाम आबए लगल। लोककेँ अबैत देखि, सुमित्रा आंगन बाहरब छोड़ि, दरवज्जापर आबि सभकेँ बैइसै लऽ कहए लगलखिन। सबहक मनमे जेहने खुशी तेहने जिज्ञासा। लोकक गल-गुल सुनि बचेलालो बिछानसँ उठि, लोकक बोली अकानए लगल जे कतौ किछु भऽ ने तँ गेलै। मुदा गल-गुलक तेहने बाढ़ि आबि गेल छल जे कोनो बात साफ-साफ बुझाइये ने पड़ैत। आँखि मीड़िते बचेलाल दरवज्जापर आबि देखलक। किछु गोटे चौकियोपर बैसल, किछु ठाड़हो आ किछु गोटे रस्ते-रस्ते अबितो। सबहक मन खुशी तँ मुँहमे हँसी। बचेलालकेँ सुमित्रा कहलक- "बच्चा, समाज सभ, काल्हि जे दड़ी, लाइट, बरतन कीनि कऽ अनलह, वएह देखै लऽ एलखुनहेँ।"

सुमित्राक बात सुनि बचेलाल कलपर जा माटियेसँ चारि घूसा दाँतमे लगा कुड़ूर कऽ आएल। दरवज्जाक कोठरी खोलि सभ सामान बचेलाल निकाललक। दड़ी आ जाजीमकेँ खड़िहानमे बिछा सभकेँ बैसबैत बचेलाल कहए लगल- "हम सिर्फ कीनिलहुँ मुदा छी अहाँ सभक। जिनका जाहिया काज हुअए, लऽ जाएब। एहि दड़ी, जाजीम, लाइट आ बरतनकेँ अपन बुझि उपयोग करब।"

बचेलालक बात सुनि सभ थोपड़ी बजौलक। अछेलाल सेहो आएल। सुमित्रा चाहक ओरियानमे आंगन गेली लोकक हिसाबे हुनका गरे ने अँटैन जे कथीमे चाह बनाएव आ पीबै लए कथीमे देब। घरमे चाहो-चीनी आ दूधो कम्मे अछि, अइसँ पारो ने लागत। विचित्र असमंजसमे सुमित्रा। मुदा मनमे होइत जे दरवज्जापर आएल समाजकेँ जँ चाहो ने पिएबनि तँ घरक मोले कोन? अंगनेसँ सुमित्रा हाथक इशारासँ अछेलालकेँ बजौलनि। सहटि कऽ अछेलाल सुमित्रा लग आएल। अछेलालकेँ सुमित्रा कहलखिन- "बौआ, आइ पहिल दिन समाज दुआरपर ऐला, अगर चाहो नइ पीएबनि तँ केहेन हएत।"

हूँहकारी भरैत अछेलाल कहलकनि- "हँ, ई तँ बड़ पैघ अपमान समाजकेँ हेतनि। आ समाजोसँ पैघ अपन घरक प्रतिष्ठाक हएत। सभ चीज तँ अछिये तखन प्रतिष्ठाकेँ मंगनीमे किऐक जाए देब। हम दूध नेने अवै छी। चाह-चीनी दोकानसँ लऽ आनब। चाह बनवै लए बड़का बरतन अछिये। पीबै लए जँ कप-गिलास नइ अछि तँ दोकानेसँ सैकड़ा हिसाबसँ प्लास्टिकक गिलास कीनि आनव। कने करै पड़त ने, मुदा असंभव काज तँ नहि अछि। जुगाइयोकेँ सोर पाड़ए छियै। ओ दोकानक काज करत अहाँ चुल्हि पजारि बरतन चढ़ा दिऔ। जावे चुल्हि पजारि बरतन सरिआइब ताबे इहो दुनू काज भऽ जएत।"

सुमित्रा बाजलि- "हँ जुगायकेँ सोर पड़िऔ?"

जुगायकेँ अछेलाल सोर पारि कहलक- "जुगाय तूँ कन्ने दोकान जा। चाह-चीनी, गिलास आ तमाकुल बीड़ी ,सुपाड़ी कीनने आबह। हौ भागमन्ते ऐठाम दश गोरे अबैए।"

जुगाय दोकान गेल आ अछेलाल दूध लऽ। इम्हर बचेलालक माए सुमित्रा हाँइ-हाँइ गिलासमे पानि लऽ चुल्हिकेँ शुद्ध करै लए छीटए लगली।

ओसारपर बैसि रुमा गुम्हरैत। बजैत किछु नहि मुदा बिना आगिये मन छन-छन जरैत। जना सभ जान मारैपर लागल होय। खुशीसँ बचेलालक मन ओहिना दहलाइत जेना पोखरिमे पानिक उपरका चीज हवामे।

चाह बनल। सभ क्यो चाह पीवि क्यो तमाकुल तँ क्यो बीड़ी, तँ क्यो सुपारीक टूक मुँहमे दऽ जूट बान्हि-बान्हि विदा भेल। जहिना पुरुखक जुटान बचेलाल ऐठाम तहिना टोलक बूढ़ि-बुढ़ानुसक जुटान परती परहक जामुनक गाछक निच्चामे। ढेरवा बच्चिया सभक बैसार पोखरिक मोहारक कनैलिक फूलक गाछक तरमे। सभ अपना-अपनामे मस्त। जना ककरो घर-आंगनमे कोनो काजे ने होय, तहिना।

ठीठर, डोमन, कुजाइ आ बोतल संगे चारु गोटे ठीठरक दलानपर बैसल। सबहक मन खुशी। आइ धरि जे टोल भानस करैक बरतन, इजोत आ बिछानक लेल दुख भोगैत आएल ओ दुख पड़ा गेल। डोमन बोतलकेँ कहलक- "बोतल भाय, अपनो सबहक उपरमे किछु जिम्मा आबि गेल। ओना तँ गामक चीज भेल मुदा मुख रुपसँ अपना टोलक तँ भेवे कएल। अपना सभक जिम्मा भेल जे एक लगनमे दू या दूसँ अधिक काज नइ करब। किऐक तँ समान कम अछि। तँ एक लगनमे एक्केटा विआह करब नीक हएत।"

डोमनक बात सुनि ठीठर कहलक- "बेस कहलहक डोमन। जतबे नुआ रहए ततबे पाएर पसारी। ओहो तँ बचेलालेकेँ धैनवाद दी जे एतबो केलक। कमाइ तँ बहुत लोक गाममे अछि मुदा ककरो ऐहेन बुद्धि किअए ने भेल? बन राखे सिंह आ सिंह राखे बन। जहिना बेचारा बचेलाल समाज कल्याण लए डेग उठौलक तहिना अपनो सभ डेगमे डेग मिला कऽ चलह। ओइ वेचाराक परिवार लटपटा गेलै, मसोमाती कारोवार भऽ गेलै। मुदा तइयो ओइ मसोमातकेँ धैनवाद दी जे घर थथमारि कऽ रखलक। खेनाइ-पीनाइ, काज-उदयम जेना सभ बिसरि गेल। चारु गोटे गप्प-सप्प करिते रहल।"

नअ बाजि गेल। बचेलाल, अछेलाल आ जुगाय, तीनिये गोटे दरवज्जापर रहल। जुगायकेँ बचेलाल कहलक- "जुगाय भाय, हम इस्कूल जाएब। अहाँ दुनू परानी डॉक्टर ऐठाम पहुँच जाएब। इस्कूलसँ हमहुँ सोझे डॉक्टर ऐठाम पहुँच जाएब। जाबे आँखि तकै छी ताबे ई दुनियाँ, जखने आँखि मूनि लेब दुनियाँ बिला जाएत। तँ शरीरक रोगकेँ मजाक नइ बुझि दुश्मन बुझए पड़त। अखन अहाँक उमेरे की भेल

हेन, तखन तँ गरीबी लोककेँ अछैते औरुदे मारि दइ छै। अखन अहूँ जाउ, घर परक काज देखियौ, हमहूँ नहा-खा कऽ इस्कूल जाइ छी।''

जुगाय उठि कऽ विदा भेल। अछेलाल बचेलालकेँ कहलक- ''बौआ, जहिना भूमकम भेलापर गाम दलमलित भऽ जाइ छै तहिना आइ बुझि पड़ल।''

बचेलालक मन खुशीसँ गद्‌गद। हँसैत बचेलाल अछेलालकेँ कहलक- ''काका, जहिना अहाँ असगर छी तहिना तँ हमहूँ छी। जखन इस्कूल चलि जाइ छी तखन दुआर-दरबज्जा भकोभन रहैत अछि तेँ ऐहेन काज ठाढ़ कऽ लेलासँ काजो चलत आ दरबज्जो सुन नइ रहत। अहूँकेँ एक्केटा घर अछि आ कम्मे घरारियो। तँ एत्तै घर लऽ आनू। एकठाम घर भेलासँ दुनू गोटेक रक्छो हएत आ मालो-जालक सेवा हएत। खूँटापर जे गाए अछि ओ पुरना नस्लक अछि, जहिसँ दूधो कम होइए। तँ एकटा नीक गाए जरसी सेहो कीनि लेब। अपना चीज रहलासँ कोनो बेर-बेगरता नइ खगत। एत्ते दिन आन्हर जेकाँ छलौं जइसँ परिवार समाज नइ बुझै छलौं। आब जखन नजरि खुजल तखन ई सभ बुझए लगलियै। हमरे रुपैआसँ बड़का-बड़का उद्योगपति कमा कऽ मोट भेलि जाइए आ जे कमाइए ओ बेटे-बेटीक पढ़ौनाइ-लिखौनाइसँ लऽ कऽ विआह-दुरागमन करैत-करैत जिनगी समाप्त कऽ लैत अछि। हमरो साइकिल भइये गेल। जत्ते समए बचत ओहिमे टोलक बच्चा सभकेँ पढ़ा देबै। इस्कूलमे दरमाहा भेटिते अछि तँ ककरोसँ एक्को पाइ नइ लेबै। खेती करैक लूरि नइए मुदा पढ़ैक लूरि तँ अछि। तँ खेतीक किताब पढ़ि, रेडियो सुनि खेती करैक लूरि अपनो सीखि लेब आ अहूँ सभकेँ नव ढंगक खेतीक जानकारी देब। आब अपनो बुझए लगलौं जे शिक्षक भेनहुँ जिनगी जीवैक ज्ञान नहि अछि। जहियासँ इस्कूल छोड़लौं आ शिक्षक भेलौं तहियासँ बड़ पढ़ै छी तँ साँझू पहरकेँ दू-चारि पाँती रामायण वा महाभारत। सेहो पढ़ै नइ छी गाबि लइ छी। ओकरामे जे गूढ़ विषय छिपल छइ से बुझवे ने करै छी। जिनगी अन्हराएल कऽ अन्हराइले रहि जाइत अछि। जाबे सभ मनुक्खकेँ जिनगी जीवैक ढंग नइ हेतै ताबे जिनगी अपन कोनो माने नहि राखत। आब समयो भऽ गेल हमहूँ इस्कूल जाइ छी, गप्पेमे लागल रहब तँ देरी भऽ जाएत अहूँ जाउ।

साढ़े चारि बजे बचेलाल डॉक्टर एहिठाम पहुँचल। दुनू परानी जुगाय तइसँ पहिने पहुँच चुकल छल। साँझुका समए भेने डॉक्टर एहिठाम रोगियोक बेसी भीड़ नहि। बचेलालकेँ देखि डॉक्टर पूछलखिन- ''मास्टर सहाएव अपने देखाइब कि क्यो रोगी छथि?''

जुगायकेँ देखबैत बचेलाल उत्तर देलकनि- ''डॉक्टर साहेब, हिनके पत्नीकेँ देखाएब अछि।''

डॉक्टरक कुरसीक बगलमे एकटा स्टूल राखल छलै। ओहिपर जा जुगायक पत्नी बैसली। डॉक्टर हुनका पूछए लगलखिन। सभ बात सुनि डॉक्टर बचेलालकेँ कहलखिन- ''तीनि-चारि तरहक जाँच करबए पड़त। जाँचक रिपोट देखला बाद दवाइ

लिखि देब। अखन तावे दू खोराक दवाइ दऽ दइ छी, काल्हि बाजाप्ता लिखि देब। पनरहसँ बीस दिनमे मरीज नीक भऽ जेती।''

डॉक्टरक बात सुनि जुगायक मनमे घरवालीक नव जिनगी नाचए लगल। बेचारा जुगाय घरवालीक आशा तोड़ि चुकल छल। जहिना पानिक वेगमे भंसैत चुट्टीकेँ खढ़क सहारा भेटिलासँ जिनगीक आशा होइत अछि, तहिना जुगाइयोकेँ भेल।

रुमाक दाबल क्रोध मिझाइल नहि तरे-तर धधैकते रहल। साँझू पहर बचेलाल टहलि-बुलि कऽ आबि, हाथ-पाएर धोय दरवज्जापर बैसल। सुमित्रा सेहो आबि, जरैत लालटेनकेँ तेज कऽ देलनि। चाह नेने रुमा सेहो अइली। एक घोंट चाह पीबि पत्नीकेँ बचेलाल कहए लगल- ''देखू, अखन तीनिये गोटे छी। तीनू गोटे एक्के परिवारक सेहो छी। परिवार एकटा संस्था होइत। जेकरा अहाँ मंदिरो, देवस्थानो कहि सकै छियै। जहिना पुजेगरी मंदिरकेँ जीवित रखैक लेल दिन-राति लागल रहैत अछि तहिना परिवारोकेँ जीवित रखैक लेल, परिवारक सभकेँ ओहि रुपमे करए पड़त। परिवारमे एकगोटे मिहनत करी आ दोसर गोटे बैसि कऽ रहए चाहबै तँ ओ घर कएक दिन ठाढ़ रहत। प्रश्न इटा खढ़-बाँसक नहि अछि। प्रश्न अछि मनुक्खक। जकर पहिल मानदंड अछि जे मनुक्ख केहेन हेवाक चाही? नजरि उठा कऽ देखबै तँ बुझि पड़त जे अनेको चालि-ढ़ालिक मनुक्ख अछि। मुदा से नहि, मनुक्खक मानदंडकेँ आगूमे राखि विचार करबै तखन बुझि परत। सभ मनुष्यक दायित्व होइत जे मनुष्य बनि जिनगी जीबी। आब कोनो बच्चा नइ छी। जँ कोनो काज वा बात अपने नइ बुझैत होय तँ दोसरसँ बुझैमे कोनो मान-अपमानक बात नहि होइत।

जुगायक पत्नीक रोग रसे-रसे कमए लगलनि। जेना-जेना रोग कमैत तेना-तेना काजो करए दिशि शक्ति बढ़ैत आ अन्नो दिशि रुचि बढ़ए लगलनि। पत्नीक हालत सुधरैत देखि जुगाय दवाइक संग पथ्य आ गाएक दूध सेहो उठौना कऽ लेलक। आठ दिन बीतैत-बीतैत धनमाक जुगायक पत्नी देह चिष्टा गेलि। स्त्रीकेँ स्वस्थ होइत देखि जुगायक टूटल आशा पुनः जागए लगल।

अखन धरि रुमाक नजरि सासुक प्रति जेहेन हेबाक चाही से नहि भऽ, क्यो छी, छलनि। सासुक प्रति पुतोहूक केहेन व्यवहार हेवाक चाही? से जना रुमा बुझिते नहि आकि बुझिओ कऽ अनठबैत। जँ किछु करए लेल सुमित्रा पुतोहूकेँ अढ़बैत तँ सुनिये कऽ रुमा बड़बड़ाए लगैत। करब तँ दूरक बात। जे देखैत-देखैत सुमित्रा अढ़ौनाइओ छोड़ि देलखिन। मनमे यएह छलनि जे जँ हम ककरो गारजन नहि छी तँ हमरो गारजन क्यो ने छी। मने-मने गजैत जे सासु-ससुरक प्रति वा बेटा-बेटीक प्रति जे कर्तव्य होइत अछि ओ तँ नीक जेकाँ निमाहि चुकल छी, तँ क्यो जिनगीमे आँगुर उठा कए नहि देखा सकैए। पुतोहू अपन कर्तव्य करती आ बेटा अपन करत। जँ बेटा-पुतोहू नहिये सेवा करत तँ नहि करह। जाधरि अन्न खाइ छी, देहमे शक अछि

ताधरि आँखि निच्चाँ कोना कऽ लेब। की फेरि दोहरा कऽ जनम लेब? सभ मनुक्ख अपन कर्मसँ मनुष्यता प्राप्त करैत अछि। आ जकरा मनुष्यता प्राप्त भऽ जाइ छै। ओकरा देहक सुख-दुख थोड़े पथ भ्रष्ट बना सकत। कथमपि नहि! भऽ सकैए जे पुतोहू हमरा बैधव्य वुझि निःसहाय बुझैत होथि? ई तँ जिनगीक क्रम थिकैक। की सभ महिला पुरुषक अछैते मरै छथि? एकदम नहि। मरबाक कारण भिन्न अछि आ पारिवारिक संबंध भिन्न। भऽ सकैए जे ओ पुतोहू अपन नैहरमे कोनो वैधव्य महिलाकेँ कष्टमय जिनगी देखने होथि वा पुतोहूक व्यवहार सहन करैत देखने होथि। एत्ते बात सुमित्राकेँ मनमे अबिते जेना आँखि गरमीसँ लाल हुअए लगलनि। निर्भीक स्वरमे मुहसँ निकललनि- ''आन महिला हमरा नहि बुझथु। हम जिनगी कऽ जनै छी तँ जीवैक ढग बुझै छियै। ओ पुतोहू हमरा पैघ माए तुल्य बुझती तँ हमहूँ बेटी तुल्य वुझबनि नइ तँ अपना मनक मालिक जँ छथि तँ हमहूँ अपना मनक मालिक छी।''

मुदा किछु दिनसँ रुमाक बदलल रुप सुमित्रा देखए लगलखिन। मने-मन तारतम्य करए लगली जे देखबै लए करै छथि वा जिनगीमे सुधार एलनि। मुदा सुमित्राक मन पुतोहूक दोषकेँ ओते महत्व नहि दऽ बेटाकेँ बेसी बुझैत। किऐक तँ आन घरक मनुक्ख आन घर आबि एत्ते कोना बढ़ि सकत। बढ़ैक कारण होइ छै। ओना कारण तँ अनेको अछि मुदा सभसँ महत्वपूर्ण कारण अछि पुरुखक दुर्बलता। जे पुरुख हाथी सन अबोध जानवरकेँ बसमे कऽ लइत, की ओकरा बुते सबोध स्त्रीकेँ मनुख बनाओल नहि हेतैक?

किछु दिन पहिने तक रुमा आंगनमे सभसँ पाछू सुति कऽ उठै छेली ओ आब सभसँ पहिने उठए लगली। उठि कऽ बिना मुँह-कान घोनहि आंगन-घर बहारि, चीनमार नीपि, बरतन-वासन धोय, तखन अपन क्रिया कर्ममे लगैए लगली सासुकेँ माए तुल्य वुझए लगली माएक प्रति पुतोहूक जे कर्तव्य होइत ओ कर्तव्य पूर्ति हेतु रुमा जे अपने बुझैत से करए लगली। जे काज नहि बुझैत ओ सासुसँ सीखि-सीखि करए लगली। सुमित्रो, पुतोहूक बदलैत रुप देखि, बुझा-बुझा कहए लगलखिन- ''कनियाँ! आइ धरिक जे अनुभव हमरा अछि ओ सीखि जिनगीमे उताड़ू। अहूँ जे नैहरसँ सीखि कऽ आइल छी ओ नीक अधलाक विचारि, अधलाकेँ छोड़ि नीककेँ पकड़ि चलू। अखन धरिक जे परिवारक व्यवहार रहल आ आइ जे समयानुकूल बदलाव आबि रहल अछि ओहिपर धियान दऽ आगू बढ़ू। तखने समएक संग चलि सकब। जे क्यो एहिसँ अलग भऽ जीवए चाहत ओकरे मनमे सदिखन उत्तेजना रहतै। जहिसँ चैन मनसँ पड़ा जेतै।''

सासुक विचारकेँ रुमा अंगीकार करए लगली।

पावनिक दिन। इस्कूल बन्न। मुदा बचेलाल, पहिलुका जेकाँ नहि, भोरे चारि बजे उठि अछेलालकेँ सोर पाड़लक। जाबे अछेलाल अबैत तहिसँ पहिने सुमित्रो आबि गेली। तीनू गोटे गप्प-सप्प करए लागल बचेलाल अछेलालकेँ पुछलक- ''काका, आब तँ खेती-बाड़ीक काज असानीसँ करैत हैब?''

बचेलालक बात सुनि अछेलाल कहए लगल- "बौआ, एहिठामक गिरहस्तक जे रुपरेखा अछि ओ नीक कम आ अधला बेसी अछि। तेँ गिरहस्तक जिनगी आ खेतीक ढाँचा बदलै लए बहुत किछु करए पड़त। जाबे से नइ करब ताबे जे चाहै छी से नइ हएत। हम तँ सभ बात बुझवो ने करै छी। अखन तक हम बोनिहार रहलौं तेँ गिरहस्तक जिनगी नीक-नहाँति कोना बुझवै? मुदा भौजी तँ नैहरसँ एहिठाम धरि गिरहस्ते परिवारमे रहबो केलनि आ बहुत दिन गिरहस्तियो केलनि तेँ हुनका बेसी अनुभव छनि। वएह कहती।"

अछेलालक बात सुनि सुमित्रा मने-मन सोचए लगली जे अछेलाल तँ ठीके कहलक। मुदा हमहूँ तँ बूढ़ि भेलौं तेँ बहुत बिसरियो गेलौं किऐक तँ काजो बहुत छुटि गेल आ छोड़ियो देलौं। मुदा बिना माटिपर ठाढ़ भेने ने मनुख रास्तापर आओत आ ने परिवार। जाबे मनुक्ख जमीनपर ठाढ़ नइ हएत ताबे आगू मुँहे कोना ससरत? हँ, ई भऽ सकैए जे हवा-बिहाड़िमे उड़ि क्यो बहुत आगू चलि जाय मुदा ओ अनिश्चित जिनगी हेतै। एक पीढ़ी बहुत आगू चलि जाएत मुदा अगिला पीढ़ी ओहिसँ आगू बढ़त कि पाछू हएत, ई कहब कठिन अछि। किएक तँ जत्ते उपर जे चलि जाएत ओ ओतै लसकि जाएत। ने ओकरा जमीन पकड़ैक बोध हेतै आ ने आगू बढ़ैक रास्ता भेटितै। किएक तँ दू विचारधारा आ दू रास्ताक संघर्ष चलैत अछि आ आगू आरो मजगूत भऽ चलत। तेँ जाधरि दुनू रास्ताकेँ बिना बुझने जँ क्यो आँखि मूनि चलए चाहत तँ ओ निश्चित लटपटेबे करत।"

मुदा प्रश्न अछि जहिना मनुक्ख समएक संग चलैत आएल तहिना चलैक। जे कठिन अछि। एत्ते बात मनमे अबिते सुमित्रा पुन: बजए लगली- "बौआ, कोनो परिवार ताबे नीक जेकाँ नइ चलि सकैए जाबे परिवारक सभ आदमी रास्ता धऽ नइ चलत। अपने परिवार छह, तूँ भरि दिन अपसियाँत रहै छह मुदा पुतोहू जनिक लेल धनि सन। जहिना ओ भरि दिन काजसँ छिटकैत रहैत छथि तहिना जँ तोहूँ छोड़ि दहक तखन घरक दशा की हेतह? मुदा जहिना तूँ नोकरी कऽ कमा अनै छह तहिना जँ ओहो घरेपर काज करथि तँ घरक उन्नति हेतह की नहि। तेँ परिवारमे जे जेहेन रहए ओकरा ओहि रुपमे मेहनत करक चाही? परिवारक जे गारजन होथि हुनको, आदमी देखि, काज ठाढ़ करक चाही, जहिसँ घरक आमदनियो बढ़त आ बेकारियो भागत। अहिना देखै छी बाढ़ि-रौदीक दुआरे सभ परिवार निच्चे मुँहे जा रहल अछि। मुदा बारह मासक सालमे चारि मास बरसातक होइत यएह चारि मास साल कऽ संचालन करैत। मुदा तज्जुब लगैए जे बरसातक चारि मास छोड़ि शेष आठ मासक कोनो महत्वे ने अछि। सभसँ दुखद बात तँ ई अछि जे एहि आठ मासक लेल गिरहस्त किछु सोचबे ने करैत। खेतीक मुख्य चीज पानि छी। जकरा दिशि लोक तकबे ने करैत। अगर खेत पटबैक उपाय लोक कऽ लिअए तँ जहिना उपजामे बढ़ोतरी हएत तहिना फसलोमे। जखन क्यो पानि-खाद आ नीक बीआ नइ बुझैत छल तखनो

गिरहस्ती चलैत छल। अपन खेत एक बध्धु छह, एक ठाम नइ छह, मुदा थोड़े हटि-हटि कऽ तँ छेबे करह। अगर बोरिंग गरा पटबैक जोगार कऽ लाए तँ की बुझि पड़ै छह जे जहिना उपजा अखन खेतसँ अनै छी तहिना तबो आओत? जहिना चौबिसे घंटाक दिन रातिमे देखै छहक जे रातिमे केहेन अन्हार रहैए आ दिन होइते केहेन इजोत भऽ जाइ छै। तहिना सभ चीजक छह। अखन दू परानी तूँ छह आ दू परानी अछेलालो। चारि गोरे तँ समकस काज करैबला छह मुदा काज कत्ते होइ छह। ई हिसाब जोड़ि कऽ काज शुरु करए परतह। अनाड़ी-धुनाड़ी जेकाँ कहवह जे कोन काज ठाढ़ करब? मुदा आँखिक सोझहामे छह जे खेतमे पानिक सुविधा बनौने, खेतमे सालो भरि फसिल लहलहेतह। खाद देवहक, नीक बीआ रहतह तँ तत्ते उपजा हेतह जे घरमे रखैक जगह नइ रहतह। नारो-पात तते हेतह जे दूटा चारिटा माल हड़ाइले रहतह। माल पोसवह तँ दुघो खेबह आ बेसी हेतह तँ बेचवो करवह। जते घरक आमदनी बढ़तह तत्ते ने आगू मुँहे ससरवह।''

माएक बात सुनि बचेलालकेँ भक्क खुजल। भक्क खुजिते माएकेँ कहलक- ''माए, आइ धरि एहि दिशि नजरिये ने गेल छल। मुदा आब देखै छी काज केनिहार लोक हँसी-खुशीसँ जिनगी बिता सेकैए। काका, सभसँ पहिने एकटा बोरिंग आ दमकलक जोगार करैक अछि। आइ तँ छुट्टी नइ अछि। परसू रवि छी। दुनू गोरे बजार चलि पहिने बुझि लेब। तखन जे जना गर लागत से करब।''

अछेलाल- ''बौआ, बैंकोबला सभ बोरिंग दमकल दइ छै। ओकरा साले-साल वियाज लगा रुपैआ दैत जेबै तइयो भऽ जाएत।''

बचेलाल- ''जखन अपने एत्ते दरमाहा अछि तखन शौखक कर्जा किअए लेब। अखन जे रुपैया जमा छल से सठि गेल। मुदा अगिला सोमे कऽ तँ दस हजार रुपैआ भेटत। जेँइ एत्ते दिन बीतल तैँइ आठ दिन आरो बीतह। मुदा बिना उपारजनक साधन बनौने तँ आमदनी नहि बढ़त।''

भोरे सुमित्रा उठि दलानपर आबि बाढ़नि लऽ दरवज्जा बाहरैक ओरियान करितै रहति कि अछेलालो आएल। अछेलालक चुनौटीमे चून नहि, तँ चून लिअए आएल। आन दिन अछेलालकेँ निन्न टूटिते ओछाइन परसँ उठि, लोटामे रौतुके राखल पानि लऽ दू बेर कुड़ड़ा करैत आ जे पानि बचैत ओ पीबि तमाकुल खा पराती गाबए लगैत। मुदा आइ चूनक दुआरे पराती नहि गाबि चून लेल आएल। आंगनसँ चून आनि कऽ देलखिन। चून लऽ अछेलाल तमाकुल चुनबए लगल। तेहि बीच दुनू गोटे गप्प-सप्प सेहो करए लगल। दुनू गोटेक गप्प-सप्पकेँ अकानि बचेलाल सेहो आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। सुमित्रा अछेलालकेँ कहति रहथिन- ''बौआ, जहिया अपन घर भरल-पूरल छल सासु-ससुर, पति जीवैत छलाह तखन हम जुआन छलौं। गामक चुनल गीतिहारि। गाममे जत्तए कतौ कोनो काज होय तँ हमरा हकार अबिते छल। हमहूँ राति-दिन किछु बुझबे ने करियै। अपन अंगना-घरक काज सम्हारि हकार पूरए जाइ छलौं।

हमर नैहर पचही परगनामे पड़ैए। ओहिठामक गीति-नाद, बोली-वाणी, चालि-ढालि अल्लापुर परगनासँ नीक अछि। मुदा अपना गाममे बेसी अल्लेपुरक सुआसिन बसैए। गोटि-पङरा भौरो परगनाक अछि। पचही आ भौरक तँ बहुत किछु मिलबो-जुलबो करै छै मुदा अल्लापुरक दोसरे रंगक छैक। हँ, एकटा बात जरुर छै जे अल्लापुरक सुआसिन बेसी कमासुत होइ छै। मरदे जकाँ साड़ी कऽ फाँड़ बान्हि लेत आ भरि-भरि दिन खेते-पथारमे काज करैत रहत। रौद-बसात किछु बुझवे ने करत। एक बेरक गप्प कहै छी। हमरा घरे लग पंडित काकाक घर सेहो अछि। पंडित काका इलाकाक सभ संस्कृत विद्यालयमे पढ़ौनी केने छलाह। ओ तत्ते नियम-निष्ठाबला छेलखिन जे कोनो विद्यालयमे शिक्षक सभसँ पटबे ने करनि। जाबे क्यो टोकनि नहि ताबे ओहो ककरो नहि टोकितिहीन। ने बिना काजे ककरो ऐठाम जाइ छेलखिन। ओना हुनका कखनो निचेनसँ बैसलि नहि देखिएनि। सदिखन कोनो ने कोनो काजमे लगले रहैत छलाह। एक दिन पछबरिया इलाकाक एकटा पंडित ऐलखिन। ओहो बड़ भारी पंडित। भिनसरे दुनू गोटे पूजा-पाठ कए कऽ दू-दू छिमड़ि केरा खेलनि आ शास्त्रार्थ करै लऽ वैसि गेलाह। पंडित काका की कहथिन आ ओ पंडित की कहनि से आन क्यो बुझवे ने करैत। गप्प-सप्पमे दुनू अपस्याँत। बड़ी कालक बाद पंडित काका तीनि बेरि थुक माटिपर फेकि देलखिन। ओहि पछबरिया पंडितक मुँह कनै-कनै सन भऽ गेलनि। दुपहरमे खूब नीक जकाँ खुआ-पीया, वेरु पहर धोती-कुरता, चद्दरि, पाग दऽ अरिआति कऽ विदा केलखिन।''

हँ कहै छलौं जे सौँसे गाम हकार पूरै छलौं। जखन पति अपने मरि गेला तहियासँ हकार पूरब छोड़ि देलौं। अखुनका आ पहिलुका लोककेँ मिलबै छी तँ अकास-पतालक अंतर बुझि पड़ैए। हमरे दूटा बच्चा भेलि, ने एकोटा सूइयाँ लेलौं आ ने एकोटा गोटी खेलौं, तइयो कोनो रोग कहाँ दबलक। पहिल सन्तानक बेरिमे, सासु हाट परसँ सठौरा कीनि अनलनि, सएह खेलौं। अखन देखै छी जे हाट-बजार घूमै बेरिमे, सिनेमा-सरकस देखै बेरिमे, मेला-ठेला घूमै बेरिमे निरोग छी मुदा काजक बेरिमे जत्ते दुनियाँमे रोग छै से सभटा हमरे दबने अछि। जाइ जाउ आब काजोक बेरि भऽ गेल।''

चाह पीवि, सभ दिन बचेलाल टोलक बच्चा सभकेँ पढ़बए लगल। जाबे इस्कूल जेबाक समए होय ताबे पढ़वैत। ककरोसँ एक्को पाइ नहि लैत। टोलक सभ धिया-पूता पढ़ैमे सुढ़िया गेल। बचेलालक अपनो प्रतिष्ठा बढ़ए लागल। बचेलालक काज देखि सुमित्रा मने-मन खुश होइत।

(११)

शिवकुमार आ रामनाथ फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलक। बिरड़ो जेकाँ रिजल्टक प्रचार भऽ गेल मुदा ने स्कूलमे रिजल्ट आएल आ ने अपने आँखिये अखवारमे देखलक। शिवकुमार बचेलालक बेटा आ रामनाथ अछेलालक। रिजल्टक चर्चा तँ सभक कानमे पहुँच गेल मुदा बिना अपने देखने सोलहन्नी बिसवास कोना कएल जाय। शिवकुमारकेँ सोर पाड़ि बचेलाल कहलक- "बौआ! आन दिन तँ अखवारबला आठे बजे अखबार दऽ जाइ छल मुदा आइ ऐबे ने कएल। तँ झंझारपुर जा कऽ अखबार कीनने आबह।"

शिवकुमार आ रामनाथ, दुनू गोटे साइकिलसँ झंझारपुर अखवार आनए विदा भेल। बचेलाल मने-मन तारतम्य करए लगल जे बिना रिजल्ट निकलने, लोक कोना बुझलक? जे अखवारबला सभ दिन अखवार बेचए अबैत छल ओकर अखबार रस्तेमे घेरि विद्यार्थियो आ गारजनो कीनि नेने हएत। तँ भरिसक अखबार नइ बँचलै जे अपन गहिकीकेँ दइत। स्कूलमे सेहो विद्यार्थी सभ रिजल्ट देखए लऽ पहुँचए लगल। मुदा हेडमास्टर अखबारसँ अपन रजिष्टरमे लाल रंगक पेनसँ, प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी आ तृतीय श्रेणीक चेन्ह लगा, बहरामे रिजल्टक कटिंगकेँ टाँगि देलखिन। अछेलाल मने-मन खुश होइत। खुशीक कारण रहए जे एकटा मुरुखक बेटा, जे सभ तरहेँ विपन्नताक जिनगी जीबैत, पास केलक। सुमित्राक मन एहि दुआरे खुशी जे जकरा जनमेसँ लऽ कऽ अखन धरि सेवा केलहुँ ओ एकटा सीढ़ी पार केलक। रुमा तँ खुलि कऽ नहि बजैति। मुदा मनमे अपन बेटा शिवकुमारकेँ मैट्रिक पास केने ओते खुशी नहि होइत जत्ते रामनाथक पास केने दुख।

रामनाथ आ शिवकुमार बुक स्टालपर गेल। जे अखबारक होलसेलर। ओहिठाम सभ अखवार बिका गेल छल। दुनू गोटे अचताइत-पचताइत बाजार गेल। बाजारमे एकटा दोकानमे अखवार देखलक। शिवकुमार ससरि कऽ दोकानदार लग जा कहलक- "अहाँ तँ अखवार पढ़ि लेलहुँ। हमरा एकर काज अछि। एहिमे मैट्रिकक रिजल्ट निकलल छै तँ हमरा दऽ दिअ। जे दाम अखवारक छैक ओ हम दऽ दइ छी।"

दोकानदार राजी भऽ गेल। मुदा आँखि लाल करैत बेटा ओहि दोकानदारकेँ कहलकै- "दू रुपैआमे अखबार नइ दिऔ। आइ एकर दाम पचास रुपैआ हेतै।"

बेटाक बात सुनि बाप कहलकै- "बौआ, कमाइ लऽ तँ एत्तेटा दोकान छहँ, तखन ऐहेन काज किऐक करबह?"

तरंगि कऽ बेटा कहलकै- "बाबू जँ अहाँ ऐहेन दयालु छी तँ लौका-तुम्मा लऽ कऽ वृन्दावन चलि जाउ।"

लौका-तुम्मा सुनि पिताकेँ नरसिंह तेज भऽ गेल। बाघ जेकाँ झपटैत बेटाकेँ कहलक- ''जिनगी भरिक कमाइक ई दोकान छी। एहि चारि कोसीमे हमरा सभ इमानदार बनियाँ बुझैए, तकरा हम माटिमे मिला देव।'' गद्दी परसँ अखबार उठा, शिवकुमारक हाथमे दैत पुनः बाजल- ''बच्चा लऽ जाउ। एक्को पाइ दाम नइ लेब।''

अखबार लऽ दुनू गोटे शिवकुमारो आ रामनाथो अपन रिजल्ट देखलक। रिजल्ट देखि दुनूक हृदयमे खुशीक हिलकोर उठए लगलै। साइकिल पकड़ि विदा भेल। रास्तामे होय जे हवाइ जहाज जेकाँ उड़ि कऽ घर पहुँची। दुइयेटा विद्यार्थीकेँ प्रथम श्रेणी भेल छलै। एकटा शिक्षक अखबार नेने बचेलाल ऐठाम आबि दुनू गोटेकेँ कहै लऽ एलखिन। ओहि शिक्षकक अपनत्व देखि बचेलालकेँ मनमे भेल जे अखनो नीक लोकक कमी नहि अछि। मास्टर सहाएब जलखै कऽ चाह पीविते रहति कि दुनू विद्यार्थी आएल। दुनू गोटे गुरुदेवकेँ प्रणाम कऽ असिरवाद मंगलकनि।''

सुमित्राक मन गद-गद। बचेलाल लग आबि कहलखिन- ''बौआ मास्टरो साहैब छथिये। जते बच्चाकेँ घरपर पढ़बै छह सभकेँ नोत दऽ दहक। तोहर बेटा, मुदा हमरो तँ पोते छी, एहि खुशनामामे भोज कए कऽ सभकेँ खुआवह।''

बीस वर्ख पहिने, ग्रामीणक सहयोगसँ एकटा हाई स्कूल खुजल अछि। तीनि-चारि साल धरि मात्र दुइये साए विद्यार्थी इस्कूलमे। शिक्षको सभ पचासे रुपैआ दरमाहापर शिक्षण करैत। देहातमे पढ़लो-लिखलक संख्या कम्मे। मुदा सभ शिक्षकक मनमे ई धारणा बनल जे इलाकामे शिक्षाक प्रसार हुअए। तँ किछु कष्ट उठेनहुँ जँ स्कूल चलै तँ किऐक ने चलत। सभ शिक्षक अपन-अपन घरेसँ अबैत-जाइत। लगमे स्कूल भेने शिवकुमारो आ रामनाथो नाओ लिखेलक। स्कूलक पढ़ाइयो नीक होइत। अठमेसँ शिवकुमार फस्ट करैत आ रामनाथ सेकेण्ड। जे मैट्रिकक टेस्ट परीछा धरि करैत रहल। शिवकुमार साइंस रखने आ रामनाथ आर्ट। नवमा धरि बचेलाल दुनू गोटेकेँ, घरोपर खुब मेहनत कराबथि। पढ़ैक रास्ता दुनू सीखि लेलक। हिसावमे जेहने तेज शिबकुमार तेहने तेज भूगोलमे रामनाथ। वार्षिक परीक्षामे सौ कऽ सौ अंक शिबकुमार हिसावमे अनैत तहिना दू-चारि नम्वर कम रामनाथ भूगोलमे। सालमे एक्को दिन इस्कूल दुनू गोटे नागा नइ करैत। दुनू गोटे स्कूल जाइ काल पँच-पँचटा अंग्रेजी शब्द, अपन तरहत्थीमे लिखि घोकैत जाइत। इस्कूल पहुँचैत-पहुँचैत दुनू, दुनूकेँ सुना दैत। इस्कूल लग पहुँच दुनू गोटे अपन तरहत्थी कलपर घो लैत। फेरि छुट्टी भेलापर पँच-पँचटा शब्द लिखि, घरपर अबैत-अबैत याद कऽ लैत। जाड़क मासमे छोट दिन आ जाड़ भेने जँ विद्यार्थीकेँ किछु बिलंबो भऽ जाइ तँ हेडमास्टर, समए बुझि, हाजरी बनबा देथिन। हुनका मनमे यएह रहनि जे कने बिलंबोसँ तँ विद्यार्थी इस्कूल अबैए। तँ विद्यार्थीक बीच काफी प्रतिष्ठा रहनि। शिक्षक सभकेँ ओ कहथिन- जे पढ़वेसँ बेसी छात्रमे पढ़ैक जिज्ञासा पैदा करु। जहि छात्रमे पढ़ैक जिज्ञासा जगि जाइत ओ निश्चित पढ़वे करत। जहिसँ हमरो-अहाँकेँ पढ़बैमे सहूलियत हएत। जहि

विद्यार्थीकेँ किताब नइ रहै वा देहपर मैल-कुचैल कपड़ा देखथिन, ओकरा ऑफिसमे बजा परिवारक दशा पूछि। मदति सेहो करथिन। ओना हेडमास्टर सुखी सम्पन्न परिवारक रहथि। मुदा जहिना गरीबो मनुक्खक देहमे धनिकक बुद्धि धोंसिया जाइत तहिना हुनका सुभ्यस्त रहनौ गरीबक बुद्धि देहमे घोसिआइल।

स्कूलमे रिजल्टक कापी आ मार्कसीट आबि गेल। सभ विद्यार्थी अपन-अपन मार्क-सीट आनए इस्कूल जाए लगल। शिवकुमारो आ रामनाथो गेल। दुनू गोटेक नम्बर, एक टकसँ हेडमास्टर देखि, दुनू गोटेकेँ पूछलखिन- "बौआ, आगू नाओ लिखेबह की ने? अगर जँ कोनो दिक्कत हुअ तँ कहिहह। अखन मार्कसीट नेने जा काल्हि दुनू-गोटे अपन-अपन पिताकेँ बजेने अबिहनु।"

दुनू गोटे अपन-अपन नम्बर लऽ चलि गेल।

हेडमास्टर दिनेश बावूक योगदान, स्कूल बनबैमे, अग्रगण्य छलनि। ओ अपनाकेँ सिर्फ शिक्षकेँ नहि बुझथि। आजुक शिक्षक जेकाँ सिर्फ दरमहेपर गिद्ध-दृष्टि नहि राखथि। ओ सोचथि जे जहिना अपन बेटा-बेटी तहिना छात्र-छात्रा। माए-बाप बेटा-बेटीकेँ जन्म दैत, पालति-पोसैत मुदा शिक्षक -गुरु- ओ ब्रह्मस्वरुप कुम्हार छथि जे मनुष्यकेँ चाकपर गढ़ैत। अपन परिवारोसँ दिनेश बावू बेहद खुशी रहैत छथि। दिनेशबावूक पिता लोअर प्राइमरी इस्कूलक शिक्षक छलथिन। हुनकेँ पढ़ाओल आ रास्ता देखओल दिनेशबावू। जहिसँ बी.ए. पास कऽ हाइ स्कलमे शिक्षक बनलाह। जखन बेटा दिनेशबाबूक एम.ए. पास कऽ कओलेजमे प्राध्यापक भेलखिन, तखन दुनू परानीक हृदय ओहन सरोवर जेकाँ बनि गेलनि, जहिमे हजरो कमल फुलाइत। रंग-विरंगक चिड़ै-चुनमुनी विहार करैत। जबसँ दिनेशबावूक बेटा सुनील नोकरी शुरु केलनि तबसँ ओ दिनेशबावू अपन दरमाहा गरीब-गुरबा विद्यार्थीकेँ देमए लगलखिन।

बचेलाल आ अछेलाल, दुनू गोटे दिनेशबावूसँ भेटि करए विदा भेला। दुनू गोटे शिवकुमारो आ रामनाथोकेँ संग कऽ लेलक। दिनेशबावू सेहो दुनू गोटेक प्रतीक्षेमे रहथि। दुनू गोटे दिनेशबावूकेँ प्रणाम कऽ आफिसमे बैसल। बचेलाल दिनेशबावूकेँ पूछलखिन- "शिवकुमार आ रामनाथक माध्यमसँ अपने बजाओल।"

दिनेशबावू- "हँ। बजबैक कारण अछि जे दुनू विद्यार्थी पढ़ैबला अछि तेँ दुनू गोटेक नाम बढ़ियाँ कओलेजमे लिखा दियौ।"

बचेलाल- "विचार अपनो अछि। इस्कूलक सभ कागजात भेटलापर जत्ते जल्दी भऽ सकत ओते जल्दी नाओ लिखा देबै।"

दिनेश- "इस्कूलक सभ कागजात आइये दऽ दइ छी। जँ सम्हरि जाए तँ काल्हिये नाम लिखा दिऔ। नइ तँ परसु।"

बचेलाल- "हमहूँ तँ प्राइमरी इस्कूलमे काज करै छी। काल्हि जा कऽ परसुका छुट्टी लऽ लेब आ परसु जा कऽ नाम लिखा आएब।"

दिनेशबावू किरानीकेँ बजा सभ काज कऽ देलखिन। दुनू गोटे बचेलालो आ अछेलालो विदा भऽ गेल।

दोसर दिन बचेलाल इस्कूल जा छुट्टीक आवेदन दऽ देल। साँझू पहर सुमित्राकेँ कहलक- ''माए, काल्हि शिवकुमारो आ रामनाथोक नाओ लिखवै लऽ मधुवनी जाएव।''

काओलेजमे पोताक नाओ लिखाएब सुनि सुमित्रा कहए लगलखिन- ''बच्चा, शिवकुमार तोहर बेटा छिअह मुदा पोता तँ हमरो छी। रामनाथोकेँ जनमेसँ सेवा करैत एलौं तँ ओकरो मदति करब उचित भऽ जाइ छह। बेचारा अछेलाल मुरुख अछि मुदा समांग जेकाँ तँ ओहो अछि। जब तूँ मैट्रिक पास केलह तब हमरो मनमे छल जे तोरा कओलेजमे नाम लिखा दिअ। मुदा घरक जरजर हालत देखि मनक बात मनेमे रहि गेल। मुदा तइले बहुत दुखो ने भेल। किऐक तँ दुख तखन होइत जखन पिता हाइ स्कूल धरि पढ़ने रहितथुन्ह। हम अबला रहितौ बहुत केलियह। मुदा आइ तोरा लऽ अनिवार्य भऽ जाइ छह जे कमसँ कम बी.ए. तक बेटाकेँ पढ़ा दहक। ओना रामनाथ लऽ ओ भार नहि छह मुदा ओकरो तँ बेटे बनौने छी। काल्हि जखन मधुवनी जेवह तँ अछेलालोकेँ संग कऽ लिहह। किऐक तँ ऐहन-ऐहन काज लोककेँ जिनगी भरि मन रहै छै। सिर्फ अछेलालेटा केँ नहि रामनाथोकेँ मन रहतै।''

निरमलीसँ जयनगर जाइवाली गाड़ी पाँचे बजे निरमलीसँ खुजैत अछि। तँ अपना स्टेशन तमुरिया साढ़े पाँच तक पहुँच जेवाक अछि। ई बात बचेलाल मने-मन सोचैत। साढ़े नअ बजे मधुवनी गाड़ी पहुँच जाइत अछि। दस बजे कौलेजक ऑफिसो खुजैत हएत। तँ दस बजे ऑफिस पहुँच शुरुहेमे अपन काज केलासँ साढ़े तीन बजे धरि स्टेशन चलि आएब। जहिसँ वएह गाड़ी जयनगर-निरमली पकड़ि सबेर-सकाल घरपर चलि आएब। जेवा कालमे गाड़ीसँ उतड़ि टीशने कातक होटलमे सभ खा लेब आ रिक्शा पकड़ि चलि जाएब। ई बात बचेलाल अछेलालो आ दुनू बच्चोकेँ कहि देलक।

साढ़े चारिये बजे बचेलाल उठि तीनू गोटेकेँ उठा देलक। पर-पखानासँ आबि बचेलाल स्नान कऽ लेलक। अछेलालो, शिवकुमारो आ रामनाथो नहा लेलक। पौने पाँच बजे गाड़ी पकड़ै लऽ चारु गोटे विदा भेल। छअ बजे गाड़ी तमुरिया पहुँच गेल।

चारु गोटेक टिकट शिवकुमार कटा नेने छल। चारु गोटे गाड़ीमे बैसि गेल। बचेलाल छोड़ि क्यो ने मधुबनी देखने। तँ तीनूक मनमे रंग-विरंगक बात अबैत। बचेलाल अपन काजक हिसाव जोड़ैत जे ई काज पहिने आ ई काज पाछू करब। अछेलाल मने-मन सोचैत जे गाममे झगड़ा-झंझट कऽ मधुबनियेमे लोक केश-फौदारी लड़ैत अछि। सेहो कोट-कचहरी देखवै, जहलो देखबै जे केहेन होइ छै। फेरि कहिया जाएब कहिया नै, तँ जब जाइये रहल छी तँ सभ देखने आएब।

साढ़े नअ बजे गाड़ी मधुबनी पहुँच गेल। गाड़ीसँ उतड़ि चारु गोटे विदा भेल। टीशने कातक होटलमे चारु गोटे खेलक। खेलाक बाद रिक्शा पकड़ि आर.के. कौलेज विदा भेल।

ऑफिस जा अपन सभ कागजात किरानीकेँ देलक। सभ कागजात देखि किरानी लगले नाम लिखि रसीद दऽ देलकनि। बचेलाल रुपैआ निकालि दऽ देलखिन। कितावक सूची दैत कहलकनि जे पनरह तारीखसँ पढ़ौनी चलत। एगारहे बजे सभ कालेजसँ विदा भेल। बाजार आवि किताबक दोकान गेल। दोकान जा कितावक सूची दोकानदारकेँ दऽ सभ किताव दै लऽ कहलखिन। दोकानदार बचेलालकेँ दोकानक भीतरे बैसाए एक-एक विषयक तीनि-तीनि, चारि-चारि लेखकक किताब निकालि आगूमे देमए लगलनि। मने-मन बचेलाल सोचैत जे ओते तँ समए नहि अछि जे पढ़ि-पढ़ि कऽ किताब चुनव। मुदा किताबक संस्करण देखि-देखि किताव छँटियबए लगल। जइ विषयक दूटा किताव पसिन होइन ओ दुनू लऽ लथि। कोर्सक किताव कीनि एकटा हिन्दी शव्दकोष आ एकटा अंग्रजी शब्दकोष सेहो कीनि लेलनि। सभ विषयक लेल कॉपि सेहो कीनलनि। बचेलालक विचार देखि दोकानदार मने-मन खुशी होइत। ओ नोकरकेँ चाह-पान अनै लऽ पठौलक। चाह पीवैत दोकानदार बचेलालकेँ पूछलकनि- "अपनेक की जीविका अछि?"

मने-मन बचेलाल सोचए लगल जे हमरा जीविकासँ दोकानदारकेँ की मतलब छैक। मुदा जब पूछलक तँ नहियो कहब नीक नहि। मुस्कुराइत बचेलाल कहलक- "लोअर प्राइमरी स्कूलमे शिक्षक छी।"

शिक्षकक नाम सुनि दोकानदार एकटा "अष्टावक्र गीता" वहिना दैत कहलकनि- "जहिया मधुबनी आबी तहिया हमरो भेटि जरुर दी।" "वड़बढ़ियाँ" कहि बचेलाल कितावक दाम दऽ विदा भेल। कितावक एकटा थाक शिवकुमार आ एकटा रामनाथ लेलक। अखबारमे चौपेत कऽ बान्हल गीता अपने बचेलाल लेलक। रास्तामे बचेलाल सोचलक जे जखन आएले छी आ अढ़ाइ-तीनि घंटा समयो अछि, तखन डेरो किऐक ने ठीक कइये ली। अखन हमहूँ छी। जँ डेरा ठीक भेल रहत तँ फेरि नहि आबए पड़त।

नबका-नबका, मोट-मोट किताब देखि शिवकुमार सोचैत जे सभ विषयक कॉपियो भइये गेल, खूब मेहनतसँ पढ़ब। दश-दशटा अंग्रेजी आ हिन्दी शब्द सभ दिन रटब। ओना सभ विषयक अपन-अपन शब्द होइत छैक ओहो याद करए पड़त। जाबे कॉलेज खुजत ताबे सएह सभ शब्द सीखि लेब जहिसँ क्लासमे बुझैमे परेशानी नइ हएत। सभ विषय पढ़ै लऽ समए बाँटि लेब नइ तँ एकभग्गू पढ़व भऽ जाएत। महत्त्व तँ सभ विषयक छैक आ पासो तँ सभमे करए पड़त, तखने ने पासो हएब। नइ तँ कोनो विषयमे खूब नम्बर आओत आ कोनोमे फेल भऽ जाएब। तँ पहिने सभ विषयक तैयारी ओहि रुपे करए पड़त जे पास नम्बर सभ विषयमे आबए। तखन ने अधिक

नम्वर आ नीक डिवीजनक तैयारी करब। रामनाथ व्याकरणक किताब खोलि कऽ दोकानेपर देखने छल। जहिमे वएह सभ देखने रहै जे हाइयो स्कूलमे पढ़ने छल, थोड़े विस्तारसँ अछि, तैँ कम्मे नव चीज पढ़ै पड़त। तैँ मने-मन खुशी होइत।

चारु गोटे आगू-पाछू स्टेशन दिशि अबैत छल कि एक गोटे आगूमे साइकिल रोकि बचेलालकेँ प्रणाम केलकनि। मूडी निच्चाँ केने बचेलाल चलैत रहति। प्रणाम सुनि मुँह उठा कऽ दुनू हाथ जोड़ि प्रणामक जबाव देलखिन। प्रणामक जबाव तँ दऽ देलखिन मुदा चिन्हलखिन नहि। तैँ ओहि आदमी दिशि तकैत जना किछु मन पाड़ए लगलाह। ओ आदमी बुझि गेल जे भरिसक नहि चिन्हलनि। धाँय दऽ ओ कहलकनि- ''मास्सैब, हम रमेसरा छी। अइ ठाम कोओपरेटिभ बैंकमे नोकरी करै छी।''

रमेसराक बात सुनिते बचेलालकेँ धक दे मन पड़लनि जे ई तँ पढ़ाओल विद्यार्थी छी। मुस्कुराइत कहलकखिन - ''बौआ, तोहर तँ चेहरा देखि चिन्हवे ने केलियह। एक चेराक देह छेलह जे अखन हाथी जेकाँ भऽ गेलह। परिवारो एतै रखै छह?''

विहुँसति रमेसरा कहलकनि- ''अप्पन घर बना नेने छी। आइ एतै पहुँनाइ करए पड़त। हमर सौभाग्य जे अहाँ एतऽ अएल छी। हमहूँ गाम कम्मे जाइ छी। तोहूमे धड़फड़ाएल गेलौं आ धड़फड़ाइले ऐलौं। तैँ भेंटो-घाँट करए नइ जा होइए।''

बचेलाल- ''बाल-बच्चा कएकटा छह?''

रमेसरा- ''दूटा अछि। दू परानी अपने छी। चारि गोड़ेक परिवार अछि। अपने किम्हर-किम्हर आइल छलिऐक?''

''दुनू बच्चाकेँ कओलेजमे नाओ लिखवै लऽ आइल छलौं। आब रहै लऽ डेराक भाँज लगबैक अछि।'' जँ नजरिपर कतौ एकांत डेरा बुझल हुअअ तँ ठीक कऽ दाए।''

जखन हम ऐठाम रहै छी तखन अपनेकेँ डेरा नइ हएत। पहिने चाह पीबि लेल जाउ। तखन आगूक गप्प-सप्प हेतइ।''

एते कहि रमेसरा एकटा होटलमे सभक संगे गेल। सभकेँ जलखै करा करा चाह पिऔलकनि। पान खुऔलकनि। पाँचो गोटे रेलवे स्टेशन दिशि चलला। मुसाफिरखाना आबि रमेसराकेँ बचेलाल कहलखिन- ''अखन बैंकक समए अछि, तोँ जाह?''

''मास्सैव, आब बैंक नहियो जाएब तइयो ने किछु हएत। बैंके काजसँ एक गोड़े ऐठाम नोटिश दइ लए गेल छलौं। तैँ अखन बाहरेक काजमे छी। काल्हिये जबाव देबै।''

''अखन गाड़ी अबैमे देरी अछि। ताबे डेराक भाँज लगा दाए। अच्छा एकटा बात कहअ जे होस्टल नीक हएत कि लाउज?''

मास्सैब, ने होस्टल नीक हएत आ ने लाउज। मधुबनीक हवा ऐहन बिगड़ल अछि जे विद्यार्थी सभ पढ़नाइ छोड़ि-छोड़ि भरि दिन जातिवादीक गुट बना-बना झंझटे-फसादमे रहैए। पढ़ैबला विद्यार्थी अपन-अपन अंगीतक ऐठाम रहि-रहि पढ़ैत अछि। हमरो डेरामे चारिटा कोठरी अछि। तीनिये कोठरीसँ अपन काज चलि जाइए। एकटा कोठरी पड़ले रहैए।"

"भाड़ा कोना की लेबहक?"

मुस्कुराइत रमेसरा कहलकनि- "अपनेसँ भाड़ा नइ लेब। अहींक परसादे हम नोकरी करै छी। जहिना अहाँक विद्यार्थी तहिना तँ हमरो भाए भेला की ने?"

"दश-पाँच दिनक बात रहैत तँ ठीक छल मुदा से तँ नइ अछि।"

"भाड़ाक संबंधमे हम किछु ने कहब। एत्ते जरुर कहब जे दुनू बच्चाकेँ रहै लए डेरा जरुर देब।"

असमंजसमे पड़ल बचेलाल अछेलालकेँ कहलक- "काका, अहीं भाड़ा कहिओ?"

धड़फड़ा कऽ अछेलाल पचास रुपैआ महिना कहि देलक। दुनू गोटे सहमत भऽ गेला। सहमत होइत बचेलाल रमेसराकेँ पूछलखिन- "खाइ-पीवैक जोगार कोना हेतइ?"

"चाउर-दालि गामसँ पठा देवइ। अपनो परिवारमे खेनाइ बनिते अछि इहो दुनू गोटे खेता।"

"चाउर-दाइलिक अतिरिक्तो तँ नोन-तेल, तरकारीमे खरच हएत। तइ लए सए रुपैया महीना सेहो देबह।"

"बड़बढ़ियाँ।"

सभ जोगार लागि गेल। बचेलाल अछेलालकेँ कहलखिन- "काका अहाँ सभ जा कऽ डेरा देखि लियौ। हम एत्तै आराम करै छी।"

तीनू गोटेकेँ संग केने रमेसरा विदा भेल। स्टेशनसँ पूबारि भाग चकदहमे रमेसराक घर। एकांत जगह। सभ क्यो डेरा देखि लगले घुरि कऽ आबि गेल। गाड़ीक टिकट कटौलक। थोड़े कालक बाद गाड़ी एलै। चारु गोटे गोसाँइ उगले अपना स्टेशन पहुँच गेल।

स्टेशनसँ गाम अबैक रास्तामे अछेलाल बचेलालकेँ कहलक- "बौआ! औझुका दिन बड़ सगुनिया छल।"

बचेलाल- "से की?"

"एक्के दिनमे कत्ते काज भेल। हमरा तँ होइ छल जे काए दिन लगत काए दिन ने। जाइये कालमे हमरा होइ छल जे धोती, चद्दरि लऽ लइ ले कही, मुदा नइ कहलौं।"

"कक्का, काज करैक ढंग होइ छै। ओना संयोगो होइ छै। जेकरा काज करैक ढंग होइ छै ओ कम्मे समएमे बहुत काज कऽ लइए। आ जकरा ढंग नहि होइ छै ओकरा कम्मो काजमे बेसी समए लगै छै। संयोग संयोग अइ दुआरे कहलौं जे जना

कओलेज गेलौं आ किरानिये नहि रहैत। चाहे किरानियो रहैत आ कोनो कागजे नै रहितै। चाहे जाइ कालमे गाड़िये छूटि जाइत। यएह सभ कुसंयोग छियै।''

शिवकुमारक आ रामनाथक मन चटपट करैत जे कखन घरपर पहुँच किताब देखब। रामनाथ अखबारक विशेषांक सभ गत्ता लगबै लऽ रखने छल। किऐक तँ बिना गत्ता लगौल किताबक उपरका पन्ना गन्दो भऽ जाइ छै आ ओदरबोक डर रहै छै। स्टेशनसँ घरक दूरी चारिये किलोमीटर। तँ अबैमे वेसी देरियो ने लागल। तहूमे घरमुँहा। घरपर अबिते शिबकुमार हाथ-पाएर धोय, अंगा निकालि दलानक चैकीपर बैसि दादी सुमित्राकेँ सोर पाड़लक। सुमित्राकेँ अबिते किताब सभ देखबए लगल। किताब देखि सुमित्रा कहलक-'' बौआ मन लगा कऽ पढ़ियह। औझुका दिन तोरा जिनगीक एकटा चैबट्टीपर पहुँचा देलकह। एहिठामसँ जिनगीक आगूक रास्ता खुलतह। अखन ने तोरा कोनो घरक भार छह आ ने आन कोनो। मात्र पढ़ैक छह। अखन जत्ते मेहनत कऽ कऽ पढ़वह ओत्ते अपने गुण करतह। मैट्रिक धरि बापो पढ़ल छथुन, तँ ओतए धरि सरस्वतीक वास घरमे भऽ गेल छह। आब आगू कोना रहथुन ई तँ तोरेपर छह। भगवान ककरो अधला थोड़े करै छथिन, ओ तँ सभकेँ नीके करै छथिन। तखन तोरे अधला किअए करथुन। रामनाथोकेँ अपन सहोदरे भाए जेकाँ वुझिहक।''

शिवकुमारकेँ सुमित्रा बुझबिते छलि कि अछेलालो आएल। अबिते अछेलाल सुमित्राकेँ कहए लगलनि- ''भौजी! एत्ते उमेर बीति गेल आइ मधमन्नी देखलौं। ऐह बाप रे बड़ीटा बजार छै। बड़का-बड़का दोकानो सभ छै। जाइ कालमे तँ नीक-नाहाँति नइ देखलियै किअए तँ रिक्शापर चढ़ल रही। मुदा अबै कालमे देखलियै। बड़कीटा कौलेज छै। मारे मास्टर आ मारे चट्टिया देखलियै। बचेलाल दुनू गोड़ेकेँ नाम लिखबैत रहए आ हम घूमि-घूमि देखबे करी। बड़का-बड़का कोठा। एकटा घरमे मारे साइकिल देखलियै। ओते गनलो ने होइत। एक गोरे ओइ ठीन बैठल रहै ओ हमरा कहलक- ''भाय जी, तमाकुल खाइ छी।'' हमहूँ बुझलौं जे किअए ने तमाकुले लाथे किछु बुझिओ ली। हम कहलियै- ''हँ।'' ससरि कऽ ओकरा लग गेलौं। मुदा वेचाराकेँ एक्केटा कुरसी रहए, जइपर उ बैठल रहए। हम बगलेमे ईंटा-समटीक बनौल कम्मे खड़ा देवाल रहै ओहीपर बैसलौं। दुनू गोड़े गप्प-सप्प करै लगलौं। ओ कहलक जे अपना जिलाक सभ गामक विद्यार्थी अइ कौलेजमे पढ़ैए। ऐह कत्ते कहब भौजी, ओते की मनो अछि।''

(१२)

विकासपुर ऐला देवनकेँ साल लगि गेल। सालभरिक समयो नीक रहलै। ने बेसी बरखा भेल आ ने काम। जँ बेसी बरखा होइत तँ दहार होइत जँ नहि होइत तँ रौदी। ऐहेन समए गोटे-गोटे साल संयोगसँ होइत। किऐक तँ अखन धरिक जे समए होइत आइल अछि ओ एहिना होइत आइल अछि। गोटे साल बेसी वरखा भेल तँ गोटे साल जरुरतसँ कम। समए नीक भेने उपजो नीक भेलै तँ सभहक मन हरियर। चारिये मास-अखाढ़सँ लऽ कऽ आसिन धरि-सालक ताला-कुन्जी रखैत। मुदा आठ मास-कातिकसँ लऽ कऽ जेठ-धरिक कोनो मोजरे ने होइत। यएह, अपन मिथिला किसानक इतिहास रहल। सालो भरि देवन नसीवलाल काकासँ खेतीक लूरि सीखि-सीखि खेती करैत रहल। देवनकेँ नसीवलाल काका खेतीक लूरियो सीखबथि आ बीओ-बाइल दैत रहलखिन। नसीवलाल काकाक बताओल रास्ता आ मदतिसँ बुधनीक टूटल मन जागृत भऽ अगिला सालमेँ हँसी-खुशीसँ प्रवेश केलक।

एक मनसँ उपरे वुधनी टिकुला आमक आमील बनौने छलि जे बहरवैया व्यापारी हाथे पाँच रुपैये सेर बेचलक। दू सए रुपैया भेलै। जइसँ तीनू गोटेक वुधनी, देवन आ रमुआक, नुआ-वस्तर भऽ गेलै। दुनू आमोक गाछमे तत्ते आम भेलै जे मारि-धुसि कऽ खेबो केलक आ तीनि सए रुपैया कऽ बेचवो केलक। पनरह सेर अम्मटो बेचलक। पाँच सेर अपनो लऽ रखलक। जे कहियो काल खेबो करब आ मातृनवमी, जितिया लऽ रखबो करब। आमक आँठी फकुआ बनबै लऽ, दुनू घरक चारपर अदहा फेकलक आ अदहा गाछ जनमबै लऽ बाड़ीमे जमा केलक। जखन पिपहीमे हरियरी धेलकै कि सभकेँ उखाड़ि-उखाड़ी बाड़ीमे एक-एक हाथपर रोपि देलक। आठे-नअ मासमे डेढ़-दू हाथक गाछ सभ भऽ गेलै। यएह बैशाखमे माटियो सक्कत भऽ गेलै आ गाछ रोपैक समयो आबि गेलै। सभ गाछक थल्ला काटि-काटि देवनो आ बुधनियो उखाड़ि लेलक। धानक नारक खोंचड़ि बना सभ थल्लाकेँ बान्हि लेलक। मधुवनीक एकटा व्यापारी, जे नर्सरी खोलने, आबि पँच-पँच रुपैये छओ सौ गाछ कीनि लेलक। तीन हजार रुपैआ एक्के ठाम भऽ गेलै। अपनो लऽ देवन दसटा गाछ रोपि लेलक। मोटगर आमदनी देखि बुधनी देवनकेँ कहलक- ''बौआ, चरि कठवा खेतमे चापाकल गड़ा लाए। ओइ दिन तँ बजलो रहअ जे नसीवलाल काका कहलनि जे कम्मो खेत किऐक ने हुअए, मुदा पानिक जोगार भेने खेतक हस्तियो बढ़ि जाइ छै आ उपजो।''

घरक छप्परपर जे आमक आँठी फेकने रहए ओ सूखि गेल। कातिकमे सभ आँठीकेँ उतारि लेलक। दुनू गोटे-देवनो आ बुधनियो सभ आँठीकेँ सिलौटपर लोढ़हीसँ फोड़ि फकुआ -सुखल गुद्दा- एक दिशि रखलक आ बखलोइया दोसर दिस। बखलोइयाकेँ चुल्हिमे जरा लेलक आ फकुआकेँ जाँतमे पीसि चिक्कस बना लेलक।

ओहि चिक्कसकेँ रोटी पका-पका खाए। थोड़े फकुआकेँ देवन फोड़ि-फोड़ि सुपारी टूक जेकाँ बना मलसीमे रखि लेलक। जखन काज करए जाय तखन पान-सातटा टूक डॉड़मे खोंसि कऽ नेने जाए आ सुपारिये जेकाँ खाय।

बारहे सएमे कल गड़ा गेलै। अट्ठारह सए रुपैया बँचिये गेल। ओइ अट्ठारह सएमे सँ, चारि सए रुपैये कट्ठा चारि कट्ठा खेत अपने खेतक आड़िमे कीनि लेलक। डेढ़ सए रुपैया रजिष्ट्रीमे खरच भेलै। कल गड़ौलासँ आठ कट्ठा खेतमे धान पटबैक ओरियान भऽ गेलै अखाढ़मे बुधनी अपन पनरहो कट्ठा रोपने छलि। ओना खेतमे जोत-कोड़ तेनाहे सन भेल रहए मुदा तइयो बीआ आ समएक परसादे डेढ़ मनक कट्ठा धान भेलै। जँ खेतमे नीक-जँका जोत-कोड़ ढकिया-पथिया आ खाद पड़ल रहितै तँ दोबरोसँ बेसी धान होइतै मुदा से नइ भेलै। साढ़े बाइस मन धान देखि वुधनी मनमे जीवेक आशा जगि गेलि। जखन पति मरल रहए तखन बुधनीकेँ जीवैक आशा टूटि गेल रहए। अगर बेटा नहि रहितै तँ वेचारी या तँ जहर-माहूर खा मरि गेल रहैत वा चुमौन कऽ दोसर घर चलि गेल रहैत। मुदा खेतक उपजा आ अपन मेहनतक हूबासँ जीवैक आशा बना लेलक।

बरसात खतम भऽ गेल। धानो सभ आसिने-कातिकमे कटि गेल। देवनकेँ नसीवलाल काका कहि देने रहथिन जे कम खेतबलाकेँ तरकारी खेती जरुर करक चाहिऐ। एगारह कट्ठामे गहूमक खेती केलक आ चारि कट्ठामे तरकारीक खेती। एगारहो कट्ठामे गहूमक गाछ तँ नीक जनमलै मुदा पटबैक कोनो आशा रहबे ने करै। जइ बाधमे बुधनीक खेत ओइ बाधमे एक्केटा बोरिंग। जे बुधनीक खेतसँ बहुत हटि कऽ रहए। ने नाला ने पाइप। पटबै लऽ देवन औना-पौनाए कऽ रहि जाइत मुदा नहिये पटै। संयोगसँ पूसमे एकटा बरखा भेलै। बरखाक पानि पीविते गहूमक गाछ हू-हूआ कऽ उठलै। वियानो खूब केलकै। ओसो खूब गिरै। तँ हाल अधिक दिन धरि धेने रहलै। ओहि हालपर गहूम गम्हरा गेलै। गम्हरा देखि वुधनीकेँ मनमे आशा जगलै। पटौलहा गहूम जेकाँ तँ गहूम नहिये भेलै मुदा तइयो एक-तरहक भेलै। हरा-हरी पान-छ पसेरी कट्ठा गहूम भेलै। दुनू मिला कऽ साढ़े छह मन गहूम भेलै। फगुआक सात-आठ दिन बाद गहूम कटल हेन।

नसीवलाल काका देवनकेँ कहने रहथिन जे चैतक-अन्हारमे वाओग खेरही बढ़िया होइ छै। तँ चारिये दिनमे दुनू गोटे एगारहो कट्ठाकेँ तामि-कोड़ि खेरही वाओग कऽ लेलक। अदहा जेठमे खेरही पाकए लगलै। दुनू गोटे-वुधनियो आ देवनो-खेरही बीछि-बीछि तोड़ए लगल। अंतिम जेठ धरि सभ खेरही तैयार कऽ लेलक।

तरकारी खेती लऽ जे चारि कट्ठा रखने रहए, ओहि खेतक धान कटिते, तैयार करए लगल। अदहा कातिक अबैत-अबैत खेत तैयार कऽ लेलक। नसीवलाल काका देवनकेँ कहने रहथिन जे तरकारी उपजबैक लेल पानिक ओरियान करए पड़त। जकरा पोखैर छै ओ पोखैरसँ पटबैए। जकरा बोरिंग छै ओ बोरिंगसँ पटबैए। मुदा

जकरा ने पोखैर छै आ ने बोरिंग आ ने कल-चापाकल, ओ की करत? मुदा नसीवलाल काकाकेँ अपन जिनगीक अनुभव छलनि, ओ देवनकेँ कहने रहथिन जे चारि कट्ठामे जँ दूटा कूप खुनि ली, आ गर लगा कऽ खेती करी तँ, काज चलि सकैए। खेत तैयार कऽ देवन दूटा कूप खेतक दूटा कोनपर खुनि लेलक। कुपो खुनैमे देवनकेँ बेसी भीड़ नहिये भेल। दुइये दिनमे एकटा कूप खुनि लिअए। छबे-साते हाथ खुनलासँ पानि छूटि जाय। मुदा सभसँ कठिन बात ई अछि जे तरकारीमे तँ एक्के रंग पटौनियो नहि लगैत। किछु चीजक खेतीमे अधिक पटौनी लगैत आ किछुमे कम। बोरिंग जेकाँ तँ पानियो कूपमे नहिये होएत मुदा दुनू बेर-भिनसर आ साँझ-मिला कऽ दस धुर तक खेत जरुर पटि जाइत। दुनू कूपमे बाँसक खूँटा गाड़ि दूटा ढेकुल गाड़ि नेने छल। जइसँ पटबैक ओरियान कऽ नेने छल।

तरकारी खेती देवन दू हिसाबसँ केलक। पहिल अपन परिवारक लेल आ दोसर आमदनीक लेल। गिरहस्तक लेल कातिक धरम मास होइत किऐक तँ जत्ते रंगक अन्न, तरकारी आ फलक खेती लगौनाइ कातिकमे होइत, ओते सालक कोनो मासमे नहि होइत। मसल्लोक खेती करैक मुख्य मास कातिके छी। परिवारमे सभ कथूक- अन्न, तीमन तरकारी, फल, मसल्लाक जरुरत होइत। नोकरिया वा व्यापारी परिवार तँ पाइ कमाइत आ सभ चीज कीनि-बेसाहि कऽ काज चला लैत। मुदा किसान जँ नहि करत तँ ओ आओत कतएसँ। ई सोचि देवन सभ वस्तुक खेती करैक विचार केलक। जे किसान जते नमहर अछि ओ ओते बेसी करैत आ जे जत्ते छोट अछि ओ ओत्ते कम करैत। संगे जहि किसानकेँ बेसी खेते छै आ अपने नोकरी करैत अछि वा खेते छै मुदा ने पानिक जोगार छै आ ने होशगर अछि ओहो पछुऐबे करत। मुदा जे किसान लूरिगर आ हिम्मतगर अछि, जँ ओकरा अपना साधनक- खेत, बोरिंगक कमी छै, तइओ ओ आगू बढ़िये जाइत किऐक तँ अपना इलाकाक मिथिलाक सौभाग्य रहल जे पोखरिकेँ धर्मक वस्तु मानल गेल। आ ऐहेन-ऐहेन धरमात्मा सभ भऽ चुकल छथि जे गाहीक-गाही पोखरि खुनौने छथि। ऐहनो-ऐहनो गाम सभ अछि जहिमे अठारह गंड़ासँ उपरे पोखरि अछि। ततबे नहि, उत्तरसँ दछिन मुँहे दरजनो नदी बहि रहल अछि। ततवे नहि गामो सबहक जे बनावटि अछि जहिमे एक-चैथाइसँ लऽ कऽ तीन चैथाई धरि गहीर खेत चौर- अछि जे अपना पेटमे जेठ-अखाढ़ धरि पानि भरने रहैत अछि। तइ परसँ बोरिंग, नहरि वा आन-आन सेहो साधन मौजूद अछि। तहिना माइटिक आछि। दुनियाँमे जत्ते किस्मक नीक माटि अछि ओ मिथिलाक धरोहर थिकैक। इन्द्रो भगवान कहियो-काल खिसिआ जाइत छथिन, नइ तँ बेसी काल खुशिये रहैत छथिन। जीव-जन्तु आ चिड़ै-चुनमुनी एहि रुपे भरल अछि, जे सदिखन मनुक्खक सेवाक लेल, जे सतत् धरती माताक गोदमे रहि, रक्छा करैत अछि।

नसीवलाल काकाक विचारकेँ मनमे अरोपि देवन तरकारी खेतीमे जी-जानसँ पड़ि गेल। अपन परिवारक लेल एक कट्ठा तरकारी- साग ठढ़िया, पालक। मुरै, गाजर,

कोवी अल्लू, मटर अमाटर लगौने रहए, दस धुर मसल्ला-सेरसो, धनियाँ, लसुन, जमाइन, मेथी मिरचाइ आ पिऔज सेहो लगौने रहए। आमदनीक लेल- कोवी, टमाटर अल्लू लगौने। फागुन अबैत-अबैत बंधा कोबी आ टमाटर छोड़ि सभ कटि गेल। ओना टमाटर माघेसँ तोड़व शुरु केने रहए, मुदा अखनो फागुन मनसम्फे रहबे करए।

तरकारी आमदनीसँ बुधनी एकटा घर बनौलक। ओना बेचारिक मनमे रहै जे एकटा बड़द कीनव। मुदा घरक जरजर हालत देखि विचार बदलि लेलक।

बुधनी ऐठाम देवनकेँ ऐला बर्ख दिन भऽ गेल। बरखे दिनमे देवन बहुत किछु सीखबो केलक आ विकासेपुरमे किछु दिन आरो रहैक विचारो केलक। मुस्की दैत देवन बुधनीकेँ कहलक- "दीदी, बड़ सुन्दर गाम अछि। जइ गाममे नसीवलाल कक्का सन ज्ञानी आ खेतिहर लोक, सजन सन इमानदार आ बेर-बेगरतामे ठाढ़ रहनिहार लोक हुअए, ओ गाम किऐक ने नीक हएत।"

अपन दुखड़ा सुनवैत बुधनी देवनकेँ कहलक- "बच्चा! जहिया रमुआक बाप मरि गेलखिन तहिया हुअए जे हमहूँ हुनकेँ लागल मरि जाय। किऐक तँ ने कोनो लूरि छल आ ने क्यो कमा कऽ खुऔनिहार, तखन दुख काटब छोड़ि दोसर रस्ते की छल। खेते बेचि-बेचि कइअ दिन खइतौं। मुदा रमुआ कऽ देखि आँखिसँ नोरो खसै आ देहो भुटकि गेल। मनमे आएल जे अखन ने रमुआ बच्चा अछि मुदा पाँच बरखक बाद तँ नोकरी-चाकरी करए जोकर भइये जाएत। ताबे कुटौन-पिसौन कऽ कहुना-कहुना गुजर करब। जँ कतौ चलि जाएब वा जहर-माहूर खा मरि जाएब तखन तँ वंश, खानदान उपटि जाएत। मुदा तोरा पाबि आ नसीवलाल कक्काक देखओल रास्ता आ मदतिसँ आब बुझि पड़ैए जे हँसी-खुशीसँ जिनगी काटि लेब। पैछला सुख ने भगवान छीनि लेलनि मुदा अगिला सुख तँ भगवान देबे करताह।"

दोसर दिन भोरे देवन जलखै खा बुधनीकेँ कहलक- "दीदी! जत्ते बीआ-बाइल नसीवलाल काका देलनि, ओकर सवाइ लगा सभ चीज दऽ दिअ। हुनका सभ कुछ घुमा देवनि, जइसँ आगूओक रास्ता बनल रहत। नइ तँ मने-मन कहता जे देवन बेइमान अछि।"

देवनक बात सुनि बुधनी घरसँ धान, गहूम, खेरही निकालि ओसारपर रखलक। हिसाब जोड़ि-जोड़ि देवन तीनू चीज लऽ मोटा बान्हलक। तीमन-तरकारीक तँ बीआ नइ रहै तँ अंदाजेसँ सबहक दाम जोड़ि रुपैया लेलक। माथपर मोटा लऽ देवन नसीवलाल ऐठाम विदा भेल।

नसीवलाल, दरबज्जापर बैसि, बेटाकेँ बुझवैत रहथिन- "बौआ, मनुक्खक समरथाइ जे होइ छै, यएह जिनगीक सार अवस्था थिक। एहि उमेरक सदुपयोग - घरमक काजमे लगाएव- करक चाही। एहि उमेरमे जे जत्ते कठिन मेहनत करत ओकर जिनगी ओतेक सुन्दर बनतै। सुन्दरे जिनगी महामानवक जिनगी होइत। जत्ते मेहनत कएल हुअए ओहिमे कंजूसी नइ करी। कंजूसी केलासँ लोक चढ़ाइक रास्ता

सँ भटकि जाइत अछि। तँ इमानदारीसँ मेहनत करक चाही। जँ अपनासँ बेसी उपारजन हुअए तँ ओकरा बाँटि दी। बँटवाक प्रवृति बड़ पैघ वस्तु छी। किऐक तँ बँटलासँ जमा नइ होइत। संगे, जे अपने बँटनिहार अछि ओ दोसराक वस्तुक लोभे किऐक करत। लोभ तँ ओकरा होइ छै जे संचय करए चाहैत अछि। जकरामे संचयक प्रवृति जगबे ने करतै ओकरामे लोभ आओत कोन रस्ते।''

एते नसीबलाल बेटाकेँ कहिते रहथिन कि माथपर मोटरी नेने देवन पहुँचल। देवनकेँ देखि नसीवलाल हँसैत कहलखिन- ''देवन, बड़का मोटा माथपर देखै छी। की आइ विकासपुरसँ विदा भऽ गेलियै?''

नसीवलालक आगूमे मोटा रखि देवन कहलकनि- ''काका, साल भरिसँ अपने ऐठामसँ मोटरी बान्हि-बान्हि बहुत चीज लऽ गेलौं, वएह दइ लऽ आइ एलौं।''

नसीवलाल- ''अच्छा, पहिने बैसू। भारी मोटा उठौने एलौंहेँ तँ सुसता लिअ। तखन आगू गप्प-सप्प करब।''

देवन बैसि पसीना पोछए लगल। पसीना पोछि देवन उठि कऽ कलपर जा भरि पेट पानि पीलक। पानि पीबि आबि देवन कहए लगलनि- ''काका, अहाँक असिरवादसँ हमरा दीदीक हालति एते सुधरि गेलै जे हँसैत जिनगी जीवि रहल अछि। हमरा तँ अपनेसँ बहुत आशा अछि। तँ पैछला लेलहा दइ लऽ एलौं आ आगू जे लेब ओ आगू देब।''

नसीवलाल- ''बौआ, तोरा हम कोनो करजा देने रहिहह जे तू घुरबै ले ऐलह। हम अपन काज केलौं, जइसँ तोरा लाभ भेलह। मोटा घुमौने जा। ई कखनो, मनमे नइ अनिहह जे काका खिसिया गेला। तँ आब नइ देताह। सभ मनुक्खकेँ अपन-अपन कर्तव्य होइत। जेकरा करब ओकर धरम होइत। जे हमहूँ केलौं। तोरो अपन कर्तव्य छह जे तोरा करए पड़तह। जहिना हम तोरा बुझेवो केलियह आ थोड़-थाड़ मदतियो केलिहह, तहिना तोहूँ करह।''

मोटा नेने देवन अपना ऐठाम चलि आएल। मोटा घुमल देखि बुघनी पूछलक- ''बौआ, मोटा किअए घुमौने ऐलह?''

ओसारपर मोटा रखि देवन उत्तर देलक- ''दीदी, काका कहलनि जे कोनो हम करजा देने छेलिहह जे घुमबए ऐलह। हम अपन कर्तव्य केलौं। तोहूँ जा अपन कर्तव्य करह।''

असकरे नसीवलाल दरवज्जापर बैसि, मने-मन सोचैत रहति जे चालीस बर्खसँ हम एहि गाम विकासपुरमे रहि अनबरत अपनो आ समाजोक उन्नतिक लेल सोचवो आ करबो करैत एलौं, मुदा अपने तँ आगू जरुर बढ़लौं मुदा समाज ओते नइ बढ़ि सकल जत्ते चाहैत छलौं। सवाल साधारण रहितौ जटिल अछि। जना पोखरिमे नमहर गोला फेकलासँ पानिमे हिलकोर उठैत मुदा धीरे-धीरे असथिर भऽ ओहिना कऽ ओहिना भऽ

जाइत, जेना पहिने छल। ऐना किऐक होइत? समाजक तरमे ऐहन कोन शक्ति छिपल अछि जे पानिक हिलकोरकेँ शान्त कऽ पुनः ओहि रुपमे लऽ अबैत।

(१३)

चारि बर्खक उपरान्त शिवकुमार हिसाबसँ आ रामनाथ भूगोलसँ आनर्स केलक। दुनूकेँ आनर्समे सत्तरि प्रतिशतसँ उपरे अंक आएल छलै। कओलेजोक पढ़ाइ नीक चलैत छल। अरुन कुमार दत्त प्रिसिपल रहथि। ओ अपनो मेथमेटिक्सक जानल-मानल विद्वान। दत्त साहेव मात्र विद्वानेटा नहि बल्कि एक कुशल शासक आ कुशल अभिभावक सेहो। अपने बच्चा जेकाँ विद्यार्थियोक संग व्यवहार करथि। जहि विद्यार्थीकेँ कोनो वस्तुक अभाव देखथिन ओकरा भरपूर मदति सेहो करथिन। सदिखन मोनमे रहनि जे हमरा कओलेजक विद्यार्थी कोना नीक जेकाँ पढ़त। औझुका शिक्षक जेकाँ, हुनकामे एक्को पाइ जाति-पाँतिक भेद-भाव नहि रहनि। रिजल्ट निकलला बाद शिवकुमारो आ रामनाथो जा कऽ दत्त साहेवसँ भेंट केलकनि। दुनूकेँ देखि दत्त साहेव वेहद खुशी भेलखिन। हँसैत अरुण कुमार दत्त दुनू गोटेकेँ कहलखिन- "बौआ! आब अहाँ सभ देशक सुयोग्य नागरिक भेलहुँ, अहीं सभपर देशक भविष्य निर्भर करैत अछि। तेँ एक सुयोग्य नागरिकक जे दायित्व होइत छैक, ओकरा अपन लगन आ इमानदरीसँ पूरा करब परिवारसँ लऽ कऽ समाज होइत देश भरिक भार अहाँ सभक कन्हापर अछि तेँ ओकरा नीक जेकाँ निमाहब। यएह हमर असिरवाद अछि।" दत्त साहेवक विचारसँ दुनू -शिवकुमारो आ रामनाथोक- गोटेक आँखिमे स्नेहक नोर आबि गेल। भरभराइल अवाजमे शिवकुमार दुनू हाथ जोड़ि कहलकनि- "गुरुदेव! अपनेक असिरवाद जिनगी भरि निमाहैक कोशिश करब।"

बचेलाल, अछेलाल आ सुमित्रा, तीनू गोटे दरबज्जापर बैसि शिवकुमारो आ रामनाथोक संबंधमे गप्प-सप्प करैत रहति। तीनूक हृदय खुशीसँ गद-गद। मुदा आगू की करब? से ककरो मनमे अबिते नहि। बचेलाल बाजल- "काका! दुनू गोरे - शिवकुमार आ रामनाथ- बी.ए. पास तँ कऽ लेलक। मुदा आगू की करवै?"

बिना कोनो लागि-लपट कऽ अछेलाल कहलकनि- "बौआ, हम तँ मुरुख छी, पढ़ै-लिखैक बात बुझबे ने करै छी, तँ की कहब।"

सुमित्रा दुनू गोटेकेँ सोर पाड़लक। शिवकुमारो आ रामनाथो आएल दुनू गोटेकेँ अबिते सुमित्रा कहए लगलखिन- "बौआ अहाँ दुनू गोरेक पढ़ाइसँ हमर छाती जुड़ा गेल। जखन बचेलालक पिता मुइला तखन हमरो हृदयमे छल जे बेटाकेँ खूब पढ़ाबी। मुदा सभ तरहेँ दुखी रही तेँ मैट्रिके धरि पढ़ा सकलौं। मुदा आइ ओ इच्छा पूरि गेल।

आब अहूँ दुनू गोरे पढ़ल-लिखल भेलौं तँ आगू की करैक विचार अछि, से तँ अहीं सभ सोचबै।''

शिवकुमार कहलकनि- ''दादी, काल्हि ललित मास्टर साहेव कहलनि जे मारवाड़ी कॉलेज दरभंगामे टीचर्स ट्रेनिंगक पढ़ाइ दू सालसँ होइ छै। दस मासक कोर्स छैक। हमर मन होइए जे ट्रेनिंग कऽ ली। जखन ट्रेण्ड भऽ जाएब तँ कतौ ने कतौ, कोनो हाइस्कूलमे नोकरी भइये जाएत।''

शिवकुमारक बात सुनि बचेलालक मनमे हूबा जगल। मारबाड़ी कॉलेजक नाम सुनि बचेलाल गुम्म भऽ किछु मन पाड़ए लगल। किछु कालक बाद मन पड़लनि जे बर्ख पाँचम धनश्यामपुर गेल रही। चुनावक समए रहए। ओहिठाम मारवाड़ी कॉलेजक उप प्राचार्य देवीदत्त पौद्दार सेहो चुनावी प्रचारमे आइल रहथि। देवीदत्त सामाजिक कार्यकर्ता। मारवाड़ी रहितो अलग चालि-ढालिक लोक। एक्को मिसिया मारवाड़ी जेकाँ नहि बुझि पड़ैत। घुमैत-घुमैत, जेतइ हम रही ओतै ओहो चारि-पाँच गोटेक संग ऐला। जीप स्कूलेपर लगा देने रहथिन आ पाएरे गाममे घूमैत रहति। जहि चैकीपर हम बैसल रही ओहीपर ओहो आबि बैसलाह। हुनक नामक प्रचार तँ होइत रहए मुदा चेहरासँ नहि चिन्हैत रहिएनि। साधारण बगए-बानि। मारवाड़ी रहितो धुर-झाड़ मैथिली बजैत। चैकीपर बैसिते कहए लगलथिन- ''जाधरि अपना देशमे समाजवादी शासन नहि हएत ताधरि किछु गनल गूथल धनीक पूँजीपति बहुसंख्यक गरीबकेँ लुटिते रहत। आ ओ ऐश-मौज करिते रहत। १९४७ ई.मे अपना सभकेँ आजादी भेटल मुदा ओ पूर्ण आजादी नहि भेटल। नैँगड़ा आजादी भेटल। मोटा-मोटी सएह बुझू जे अंग्रेज भारतक गद्दी परसँ उतड़ल। कोनो देश कानून-कायदासँ चलैत अछि। अपना ऐठाम अखनो अंग्रजेक बनाओल कानूनसँ शासन चलैत अछि। तँ सभ गरीबकेँ एकजुट भऽ ओहि व्यस्थाकेँ तोड़ए पड़त।'' ओ बजिते रहथि कि हम पूछलिएनि- ''समाजवाद ककरा कहै छै?''

हमर प्रश्न सुनिते देवीदत्त पौद्दार धाँइ-धाँइ कहए लगलथि। जना सभ बात हुनका जीहेपर रहनि, तहिना। ओ बुझा-बुझए कहए लगला- ''उत्पादनक जे साधन अछि ओहिपर, व्यक्तिगत नहि, सामूहिक अधिकार समाजवाद होइत। जना खेत, खान आ कारखाना अछि। अखनो देखै छी जे एक-एकटा जमीनदार छथि जे सए कोन, हजार कोन जे लाख-लाख बीघा जमीन हथिऔने अछि। दोसर दिस देखै छी जे जोतैक लेल कोन बात जे घरो बन्हैक जमीन नहि छेक। तहिना खानोक अछि। जहि खानसँ अमूल्य वस्तु सभ निकलैत अछि। ओहो किछु गनल-चुनल लोकक पल्लामे अछि। तहिना कारखनोकेँ देखै छी। एक-एकटा कारखानामे लाखो-लाख मजदूर काज करैए, मुदा ओकरा कते दरमाहा भेटैक छैक।'' एते कहि उठि कऽ ठाढ़ होइत कहलखिन- ''अखन चुनावी दौर छी तँ समएक अभाव अछि।''

हुनका संग हमहूँ उठि कऽ ठाढ़ भेलौं। परिचए पूछलनि। हम कहलिएनि- ''एतए कुटुमैतीमे आइल छी। हमर घर ऐठामसँ तीस-पेइतीस किलोमीटर उत्तर अछि। मधुबनी जिलामे पड़ैत छैक। तखन ओ कहलनि- ''हम मारवाड़ी कॉलेजमे उप-प्राचार्य छी। जँ कहियो कोनो काज हुअए तँ भेटि करब।'' एते बात मन पड़िते बचेलाल नमहर साँस छोड़ैत शिकुमारकेँ कहलखिन- ''बौआ! काज भऽ जेबाक चाही। काल्हि हम भोरुके गाड़ीसँ दरभंगा जा बुझि अबै छी। तखन जे-जेना हएत से ऐलाक बाद कहब।''

दोसर दिन भोरे गाड़ी पकड़ि बचेलाल दरभंगा विदा भेल। नअ बजे, गाड़ी दरभंगा पहुँचल। मुदा बचेलालकेँ काँलेज देखल नहि। स्टेशनसँ निकलि दोकानमे जलखै करए गेल। दोकानदारेकेँ बचेलाल कॉलेजक संबंधमे पूछलखिन। दोकानदार कहलकनि अहाँ देहातमे रहए छी, बौआ जाएब। तैँ नीक हएत जे रिक्शा पकड़ि लिअ। ओ पहुँचा देत। बचेलालो सएह केलक। रिक्शाबला कॉलेजक गेटपर बचेलालकेँ उताड़ि देलक। संयोगसँ देवीदत्त पौद्दारो तखने पहुँचलथि। दुनू एक-दोसर दिशि देखैत। चेहरा चिन्हार दुनू गोटेकेँ बुझि पड़नि। बचेलाल देवीदत्त पौद्दारकेँ कहलखिन- ''हमरा देवीदत्त बावूसँ भेटि करैक अछि।'' देवीदत्त पूछलखिन- ''कोन काज अछि? हमहीं छी।''

प्रणाम कऽ बचेलाल कहलखिन- ''टीचर्स ट्रेनिंगमे दूटा विद्यार्थीकेँ नाम लिखबैक अछि।''

देवीदत्त- ''विद्यार्थी कहाँ छथि?''

बचेलाल- ''आइ बुझैये लऽ एलौंहें। जँ भऽ जाएत तँ काल्हिये तैयार भऽ कऽ आएब।''

देवीदत्त- ''जाउ, भऽ जाएत। काल्हि निश्चित चल आएब।''

लगले बचेलाल घुमि कऽ स्टेशन आबि बारह बजे गाड़ी पकड़ि लेलक। दोसर दिन दुनू विद्यार्थी संग बचेलाल जा नाम लिखा देलक।

दस मासक उपरान्त दुनू- रामनाथो आ शिवकुमारो प्रशिक्षित शिक्षक भऽ गेल।

जहि हाइ स्कूलमे शिवकुमार आ रामनाथ पढ़ने छल, ओहि हाई स्कूलमे पहिलुका बैचक चारि गोट शिक्षक, मासे दिनक अन्तरमे, सेवा निवृत्ति भेला। सुदूर देहातमे स्कूल। चारु शिक्षक जगहपर नव शिक्षकक नियुक्तिक लेल भेकेन्सी भेल। अखवारोमे निकलल। मुदा ऐहेन हवा बहि गेल अछि जे नवयुवक गामक बातावरणमे रहए नहि चाहैत। इलाकाक जे पढ़ल-लिखल युवक अछि, ओ अधिकांश बम्बइ, कलकत्ता, दिल्ली जा क्यो कारखानामे तँ क्यो सेठ-साहूकारक दोकानमे, तँ क्यो सड़कपर रिक्शा चलबैत अछि। गाममे मात्र बूढ़-पुरान आ धिया-पूता मात्र रहि गेल अछि। जकरा चलैत किसान परिवार दिनानुदिन टूटि-टूटि नीचे मुँहे ढड़कि रहल अछि। ने मेहनत करैबला लोक आ ने आधुनिक ढंगक खेती करैबला गाममे रहि

गेल। जहिसँ ग्रामीण सम्पदा दिनानुदिन नष्ट भऽ रहल अछि। जाधरि देहातमे पढ़ल-लिखल आ कर्मठ लोक जी-जाँति कऽ नहि रहत ताधरि गामक उत्थान मात्र कल्पला बनि रहत। शहर-बजार देहातेक श्रम-शक्तिसँ गन-गनाइत आगू मुँहे बढ़ि रहल अछि जबकि गामक देश कहैबला भारत पाछू मुँहे तेजीसँ ससरि रहल अछि।

स्कूलक हेड-मास्टरकेँ बुझल जे शिवकुमार आ रामनाथ शिक्षक प्रशिक्षण केने अछि। हेडमास्टर एकटा पत्र शिवकुमारकेँ लिखि चपरासीकेँ पठौलखिन। पत्रमे लिखल छल-

प्रिय शिष्य शिवकुमार

अहाँकेँ बुझले हएत जे स्कूलमे चारि गोट शिक्षक सेवा निवृत्त भेलाहेँ। हुनका जगहपर नव शिक्षकक बहाली अछि तेँ अहाँ दुनू गोटे - शिवकुमार आ रामनाथ- अवश्य आवेदन दी। अहाँ दुनू गोटे छात्र रहि चुकल छी, संगे घर लग स्कूलो अछि। बहालीक पूर्ण आश्वासन तँ हम नहि दऽ सकै छी किऐक तँ बहाली कमिटीक माध्यमसँ हएत। मुदा एत्ते जरुर आश्वासन दइ छी जे अनुचित बहाली नहि हएत।

प्रध्यानाध्यापक

शिक्षकक बहालीसँ पनरह दिन पहिनहि विज्ञापन निकलल। अखबारोक माध्यमसँ प्रसारित भेल। प्रध्यानाध्यापक चिट्ठी देखि शिवकुमारकेँ मनमे पूर्ण विश्वास भऽ गेलै जे हमरा दुनू गोटेक बहाली जरुर हएत। पराते भने दुनू गोटे, अपन सभ कागजात नेने इस्कूल पहुँचल। ऑफिससँ फारम लऽ ओकरा भरि, अपन सभ कागजातक नकल लगा आवेदन दऽ देलक।

आवेदन देनिहारक रफ्तार बहुत मन्द। पहिल-पहिल आवेदन शिवकुमार आ रामनाथे केलक। आवेदनक रफ्तार मन्द रहैक कारण छल जे गाम-घरमे बेसी पढ़लो-लिखल नहि। शहर-बजारक लोक गाममे नोकरी नहि करए चाहैत। बहालीक चारि दिन बँचल। अखन धरि मात्र दुइयेटा आवेदन पड़ल। इस्कूलक सचिव इस्कूल आवि प्रध्यानाध्यापककेँ पूछलखिन- "अखन धरि कतेक दरखास्त पड़ल?"

प्रध्यानाध्यापकोकेँ नीक जेकाँ नहि बुझल। ओ किरानीकेँ बजा पूछलखिन। किरानी दुइयेटा दरखास्तक नाम कहलकनि। हेडोमास्टर आ सेक्रेट्रीओ गुम्म। दुनू गोटेक मनमे यएह होइत जे एते बेरोजगारी रहनहुँ आवेदन किऐक ने भऽ रहल अछि। मुदा दुनू गोटे गुम्मे-गुम्म रहि गेला। अंतिम दिन तीनिटा दरखास्त पड़ल। नियुक्तिक तिथि पूर्व निर्धारित। तँ हेवे करत।

सभ उम्मीदवार नियुक्तिक दिन पहुँचल। तीनि गोटेक समिति बनल छल। हेडमास्टर, सेक्रेट्री आ जिला शिक्षा पदाधिकारी ओहि समितिक सदस्य छलाह। बिना

कोनो झड़-झमेल कऽ नियुक्ति भऽ गेलै। एक गोटे अनट्रेन्ड छला तँ हुनका नहि भेलनि। हाथक-हाथे चारु गोटेकेँ चिट्ठीयो भेटि गेलै।

घरपर आवि शिवकुमार दादी सुमित्राकेँ गोड़ लागि सभ बात कहलक। गोड़ लागि रामनाथ पँजरामे चुपचाप ठाढ़। रामनाथकेँ सुमित्रा कहलक- ''बेटा रामू, तोरा देखि हमरा एत्ते खुशी भऽ रहल अछि जेकर पारावार नइ अछि। शिवूक तँ बापो मास्टर छथिन मुदा तूँ तँ उस्सर खेतक आमक गाछ जेकाँ भेलह।''

(१४)

शिवकुमारकेँ नोकरी होइते बचेलाल इस्कूलमे त्यागपत्र दऽ देलक। बचेलालक त्यागपत्रसँ साँसे गाम टीका-टिप्पनी चलए लगल। किछु गोटेकेँ दुख एहि दुआरे होइत जे बेर-बेगरतामे पाइसँ मदति भऽ जाइत। किछु गोटेकेँ खुशियो होइत। किऐक तँ भने आमदनी बन्न भऽ गेलनि। मुदा सुमित्राकेँ ने हरख आ ने विस्मय। किएक तँ ओ नीक नहाँति बुझैत जे जत्ते मनुक्खक भीतर कमाइक शक्ति छै, ओते तँ नोकरीमे नहिये होइ छैक। संगे नोकरियो तँ जिनगी भरिक लेल नहिये होइ छै। जाधरि लोक जुआन रहैए ता धरिक लेल नोकरी होइ छै। मुदा जखन शरीरक शक्ति कमए लगै छैक तखन नोकरी छुटिये जाइ छै। नोकरी छुटलापर दरमाहाक अदहोसँ कम पेंशन भेटैत छैक। जबकि उमेर बेसी भेने शरीरक सभ अंग धीरे-धीरे कमजोर हुअए लगै छै, जहि लेल नीक-निकुत भोजन आ दवाइक जरुरत हुअए लगै छैक। मुदा पेंशन कम भेटने सभ खर्च पूरा नइ कऽ पबैए। जहिसँ जिनगी बोझ बनि जाइ छै। संगे गिरहस्त परिवारमे जे नोकरिया काज होइ छैक। ओहो करैक लूरि नहि भऽ पवैत छैक। जहिसँ नोकरिया लोक अथबल भऽ जिनगी जीवेत अछि। आब प्रश्न उठैत अछि जे नोकरी कत्तए करी? चाहे तँ सरकारमे वा पूँजीपति ऐठाम। ई बात सत्य जे प्रजातंत्र शासनमे, सरकारो अपने होइत तँ शासन पद्धति चलेबाक लेल सहयोग करब अनिवार्य अछि। नइ तँ शासन चलत कोना? मुदा जे सरकार गनल-गूथल लोकक सेवा करैबला होय, आ विशाल जनसमूहक लेल मात्र जहलेटा होय, ऐहन शासनमे कोन रुपे सहयोग कएल जाए। दोसर बात अछि जे कारखाना। कल-कारखानामे नोकरी केनिहारक संग जे व्यवहार होइत ओ की गुलामीसँ कम होइ छै। अगर स्वतंत्र देशक नागरिककेँ गुलामीक जिनगी जीवए पड़ै तखन आजादीक महत्वे की? जे देश गामक देश कहबैत आ गामक सम्पदा या तँ ठमकले रहै वा पाछुऐ मुँहे ससरैत जाए तखन देशक उन्नति कल्पना छोड़ि आरो की हएत। तँ जरुरत अछि जे गामक सम्पदा-खेत, पोखरि नदी, इत्यादिक समुचित व्यवस्था दुनू दिशिसँ -सरकारो दिशिसँ आ गामोक श्रम

शक्तिसँ- कएल जाए। ई के करत? हम गाममे रहनिहार जँ गाम छोड़ि बजार दिशि भागैए तखन कोना हेतैक? एहि सभ बातकेँ तर्क-वितर्क करैत बचेलाल नोकरीसँ त्यागपत्र देलक।

साँझक समए। अन्हारक तृतीया रहने बेसी अन्हारो नै। बचेलाल, खेतसँ रिन्च-हथौरीक झोरा आ अछेलाल पटबैबला प्लास्टिकक पाइप आ कोदारि नेने घरपर अबैत। अबेर भेने रुमा दलानक आगूमे ठाढ़ भऽ दछिन मुँहे रास्ता देखैत। आगू-आगू बचेलाल आ पाछू-पाछू अछेलालकेँ अबैत देखि रुमा ससरि कऽ थोड़े आगू बढ़ि बाजलि- "भगवान हमरो दुनू परानीपर खूब खुशी छथि। एक गोरे गोबर पाथै छी आ दोसर गोरे डीजल-मोबीलसँ देह-हाथ रंगै छै।"

रुमाक बात सुनि अछेलाल भभा कऽ हँसल, मुदा किछु बाजल नहि। मुस्की दैत बचेलाल बाजल- "अगर भगवान खुशी नइ छथि तँ जीवैक लेल एत्ते लूरि आ करैक शक्ति कोना देने छथि। काजकेँ खेलौना बना कर्मशीले टा खेलैत अछि।"

एत्ते बजैत-बजैत दरबज्जापर पहुँच गेल। दरवज्जापर अबिते सभ सामान रखि, सावुन लऽ स्नान करए बचेलाल कलपर गेल। सुमित्रा लालटेन लेसि, चारक बत्तीमे लटका देलक। रुमा चाह बनवै गेलि। जाबे बचेलाल नहा कऽ दरवज्जापर आएल ताबे रुमा चाह बना लेलक। चाह बना रुमा दरवज्जापर आबि बचेलालक आगूमे राखि देलक। अछेलालो नहा कऽ आबि गेल। तीनू गोटे चाह पीवए लगल। एक घोंट चाह पीबि बचेलाल रुमाकेँ कहलक- "परिवारमे एहि रुपे काज केलासँ परिवार आगू मुँहे ससरैत अछि। अखने देखियौ, जाबे हम नहेलहुँ ताबे अहाँ बनेलहुँ। माए लालटेन लेसि लेलक। दसे मिनटमे कत्ते काज भऽ गेल। अगर जँ अहलाइत-महलाइत सभ करितौं तँ कत्ते समए लगैत।"

तीनू गिलास लऽ रुमा भानस करए आंगन गेलि। अछेलाल तमाकुल चुनबए लगल। बचेलाल माएकेँ पटौनीक संबंधमे कहिते छल कि ताबे गोनर आबि अछेलाल लग बैसल। अछेलाल अपनो तमाकुल खेलक आ गोनरोकेँ देलक। तमाकुल मुँहमे लैत गोनर अछेलालकेँ कहए लगल- "भाय, अइ सालसँ दुख पड़ा गेल।"

उत्सुक भऽ अछेलाल पूछलक- "से की?"

गोनर- "भाय! जहियासँ मोन अछि तहियासँ आइ धरि नदी कातक खेतमे एत्ते धान कहियो नै भेलि छल, जत्ते अइबेर भेल। बारह कट्ठाक कोला अछि, जइमे पनरह मनसे बेसी धान कहियो ने भेल छल। ऐबेर बारह क्वीन्टल धान भेल। जे खेत फागुनसँ अखाढ़ धरि परती बनल रहैत छल। गइबार-महीसबार सभ गाइयो-महीसि चरबै छलै आ गुल्लियो-डंडा खेलै छलै। ओइमे एत्ते उपजा भेल जे सालो भरि बुतात चलत। घरवाली कहै छलि जे घरमे लछमी आबि गेलि। तँ पाँचो मुरते साधूकेँ चूड़ा-दहीक भनडरा करब।"

गोनर बजिते छल कि एका-एकी टोलक लोक आबए लगल। जेना बरिआतीमे हँसी-मजाक होइत तहिना अपनामे सभ करए लगल। हँसी-चौल समाप्त होइते एका-ऐकी अपन-अपन भरि दिनुका काजक गप्प शुरु केलक। अपन हूसलाहा काजक चर्चा, अपने मुँहे कऽ अपनो हँसै आ दोसरो हँसैत। एक हरफी सभ अपन-अपन बात कहि चुकल। सबहक बात सुनि बचेलाल समूहेँकेँ पूछलक- "आगू की करैक विचार केने छी?"

बचेलालक सवाल सुनि धनिकलाल बाजल- "भाय! एकटा नवका धानक बीआ मामा गामसँ अनलौं हेन। हमरे सोझामे दाउन भेलै। ममिऔत भाय जोखलनि। जोखि कऽ कहलनि जे भाय चारि कट्ठामे छह क्वीन्टल धान भेल।"

गोनर पूछलक- "देखैमे धान केहेन अछि?"

धनिकलाल- "नमगर-नमगर, खूब मेही, उज्जर-उज्जर धान अछि। गमकबो करैए।"

गोनर- "भात केहेन होइ छै?"

धनिकलाल- "ऐह भैया, जखने थारी आगूमे औतह कि गम-गम करए लगतह। ओना हम तँ टटके धानक चाउर कुटा कऽ भात खेलौं, मुदा तइयो की कहबह।"

गोनर- "कत्ते बीआ अनलह?"

धनिकलाल- "एक्के पसेरी अनलौं। अइसँ पाँच कट्ठा रोपाइत। अगिला साल तँ सभकेँ वीआ देबइ।"

गोनर- "तौँ तँ एक्केटा खेतमे रोपबह। मुदा दू-दू आँटी जँ आनो बाधबलाकेँ देवहक तँ ओहिसँ आनो बाधमे जँचा जाइत। किऐक तँ सभ धान सभ तरहक माइटमे एक्के रंग नइ धड़ै छै। ओहो जाँच भऽ जाएत।"

धनिकलाल- "बड़वढ़ियाँ बात कहलह। जँ दश आँटी बीआ देलासँ सभ बाधक उपजा जँचा जाइत, ओहो नीके हएत।"

गाममे सिर्फ खेत पटबैक सुविधा भेलासँ गामक रुप-रेखा बदलए लगल। गृहस्तमे नव उत्साह जगल। अनिश्चितताक खेती निश्चिततामे बदलए लगल। जबकि खेतीक लेल पानि सिर्फ एकटा साधन छी। नीक वीआ, खाद, खेत जोतै-कोड़ैक औजार, नव ढंगक खेती करैक लूरि सभ बाकिये अछि सिर्फ एकटा साधन भेलासँ उपजामे दोबर-तेबरक वृद्धि भेल। गृहस्तक बीच प्रेम-भाव सेहो बढ़ल। खेतीक जिज्ञासा सेहो बढ़ए लगलै। जइ किसानकेँ गरीबी कखनो मुँहमे हँसी नइ आबए दैत, ओहि किसानक मुँहमे सदिखन हँसी-खुशी आबए लगल।

खाइ-पीबै राति भऽ गेल। दरबज्जा खाली देखि शिवकुमार आ रामनाथ आएल। दुनू गोटेकेँ देखि बचेलाल पूछलखिन- "बौआ, पढ़बैमे मन लगै छह की नहि?"

दुनू गोटे-शिवकुमारो आ रामनाथो कहलकनि हँ।"

दुनू गोटेकेँ मुँहसँ हँसी सुनि बचेलाल कहए लगलखिन- ''बौआ मनमे कखनो ई नै अनिहह जे दरमाहा लइ छियै तँ पढ़बै छी। सभ बच्चाकेँ अपन छोट भाए बुझि पढ़विहह। ओ कोना पढ़त? एहिपर सदिखन ध्यान रखिहह। ओहि बच्चाक जिनगी ओहि अवस्थामे होइत जहि अवस्थामे उगैत सुरुजक होइत। उगैत सुरुजक समएमे जँ मेघ लगि जाइत छैक तँ रातिये जकाँ दिनो बुझि पड़ैत छैक। तँ जत्ते शक्ति अछि ओहिमे एक्को मिसिआ कलछप्पन पढ़बैमे नहि करिहह। अखन तक तूँ दुनू गोरे एकपेरिया रास्तासँ चलैत एलँहेँ मुदा आब चैबट्टीपर पहुँच गेलह। तँ चारु दिशि देखि कऽ चलए पड़तह। जना पहिल रास्ता भेल नोकरीकेँ इमानदारीसँ निमाहैक दोसर भेल परिवार, तेसर भेल माए-बाप आ चारिम भेल समाज। एकर संग-संग अपन अध्ययन सेहो अछि। आइ हाइ इस्कूलक शिक्षक भलहेँ, तँ की एतबेमे अपनाकेँ समेटि कऽ राखि लेवह। आगूक डिग्री प्राप्त कएलासँ कओलेजोक, शिक्षक भऽ सकै छह। जिनगीमे सतत चलैक कोशिश करक चाही। सतत चलनिहारे जिनगीक महत्व बुझैत अछि। हमहीं शिक्षक छलौं। इस्कूलसँ त्यागपत्र दऽ गृहस्तीक जिनगीमे प्रवेश केलहुँ। पहिनेसँ कनियो कम आनन्द अखन नहि होइत अछि नव-नव काजक लूरि सेहो सीखि रहल छी आ नव-उत्साहक संग जिनगी सेहो बीतबै छी। मुदा तइयो एकटा अभाव जिनगीमे अखन धरि रहिये गेल ओ अभाव थिक। देशाटन। धुमब-फीरब सेहो जिनगीक लेल बड़ पैध काज थिक। बिना घुमने-फीरने दुनियाँकेँ देखि कोना सकबै? कोन ठामक मनुक्ख केहन अछि, कोना रहैत अछि? कोन तरहक जिनगी जीवैत अछि। से तँ घुमलाक बादे बुझबै। अनेको पहाड़, अनेको पठार, अनेको झील, अनेको टावू, अनेको सागर, अनेको झड़ना, अनेको जंगल आ अनेको रंगक माटिक इलाकाक देश भारत अछि। अनेको तरहक प्राचीनसँ अद्यतन सभ्यता, संस्कृतिसँ सम्पन्न देश, बिना देखलासँ कोना बुझल जाएत। पहाड़क उपरसँ लऽ कऽ समुद्रक किनछरि धरि बसैबला लोक, हजारो रंगक फल-फूलसँ सजल देश बिना देखलासँ कोना कियो बुझि सकैए। तँ देशक भ्रमण सभक लेल ओहने जरुरत अछि जेहने जिनगीक दोसर-तेसर जरुरत। तँ जे समए बीति गेल ओ तँ घूरि कऽ नइ आओत मुदा जे बँचल अछि ओहिमे जहाँ धरि संभव भऽ सकत, ओ तँ पुरबैक कोशिश करब।''

(१५)

फागुन मास। मौसमक बदलल रुखि। समुद्री तूफानक चलैत सओने जेकाँ मेघो लटकल आ हबो चलैत। कखनो-कखनो बून्दा-बुन्दी पानियो होइत आ हबो कम-बेसी होइत। कखनो काल तेज बरखो आ तेज हबो बहए लगैत जहिसँ सभ जाड़े सिरसिराए लगैत। समएक रुखि देखि, बाध-बोनक काज छोड़ि सभ घरे-अंगनक आइ-पाइमे लगल। क्यो-क्यो घुर पजारि आगिये तपैत। देवन मने-मन सोचैत जे फागुन सनक मासमे ऐना किअए होइए। मौसमोक कोनो ठेकान नइ छै। जहिना लोकक कोनो ठेकान नहि जे बाजत किछु आ करत किछु। तहिना भगवानोक कोनो ठेकान नहि। कहू जे फागुन सनक सुन्दर मास तहिमे ऐना किअए होइ छै। एते हवा कतऽ जमा छै जे एते बहि कऽ पछिम मुँहे चलि गेल, मुदा अखनो धरि सठलहेँ नहि! कहू जे कते आशा लगा कऽ लोक मसुरी, खेसारी, केरावक खेती केने छल, उखाड़ि-उखाड़ि सभ घर अंगनासँ लऽ कऽ खरिहान धरि सुखै लऽ पसारने अछि आ ई पानि सभकेँ सड़ाओत। ने भुस्सी मालक खाइ जोकर रहत आ ने दाना। सभ दाना पानिमे भीजि-भीजि सड़त। कने-मने जे जाड़ो चलि गेल छल, सेहो घुरि कऽ चलि आओत। फेरि मनमे एलै जे भने हमहीं केने छी, जे खेसारी-मौसरीक खेतिये ने केने छी। गहूमक लेखे तँ सोना बरसि रहल अछि। अइबेर एक्कोटा मिरहिन्नी दाना नइ हएत। नसीबलाल कक्काक हिसाब ठीके छनि। जे कतिका धान, गहूम आ खेरही एक खेतमे करी। फगुनियाँ हाल भेल, मन खुशी कऽ देलक। आठे दिनक बाद गहूम काटि लेब आ खेरही बाओग कऽ देबइ। पटबीये खेत जेकाँ खेरही भुभुआकेँ जनमत। फँकलो-फुकल बीआ जनमिऐ जाएत। मुदा पिऔजमे गरदनि कटि जाएत। काल्हिये पटेलहुँ, तइ परसँ तेहेन बरखा होइए जे पनरहो दिनमे खेत फड़हर नइ हएत। जइसँ सड़त। मुदा की करबै? लोक अपना भरि ने सोचि कऽ करैए मुदा अनहोनी कऽ के रोकत। असकरे देवन मालक घरक दलानमे बैसि सोचैत। एक्केटा घर अदहामे माल बन्हैत आ अदहामे वैइसै-उठै लऽ दरबज्जा बनौने। असकरे देवनकेँ बैसल देखि बुधनीयो आइलि। बुधनीकेँ बैसितहि देवन कहलक- "दीदी, आब हम छबे मास रहब। किऐक तँ एगारह बर्ख छअ महीना भऽ गेल। तँ जहियासँ हम एलहुँ तहियासँ कोन-कोन काज भेल आ कोन-कोन पछुआइल अछि, से दुनू गोरे हिसाब जोड़ि लिअ।"

देवनकेँ नहि रहब सुनि बुधनीक मनमे धक्का लगल। उदास भऽ बुधनी कहलकै- "बौआ, तोरा पाबि हमरा बहुत भेल। हमरा सन-सन कते लोक बौआ-ढहना कऽ मरैत अछि। मुदा तूँ हमरेटा नहि हमरा कुल-खनदानकेँ जीया कऽ रखलेँ.....।"

बुधनी देवनकेँ कहिते छलि कि सजन सेहो चद्दरि ओढ़ने आएल। सजनकेँ चैकीपर बैसबैत देवन कहलक- “भैया, अखैन कोन काज करै छेलह जे हाथ-पाएरमे थाल लागल देखै छिअह?”

सजन- “बौआ कि कहिह मालक घर छाड़ैले खढ़ अटिया कऽ रखने छलौं। ओहो भीजि गेल आ घरो खूब चुबल। बड़दक देह परहक झोली भीजि गेलै। ओइह हटा कऽ सुखलाहा बोरा देहपर देलियै। थैरमे पानि अटकि गेल छलै, ओकरे खड़रि कऽ बहार केलौं। सएह थाल लगल अछि।”

अदहा मुँह झँपने, मुस्की दैत बुधनी बाजलि- “भैयाक जेहने बड़द मोटाइल छनि तहिना दीदीयो मोटाइल जाइ छनि।”

बुधनी बात सुनि सजन खुशियो भेल आ मने-मन सोचोओ लगल जे ऐहेन बात किअए कहलनि। कनियेँ काल चुप रहि सजन कहलकनि- “कनियाँ, भनसिया मोटाइल जाइए कि फुलैए, से अपनो मनमे अबैए। आन चीज तँ नइ देखै छियै मगर अल्लू बर खाइए। से अल्लुऐ कोनो करामति तरे-तर करै छै कि की?”

बात बदलैत बुधनी बाजलि- “आइ तँ हमरा बड़का पहपैट भऽ गेल। कुसमए कऽ बरखा होइए, एक्कोटा सुखल जरना काठी घरमे नइ अछि। कथी लऽ कऽ भानस करब? गोरहो मचानेपर अछि आ चिपरी पाथि-पाथि, सुखा-सुखा जे भानस करै छलौं से सभटा भीजियो गेल।”

सजन- “हमरो तँ सएह होइत। मुदा एकटा सुखल ढेंग छलै ओकरे फाड़ि कऽ चुल्हि लगमे दऽ भनसियाकेँ कहलिये जे आइ खिच्चैड़ आ अल्लूक सन्ना बनाउ। हुअए तँ सेरसोक चटनी सेहो बनाएब।”

बुधनी- “सेरसोक चटनी कोना बनबै छथिन?”

-“से नइ बुझल अछि। बड़ सुन्दर चटनी होइ छै। जत्ते गोरे ले बनावी ओइ हिसाबसँ सेरसो लऽ ली। ओहि हिसाबसँ लसुन सेहो लऽ ली जम्बीरी नेबो हुअए तँ बड़बढ़िया नै तँ कागजियो नेबोसँ काज चलि जाइ छै। हिसाबेसँ नून आ मिरचाइ सेहो लऽ ली। सेरसो, लसुन, नून-मिररचाइकेँ खूब हलसँ पीसि ली आ नेबो गाड़ि लिअ। भऽ गेल चटनी।”

- “बाह, ई तँ सभ दिना चटनी हएत।”

सजन आ बुधनीक बातकेँ विराम दैत देवन- “भैया, भने दुनू गोरे छी। ऐठाम ऐना हमरा साढ़े एगारह बर्ख भऽ गेल। छअ मास पुरिते हम चलि जाएब। तीनू गोरे छी तँ कहि देलहुँ जँ नइ कहितौं आ चलि जाइतौं तँ अहूँ सभ कहितौं जे बिना कहने-सुनने चलि गेल।”

देवनकेँ प्रशंसा करैत सजन कहए लगलै- “तोरा पाबि बेचारीकेँ सभ कुछ भऽ गेलै। खेतो-पथार भऽ गेलै, मालो-जाल भऽ गेलै, घरो-दुआर भऽ गेलै। रमुआ सेहो विआह करै जोकर भइये गेलै। हमरा बुझने आब वएहटा काज पछुआएल अछि।”

सजनक बात सुनि देवन- "भैया, अपनो मनमे अछि। मुदा मन अचताइ-पचताइए। किऐक तँ इलाका-इलाकाक कन्याँक अलग-अलग चालि ढालि आ जिनगी छैक। तँ कोन इलाका कुटुमैती करी, ई बड़ भारी सवाल अछि। ओना समाजमे नवका हवा लगने किछु बदललै मुदा अखनो ग्रामीण इलाकामे सत्तरिसँ अस्सी प्रतिशत वएह छैक। अपना इलाकाक कुटुमैती, पूवमे भागलपुर, पछिममे मुजफ्फरपुर, दछिनमे गंगाकात आ उत्तरमे नेपालक तराइ इलाका धरि होइए। मुदा सभ जातिक नहि। राजपूत, भूमिहारक कुटुमैती पछिम आ दछिन अधिक होइत, जे भोजपुरी आ मगही भाषाक इलाका छी। जहिसँ ऐठामक भाषापर बहुत अधिक प्रभाव पड़ैत। किऐक तँ ओहि इलाकाक सुआसिनक संग भाषो आ व्यवहारो चलि अबैत। तहिना ब्राह्मणक कुटुमैती भागलपुर दिशि होइत, जहिसँ अन्तिका बोली आ भगलपुरिया व्यवहार सेहो चलि अबैत। मुदा पछुऐलहा जाइतिक कुटुमैती नेपालक तराइसँ लऽ कऽ अल्लापुर, धरमपुर, पचही, नारे दिगर, भौर परगनामे अधिक होइत। पचही परगनाक बोली आ व्यवहार अल्लापुर परगना आ नेपालक तराइ इलाकाक बोली आ व्यवहारसँ बहुत नीक अछि। मुदा जे मेहनती कन्याँ अल्लापुरक, नेपालक आ कोशी इलाकाक होइत ओ पचही, नारेदिगर आ भौरक नहि होइत। तँ गरीब लोकक लेल अल्लापुर, कोशी इलाका आ नेपालक नीक होइत।"

देवनक बात धियानसँ सुनि बुधनी मुस्कुराइत बाजलि- "हमरो नैहर भौरे परगनामे पड़ैत अछि। जाबे दुरागमनसँ पूर्व नैहरमे छलौं ताबे घास छीलब छोड़ि, ने दोसर काज केलहुँ आ ने लूरि भेलि। हँ, अंगना-घरक काज नीपनाइ, बहारनाइ, कोठी पाड़नाइ, चुल्हि पाड़नाइ, भानस-भात केनाइ माए जरुर सिखा देलक। मुदा जिनगी जिबैक लेल तँ कमाइक लूरि जरुरी होइत, से नइ भेल। अहीठीन देखै छी जे अल्लापुरवाली अछि जे पुरुखोक कान कटैए। हर जोतनाइ छोड़ि ऐहेन एक्कोटा काज नै अछि जेकर लूरि ओकरा नइ छै।"

बुधनीक बात सुनि सजन कहलक- "कनियाँ, हमरा-अहाँ घरमे कमासुते कनियाँ चाही।"

बुधनी- "हँ भैया! ढोरबा कक्काकँ देखै छथिन, दान-दहेजक लोभे केहेन चमचिकनी पुतोहू उठा कऽ लऽ अनलक जइसँ घरमे सदिखन मुँहे फुल्ला-फुल्ली होइत रहै छै। ओहन पुतोहू हमरा नइ आनि दोथु। हमरा दान-दहेजक लोभ नइ अछि। पुतोहू कमासुत हुअए।"

चारि मास बीति गेल। रमुआक विआहो भऽ गेल। जेहने पुतोहू बुधनी चाहैत छलि तेहने पुतोहू भेलै। मुदा समाज अखनो बुधनीकँ उपराग दइते अछि जे ऐहेन दब खेनाइ बरिआतीमे कतौ ने खेने छलौं। जेहिना खेनाइ देलक तेहिना सुतै लऽ पटेरक पटिया आ नारक आँटीक सिरमा देलक। मुदा दही ओहन खुऔलक जे जिनगीमे नै खेने छलौं।"

परसू देवनकेँ बारह बर्ख पूरि जाएत। देवनक मनमे विचित्र द्वन्द उत्पन्न भऽ गेल। एक दिशि विकासक प्रक्रियामे आगू बढ़ैत समाजक मोह तँ दोसर दिशि दुनियाँ देखैक जिज्ञासा मनमे। तर्क-वितर्क करैत देवन एहि निष्कर्षपर आबि गेल जे आर्थिक विकासक प्रक्रिया गाममे चलि रहल अछि मुदा दुनियाँ देखैक जिज्ञासा तँ बौद्धिक विकासक प्रक्रिया छी। विकास तँ ओहो छी। बिना बौद्धिक विकास भेने आर्थिको विकास तँ रास्ता धऽ कऽ नहियेँ चलत। किऐक तँ जतबे ऊँचाइपर बुद्धि रहत ततबे तक ने आर्थिक विकास हएत। जहिसँ जिनगीक विकास अवरुद्ध भऽ जाएत। मनुक्ख, समाज आ दुनियाँ कत्ते आगू तक बढ़त, ई तँ अखन अनुमानेसँ कहल जा सकैत अछि। जे सहियो आ गलतियो भऽ सकैत अछि। तँ दुनियाँ देखब जरुरी अछि। जहिना वौद्धिक विकासक लेल देवनक मन छटपटाइत तहिना आर्थिक विकासक सुख सेहो शरीरकेँ अपना दिशि खिंचैत। किऐक तँ जहि देवनकेँ बच्चासँ लऽ कऽ किछु दिन पूर्व तक ने भरि पेट अन्न भेटल आ ने भरि देह बस्त्र। ने नीक घरक सुख भेटल आ ने बिसबासू जिनगी। एहि बीच देवनक मन आ शरीर खिंचा-तिरी करैत। कखनो देवन इमहर झुकैत तँ कखनो ओमहर। मुदा जिनगीक संकल्प मनुष्यकेँ सिद्धान्तनिष्ट बनबैत। ई विचार मनमे अबिते देवन बुधनी ऐठामसँ जाइक विचार पक्का कऽ लेलक। पुनः देवनक मनमे आएल जे विकासपुर छोड़ैसँ पहिने नसीवलाल कक्कासँ भेटि कऽ लेब जरुरी अछि। किऐक तँ हुनकेँ पाबि हम अइ गाममे बारह वर्ख हँसी-खुशीसँ बितेलौं। खाली जिनगिये नइ बितेलौं बल्कि बहुत किछु अनुभवो केलौं आ सिखबो केलौं।

दोसर दिन भोरे सुति-उठि कऽ देवन नसीवलाल ऐठाम विदा भेल। गाएकेँ सानी लगा, हाथ धोय, नसीवलाल दरबज्जापर आबि चैकीपर बैसि मने-मन सोचति रहति जे मनुष्य खूब पढ़ि-लिखि लिअए, खूब समृद्धिशाली बनि जाए। परिवारसँ लऽ कऽ देश समृद्धिशाली बनि जाए, मुदा की ततबेसँ जिनगीमे शान्ति आ चैन आबि जाएत? की मनुष्य-मनुष्यकेँ मनुष्य बुझए लगल? की मनुष्यक बीचसँ अपराध मेटा जाएत? की मनुष्यक बीचसँ भोगक प्रवृत्ति समाप्त भऽ जाएत?'' एहि तरहक ढेरो प्रश्न नसीवलालक मनमे उपकए लगल। जहाँ कोनो प्रश्नपर गौरसँ विचार करए लगथि कि घौंदा जेकाँ प्रश्न मनमे उठए लगनि। फेरि मनमे उठलनि जे आइ अमेरिका सभसँ समृद्धिशाली आ शिक्षित देश अछि। अनेको देश ओकरासँ कर्ज लऽ कऽ अपन विकास कऽ रहल अछि। मुदा कि अमेरिकामे चोरी, डकैती, लूट, हत्या, बलात्कार नइ होइ छै। की अमेरिकामे भिखमंगा नइ छै? की अमेरिकामे सभ मनुष्यकेँ मनुष्य बुझल जाइ छै आकि जानवरोसँ बदतर बुझल जाइ छै। की अमेरिकामे माए-बहीनिक इज्जत-आवरु सुरक्षित छै? नसीवलालक मन जत्ते दौड़ैत तत्ते समस्याक बनमे ओनाइत। ने सोझ रास्ता देखैत आ ने भेटनि। मन असथिर करै दुआरे चुनौटीसँ चून आ तमाकुल निकालि चुनबए लगलाह। तमाकुल चुना मुँहमे लेलनि। मन बहटरै दुआरे उठि कऽ टहलए

लगलथि। टहलैत-टहलैत थूक फेकै लऽ मुँह उठौलनि कि देवनकेँ अबैत देखलखिन। देवनपर नजरि पड़ितहि मने-मन विचार करए लगलथि जे ऐहेन-ऐहेन बच्चा, प्रतिदिन कते मरैत हएत तेकर कोनो ठेकान नहि। मुदा एहि बच्चाकेँ धन्यवाद दी जे एत्ते पैघ संकल्पक संग हँसी-खुशीसँ जीवि रहल अछि। आव तँ जुआन भेल। आब तँ ओहन शक्ति ओकरा भीतर जगि चुकल छै जे किछु कऽ सकैए। एते बात नशीवलाल मने-मन विचारिते रहथि कि देवन लगमे आबि पाएर छुवि गोड़ लगलकनि। असिरवाद नसीवलालक मनेमे घुरआइते रहनि तइसँ पहिनहि आँखि देवनक जिनगीकेँ पढ़ए लगलनि। ने किछु देवन बजैत आ ने नसीवलाल। दुनू अप्पन-अप्पन दुनियाँमे। देवनक मन अंतिम असिरवाद तकैत आ नसीवलाल देवनक पुरुषत्व देखैत। उत्साहित मन, विचलित करेजसँ देवन कहलकनि- "काका, काल्हि हम अइ गामसँ चलि जाएब। तँ आइ अंतिम असिरवाद लइले एलौं हेन।"

नसीवलाल- "बौआ, तोरा हम अंतिम असिरवाद अखन कोना देवह? अखन तोरो नमहर जिनगी जिवैक छह आ हमहूँ अखन मरब नहि। एकटा दुनियाँकेँ खंड-पखंड कऽ लोक देश, राज, गाम, टोल बना नेने अछि। मुदा अछि तँ एक्केटा धरती। अही धरतीपर तोहूँ कतौ रहबह आ हमहूँ कतौ रहब। दुनियाँक कोनो कोनमे चाहे तूँ रहअ कि हम, हमहूँ तोरा देखवह आ तोहूँ हमरा देखवह।"

देवन- "कक्का, हम जे असिरवाद लइले एलहुँ, ओ दैहिक छी। बारह बर्खसँ दुनू गोरे एकठाम रहलौं, आब कने हटि हटि कऽ रहब। यएह जे कनी हटब अछि ओहि लऽ असिरवाद मंगै छी।"

देवनक बात सुनि नसीबलाल मुस्की दैत कहलखिन- "असिरवाद कि कोनो मुहसँ बोलीसँ होइ छै ओ तँ हृदयक उद्‌गार छी। तोहूमे तूँ हमरासँ असिरवाद मांगह आ हम परसादी जेकाँ दऽ दिअ, से कहूँ भेलैए। जखन कौल्हुका नियार कऽ नेने छह तँ जरुर जइहह। मुदा आइ ऐठाम रहअ। खा-पीअ भरि मन गप्पो करब। साँझमे चलि जइहह।"

सूर्योदयसँ पहिनहि। सबतुर बुधनी सुतले छलि। गामोक सभ सुतले। देवन उठि कऽ उत्तर मुँहे विदा भऽ गेल। जतबे वस्त्र पहिरने छल, बस ओतबे। ने किछु खाइ लऽ लेलक आ ने कोनो आन वस्तु। ज्ञानक भुख देवनकेँ एते लागल जे कोनो आन वस्तुक सुधिये नहि। मुदा जिनगी जीवैक लूरि ओ सीखि नेने छल। गामक सीमापर पहुँच देवन मने-मन सोचए लगल जे गामो-घर देखि लेलियै आ गाम-घरक लोको देखि लेलियै तँ आब देवस्थान दिशि जाय। एते बात मनमे अबिते देवन देवस्थान दिशि विदा भेल। जाइत-जाइत जखन बहुत दूर गेल तखन देखलक जे सइयो मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर अछि। देखि कऽ अबूह लगि गेलै जे कते देखब। जँ सभकेँ देखए लगब तँ कते बर्ख लगि जाएत। मनुक्खक औरुदे कते होइ छै। ठाढ़ भऽ देवन सोचलक जे छोटका स्थान सभकेँ रस्ते-रस्ते देखि लेब आ बड़का-

बड़का स्थानकेँ भीतर जा-जा देखब। मन्द-मन्द हवा सिहकैत। रौउदोमे ओते गरमी नहि। मुदा अधिक चललासँ थकि गेल। रास्ताक कातेमे एकटा खूब झमटगर गाछ। गाछकेँ उपरसँ निच्चा धरि देखलक तँ अनठिया गाछ बुझि पड़लै। गाछक निच्चामे दूबि पसरल। हरियर कचोर दूबि। मनमे भेलै जे जेमा तँ जेबे करब मुदा थोडे काल ऐठान सुसता ली। गाछक निच्चामे देवन बैसि रहल। कनियेँ-काल बैसल कि मन अलिसाए लगलै। दुबियेपर पइर रहल। पड़ितहि निन्न आबि गेलै। कनियेँ काल पड़ल कि चहा कऽ उठल। निन्न टूटि गेलै। मनमे दू तरहक विचार उठए लगलै। एकटा विचार होइ जे थाकल छी तँ भरि मन अराम कऽ ली। दोसर विचार होय जे जँ सुतिये कऽ समए बीता लेब तँ देखबै की। उठि कऽ ठाढ़ भेल। आगू तकलक तँ झल बुझि पड़लै। दुनू हाथसँ दुनू आँखि मीड़ि कऽ पोछलक। आँखि कऽ पोछितहि साफ-साफ देखए लगल। मुदा सभ कुछ बदलैत बुझि पड़लै। जहिना चाउरसँ भात बनैत, दूधसँ दही बनैत। तहिना दुनियाँक सभ कुछ तेज गतिसँ आगू मुँहे बढ़ैत देखलक। ठाढ़ भऽ देवन हियाबए लगल जे कियो खाधि दिशि आँखि मूनि कऽ दौड़ल जाइए तँ कियो काँटक बोन दिस। कियो आगि दिशि दौड़ल जइ तँ कियो सुन्दर फुलवारी दिशि। फेरि देवनक मनमे द्वन्द उठल। पहिल विचार उठलै जे बिना खाधिमे खसने खाधिक अनुभव कोना हएत? बिना आगिमे गेने आगिक ताप कोना वुझवै? फेरि मनमे उठलै जे जँ खाधिमे खसि पड़ब तँ उपर कोना हएब? जँ आगिमे झड़कि जाएब तँ जीवि कोना? जँ मरिये जाएब तँ दुनियाँ कोना देखवै? असमंजस करैत पुनः बैसि रहल। बैसले-बैसल देवनक मनमे उठए लागल जे मृत्युक रास्तामे जीवन छैक कि जीवनक रास्तामे मृत्यु? सुखक रास्तामे दुख छैक आ कि दुखक रास्तामे सुख? पापक रास्तामे पुण्य छैक आ कि पुण्यक रास्तामे पाप? विचित्र सवाल देवनक मनमे आबए लगल, गुलाबक फूल तोड़ै काल हाथमे काँट गरिते अछि। रास्तापर चलनिहार पिछड़ि कऽ खसिते अछि। मुदा कि काँट गरैक डरे लोक गुलाब फूल नहि तोड़ै। पिछड़ि कऽ गिरै दुआरे लोक चलबे ने करै! अजीव प्रश्न देवनक मनमे उठए लागल। जिनगियेक पाछू तँ मृत्युओ छाँह जेकाँ सदिखन चलिते अछि। मुदा सबहक पाछू संकल्प अछि। जे कियो गुलावक फूल तोड़ैक संकल्प कऽ लेत, ओ काँट गरैक चिन्ता नहि करत। जे आगिक गुण बुझि आगिमे जाएत ओ झड़कैक परवाह नहि करत। तहिना हमरो दुनियाँ देखैक संकल्प मनमे अछि तँ जाबे जीबि तावे चलिते रहब, भलेहीं रास्ता कतबो कठिन किऐक ने हुअए। ई बात देवनक मनमे अबिते फेरि उठि कऽ विदा भेल।

उत्तर दिसक रास्ता देवन धेलक। थोड़े आगू बढ़लापर काँटक बोन देखलक। बोन देखि देवन हियावए लागल जे कोना अइ बोनमे जाएब। चिक्कन रास्ता तँ अछि नहि! हियबैत-हियबैत देखलक जे ने चिक्कन रस्ता अछि आ ने चौड़गर। मुदा खुरपेड़िया रास्ता जरुर अछि जइसँ मालो-जाल आ चरबाहो अबै जाइए। अपना दिशि

देवन देखलक। देखलक जे हमरो तँ किछु अछि नहि मात्र देहेटा अछि। मनमे विसवास जगलै जे हमहूँ टपि सकै छी। आगू चलल। थोड़े आगू गेलापर देवन देखलक जे काँटक बोन पूबे-पछिमे नमती तँ बेसी छैक मुदा चौराइ तँ कमे छैक। बोन टपि गेल। रास्तामे कतौ किछु खेने नहि तँ भूखो लगि गेलै। मुदा अइ बोनमे खाएक की भेटत। भूख कऽ दबैत आगू बढ़ल। आगू बढ़ितहि देखलक जे फेरि दोसर बोन अछि। बड़का-बड़का गाछ-विरीछ ओहि बोनमे। मुदा काँट नहि, फलक बोन। अनेरुआ फलक गाछ तँ सभ रंगक फलक गाछ। एकछाहा नहि। हिया कऽ देवन फल सबहक गाछ देखए लागल। रंग-विरंगक फलसँ लदल गाछ। गाछ देखि मन शान्त भेलै। शान्त चित्तसँ देवन सोचए लागल जे अखन तँ छोटके बनमे प्रवेश केलौंहेँ, तखन तँ एत्ते रंग-विरंगक फल चकचकाइत अछि, जँ अहूसँ आगू बढ़ी तखन तँ ओहूसँ बेसी, पैघ आ सुन्दर-सुन्दर फल भेटत। बड़का-बड़का गाछोक बन भेटत। तेँ जँ पैघ फल प्राप्त करए चाहै छी तँ अइ छोटका फलक बोनकेँ टपि आगू बढ़ए पड़त। फेरि मनमे एलै जे चौबेसँ छबे नइ भऽ कहीं दुबे बनि जाय, तखन तँ सभ गुर गोबर भऽ जाएत। मुदा नहि! जिनगीमे कोनो वस्तुक प्राप्ति, दू तरहेँ होइत अछि। एक वस्तुक प्राप्ति आ दोसर विचारक प्राप्ति। ओना कखनो काल दुनूक प्राप्ति भऽ जाइत मुदा कखनो काल विचारक प्राप्ति होइत, वस्तुक नहि। तेँ जिनगीमे कखनो एहि बातक चिन्ता नहि करक चाही जे प्राप्ति हएत कि नहि। सतत् मनुष्यकेँ आगू बढ़ैक उत्साह मनमे, आ कर्म करैक लेल डेग उठबैक चाही। जिनगीमे हारि ककरा कहबै आ जीत ककरा कहबै? अंधकार प्रकाशक लड़ाइ तँ सदिखन मनुष्यक भीतर चलिते रहैए, जँ एक रुपमे अंधकार हारैए तँ दोसर अहूँसँ पैघ रुपमे आगू आबि ठाढ़ भऽ जाइए। सूर्य सन प्रकाशमान सेहो अंधकारक चद्दैरमे झँपा जाइत अछि। हमरा सबहक बीच सेहो एकटा जबरदस्त भ्रम पसरल अछि जे पैछला जनमक केलहा एहि जन्ममे भेटै छैक। मुदा अहू प्रश्नकेँ दू दृष्टिये देखल जा सकैत अछि। पहिल, पैछला जन्म जे विकासक प्रक्रियामे एक-दोसरमे बदलैत जाइत आ दोसर जे एहि जन्मक पूर्व समए। जेना अफसरक पूर्व समए विद्यार्थीक होइत। डॉक्टरक पूर्व समए सेहो विद्यार्थीक होइत। मुदा हमरा सबहक बीच पहिल बातकेँ मानल जाइत, तेँ ई जबरदस्त भ्रम। जते बात देवन सोचैत तत्ते मन घोर-मट्ठा होइते जाइत। खिसिया कऽ देवन उठि कऽ विदा भेल। मुदा उठि कऽ विदा होइते तामस मिझहा गेलै। शरीरमे नव शक्तिक संचार भेलै। अपन संकल्पकेँ माथपर उठा साहससँ डेग उठवैत आगू बढ़ल।

देवनक पेटक भूख मिझा गेल। मुदा मनक भूख बढ़िते। जाइत-जाइत जखन देवन किछु दूर गेल तँ एकटा विशाल आमक गाछ देखलक। रस्ताक वामा भाग ओ गाछ। गाछमे काँचसँ पाकल धरि फल लटकल। निच्चोमे गिरल। गाछ लग ठाढ़ भऽ देवन सोचए लगल जे ई गाछ अनेरुआ छी वा लगाओल अछि। चारु कात देवन

आँखि उठा-उठा देखए लगल। देवनकेँ बापक सुनाउल एकटा खिस्सा मन पड़ल। बाप कहने रहै जे अपना एको धूर खेत नहि जे गाछी-कलम लगा दितियै। तीरथ-बरथ करै लऽ पाइ नहि, पूजा-पाठ करैक लूरि नहि, मुदा धरमक काज तँ सभकेँ होइ छै। तँ रस्ता कातमे पाँचटा आमक गाछ रोपि देलयै। कहीं ओहने रोपिनिहार तँ ने इहो रोपने अछि। पाँचटा पाकल आम बीछि देवन गाछक अलगलहा सिरपर बैसि खाए लगल। आम स्वादिष्ट। पाँचो आम खा देवन सोचलक जे आइ एतै रहि जाएब। दुबिमे हाथ पोछि, हाथेसँ मुँहो पोछि लेलक। पानिक जरुरते नहि। असकरे देवन ओहि गाछक छाहरिमे पड़ि रहल। गाछक उपरमे अनेको रंगक चिड़ै-चुनमुनी पकलाहा आमो खाय आ अपनामे गपो-सप्प करए। चोरो-नुक्की खेलए आ हँसियो-चौल करए। रंग-विरंगक चिड़ै रहनहुँ, सभ अपन-अपन डारिपर बैसि अपना जिनगीक गप्पो करै। चीत गरे देवन पड़ल। तँ गाछक उपर सभ चिड़ै देखए। अगिला-पछिला सभ जिनगी बिसरि देवन चिड़ै सबहक दुनियामे पहुँच गेल।

किरिण डूबि गेल। आनो-आनो गाछ परक चिड़ै सभ ओहि गाछपर आबए लगल। जना सभकेँ बुझले रहै तहिना सभ अपन-अपन ठौर धऽ लेलक। किछु काल धरि, जाबे साफ रहै, सभ गप्प-सप्प करैत रहल आ जेना-जेना अन्हार पसरैत गेलै तेना-तेना ओहो सभ गबदी मारैत गेल। तेसरि साँझ होइत-होइत सभ चिड़ै सकदम भऽ गेल। देवनकेँ ओ गाछ कल्प वृक्ष जेकाँ बुझि पड़लै। नव-नव विचार, नव-नव जिनगी जीबैक ढंग देवनक मनमे आबए लगल। बिचारेक दुनियाँमे, देवनकेँ कखन निन्न एलै से अपनो ने बुझलक।

पौ फटिते एकटा चिड़ै कऽ नीन टुटलै। निन्न टुटिते ओ सबकेँ जगबए लगल। धीरे-धीरे फरिच्चो होइत गेलै आ चिड़ैइओ सभ जगि गेल। जगितहि सभ चिड़ै, अपन जिनगीक कर्म करए उड़ि-उड़ि विदा भेल। चिड़ै कऽ उड़ैत देखि देवनो उठल। उठि कऽ अपन साँस देह देखलक। पानि तँ रहए नहि जे मुँह-कान धोइत, मुदा हाथेसँ आँखि-कान पोछि विदा भेल। उबर-खाभर रास्ता। कतौ सोझ, कतौ टेढ़। कतौ भौक तँ कतौ खाइध। मगन भऽ देवन सरा-सरि आगू बढ़ैत जाय। रास्तामे जानवरक तँ कमी नहि मुदा मनुक्ख एक्कोटा नहि। किन्तु तइयो देवनक मनमे ने शंका आ ने घबड़ाहट। असकरे देवन आगू बढ़ैत जाय। किछु दूर गेलापर देवन बाजार जेकाँ देखलक। देवनक मनमे सवुर भेल जे आब मनुक्खसँ भेटि हएत। मुदा ओ बाजार नहि कसबा। छोट-छोट कारोवार चलैत। दुनू भाग घर बीच देने रास्ता। गोटे-गोटे घर पुरने ढंगक मुदा गोटे-गोटे टीप टापसँ सजल। मनुक्खोक वएह रुप। मुदा अकसरहाँ लोक रुढ़ि-वादी विचारसँ ग्रसित। किछु गोटे पुरान रुढ़िवादसँ जकड़ल तँ किछु नवकासँ। रुढ़िवादी रहितहुँ सभमे मिलान नहि! एक दोसरकेँ गरिअबैत। सभ-सभकेँ कहैत- “तूँ गलत, तँ तूँ गलत।” रास्ता धेने देवन आगूओ बढ़ैत आ लोकक करतूतो देखैत। थोड़े दूर आगू बढ़लापर देवन एकटा पैघ पीपरक गाछक निच्चामे

एक मनडिल देखलक। मनडिलक आगूमे यात्री सभकेँ रहै लऽ एकटा धर्मशाला सेहो। खाइ-पीबैक सेहो व्यवस्था। भानस करै लऽ एकटा भनसा धर सेहो। मंदिरक चारु कात फुलवारी। छोटका-छोटका फूलक गाछक संग बड़को-बड़को फूलक गाछ। जहिना रंग-बिरंगक गाछ तहिना रंग-विरंगक फूल सेहो गाछमे। पहिने तँ देवन रस्ते परसँ कातेसँ देखलक मुदा मनमे भेलै जे छहर देवालीक भीतर जा कऽ देखिऐ। अनभुआर जेकाँ भीतर प्रवेश केलक। रास्ताक बगलेमे इनार। पानि भरैक लेल ढेकुलमे डोल बान्हल। डोलमे लोहाक जंजीरक उगहनि बान्हल। इनारपर जा देवन डोलमे पानि भरि हाथो-पाएर धोलक, देहपर एक चुरुक छिटियो लेलक आ दोसर डोल पानि भरि पीबियो लेलक। पानि पीबि देवन पहिने मंदिर दिशि बढ़ल। मंदिरक ओसारपर महंथ जीकेँ एक गोटे ताड़क पातक बनाओल बड़का पंखा, पाएरक ओंगरीमे डंटाक निचला भाग लगा, ठाढ़े-ठाढ़ डोलबैत। दोसर गोटे महंथजीक पसारल पाएरमे कड़ूतेलसँ मालिश करैत आ तेसर गोटे महंथजीक बाँहिमे तेल लगा अमठति। महंथजी असुआइल आँखि बन्न केने। देवन महंथजीकेँ देखि मने-मन सोचए लगल जे पकिया साधक जेकाँ बुझि पड़ैत छथि। किऐक तँ सौ बरिखा गाछक सील जेकाँ देह, हाथी पाएर जेकाँ दुनू जाँध आ क्वीनटलिया बोरा जेकाँ पेट महंथजीक। लालबुन्द शरीर, दाढ़ी-केश नमहर-नमहर। तीस-पइतीसटा अगरबत्ती एक्केठाम जरैत। रंग-बिरंगक सेन्टक शीशी, गमकौआ तेलक शीशी महंथ जीकेँ पजराक खिड़कीपर राखल। पुनः देवनक मनमे एलै जे जखन ऐठाम धरि आबि गेलहुँ तखन भगवानक दर्शन आ महंथजीकेँ प्रणाम कइये लेबनि। ओसारसँ आगू बढ़ि देवन दर्शन कऽ महंथजीकेँ ठाढ़े-ठाढ़ प्रणाम केलक। प्रणाम सुनि महंथजी आँखि तकलनि। एक टकसँ देवनकेँ देखि महंथजी मने-मन गुम्हरैत, जे पाएर छुवि किऐक ने गोड़ लगलक। देवन अपना ढंग अपने लोक। ओ मने-मन विचारए लगल जे हमरा कोनो ऐठाम रहैक अछि जे खुशामद रहत। राही छी रास्ता धऽ कऽ एलौं, कनीकालक बाद चलि जाएब। मने-मन महंथजी गुम्हरितहि रहथि देवन बाहर चलि आएल। महंथजी पुजेगरीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन- ''अखन जे एकटा दर्शनार्थी आएल छल, ओ हमरा उचक्का बुझि पड़ल तँ ओकरा जल्दी हातासँ निकालू।''

महंथजीक आदेश सुनि पुजेगरी देवनकेँ ताकए लागल। मंदिरक चारु कात जे फुलवाड़ी लगाओल छलै देवन देखै लऽ चलि गेल। पुजेगरी धरमशालामे तकैत, देवन फुलवाड़ीमे फूल देखैत। एक गोटे अनठिया बवाजी कैँ पुजेगरी पूछलक- ''अखन कियो अनठियो आएल छल?''

ओ वेचारे एक टकसँ पुजेगरी दिशि ताकि, बिना किछु बुझनहि-सुझनहि, कहि देलक- ''जे आएल छल से चलियो गेलथि। नवका एक्को गोटे नइ छथि। हम तँ परसुऐ एलौं आ आरो जे सभ छथि ओ पहिनहिसँ छथि।''

चोट्टे पुजेगरी घुरि महंथजी लग जा कहलकनि- ''ओ चलि गेल।''

देवन फूल सभकेँ तजबीज करए लगल। किछु फूल सुगंधित आ किछु नहि किछु देशी फूल किछु विदेशी। सौँसे फुलवाड़ी देखि देवन मंदिरक पाछुमे जे पीपरक गाछ रहए, ओकरा देखए लगल। गाछ पुरान बुझि पड़लै। किऐक तँ मोटका-मोटका डारि सभ रहए। गाछो नमहर। मुदा गाछक एक सुखल आ दोसर भाग हरियर। गाछ देखि देवन सोचए लगल जे ऐना किअए छै, जे अदहा सुखल छै आ अदहा जीयल। छगुन्तामे पड़ि गेल। तत्-मत् करैत देवन गाछक जड़ि लग पहुँचल। गाछक जड़ियोमे बुझि पड़ै जे एक भागसँ सुखल छै आ एक भागसँ जीवित छै। मुँहपर हाथ लऽ देवन विचारए लगल। किछु कालक बाद देवनक मनमे एलै जे भरिसक गाछक जड़िमे गराड़ लगल छै। गराड़ मनमे अबिते ओ एकटा सुखल मजगूत ठौहरी लऽ जड़िमे खोधिअबए लगल। चारिये आंगुर खोधिऐलक कि एकटा मोटगर गराड़ कऽ गाछक खोंइचा खाइत देखलक। खोंइचा खाइत देखितहि देवनक मनमे खुशी आएल। खुशी अबितहि देवन ओही ठौहरीसँ गराड़केँ निकालि कात दिशि फेकलक। माटिपर खसिते गराड़केँ कौआ लऽ कऽ मंदिरेक गुम्बजपर बैसि कऽ खाए लगल। गराड़केँ फेकि देवन फेरि गाछक जड़िकेँ खोधिअबए लगल। मुदा जैड़िक माइटो सक्कत रहए आ गाछक सिरो सभ रहए तँ ठौहरीसँ खोध्आइले ने होय। देवन छोड़ि इनारपर जा हाथ-पाएरमे लगल माटि कऽ धोलक। इनार परसँ सोझे आबि धरमशालामे बैसि गेल।

कनिये कालक बाद रसोइया आबि, धरमशालामे बैसल आदमी सभकेँ, गनए लगल। निद्वन्द्व देवन। कोनो गम नहि। बगलमे बैसल दाढ़ी-केश बढ़ौने बवाजीकेँ पूछलक- “अहाँ कते दिनसँ बवाजी छी?” देवन मुँह देखि ओ बवाजी कहए लगल- “बौआ, अहाँ तँ जुआन-जहान छी। मुदा जखन पुछलौँ तँ कहबे करब। हम गिरहस्त परिवारक छी। चारिटा बेटा अछि। सभकेँ विआह-दुरागमन करा देलियै। सभकेँ धियो-पूतो छै। हमर स्त्री मरि गेलि। चारु बेटा बराबरि कऽ खेत बाँटि लेलक। हमरा सझिये रखलक। साल भरि तँ बड़बढ़ियाँ तीन-तीन मास खुऔलक। मुदा दोसर साल चढ़िते सभ अनठा देलक। कियो खाइले देबे ने करए। दू-चारि दिन, अपन जे हित-अपेछित सभ रहए ओकरे ऐठाम खेबो केलौँ आ बेटाक किरदानी कहबो केलियै। ओहो बेचारा सभ आबि-आबि कहलकै। मुदा ककरो बातक मोजर नइ देलकै। घरसँ निकलैत मोह लगए। मुदा की करितौँ। गामेक एकटा बवाजीक संग धऽ लेलौँ। घुमैत-घामैत ऐठाम छी।”

देवन- “ऐठाम कते दिन रहबै?”

-“जाबे रहए देत ताबे रहब। जखन भगा देत तखन कोनो दोसर असथानपर चलि जाएब।”

देवन चुप भऽ गेल। मुदा मनमे ढेरो सवाल उठए लगलै। ओहिठामसँ उठि इनारपर जा कऽ वैसि रहल। इनारक लहरामे ओंगठि मने-मन सोचए लगल जे सिर्फ ऐहेन परिस्थिति अही वेचाराटा कें नहि भेल। वल्कि ऐहेन परिस्थिति तँ सभ गाममे

होइ छै। तेँ ऐहेन समस्याक लेल समाजकेँ सोचए पड़त। सिर्फ सोचए नहि पड़त बल्कि समाधानक लेल किछु करैयो पड़त। गामे-गाम निःसहाय औरत, निःसहय पुरुख आ अपलांग-विकलांक सभ अछि। जे अछैते औरुदे काहि कटैए। तेँ सभ गाममे, ऐहेन लोकक लेल, सार्वजनिक तौरपर व्यवस्था करए पड़त। एहि समस्या बीच देवनक मन ओझरए गेल। सोचैत-सोचैत सुति रहल। खेबो ने केलक।

रातिक बारह बजे। हवाक सिहकी चलक। हवाक सिहकीसँ देवनकेँ जाड़ हुअए लगलै। जाड़ होइतहि निन्न टूटि गेलै। निन्न टुटितहि इनारपर सँ उठि धरमशालाक कोनमे आबि कऽ बैसि गेल। हवा जोरे होइत गेलै। देवन धरमशालासँ निकलि बाहर आबि अकास दिशि तकलक। अकास दिशि देखि बुझि पड़लै जे अन्हर-बिहाड़ि आओत तेँ धरमशालासँ नीक बहरेमे रहब हएत। पुनः इनारक जगत निचला लहरापर आबि कऽ बैसि गेल।

महंथजी, पुजेगरी मन्दिरमे सुतल। हवाक ठंढ़सँ महंथजीक निन्न आरो कड़गर भऽ गेल। किऐक तँ मंदिर तीनि भागसँ घेरल। मात्र एक्के भाग अबै-जाइले खुजल। फोफ कटैत महंथजी आ पुजेगरी। संयोगसँ कर घुमै काल महंथजी वामा हाथ महंथजीक छातीपर चल आएल। तेँ सपना सपनाए लगल सपनामे महंथजी देखैत जे हम रथपर चढ़ि स्वर्ग जा रहल छी। देवलोकक रथ। बड़का-बड़का घोड़ा ओहि रथमे जोतल। अप्सरा सभ नचैत। देवलोकक दूत सभ रथक आगू-पाछू अरयातने चलि रहल अछि। जबर्दस्त अन्हर-बिहाड़ि उठल। महंथजी निन्न भेरि। बिहाड़िमे मंदिरक पैछला पीपरक गाछक सुखलाहा भाग टूटि कऽ मंदिरपर गिरल। ओना माटिक तर तक गाछ सूखल, मुदा गाछक जड़ि चिराइल नहि। दू फेड़ा लगसँ टूटल। विशाल डारि। मंदिरपर डारिकेँ खसितहि पहिने मंदिरक गुम्बज टूटल तकर बाद सौँसे मंदिर टूटि कऽ गिर पड़ल। पुरान मंदिर तेँ टूटैमे देरियो नइ लगलै। महंथजी निन्न भेरि, तेँ मंदिरकेँ गिरैत बुझबे ने केलनि। तरमे महंथ जी आ पुजेगरी तइ उपर मंदिरक ओसाराक छत आ तइ उपर गाछक मोटका डारि। महंथजी केँ उपर, जखन सभटा टूटि कऽ लदा गेलनि तखन निन्न टूटलनि। मुदा निन्न टूटिनहि की? थकुचा-थकुचा देह भेल। मात्र साँसेटा चलैत। सेहो अवरुद्ध भऽ गेलनि। दुनू गोटे महंथ आ पुजेगरी ओहि तरमे दबि कऽ परान त्याग केलनि। मुदा तइयो अन्हर कमल नहि। ओना आन दिनक अन्हर ओहन होइत छल जे अबै छल आ लगले चलि जाइ छल। मुदा ओझुका अन्हर बड़ी खान धरि रहल।

धरमशाला मंदिरसँ हटल। चारु कातसँ खुलल तेँ हवाक झोंक एक भागसँ पइसे आ दोसर भागसँ निकलि जाए। धरमशाला गिरल नहि, बँचि गेल। इनारपर बैसल-बैसल देवन सभ कुछ देखैत मुदा ने हल्ला केलक आ ने उठल। अन्हर चलि गेल। मुदा पानि-पाथर नइ खसलै। अन्हरकेँ जाइते धरमशालाक सभ निकलि हल्ला करए लगल। जे मंदिर गिर पड़ल। महंथजी आ पुजेगरी ओहि तरमे दबाएल छथि।

मुदा अन्हर तँ सिर्फ असथाने भरि नहि आएल छल, सभ अपन-अपन उधिआएल घर-अंगना सम्हारैमे लागल, तँ कियो ने आएल।

पौ फटिते देवन विदा हुअए चाहलक मुदा फेरि मनमे एलै जे जाइसँ पहिने कने महंथजीक अन्तिम दर्शन कऽ लेब उचित हएत। रुकि गेल। मुदा अन्हारक दुआरे ने अखन धरि मंदिरक छज्जी परसँ गाछक डारि हटाओल गेल आ ने महंथजी छज्जी तरसँ निकालल गेल छेलाह। किएक तँ डारिओ छोट-छीन नहि जे दू-चारि गोटे धीचि कऽ कात कऽ दैत। बिना कुड़हरिसँ कटने डारि हटैबला नहि। जे अन्हारमे कोना होइत। डारिक तरमे मंदिरक छज्जी आ मंदिरक छज्जी तरमे महंथजी आ पुजेगरी। पुनः देवनक मनमे एलै जे जहि महंथजी आ पुजेगरीकेँ देखैले अँटकल छी, ओ जीवित हेताह कि मुइल? तर्क-वितर्क देवन करए लगल। तर्क-वितर्क करैत देवनक मनमे एलै जे जखन मंदिरे गिर पड़ल महंथ आ पुजेगरी कोना बँचत। अनेरे हम कोन भाँजमे पड़ल छी। ऐठामसँ रबाना भऽ जाय ऐठाम जतेखिन रहब ततेखिन असमसानमे रहब हएत। असमसानमे रहि अनेरे किअए जिनगी गमाएब। ओह, जते जल्दी हुअए तते जल्दी ऐठामसँ विदा भऽ जाय। देवन विदा भऽ गेल। रास्तामे थोड़े दूर गेलापर देवनक मनमे उपकल जे मृत्यु की थिक?

आइ धरि देवनक मनमे ऐहन प्रश्न कहियो आइले ने छल, किएक तँ अखन धरि आँखिसँ जे मृत्यु देखैत छल, ओकरे मृत्यु बुझैत। मुदा आइ, महंथजीक मृत्यु देखलापर, देवनक मनमे एहि दुआरे प्रश्न उठल जे लोकक मुँहक सुनल बात झूठ बुझि पड़लै। लोकक मुँहे सुनैत आएल छल जे जेहन करत ओकर मृत्यु ओहने हेतइ। मुदा महंथजी आ पुजेगरी तँ भरि दिन भगवानेक मंदिरमे रहि, हुनकेँ टहल-टिकोरा करैत, तखन ऐहेन मृत्यु की थिक ई प्रश्न उठितहि ऐवन सोचए लगल जे मृत्युकेँ जीवनक पूर्व पक्ष कहबै आकि उत्तर पक्ष? पूर्व पक्ष एहि दुआरे जे नीक विचारक जन्म होइतहि पुरान विचारक मृत्यु भऽ जाइत अछि। तहिना नव जीवक जन्म होइतहि पुरना जीवन समाप्त भऽ जाइत छैक। एहि द्वन्द्वमे देवनक मन नीक जेकाँ ओझरा गेल। पुनः दोसर प्रश्न मनमे उठलै जे हमर संगीत शास्त्री लोकनि सभ गीतिकेँ अवसर विशेषक आधारपर गीतक निर्माण केलनि मुदा सोहर आ समदाउनकेँ किऐक जन्मोत्सवोमे आ मृत्योत्सवोमे मानि लेलखिन। जबकि दुनू दू अवसर छी। एते बात मनमे अवैत-अवैत देवनक मन घोर-मट्ठा भऽ गेलै। जहिना नसेरी अपने धुनियेँ रास्ता कटैत तहिना देवनो आगू बढ़ैत जाय। चलैत-चलैत देवन बिन खेने-पीने, दुपहर तक चलिते रहल। ने भूख दिशि मन जाए आ ने पियास दिशि। जेना कोनो सुधिये नहि। जाइत-जाइत देवन एकटा फूलक गाछ लग पहुँचल। फूलक गाछ लग पहुँचते देवनक भक्क खुजल। रुकि गेल। ओहि फूलक गाछकेँ निग्हारि-निग्हारि देखए लगल। फूलक गाछ देखि देवनक मुँहसँ अनायास निकलल- ''ऐहेन फूल तँ आइ धरि नहि देखने छलौं।'' सुन्दर आ सुडौल गाछ। जगह-जगह डारि फुटल। जेहने गाछक धड़ चिक्कन तेहने

डारिओक। हरियर-हरियर, चैड़गर-चैड़गर पात नमहर-नमहर, लाल-लाल फूल। मखानी गुलाब जेकाँ फूलसँ लदल गाछ। एकान्त जगह। ओहि फुलक गाछ देखि देवन मने-मन सोचलक जे अखन भरि दुपहर एतै रहब। रहैक विचार कऽ ओ फूलक निच्चामे बैसि रहल। मन्द-मन्द शीतल हवा बहैत बारह बजेक समए। तेज धूप। गरमीसँ वायुमंडल गर्म होइत जाइत। राही-बटोही, जहाँ-तहाँ रुकि-रुकि, दुपहर वितबैक ठौर पकड़ि लेलक। भूख-पियास देवनक मेटा गेलै। गाछक निच्चेमे ओ चीत गड़े सुति फूल सभकेँ देखए लगल। आँखि फूलेपर रहै मुदा मन अपन जिनगीक उद्धेश्यपर पहुँच गेलै। जिनगीक उद्धेश्यपर मनकेँ पहुँचते देवन सोचए लगल जे मनुष्यक जिनगीक रास्तामे कहियो फुलवारी भेटैत तँ कहियो काँटक बोन। दुनूक बीच होइत जिनगी चलैत। मुदा काँटक बोन देखि मनुष्य घवड़ा जाइत जबकि फुलवारीमे सतत रहैक कोशिश करैत। मुदा फूले गाछमे काँटो होइत आ काँटे गाछमे फूलो। तखन मनुष्य कोना अगबे फूलवाड़ीमे रहि पाओत।

चारि बजि गेल। राही-बटोही अप्पन-अप्पन रास्ता-बाट धऽ चलए लगल। राही-बटोहीकेँ देखि देवनोक मनमे एलै जे सुतलासँ तँ नहि हएत, जँ किछु हएत तँ चलनहि। जँ आइ चलि कऽ एहि फूलक गाछ लग नहि पहुँचल रहितहुँ तँ ऐहेन फूलक गाछसँ दर्शन कोना होइत। उठि कऽ बैसि हियाबए लगल कि एकटा बटोहीकेँ उत्तरसँ दछिन मुँहे अबैत देखलक। बटोहीकेँ देखि देवनक मनमे एलै जे भरिसक हमरे जेकाँ इहो बटोही अछि किअए तँ ने देहमे अंगा देखै छियै, आ ने माथपर कोनो वस्त्र। सिर्फ हाथमे एकटा छोटे मोटरी लटकौने अछि। मुदा उत्तरसँ आबि रहल अछि तँ उत्तर दिशाक रास्ता तँ जरुर वुझल हेतैक। किऐक तँ हमरो ओम्हरे जेबाक अछि। अबैत-अबैत बटोही ओहि फूलक गाछ लग आबि रुकि गेल। बटोहीक नजरि देवनपर आ देवनक नजरि बटोहीपर। मुदा दुनूमेसँ कियो ककरो नहि टोकैत। दुनू मगन। अपना-अपना तालमे दुनू बेहाल। मुदा देवनक मनमे एलै जे हम बच्चा छी आ ओ बटोही चेतन छथि तँ हमर पूछब उचित हएत। देवन ओहि बटोहीकेँ पूछलक- "दादा, हमरा उत्तर मुँहे जेवाक अछि तँ अपने रास्ताक संबंधमे किछु बता दिअ?"

देवनक बात गौरसँ बटोही सुनि कहलक- "बौआ, तूँ भूखल वुझि पड़ै छह, किऐक तँ तोहर मुँह सुखाइल छह, तँ पहिने खा लाए। हमरो ई मोटरी भारी लगैए। तोरो पेट भरि जेतह आ हमरो जान हल्लुक भऽ जाएत।"

बटोहीक बात सुनि देवन किछु नहि बाजल। बटोही बुझि गेलै जे वेचारा भुखल अछि। खाइक इच्छा भऽ रहल छै तँ ने किछु बाजल। उठि कऽ देवन लग आबि मोटरी आगूमे दऽ देलक। देवन मोटरी खोलकक तँ देखलक जे खाइ-पीबैक ओहन विन्यास सभ अछि जे आइ धरि खाइक कोन बात जे देखनहुँ नइ छलिऐक। भरि पेट खा देवन पुनः पुछलक- "दादा, अपने आगूक रास्ता उत्तर दिशाक बता दिअ?"

बटोही- "आगूक रास्ता बुझि कऽ कि करबहक?"

-"दादा, दुनियाँ देखैक खियालसँ घरसँ निकलल छी, तँ दुनियाँक देखैक लिलसा मनमे अछि।"

मुस्कुराइत बटोही कहए लगल- "दुनियाँ किछु ने छी। माटि, पानि, अकास, आ हवाक बनल एकटा गोला छी। अही सभसँ जनमि-जनमि, जइ दुनियाँकेँ देखै छी, ई ठाढ़ भेल अछि। मुदा सौँसे एक रंग नहि भऽ एक-भगाह भऽ गेल अछि। एक भाग निरोग अछि आ दोसर भाग सड़ल अछि। तहूमे सभसँ अजीब बात ई अछि जे दुनियाँक बीचोबीच एकटा रेखा खिंचल अछि, जकरा लोक विषुवत रेखा कहै छै। रेखा पूबे-पछिमे अछि। रेखाक दुनू भाग समान दूरीपर एक्के रंग रौद-वसात आ उपजा-बाड़ी होइ छै। गाछो-बिरिछ एकरंगाहे अछि। मुदा सभ कुछ एक रंग रहितहुँ, मनुक्ख दू रंग अछि। एक भागक अगुआइल अछि आ दोसर भागक पछुआइल। तहिना देखवहक जे दुनियाँक मनुक्खो दू दिशि भऽ गेल अछि। एक भागक खूब पछुआइल अवनतिक शिखरपर अछि। मुदा सभ किछुमे विषमता रहितहुँ एक चीजमे समता अछि। ओ थिक नंगापन। जे अगुआइल मनुक्ख अछि ओ देखैमे दूध जकाँ उज्जर धप-धप, गाए-महिसि जकाँ ओकर देह आ हाथ-पाएर छै। खाइओ-पीवैक आ रहैओक व्यवस्था नीक छैक। मुदा ओ महिला सभ जे कपड़ा पहिरैत अछि, ओ ओहन झकझकौआ मेही होइ छै जे देखलासँ वुझि पड़तह जे कपड़ा पहिरनहि नइ अछि। ओहिना सौँसे देह देखवहक। तहूमे जँ कतौ देखैमे झल बुझि पड़ह तँ चश्मा लगा लिहह। तहिना दोसर दिशि देखबहक जे मनुक्खकेँ गरीबी ओहि रुपे जकड़ने अछि जे ने भरि पेट अन्न भेटै छै आ ने देहमे वस्त्र। तँ अभावे ओ सभ नांगट रहैए। ने खाइकेँ ठेकान आ ने रहैकेँ। ने वस्त्रक कोनो उपाए। तँ नांगट रहैए। देहक हाड़ चारि लग्गी हटलेसँ गनि लेबहक। कंकाल जकाँ ओकर देह। कारी खट-खट रंग, साबे जकाँ केश बेचारी सबहक रहै छै। मनुक्खक समाजमे वस्त्रकेँ परदा मानल गेल अछि, आ अहीसँ इज्जत-आवरु देखल जाइ छै। मुदा एकटा सवाल पूछै छिअह, कहअ जे दुनू -जकर चर्चा उपर भेल- औरतमे ककर इज्जत-आबरु बँचल छै आ ककर नहि?"

बटोहीक बात सुनि देवन धड़फड़ा कऽ बाजल- "जकरा देहपर वस्त्र छै ओ इज्जतदार।"

बटोही- "धुः बूड़ि, एतबो ने बुझै छहक। अच्छा कोनो बात ने। तूँ अखन बच्चा छह तँ नइ वुझै छहक। देखहक, लोके-लाज दुआरे ने लोक कपड़ा पहिरैए। किऐक तँ मनुक्खमे बुद्धि-विवेक होइ छै। तँ किछु अंगकेँ गुप्त अंग मानल गेल अछि। जेकरा देहपर वस्त्र छै ओकरापर आँखि गड़ा कऽ देखिनिहोरो बेसी अछि। जेकरा अंगकेँ वस्त्र नहि झँपैत छैक। मुदा जेकरा देहपर वस्त्र नहि छैक, नरकंकाल जकाँ अछि, ओकरापर नजरिये केकर पड़त जे लोक-लाजक प्रश्न उठतै। आब कहअ जे केकर इज्जत-आबरु बँचल अछि जेकर बँचल छैक सएह ने इज्जतदार।"

बटोहीक बात सुनि देवन मूड़ी डोलबैत हूँ-ह कारी भरलक।

बटोही- "आब दोसर बात सुनह। दुनियाँमे जते मनुक्ख अछि, सभ मनुख छी। सभकेँ एक्के रंग सभ अंग छै। हाथ, पाएर, मुँह, नाक, कान इत्यादि। सभ अन्न खाइए, पानि पीबैए, कपड़ा पहिरैए, रौद-वसात, पानि, पाथर, जाड़सँ बँचै दुआरे घरमे रहैए। अस्सक पड़लापर दवाइक जरुरत होइ छै। बुद्धिक दुआरे पढ़ैए। मनोरंजनक दुआरे नचवो करैए आ गेबो करैए। तँ सबहक लेल एक रास्ता हेबाक चाही। नीक रास्ताकेँ धर्मक रास्ता मानल गेल अछि आ अधला रास्ताकेँ पापक। तखन आब तोँही कहह जे भदबरिया बेंग जकाँ एते सम्प्रदाय किएक अछि? एक काजक लेल रास्ता अनेको भऽ सकैत अछि, मुदा सभसँ नीक रास्ता तँ एक्केटा हएत। जखन एक्केटा रास्ता नीक होइत, तखन एते रास्ताकेँ कोन जरुरत। तइले लोक एते मारि-मरौबलि, गारि-गरौबलि किअए करैए।"

मूड़ी डोला देवन समर्थन केलक। देवनक मूड़ी डोलौनाइ आ मुँहक रुखि देखि बटोही मनमे खुखी होय। मनमे खुशी एहि दुआरै होय जे हम्मर बात देवनक हृदयमे चुभि रहल अछि। ओरो आहलादित होइत बटोही कहए लगल- "बौआ, अजीव अछि दुनियाँ। कहए तँ बहुत चाहै छी मुदा तोहूँ अनतै छह आ हमहूँ छी। तोहूँ कतौ जा रहल छह आ हमहूँ बाटेमे छी। मुदा तइओ जतबे समए अछि तेहिमे किछु बुझि लाए किऐक तँ जिनगीमे काज औतह। तहूमे अखन तूँ बच्चा छह बहुत दिन एहि धरतीपर जीवैक छह। जहिना घर बान्हैक लेल एक्के ढ़ंगसँ अनेको घर बनैत, एक्के किताब पढ़लासँ अनेको लोककेँ ज्ञान होइत तहिना तँ जिनगीक आवश्यकताक लेल एक्के लूरिसँ काज चलि सकैए। तखन एते रंग-बिरंगक चालि किअए महंथ -सम्प्रदाय चलौनिहार- धरबैत अछि। जना देखहक जे कते अजगुत बात अछि जे कियो खा कऽ पूजा करै लऽ कहैए तँ कियो भुखले। तहिना कियो दाढ़ी-केश बढ़ा पूजा करैत अछि तँ कियो दाढ़ी-केश कटा कऽ। कियो माटिक भगवान बना, तँ कियो पाथरक तँ कियो ओहिना -बिना भगवानक मूर्ति बनौने। तहिना कियो मन्दिर बना, तँ कियो मस्जिद बना, तँ कियो गिरिजाघर बना, नहि जानि कते रंगक देवालय होइत, तँ कियो ओहिना -बिना मंदिर, मस्जिदेक- कियो भगवानकेँ परसाद चढ़बैत तँ कियो बिना परसादेक पूजा करैत। कियो ताड़ी-दारु पीबि, माछ-माउस खा पूजा करैत तँ कियो ओकरा अधला कहि निन्दा करैत। कियो नारीकेँ मुक्तिक मार्गक बाधा बुझैत तँ कियो नारियेक पूजाकेँ उद्धारक रास्ता बुझैत। अजीव अछि ई दुनियाँ आ अजीव अछि अहि दुनियाँक लोक। कियो वेश्याकेँ अधला बुझैत तँ कियो पूजा काल वेश्या नचवैत। कियो-ढोलक-झालि, मजीरा बजा कीर्तन-भजन करैत तँ कियो ओहिना बिना साजे-बाजक।"

जहिना कोनो खेलौना वा पढ़ै-लिखैक कोनो वस्तु लऽ बच्चा सभ अपनामे छीना-छीनी करैत तहिना देवनक मनमे, हुअए लगल। देवनक मुँहक बिजकब देखि बटोही मने-मन सोचए लगल जे वेचारा द्वन्द्वमे पड़ि गेल अछि। कखनो मन गुड़कि

कऽ इम्हर तँ कखनो ओमहर होइत। मन असथिरे ने भऽ रहल छैक। कने-काल बटोही गुम्म भऽ देवनक भावनाकेँ अँकए लगल। देवनक मन कखनो खुश होइत तँ कखनो चिन्तित भऽ जाइत। कखनो मुँहसँ हँसी निकलैत तँ कखनो कनै सन भऽ जाय। मुदा बटोही मने-मन हँसैत। मुदा मुँहसँ बाहर हँसीकेँ निकलै नहि दैत। बटोहीक मनमे एलै जे आब विषय बदलि दी। बजए लगल- ''बौआ, देखै छहक ने जे ककरो घरमे अन्न सड़ैत अछि तँ कियो भुखले रहैए। ककरो गामक-गाम खेत छै तँ ककरो घरो बन्हलै नहि छैक। ककरो धरमे कपड़ा सड़ै छै तँ कियो नंगटे रहैए। कियो कोठा भीतर कोठा बनौने अछि तँ कियो गाछक निच्चामे रहैए। ककरो बोरे-बोरा नून तँ ककरो रोटियोपर ने होइत। कियो दबाइकेँ सड़ा-सड़ा पानिमे फेकैत तँ कियो दवाइ बिना मरैत अछि। कते कहवह पहिनहि कहि देलियह जे अइ दुनियाँक एक भाग निरोग अछि तँ दोसर भाग सड़ल छै।''

देवनक चेहरा उदास हुअए लगल। मुँह मलीन, आँखिक ज्योति बदलल, मुदा ज्ञानक भुख मनमे जगए लगलै। मने-मन देवन सोचए लगल जे जखन एतबे दूर ऐलापर एते भेटल तँ एहिसँ आगू गेलापर कते भेटत। ई बात मनमे अबिते देवन बटोहीकेँ कहलक- ''दादा, जखन एते दूर आबिये गेलौं तँ अगिला रास्ता बता दिअ। ओहो देखनहि घुमब।''

मुस्कुराइत बटोही कहए लगल- ''ऐठामसँ कोस भरिपर मनपुर अछि। जखन ओइठाँ पहुँचबह तँ देखबहक जे किछु गोटे पल्था मारि बैसल अछि आ मने-मन जिनगीक हिसाब जोड़ैत अछि जे जते समए खटै छी ओहिसँ जे उपारजन होइए, ओहिक भीतर अपन जिनगीकेँ राखि जीबी। आ सएह करबो करैत अछि। मुदा भेड़िया-धसान लोककेँ देखवहक जे खड़क बैलून जेकाँ हवामे उड़ैत अछि आ कते फुइट जाइत अछि आ कते गिरैत अछि, तकर कोनो ठेकान ने छैक। तँ तू ओहि बैसलाहा लोक सबहक दर्शन करिहह। ओकर दर्शन सीखि जिनगी बनबिहह। जिनगी की थिक? जिनगी तँ वएह छी जे मनुक्ख बनि जिनगी जीबि लेब छी। मनपुरसँ कोस भरि आगू बुद्धिपुर अछि। जखन बुद्धिपुर पहुँचबह तँ देखवहक जे एहिठाम जत्ते लोक अछि सभ जुआरी अछि। भरि दिन भरि राति जुए खेलाइत अछि। ओ जुआ खेलाइक पासा तीन तरहक अछि। एक तरहक पाशा अछि जहिमे बाप-बेटा खेलाइत अछि। खेलाइत-खेलाइत अपनामे गारि-गरौबलि करए लगैत अछि। बाप बेटाकेँ कहै छै- ''सार तूँ बेइमान छैँ?'' तहिना बेटो बापकेँ कहै छै जे- ''सार, तूँ बेइमान छह?'' देखबहक जे बाप-बेटा सार-बहानचोद करैए। मुदा ओहिठाम बेसी नहि अँटकियहह। देखि कऽ आगू बढ़ि जइहह। किऐक तँ ओ सार दुनू चोट्टा छी। जहिना छोटका माछक बोर दऽ बंसी खेलेनिहार, बड़का माछ मारि लइए तहिना ओ सभ छोटका गारि देखा फंसा लेतह आ गारि पढ़तह। तँ देखि कऽ तुरत हटि जइहह। दोसर पासा देखबहक जे भाइ-भाइ आमने-सामने बैसि जुआ खेलाइत अछि। खेलाइत-खेलाइत देखवहक जे दुनू

एक-दोसर कऽ बेइमानी करए लगैत अछि। जहिसँ गारि-गरौबलि, मारि-मरौबलि करए लगैत अछि। मुदा ओहो दुनू नमरी चोट्टा छी। तँ ओकरो देखि कऽ लगले हटि जइहह। जँ अँटकवह तँ धोखामे पड़ि जेबह। तेसर पासा जे देखवहक ओ असली पासा छी। ओहिमे देखबहक जे दू परिवारक लोक जुआ खेलाइत अछि। कसमकस खेल ओहि पासापर होइत छै। दुनू खेलाड़ी सभ तरहक शक्ति लऽ कऽ खेलाइत अछि। गारिक जबाव गारिसँ, मारिक जबाव मारिसँ, लाठीक जबाव लाठीसँ आ बम-बारुदक जबाब बम-बारुदसँ देल जाइ छै। ओहि पासाकेँ देखि मनमे हेतह जे हमहूँ एक भाँज खेलि ली। ओहिठाम अटकि जइहह। जते दिन देखैक मन हुअ-अ तते दिन ओतइ रहिहह।"

बटोहिक बात सुनि देवनक मनमे खुशी भेल। मुस्की दैत पूछलक- "ओइठिनसँ कियो भगाओत तँ ने?"

बटोही- "हँ, एक पासाक खेलाड़ी भगौनिहार अछि मुदा दोसर रखनिहार। जे बचैनिहार हेतह। ओकरा भाय बुझि पीठिपर रहिहक। ओ जे जीतत तेहिसँ तोरो लाभ हेतह। ओ सिर्फ अपनेटा लऽ नहि खेलैत अछि तोरो लऽ खेलैत अछि।"

बटोही- "ओहिठाम देखि आगू बढ़ि जहिहह। ओइठिनसँ विवेकपुर कोसे भरि आगू अछि। जखन बुद्धिपुरसँ आगू बढ़वह तँ विवेकपुर लगे बुझि पड़तह। जाइ कालमे सेहो नइ बुझि पड़तह। मुदा बिना विवेकपुर गेने वापस नइ घुमिहह। जखन विवेकपुर पहुँच जेबह तखन विवेक बाबासँ भेटि हेतह। विवेके बाबाकेँ लोक ज्ञानेश्वर, धर्मगुरु, जगतपिता सेहो कहैत छनि। ओहिठाम देखवहक जे रंग-बिरंगक ढेरो घोड़ा अछि। एकसँ एक सुन्दर, एकसँ एक तेज चलैबला। ककरो बान्हल नइ देखबहक। ओहिना बिना बन्हले सभ रहैए। विवेके बाबाक टहलू हम छी। टहलि-टहलि दुनियाँ देखै छी।"

देवन- "ऐठाम किअए आइल छलौं?"

बटोही- "अही फुलकगाछकेँ देखै लऽ आइल छलौं। हँ, जे कहै छेलियह से सुनह। ओहिठाम पहुँचते विवेक बावा भेटि भऽ जेथुन। घोड़ा सभ हीं-हीआइत देखबहक। अनेरे लगमे आबि-आबि चारु भरसँ घोड़ा सभ घेड़ि लेतह।"

देवन- "घोड़ा बदमाशियो करै छै?"

बटोही- "नहि। हँ तखन एकटा बात जरुर छै जे गोटे-गोटे घोड़ा ऐहेन अछि जे घोड़ी देखि कऽ थोड़े रस्ता काटि दइ छै, मुदा घूरि कऽ फेरि रस्तापर चलि अबैए।"

साँझ पड़ि गेल। मुदा अन्हार नइ बुझि पड़ै। बजैत-बजैत बटोही किमहर चलि गेल से देवन देखबे ने केलक। देवनो तँ असकरे चलनिहार तँ मनमे कोनो शंके ने होय। मनमे होय जे आइ एतै रहि जाइ। फेरि मनमे होय जे जते रास्ता काटि लेब ओते तँ अपने असान हएत। किएक तँ जते चाहै छी ओ तँ केनहि हएत।

दोसर दिन भोरे देवन विदा भेल। पहिलुका जेकाँ देवन आब नहि। सोलहन्नी तँ नहि मुदा अठन्नी जरुर बदलल। रास्तामे मंदिर देखितहि आँखि निच्चाँ केने आगू बढ़ि जाय। भिनसुरका समए तँ रउदो बेसी तीख नहि। हवाक सिहकी चलैत तँ चलैमे बेसी मन लगैत। जाइत-जाइत देवन एकटा बड़का मंदिर देखलक। शंखमरमरसँ बनल। हालेमे रंग-टीप भेने विशेष आकर्षक। मंदिरक चारु भाग छहर देवाली। सइयो बीधासँ उपर मंदिरक अगवास। छहर-देवालिएक भीतर एकटा नमहर पोखरि, करीब दस बीघाक कलम, जहिमे अगबे बम्बइ आम। हजारोसँ उपर नारियलक गाछ। कमोवेश सभ फल। पोखरिक मोहारपर धरमशाला। नहाइ लऽ पोखरिमे सिमटीक घाट बनाओल। रस्ताक तर देने बिजली तार। एक्केटा रास्ता। जहिमे लोहाक फाटक लगल। फाटकमे खूब नमहर पितरिया ताला झुलैत। चारि बजे भोरमे फाटक खुलैत आठ बजे साँझमे बन्न भऽ जाइत। फाटक बन्न भेलापर ने बाहरक लोक भीतर आबि सकैत आ ने भीतरक बाहर जा सकैत। जे महंथजीक कड़गर आदेश छल। इलाकाक लोक महंथजीकेँ जेहने कड़गर बुझैत तेहने चरित्रवान। तेँ विशेष इज्जत। मंदिर लग पहुँचते देवनक मन डोलि गेल, जे कने भीतर जा कऽ देखिऐक। थोड़े काल रास्तापर ठाढ़ भेल। बाहरोक लोककेँ भीतर जाइत देखलक आ भीतरोक लोककेँ बहराइत देखलक। देवन सेहो भीतर गेल।

भीतर पहुँच देवन हियासि-हियासि मनुक्खोकेँ आ मंदिरक व्यबस्थाकेँ देखए लगल। बड़ सुन्दर व्यवस्था बुझि पड़लै। चकचक करैत मंदिर। मंदिरक आगूमे पानिसँ धुअल अग्नेय। अगरबतीक सुगंधसँ मंदिरक चारु भाग मह-मह करैत। फुलडालीमे फूल आ कियो तमही लोटामे तँ कियो पितरिया लोटामे जल लऽ पूजा करै ले जाइत। तँ कियो पूजा कऽ घुमितो। मंदिरक आगूमे ठाढ़ भऽ देवन गोड़ लगलक। गोड़ लगिते देवनकेँ बुझि पड़लै जे जहिना ई तीर्थस्थान अछि तहिना तँ मनुक्खक देहो छैक। एकाकार भऽ गेल। अपना देहेमे तीर्थस्थान बुझि पड़लै। मंदिरसँ निकलि देवन धुमए लगल। फुलबारीक फूल देखि मन गद-गद भऽ गेलै। फुलवाड़ीसँ निकलि देवन सोझे धरमशालामे पहुँचल। धरमशालाक निच्चामे ठाढ़ भऽ स्थानोक बावाजी आ बाहरोसँ आएल यात्रीकेँ हियासि-हियासि देखए लगल। दुनू तरहक मंदिरक बाबाजी आ यात्री दू रंग देवनकेँ बुझि पड़लै। दुनू तरहक लोकमे, दू रंग विचार आ काज, देवन देखलक। दू रंग देखि देवन आरो लगमे जा देखए लगल। बाहरक जे यात्री रहए, ओकर मन आ हृदय पवित्र बुझि पड़लै। छल-प्रपंचसँ दूर। भगवानक प्रति श्रद्धा। मुदा मंदिरक जे बावाजी सभ छल, ओकर चालियो-चलन आ मनो अशुद्ध बुझि पड़लै। यात्री सभपर सँ नजरि हटा देवन स्थानक बावाजी सभपर गड़ा कऽ देखलक। बाबाजी सभकेँ देखै जे सभ अपन-अपन रुप बना रहल अछि। कियो सौँसे देह भस्म लगा, डाँड़मे मात्र चारि आंगुरक बिसटी पहिर रहल अछि तँ कियो सोलहन्नी सौँसे देह छाउर ओँसि नंगे तैयार भऽ रहल अछि। कियो रेशमी धोती कुरता पहीरि साधारण

तिलक लगा तैयार भऽ रहल अछि। तँ कियो भिखमंगाक रुप बना रहल अछि। रुप बना सभ कियो गांजा पीबि, कियो अफीम खा, कियो दारु पीबि तँ कियो भाँग खा तैयार भेल। सबहक आँखि तरेगण जेकाँ चमकए लगल। अप्पन-अप्पन सभ समान ओरिया कऽ धरमशालामे राखि निकलए लगल। धरमशालामे मात्र बाहरक जे यात्री छल ओतबे रहल। ओहो सभ अपन-अपन मोटरी सम्हारि जाइक तैयारी करए लगल।

रंग-बिरंगक रुप देखि, देवनक मनमे सबहक करतूत बुझैक जिज्ञासा जोरसँ जगल। मुदा कहत के? मने-मन देवन सोचए लगल जे के ऐहेन लोक भेटत, जकरासँ पूछिबैक। गुन-धुन करैत देवन धरमशालाक भनसिया लग पहुँचल। ओ सभ बरतन-बासन मँजैत। एकटा बरतन लऽ देवनो मँजए लगल। अनठिया देवनकेँ देखि एक गोटे पूछलकै- ‘‘भाय, तूँ कतए रहै छह?’’

भनसियाक बात सुनि देवनमे संतोष भेलै जे एकरासँ सभ बातक भाँज लगि जाएत। उत्तर देलक- ‘‘भाय, हम तँ बहुत दूर देहातमे रहै छी। बहु दिनसँ अइ स्थानक विषयमे सुनै छलौं। मुदा ने बटखरचा होइ छलए आ ने अबै छलौं। अइबेर खरचाक जोगार भऽ गेल तँ आबि गेलौं।’’

भनसिया- ‘‘कते दिन रहबह।’’

देवन- ‘‘जते दिन मन लागत।’’

भनसिया- ‘‘बड़बढ़ियाँ! हमरे सभ संगे भंडारमे रहह। कोनो-कोनो काजो करिहह आ जे मन हेतह से खेबो करिहह।’’

देवन- ‘‘बड़बढ़ियाँ।’’

देवनकेँ बात बुझैक जोगार भऽ गेलै। जोगार देखि देवन मने-मन खुश होइत पूछलक- ‘‘भाय, अखन जे बावाजी सभ निकलल ओ कखन घुरि कऽ आओत?’’

- ‘‘किरिण डूबैक समए।’’

- ‘‘भरि दिन कतए रहत आ की करत?’’

देवनक प्रश्न सुनि हँसैत एक गोटे कहलकै- ‘‘कियो स्थानक नामसँ चंदा करत, हाथ देखि-देखि दैछना लेत। कियो भीख मांगत। इत्यादि।

- ‘‘जखन सभकेँ खाइ लऽ भेटिते छै तखन चंदा, दैछना आ भीख की करत?’’

- ‘‘जे भीख मांगत ओ एक्को पाइ स्थानमे जमा नहि करत मुदा जे रसीद काटि चंदा करत ओ अधा-अधी स्थानमे जमा करत।’’

- ‘‘बाकी रुपैआ लऽ कऽ की करत?’’

- ‘‘देवनक बात सुनि सभ भनसिया ठहाका मारलक। एक गोटे हँसिते-हँसिते बाजल- ‘‘भने ऐठाम ऐलह। दू-चारि दिन रहह तखन सभ किरदानी आँखियेसँ देखबहक। मुँहसँ कहलापर किछु विसवासो हेतह आ किछु नहिये हेतह।’’

- ‘‘महंथजी कोन मकानमे रहए छथि?’’

ओंगरीसँ देखवैत कहलकै- ''ओ दू महला कोठा देखै छहक, ओकर निचला हन्नामे स्थानक राशन-पानी रहै छै आ उपरका हन्नामे आठ गो कोठली छै। आठो कोठली असकरे रखने अछि।''

- ''ओइमे सभकेँ जाए नइ दइ छै। कने हमहूँ जा कऽ देखितियै?''

- ''नै। ओइमे सभ नइ जाइए। अगर देखै कऽ मन हुअअ तँ भिनसुरका पूजा समाप्त भेलापर कातमे ठाढ़ भऽ कऽ देखिहक।''

- ''की सभ होइ छै?''

- ''पूजाक बाद सभ अपन-अपन ठरपर चलि जाइए। तेकर वाद लीला शुरु होइ छै। मुदा बेसी नइ कहबह। ओइ कोठा छोड़ि सौँसे सभ घुमि सकैए। तँ जलखै खा लाए आ सौँसे देखि आबह।''

- ''बड़बढ़ियाँ।'' कहि देवन जलखै खा धूमै लऽ विदा भेल।

दछिन मुँहे देवन विदा भेल। दछिनवारि भाग बजार जेकाँ बनल। कने हटि कऽ देखलापर छोटे बुझाइ मुदा भीतर पैसितहि खूब नमहर देखि पड़ैत। उत्तरे-दछिने रास्ता। रास्ताक दुनू बगल डेरानुमा घर। पानि, बिजली सौँसे। बहरीक ओसारपर गद्दीदार कुरसी लागल। सइयोसँ उपरे डेरा, जहिमे ढ़ेरबा लड़कीसँ लऽ कऽ अधबयशू औरत धरि। मरदक नामो-निशान नहि। वेश्यावृत्तिसँ लऽ कऽ गान विद्यामे सभ निपुण। स्थानक धूप-आरतीसँ लऽ कऽ अप्पन वृत्ति धरि सबहक काज। रस्ते-रस्ते देवन आगूओ बढ़ै आ दुनू बगली देखबो करै। जाइत-जाइत देवन दछिनबरिया छोर लग पहुँचल। डेरा सबहक रुप-रंग देखि देवनक मनमे एलै जे किछु दिन एहिठाम रहब जरुरी अछि। बिना रहने नीक-नहाँति नहि बुझि सकब। जखन ऐठाम आबि गेलहुँ तखन सरिया कऽ बुझने बिना चलि जाएब बचपाना हएत। फेरि मनमे होय जे अबैत-अबैत कतए आबि गेलौं। लोक अधलासँ नीक दिस बढ़ैत अछि आ हम अधले दिस चलि एलौं। फेरि मनमे होय जे अधला जगह होइ छै, अधला काज होइ छै, अधला विचार होइ छै, मुदा ओहो तँ ज्ञान रुपमे होइत अछि। तँ ज्ञान अरजन करब तँ अधला नहि छी। तहूँमे अधला काज केनिहारो तँ कम नहि अछि। अगर जँ हम अधला काजकेँ नहि जानब तँ ओहिकेँ अधला बुझि परहेज कोना करब। तत्-मत् करैत देवन दछिनबरिया छोरपर ठाढ़ भऽ आँखि उठा-उठा चारु भाग देखए लगल। पूबारि भागक डेराक ओसारपर एकटा शील भंग जुआन लड़की -बच्चा नहि भेल- देवन दिस देखैत। ओहि लड़कीकेँ अपना दिस देखैत देवनो ओकरे दिस तकए लगल। दुनू दुनूकेँ दखैत मुदा आँखिमे आँखि मिलितहि लड़की आँखि निच्चाँ कऽ लइत। देवनोक मनमे ओहि लड़कीक प्रति उत्सुकता जगलै। मुदा धड़फड़ा कऽ पूछत की? बड़ी काल धरि देवन ओतइ ठाढ़ रहल। डरो होय तँ मुँह सुखल जाइ। देवनक उतड़ैत चेहरा देखि ओ लड़की पूछलक- ''किनको तकै छिअनि?''

देवन- ''तकै नइ छिअनि। देखै ले एलौंहें।''

- "आउ, ऐठाम आबि कऽ बइसू।"

बैसू सुनि देवन ससरैत आगू बढ़ल। एक बेर कऽ ओ लड़की देवनो दिस मूड़ि उठा कऽ देखैत आ फेरि मूड़ि निच्चो कऽ लइत। जहिना कियो आन मुलूकक जहलमे जिनगी भरिक सजा कटैत, जहिठाम ने अपना मुलूकक एकोटा लोक रहैत आ ने घुरि कऽ अपना मुलूक अबैक आशा रहैत, वएह दशा ओहि लड़कीकेँ मने-मन होइत। देवन आबि कऽ ओसारक कुरसीपर बैसल। देवनक सुखल मुँह देखि ओ लड़की मने-मन सोचलक जे भरिसक देवन भुखल अछि। मुदा देवनक मुँह भूखसँ नहि डरसँ सुखल। ओ लड़की पूछलकै- "किछु खाएब।"

देवन- "अखने खेलौंहेँ। खाइक इच्छा नइ अछि।"

-"ऐठाम अहाँ किऐक एलौं? ई जगह मनुक्खक नहि छी।"

ओहि लड़कीक बात सुनि देवन मने-मन चैंकि गेल। मुदा अपनाकेँ सम्हारि कऽ बाजल- "अगर मनुक्खक रहैक जगह नइ छी तँ अहाँ कोना रहै छी?"

देवनक बात सुनि शान्तीक दुनू आँखिमे नोर आबि गेल। मनक सीमानेपर बोली अँटकि गेलै। चकभाउर कटैत चिड़ै जकाँ आँखि घुमए लगलै। उपरसँ नीचा धरि देवनकेँ निङहारै लागलि। बड़ी काल धरि शान्तीक आँखि देवनके देखैत रहल आ मन जिनगीक समुद्रमे उग-डुम करै लगलै। ने किछु शान्ती बाजै आ ने देवन। दुनू दुनूकेँ पढ़ैत। बड़ी कालक बाद शान्ती देवनकेँ कहलक- "अहाँक प्रश्नक जबाब हम अखन नइ देव। भानसो नइ केलौंहेँ। अहूँ आएल छी। तँ अखन भानस करै जाइ छी। निचेनमे अहाँ सवालक जबाव देब। ताबे अहूँ नहा लिअ।"

देवनकेँ शान्ती ओसार परसँ उठा भीतर कोठरी लऽ गेल। भीतरमे आंगन जकाँ बनल। चारु भरसँ छहरदेवाली। बाहरक केबाड़ शान्ती बन्न कऽ देलक। भीतरेमे व्यवस्था। नहेवोक, भानसोक। छोटवेटा आंगन तेहिमे टहलबोक। शान्ती भानस करै ले चुल्हि पजारलक। देवन अंगा निकालि नहाइक जोगारमे लगि गेल। मुदा, जना शान्तीयोक मन आ देवनोक मन एक-दोसरकेँ सोर पाड़ए लगलै। टंकीपर देवन ठाढ़े आ चुल्हि लग शान्ती बैसलि। मुदा दुनू एक दोसर दिस देखैत। जहिना अजेगर साँपक आँखिसँ आँखि मिललापर मनुक्ख आँखिक आकर्षणसँ वेवस भऽ हटि नहि सकैत तहिना देवनो आ शान्तीयोक बीच होइत। टंकीपर सँ ससरि देवन चुल्हि लग आबि गेल। खुला देह। सिर्फ धोतियेटा पहीरने। शान्तीयो देहक आंगी निकलि सिर्फ सये-साड़ीटा पहीरिने। देहक चिन्ता ने देवनकेँ आ ने शान्तीकेँ जहिना बच्चामे भाए-बहीनि नंगटे खेलाइत तहिना दुनू भाए-बहीनि जकाँ, एकठाम वैसि जिनगीक गप्प-सप्प करए लगल।

शान्ती- "अहाँ ऐठाम किअए एलौं?"

देवन- "बहीनि, दुनियाँ देखैक खियालसँ घरसँ निकलल छी, तँ ऐठाम एलौंहेँ। मुदा अहाँ किअए ऐहेन बात पुछलहुँ?"

देवनक बात सुनि शान्तीक हृदय दहलए लगलै। मन विचलित भऽ गेलै। वोली थरथराए लगलै। नमहर साँस छोड़ैत शान्ती कहए लगलै- "भैया, जँ अहाँ ऐहिठाम पहुँच गेलहुँ तँ नीक केलहुँ। किऐक तँ बिना देखने दुनियाँकेँ बुझवै कोना? जहि जगहपर आबि गेल छी, तहिठाम दिनक क्रिया-कलाप भिन्न छै आ रातिक भिन्न। तँ दिनके जे देखवै, ठीक ओकर विपरीत रातिका देखवै। ओना जँ अहाँ देखै ले आएल छी तँ दिनको आ रौतुको, दुनू देखि लिअ। मुदा तइ सभसँ पहिने हमर जिनगी देखि लिअ।"

शान्तीक बात सुनिते देवनक मनमे जुआर-भाटा उठए लगल। शरीर कँपए लगल। जहिना तेज हवा, ठाढ़ भेल मनुष्यकेँ अपन झोकासँ ठेलि दैत तहिना देवन मन शान्तीक बातसँ घुसकै-फुसकै लगल। लाख परियास केनहुँ देवनक मन डोलए लगल। जहिना रथमे जोतल घोड़ा जखन अपन चालि पकड़ि लइत आ सहीस जँ कतवो छोर खींच कावू करए चाहैत तइयो किछु नहि किछु दूर घोड़ा बेकावू भऽ बढ़िये जाइत, तहिना देवनोक मन भऽ गेल। मुदा, मनकेँ काबू करए दुआरे देवन मुँह बन्न कऽ आँखियेसँ अध्ययनो आ गप्पो करए लगल। जहिना शान्तीक मनमे विचित्र स्थिति पैदा लऽ लेलक तहिना देबनोक मनमे। दुनू दुनूकेँ निङहारि-निङहारि देखए लगल। ने किछु शान्ती बजैत आ ने देवन। जना दुनूक मन, एकठाम भऽ धारक रेतमे भसिआइल जाइत। बड़ी कालक बाद देवनक मन असथिर भेल। ताबे चुल्हिक आगि सेहो मिझा गेल। जहिना गाइयक बच्चा, देहपर हाथ सहलेलासँ, आँखि बन्न कऽ असुआ जाइत तहिना शान्ती सभ सुधि-बुधि बिसरि गेलि। मन असथिर होइतहि देवन पूछलक- "अहाँक जिनगी!"

-"हँ, हम्मर जिनगी!"

बिसमित भऽ देवन- "कहू।"

शान्ति हमर जन्म एकटा सुभ्यस्त किसान परिवारमे भेल अछि। जखन सात-आठ बर्खक छलौं तखन माइक संग मेला देखए, गामसँ दू कोस हटि, गेलौं। सहस्त्र चंडी यज्ञ होइत रहै। नअ दिनक यज्ञो आ मेलोक कार्यक्रम रहए। तीनि दिन तक तँ मात्र यज्ञेक कार्यक्रम चललै चारिम दिनसँ नाच-तमाशा शुरु भेलै। बड़का रास, थियेटर, नाच सभ रहए। दिनमे यज्ञक प्रक्रिया, विषय कीर्तन आ छकड़वाजी चलै मुदा रातिक मेला जवरदस रहए। इजोतक ऐहेन व्यस्था रहए जे जहिना दिन तहिना राति बुझि पड़ै। दोकानो-दौड़ी तहिना पतिआनी लगा कऽ सजल रहए। बगलमे पच्चीस-तीस बीधाक आमक गाछी रहए जहिमे मेला रहए। पाँचम दिन, हमरा गामक लोक सभ मेला देखए गेल। हमहूँ माइक संग गेलौं। सौँसे मेला, एक्के बेर घुमैत-घुमैत पएर दुखा गेल। सभ कियो जा कऽ एकटा आमक गाछक निच्चाँमे वैसि गेलहुँ। सबहक विचार भेल जे रौतुको मेला देखनहि जाएब। खाइ-पीबैक कोनो कमिये ने रहए। ढेरो दोकान रहए।

आठ बजे रातिमे रासो आ थियेटरो शुरु भेल। दुनूक उँचगर मंच बनल रहए, तेँ कतौसँ कतौक लोक असानीसँ देखए। इजोतक तेहेन व्यवस्था। दर्जनो जेनरेटर चलैत रहए। लोकोक तेहने भीड़। मरद-मौगी मिझराइले। करीब दस बजे, एक्के बेर सभ जेनरेटर बन्न भऽ गेलै। बिजली गुम्म होइते सौँसे मेला हल्ला हुअए लगलै। तहि बीच एक गोरे हमरा उठा लेलक आ दोसर गोरे मुँह दाबि, भीड़सँ निकलि गेल। हम जे किछु बजवो करी ओ बोली निकलबे ने करए। तहूमे ततेक हल्ला होइत रहए, जे के सुनत। दुनू गोरे एकटा जीपमे बैसा देलक। जीपो अन्हार। तेँ नीक जकाँ देखवो ने करियै। तीनटा जीप आगू-पाछू लगल। तीनू एक्के बेर खुजल। मेलासँ करीब अधा मील जीप गेल, तखन मेलामे इजोत भेलै आ हल्लो कम भेलै। जीपक इजोतो बड़ल। जखन जीपमे इजोत भेल, तखन आठटा आरो लड़कीकेँ जीपमे देखलिऐक। मन उड़ि गेल छल। डर हुअए जे कतौ मारि देत कि फेकि देत। अबधारि लेलौं जे आइ मरले छी। मन पड़ल अपन गाम, अपन परिवार आ अपन कुटुम-परिवार। मुदा की करितौं।''

शान्तीक मुहसँ एते बात निकलितहि शान्तीयोक दुनू आँखिसँ आ देवनो आँखिसँ दहो-बहो नोरो निकलैत आ दुनू बोम फाड़ि कानए लगल। देवनक मनमे अप्पन मरल माए-बाप एलै आ शान्तीक मनमे जीवित माए-बाप। दुनूकेँ देहमे, जेना एक्को पाइ लज्जतिये ने रहल। जना मुइलाक बाद मुरदा लड़-तांगर होइत, तहिना। घाड़ा-जोड़ी कऽ दुनू छातीमे छाती लगा, कानए लगल। आँखिसँ नोर टघरै, मुँहसँ दुख निकलै, आ छातीमे छाती सटौने पैछला जिनगीक अंत आ अगिला जिनगीक रुप-रेखा बनए लगलै। मुँहमे मुँह सटा, वोलीसँ नहि, दुनूक मन अप्पन-अप्पन शेष बात कहए लगलै। बड़ी काल धरि दुनू एक-दोसरसँ मिलल रहल। ताधरि दुनू सटल रहल जाधरि दुनूक मनक सभ व्यथा नहि निकलि गेलै। जहिना अन्हार रातिमे दुनियाँक सभ कुछ अन्हारक चद्दरि ओढ़ि सटि जाइत अछि, तहिना देवन आ शान्तीयो सटि गेल। मुदा सूर्य कऽ उगितहि सभ अलग-अलग भऽ जाइत तहिना सभ व्यथा कहलाक बाद दुनू हटि गेल। दुनू हाथसँ दुनू आँखि पोछि देवन शान्तीकेँ कहलक- ''ऐठामसँ निकलैक कोन उपाए अछि?''

शान्ती- ''जखन फाटकक ताला खुलि जाइ छै तखन बहरेबाक उपाए अछि। मुदा किछु लऽ कऽ नहि छुछे देहे।''

देवन- ''पहिने एहिठामसँ निकलि चलू, तखन आरो गप्प-सप्प हेतइ।''

चारि बजे भोरमे फाटकक ताला खुजल। ताला खुजलाक अधा घंटा बाद लोकक आवा-जाही शुरु भेल। पाँच बजे दुनू गोटे दस लग्गा आगू-पाछू विदा भेल। देवनो चारु भर तकैत जे कियो देखै तँ ने अछि आ शान्तीयो। मुदा देखियो कऽ कियो किछु ने पूछैत। फाटक टपिते शान्ती नव दुनियाँ देखलक। दुनियाँक सभ कुछ नव। दुनू सोझे उत्तर मुँहे विदा भेल। ने देवन शान्तीकेँ किछु पूछैत आ ने शान्ती

देवनकेँ। जाइत-जाइत दुनू मनपुर पहुँच गेल। मनपुर पहुँचते दुनूक मनमे शान्ती एलै। दुनू एक दोसरसँ किछु पूछए चाहै कि तहि बीच ओहि बटोही पछिलाकेँ अबैत देखलक। धियानसँ ओहि बटोहीकेँ देखितहि देवनक मुँहसँ हँसी निकलल। ताबे ओहो लग आबि देवनकेँ पूछलक- ''वौआ, तू अखन धरि एतै छह? हम तँ विवेक पुरसँ घुरि, दोहरा कऽ एलौंहेँ।''

देवन- ''दादा, रास्तामे शान्ती भेटि गेलि तँ गप्प-सप्प करैमे समए लगि गेल।''

बटोही- ''बड़सुन्दर। भने दुनू गोटे एक संग भऽ गेलह। जे देखैक मन छेलह, से आब नीक नाहाँति देखबहक। अखन हम काजे जा रहल छी तँ नइ अँटकवह।''

देवन- ''दादा, जतेकाल ऐठाम छी तते कालमे किछु कहि दिअ?''

देवनक बात सुनि मुस्की दैत बटोही कहए लगलखिन- ''बौआ, सबहक इच्छा होइ छै जे हम्मर बात अधिकसँ अधिक लोक सुनए। मुदा ओहि सुनने हेतइ की? किऐक तँ जते मनुक्ख अछि, सभकेँ अप्पन-अप्पन जिनगी छैक। सभ तँ एकठाम ठाढ़ नहि अछि जे एकटा बात सुनने सरपट चालि पकड़त। जँ से होइतइ तँ सभ दौड़ैत रहैत। से कहाँ छै। तँ जरुरी अछि जे सभसँ पहिने अपने उठि कऽ मनुक्खक रास्तापर ठाढ़ होय। जखन मनुक्खक रास्तापर ठाढ़ भऽ चलए लगब तखन जे गिरल मनुक्ख अछि ओकरा उठवैक कोशिश करक चाही। उठबैक दुनू उपाय अछि। ककरो बाँहि पकड़ि खिंचैक अछि, ककरो पाछूसँ धक्का दऽ धकेलैक अछि। यएह जिनगीक जीत छी जे हमरा केने कते मनुक्ख मनुष्य बनल।

''हरि अनंत हरि कथा अनंता।''

⌘ ⌘ ⌘